BNHN301DCT

आधुनिक हिन्दी कविता

एन ई पी - 2020 पाठ्यक्रम पर आधारित

बी. ए.(हिन्दी)

(तृतीय सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

Copyright © 2025, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
All right reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing form the publisher (registrar@manuu.edu.in)

ISBN : 978-81-68324-22-0
Course : Adhunik Hindi Kavita
First Edition : August 2026
Copies : 300
Price : 375/- (The price of the book is included in admission fee of distance mode students)

Course Coordinator

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Editorial Board/Editors

Prof. Rishabha Deo Sharma
Former Head, P.G. and Research Institute,
Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha,
Hyderabad
Consultant (Hindi), CDOE, MANUU

Prof. Shyamrao Rathod
Professor, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

Dr. Gurramkonda Neeraja
Associate Professor, PGRI,
DB Hindi Prachar Sabha, Chennai

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Dr. Wajada Ishrat
Assistant Professor (Hindi)
CDOE, MANUU

Dr. L. Anil
Assistant Professor (Cont.)
CDOE, MANUU

Production

Prof. Nikhath Jahan, Professor (Urdu), CDOE, MANUU
Mr. P Habibulla, Assistant Registrar, Purchase & Stores Section, MANUU
Dr. Mohd Akmal Khan, Assistant Professor (C), CDOE, MANUU
Mohd Abdul Naseer, Section Officer, CDOE, MANUU
Shaik Ismail, UDC, CDOE, MANUU
Syed Faheemuddin, LDC, Purchase & Stores Section, MANUU

On behalf of the Registrar, Published by:

Centre for Distance and Online Education

Maulana Azad National Urdu University
Gachibowli, Hyderabad-500032 (TG), India
*Director:*dir.dde@manuu.edu.in*Publication:*ddepublication@manuu.edu.in
Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

CRC Prepared by Dr. L. Anil, Faculty of Hindi, CDOE, MANUU
Printed at : Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

विषयानुक्रमणिका

संदेश		कुलपति	5
संदेश		निदेशक	6
भूमिका		पाठ्यक्रम–समन्वयक	7
क्र. सं.	**इकाई**	**लेखक**	**पृ.सं.**
1	भारतेंदु हरिश्चंद्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. गोपाल शर्मा	9
2	गंगा-यमुना : भारतेंदु हरिश्चंद्र	डॉ. गोपाल शर्मा	24
3	विरह वेदना : भारतेंदु हरिश्चंद्र	डॉ. शशि बाला	37
4	मातृभाषा प्रेम : भारतेंदु हरिश्चंद्र	डॉ. शशि बाला	51
5	अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. पूर्णिमा शर्मा	65
6	दिवस का अवसान : अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध	डॉ. पूर्णिमा शर्मा	79
7	मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. वाजदा इशरत	93
8	आदर्श : मैथिलीशरण गुप्त	डॉ. एन. लक्ष्मीप्रिया	106
9	जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. वाजदा इशरत	121
10	आँसू : जयशंकर प्रसाद	डॉ. एन. लक्ष्मीप्रिया	135
11	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा	152
12	सरोज स्मृति : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा	167
13	नागार्जुन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ. सुपर्णा मुखर्जी	182
14	'गुलाबी चूड़ियाँ' और 'शासन कि बंदूक' : नागार्जुन	डॉ. डाली	201
15	कालिदास : नागार्जुन	डॉ. मंजु शर्मा	214
16	'मेघ बजे' और 'खुरदरे पैर' : नागार्जुन	डॉ. मंजु शर्मा	227
	परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना		239

लेखक विविरण

प्रो. गोपाल शर्मा, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा विज्ञान विभाग, अरबा मींच विश्वविद्यालय, इथोपिया	Prof. Gopal Sharma, Former Professor and Head, Dept. of Linguistics, Araba Minch University, Ethiopia
डॉ. शशिबाला, हिन्दी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, शिवरामपल्ली, हैदराबाद	Dr. Shashi Bala, Hindi Teacher, Kendriya Vidyalay, National Police Academy, Shivarampally, Hyderabad
डॉ. पूर्णिमा शर्मा, हिन्दी काउंसलर, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय, हैदराबाद.	Dr. Purnima Sharma, Hindi Counsellor, Dr. B.R. Ambedkar Open University, Hyderabad.
डॉ. वाजदा इशरत, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, मानू	Dr. Wajada Ishrat, Assistant Professor (Hindi) CDOE , MANUU
डॉ. एन. लक्ष्मीप्रिया, प्राध्यापक (हिन्दी), महात्मा गांधी सरकारी कॉलेज, मायाबंदर (अंडमान निकोबार)	Dr. N. Lakshmipriya, Asst. Prof., Mahatma Gandhi Govt College, Maya Bandar (Adaman Nicobar)
डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा, एसोसिएट प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै	Dr. Gurramkonda Neeraja, Associate Professor, Higher Education and Research Institution, Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Chennai
डॉ. सुपर्णा मुखर्जी, प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, भवन्स विवेकानंद डिग्री कॉलेज, सैनिकपुरी, हैदराबाद.	Dr. Suparna Mukharjee, Lecturer, Bhavan's Vivekananda College, Sainikpuri, Hyderabad
डॉ. डॉली, असिस्टेंट प्रोफेसर, गुरुनानक कॉलेज, चेन्नै, तमिलनाडु	Dr. Dolly, Assistant Professor, Gurunanak College, Chennai
डॉ. मंजु शर्मा, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, चिरेक इंटरनेशनल स्कूल, हैदराबाद	Dr. Manju Sharma, Head, Dept. of Hindi, Chirec International School, Hyderabad

प्रूफ रीडर (Proof Readers) :

1. डॉ. एल. अनिल, असिस्टेंट प्रोफेसर (सं), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
2. डॉ. वाजदा इशरत, असिस्टेंट प्रोफेसर, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
3. डॉ. आफ़ताब आलम बेग, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद

मुख पृष्ठ (Title Page) : श्री. इब्राहीम अकरम सिद्दीकी

संदेश

मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है जिसे NAAC द्वारा ग्रेड A+ प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य है, 1. उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार, 2. उर्दू माध्यम में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को सरल भाषा में उपलब्ध कराना, 3. पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा माध्यमों के द्वारा शिक्षा प्रदान करना, 4. महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। ये विशेषताएँ इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग और विशिष्ट बनाती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने पर विशेष बल दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान प्रसार का मुख्य उद्देश्य यह है कि उर्दू जानने वाले समुदाय को समकालीन ज्ञान और विभिन्न विषयों तक सहज पहुँच मिल सके। लंबे समय तक उर्दू में पाठ्य सामग्री की कमी रही है। अब उर्दू विश्वविद्यालय के पास उर्दू में 350 से अधिक पुस्तकों का भंडार है, और यह संख्या हर सेमेस्टर के साथ बढ़ती जा रही है।

उर्दू विश्वविद्यालय को यह गर्व है कि वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार मातृभाषा/घरेलू भाषा में सामग्री उपलब्ध कराने के राष्ट्रीय मिशन का हिस्सा है। इसके परिणामस्वरूप, उर्दू भाषी समुदाय अब अद्यतन ज्ञान, उभरते हुए क्षेत्रों की जानकारी और मौजूदा विषयों में नवीन ज्ञान प्राप्त करने में पिछड़ा हुआ नहीं रह गया है, क्योंकि अब उर्दू में पढ़ने योग्य सामग्री उपलब्ध है। इन ज्ञान क्षेत्रों से संबंधित विषय-वस्तु की उपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति एक नई जागरूकता उत्पन्न की है, जो उर्दू जानने वाले समुदाय की बौद्धिक प्रगति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु, विश्वविद्यालय का दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र संबंधित विषयों में स्व-अध्ययन सामग्री तैयार करना सुनिश्चित करता है। विश्वविद्यालय दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा के छात्रों को यह स्व-अध्ययन सामग्री नि:शुल्क प्रदान करता है। यही सामग्री ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए नाममात्र मूल्य पर भी उपलब्ध है। शिक्षण तक पहुँच को और अधिक व्यापक बनाने के उद्देश्य से उर्दू/हिंदी/अंग्रेज़ी/अरबी में स्व-अध्ययन सामग्री(eSLM) विश्वविद्यालय की वेबसाइट से नि:शुल्क डाउनलोड की जा सकती है।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि संबंधित संकाय के परिश्रम और लेखकों के पूर्ण सहयोग से चारवर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम के अंतर्गत बी.ए.(आनर्स), बी. एस. सी.(आनर्स) और बी.काम. (आनर्स) पाठ्यक्रमों के लिए पुस्तकों के प्रकाशन की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर आरंभ हो चुकी है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को सुविधा प्रदान करने हेतु स्व-अध्ययन सामग्री(Self-Learning Material) की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मेरा विश्वास है कि हम अपनी स्व-अध्ययन सामग्री के माध्यम से एक व्यापक समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे और इस विश्वविद्यालय के उद्देश्य को सफलतापूर्वक निभाते हुए देश में अपनी उपस्थिति को सार्थक सिद्ध कर पाएँगे। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

वर्तमान युग में दूरस्थ शिक्षा को पूरी दुनिया में एक बहुत ही प्रभावशाली और उपयोगी शिक्षा प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है और बड़ी संख्या में लोग इस शिक्षा प्रणाली से लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय ने भी उर्दू भाषी जनसंख्या की शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी स्थापना के समय से ही दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के साथ हुई थी और नियमित कार्यक्रमों की शुरुआत 2004 से हुई, इसके पश्चात विभिन्न विभागों की स्थापना की गई।

भारत में शिक्षा प्रणाली को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (Centre for Distance and Online Education) के तहत चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम, जो ओपेन और दूरस्थ शिक्षा मोड में हैं, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो द्वारा अनुमोदित हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो ने दूरस्थ और नियमित शिक्षा के पाठ्यक्रमों को समन्वित करने पर जोर दिया है, ताकि दूरस्थ शिक्षा के छात्रों के स्तर को बढ़ाया जा सके। चूंकि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय एक ड्यूल मोड विश्वविद्यालय है, जो दूरस्थ और पारंपरिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है, इसलिए UGC-DEB के दिशानिर्देशों के अनुरूप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (CBCS) लागू किया गया और स्नातक एवं स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के लिए नई स्व-अध्ययन सामग्री तैयार की गई है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र फिलहाल उन्नीस (19) कार्यक्रम चला रहा है, जिनमें स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कार्यक्रम शामिल हैं। इसके साथ ही, तकनीकी कौशल आधारित कार्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। इस केंद्र ने अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) के अनुसार जुलाई 2025 से 4-वर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम प्रारंभ किया है। ऑनर्स कार्यक्रम B.A., B.Sc. और B.Com राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (NCF) के अनुसार डिजाइन किए गए हैं, जो छात्रों को ऑनर्स डिग्री प्राप्त करने में सहायता करेंगे। वर्ष 2025-2026 से MBA कार्यक्रम ODL मोड में शुरू किया गया है।

छात्रों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बैंगलोर, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची तथा श्रीनगर) और 6 उप-क्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, वाराणसी तथा अमरावती) का एक विशाल नेटवर्क स्थापित किया गया है। इसके अलावा, विजयवाड़ा में एक विस्तार केंद्र भी स्थापित किया गया है। इन क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत 157 से अधिक लर्नर सपोर्ट सेंटर (LSCs) और बीस कार्यक्रम केंद्र एक साथ संचालित किए जा रहे हैं, ताकि छात्रों को शैक्षणिक और प्रशासनिक सहायता प्रदान की जा सके। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र अपनी शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों में ICT का पूर्ण उपयोग करता है, और अपने सभी कार्यक्रमों में प्रवेश केवल ऑनलाइन मोड से ही प्रदान करता है।

छात्रों के लिए स्व-अध्ययन सामग्री (SLM) की सॉफ्ट कॉपी दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाती है और ऑडियो व वीडियो रिकॉर्डिंग के लिंक भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इसके अलावा ई-मेल और व्हाट्सएप समूहों की सुविधाएँ छात्रों को प्रदान की जा रही हैं, जिनके माध्यम से पाठ्यक्रम पंजीकरण, असाइनमेंट, काउंसलिंग, परीक्षाओं आदि जैसे कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के बारे में छात्रों को सूचित किया जाता है। नियमित काउंसलिंग के अलावा, पिछले दो वर्षों से छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए अतिरिक्त ऑनलाइन रेमेडियल काउंसलिंग की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

आशा है कि दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी आबादी को समकालीन शिक्षा की मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के अनुसार शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कार्यक्रमों में बदलाव किए गए हैं, इससे ओपेन और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी और कुशल बनाने में मदद मिलेगी।

प्रो. मोहम्मद रज़ाउल्लाह खान
निदेशक,
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

भूमिका

'आधुनिक हिन्दी कविता' शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के बी. ए. (हिन्दी) - तृतीय सत्र - के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

हिन्दी कविता का आधुनिक काल काव्य बोध, युगीन चेतना, भाषा और शिल्प - सभी दृष्टियों से बड़े बदलावों से भरा हुआ है। मोटे तौर पर इसे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग, प्रगति-प्रयोग युग और नई कविता युग में विभाजित किया जाता है। यह पाठ्यक्रम इन सभी युगों के आंतरिक बदलावों और उसके साथ-साथ कविता में आए बदलावों का बोध कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। 4 खंडों में क्रमशः सुनियोजित 16 इकाइयों में बँटे हुए इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन और स्वतंत्रता आंदोलन के काल में भारतीय जनता की चित्तवृत्ति के अनुरूप हिन्दी कविता के क्रमिक विकास से भली-भाँति परिचित हो सकेंगे। इस दृष्टि से यहाँ भारतेंदु हरिश्चंद्र, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और नागार्जुन जैसे वस्तु और शिल्प की दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रमुख कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व की झाँकी प्रस्तुत की गई है। साथ ही इन कवियों की निर्धारित कविताओं का विस्तार से गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी जहाँ एक ओर आधुनिक हिन्दी कविता के विकास से परिचित होंगे, वहीं निर्धारित कवियों और उनकी कविताओं के अध्ययन से उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषिक समझ का भी विकास होगा। कविताओं का चयन इस प्रकार से किया गया है कि उन्हें पढ़कर विद्यार्थी के भीतर राष्ट्रीय, लोकतांत्रिक और मानवीय मूल्यों तथा सौंदर्य बोध का विकास हो सके। इस सारी सामग्री को छात्रों की सुविधा के लिए सरल, सहज और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

इस समस्त पाठ सामग्री को तैयार करने में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, ग्रंथों और ग्रंथकारों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

डॉ. आफ़ताब आलम बेग

पाठ्यक्रम-समन्वयक

आधुनिक हिन्दी कविता

इकाई 1 : भारतेंदु हरिश्चंद्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 मूल पाठ : भारतेंदु हरिश्चंद्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.3.1 जीवन परिचय

1.3.2 रचना यात्रा

1.3.3 रचनाओं का परिचय

1.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान और महत्व

1.4 पाठ सार

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

1.6 शब्द संपदा

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप जानते ही हैं कि आधुनिक काल से पूर्व हिंदी का अस्तित्व मुख्य रूप से ब्रज भाषा और अवधी के रूप में था। केवल पद्य में ही नहीं, उसके पूर्व का जो थोड़ा बहुत गद्य मिलता है वह भी इन्हीं भाषाओं में है। हिंदी साहित्य में 'भारतेंदु' के आविर्भाव से आधुनिक गद्य साहित्य परंपरा का प्रवर्तन होता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र का प्रभाव हिंदी भाषा और साहित्य दोनों पर इतना गहरा पड़ा है कि उनके समय में लेखकों और कवियों का एक समूह 'भारतेंदु मंडल' कहा जाने लगा था। लगभग 35 वर्ष की अल्पायु में ही असामयिक निधन होने पर भी उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में प्रचुर मात्रा में लेखन किया और हिंदी साहित्य को नए मार्ग पर ला खड़ा किया। आधुनिक हिंदी साहित्य आज जिस स्थान और स्थिति पर खड़ा है, उसकी नींव को पुख्ता करने में भारतेंदु और उनके मंडल का योगदान सुवर्णाक्षरों में लिखे जाने के योग्य है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय कराती यह इकाई आपको एक ओर तो हिंदी साहित्य में आधुनिक काल के आरंभ से परिचित कराएगी दूसरी ओर यह भी स्पष्ट हो जाएगा कि 1857 के पश्चात किस प्रकार हिंदी साहित्यकारों ने सामाजिक चेतना को बल प्रदान किया। भारतेंदु को आप एक ऐसी धुरी की तरह देखेंगे जिसके इर्द-गिर्द अनेक कवि और लेखक जुट गए थे। 'सिद्ध वाणी के अत्यंत सरस हृदय कवि' (रामचंद्र शुक्ल का कथन) ने प्राचीन और नवीन का ऐसा सुंदर सामंजस्य प्रस्तुत किया कि उनकी सूफी समान रंगत, सांप्रदायिकता से

मुक्त विचारधारा और राज-समाज का संतुलन उन्हें अभूतपूर्व बना देता है।

1.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- भारतेंदु की संक्षिप्त जीवन गाथा से परिचित हो सकेंगे।
- भारतेंदु के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में उनकी जीवन-चर्या की भूमिका से अवगत हो सकेंगे।
- भारतेंदु के विपुल कृतित्व के बारे में जान सकेंगे।
- भारतेंदु के कवि रूप से परिचित हो सकेंगे।
- भारतेंदु के व्यक्तित्व और कृतित्व के ऐतिहासिक महत्व को समझ सकेंगे।

1.3 मूल पाठ : भारतेंदु हरिश्चंद्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.3.1 जीवन परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य के पुरोधा और भारतीय नवजागरण के प्रतीक भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म 9 सितंबर सन 1850 ई. को काशी में हुआ। ये कलकत्ता के इतिहास-प्रसिद्ध सेठ अमीचंद के वंशज थे। इनके पिता का नाम गोपाल चंद था किंतु वे अपने उपनाम गिरिधरदास के नाम से अधिक जाने जाते हैं। माता का नाम पार्वती देवी था और छोटे भाई गोकुल चंद के नाम से विख्यात हुए। भारतेंदु तो इनका उपनाम है। हरिश्चंद्र का जन्म उनके ननिहाल में हुआ था। जब वे पाँच वर्ष के थे तब उनकी माता का और जब वे दस वर्ष के थे तब पिता का देहांत हो गया। संपन्न होने पर भी इसी कारण से उनकी शिक्षा का समुचित प्रबंध न हो सका।

हिंदी की प्रारंभिक शिक्षा पंडित ईश्वर दत्त और उर्दू का ज्ञान मौलवी ताज अली से घर पर ही प्राप्त किया। बचपन से ही इनमें काव्य रचना की प्रतिभा थी। पाँच वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने एक दोहा रचा -

लै ब्योंड़ा ठाड़े भए, श्री अनिरुद्ध सुजान।

बानासुर की सेन को, हनन लगे भगवान॥

पिता ने बालक हरिश्चंद्र की प्रतिभा को देखकर आशीर्वाद दिया जो फलीभूत भी हुआ। पिता की मृत्यु के तीन चार-साल तक वे बनारस के क्वीन्स कॉलेज जाते अवश्य रहे पर मन उनका वहाँ नहीं रमता था। वैसे वे कुशाग्र बुद्धि और तीव्र स्मरणशक्ति वाले थे और स्वाध्याय से हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी के अतिरिक्त मराठी, बंगला, गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी और उर्दू आदि अनेक भारतीय भाषाएँ अच्छी प्रकार से जानते थे। बाल्यावस्था में ही उनमें कविता के प्रति अनुराग और रुचि हो गई। माता की मृत्यु के पश्चात पिता के पुनर्विवाह के कारण विमाता मोहनाबीबी का दुर्व्यवहार उन्हें बहुत परेशान रखता था। उनकी देखभाल कदमाबाई और तिलकधारी नामक नौकरों ने किया। माता-पिता की असमय मृत्यु और विमाता के दुर्व्यवहार के अनेक करुण प्रसंगों का हरिश्चंद्र पर बड़ा प्रभाव पड़ा। स्नेह और प्रेम के भूखे बालक पर व्यापक मानव प्रेम के लिए अकुलाहट सदा बनी रही।

तेरह वर्ष की अवस्था में (1883) उनका विवाह काशी के रईस लाला गुलाब राय की पुत्री मन्ना देवी के साथ सम्पन्न हुआ। पंद्रह वर्ष की अवस्था में परिवार से सलाह करके वे सपरिवार जगन्नाथ धाम की यात्रा पर निकल पड़े। यह यात्रा विद्यालयी शिक्षा में एक ओर तो बाधा बनी पर दूसरी ओर उसने अनेक प्रकार के नए अनुभवों के द्वार खोल दिए।

डॉ. रामविलास शर्मा के शब्द हैं, 'भारतेंदु की यात्रा सिर्फ शौकीनों की यात्रा न थी। यह उनकी शिक्षा का आवश्यक अंग था। यात्रा में उन्हें काफी कष्ट उठाने पड़ते थे।' इस यात्रा में उनका परिचय बंगाल की नवीन साहित्यिक प्रगति से हुआ। इस प्रकार समय के साथ-साथ भारतेंदु के व्यक्तित्व में अनेक गुणों का विकास होता गया।

धनवान पिता के पुत्र हरिश्चंद्र का विवाह धनवान परिवार की कन्या से अवश्य हो गया था परंतु पत्नी से उनका मन कभी न मिला। दो संतानें - एक पुत्र बृजरत्नदास और पुत्री विद्यावती - भी हुए। पत्नी के अतिरिक्त भारतेंदु हरिश्चंद्र की दो प्रेमिकाएँ भी थीं। मल्लिका और माधवी। मल्लिका बंगाली भाषी कवयित्री थी और माधवी एक क्षत्रिय बाला जो बाद में मुस्लिम बन गई थी और जिसे भारतेंदु ने हिंदू रीति रिवाजों से शुद्ध कराकर अपने साथ रख लिया था। माधवी और मल्लिका से अपने स्नेह को उन्होंने कभी नहीं छिपाया। इतना ही नहीं उन्हें समय समय पर काव्य रचना की ओर प्रवृत्त भी किया और उनके बनाए पद्यों को अपने संग्रहों में समुचित स्थान दिया।

1880 ईस्वी में 'सार-सुधानिधि' नामक पत्रिका के माध्यम से पंडित रघुनाथ, सुधाकर द्विवेदी, रामेश्वर दत्त व्यास आदि के प्रस्तावानुसार हरिश्चंद्र को 'भारतेंदु' की पदवी से विभूषित किया गया। राजा शिवप्रसाद हिंदुस्तानी का समर्थन करने के कारण अंग्रेजों के कृपा-भाजन थे और उन्हें 'सितारेहिंद' (भारत के नक्षत्र) की सरकारी उपाधि मिली थी। 'सितारे' की तुलना में 'इंदु' अर्थात 'चंद्रमा' जनता के द्वारा हिंदी-सेवा के लिए दिया गया बड़ा उपहार था।

भारतेंदु का प्रादुर्भाव हिंदी के लोक-पक्ष की हिंदुस्तानी की सरकारी धुन पर विजय थी। हिंदी के रूप में राष्ट्रीयता का यह उदय-काल था। आचार्य शुक्ल के अनुसार, भारतेंदु ने अपनी पुस्तक 'कालचक्र' में लिखा था हिंदी नई चाल में ढली - 1873 ई.। 1884 में भारतेंदु की बलिया यात्रा एक प्रकार से उनकी अंतिम यात्रा सिद्ध हुई और लौटने पर वे कार्य भार और अन्य सांसरिक चिंताओं से अस्वस्थ रहने लगे। 6 जनवरी, 1885 को चौंतीस वर्ष चार महीने की अवस्था में उनका देहांत हो गया। अल्पायु में भारतेंदु ने देश और हिंदी भाषा तथा साहित्य की जो सेवा की, वह चिर स्मरणीय रहेगी।

भारतेंदु ने अपने बहुमुखी व्यक्तित्व के समस्त गुणों को अपने कृतित्व के माध्यम से अभिव्यक्त किया जिन्हें आज भी जब हम पढ़ते हैं तो उनके गौरवशाली व्यक्तित्व का चित्र हमारे मन पर चित्रित हो जाता है। हिंदी क्षेत्र में नवजागरण की पहली सशक्त साहित्यिक अभिव्यक्ति भारतेंदु हरिश्चंद्र के व्यक्तित्व में मिलती है। स्वदेशी की भावना और भारत राष्ट्र की धर्म-निरपेक्ष

परिकल्पना में भारतेंदु अपने समय से बहुत आगे हैं। टैक्स, महामारी, धन के विदेशों में चले जाते रहने के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। स्वदेशी और निजभाषा की उन्नति के लिए आग्रह करते हैं, पर संयम भाव से।

भारतेंदु के व्यक्तित्व की तीन बड़ी विशेषताएँ हैं - सत्यनिष्ठा, दानशीलता और वचनबद्धता। तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों तथा नवीन राष्ट्रीय चेतना आदि के प्रभावों के कारण उनमें देशभक्ति और राष्ट्रीयता की भावना भी कूट-कूट कर भर गई थी। उनका जीवन तथा व्यक्तित्व भी इन अनेक भावनाओं का परिपाक है। एक ओर देश में नव जागरण और दूसरी ओर राजभक्ति और दरबारीपन दोनों उनके हृदय में नई चेतना भर रहे थे। उन्होंने अपने पूर्वजों के कुकर्मों को भी खुलकर प्रस्तुत किया और उनकी निंदा की।

भारतेंदु की बहुमुखी प्रतिभा और उनके गुणों की सभी प्रशंसा करते हैं। उनके जीवन के किसी भी पक्ष को देखा जाए तो उनकी संवेदनशीलता और पर-दुखकातरता प्रकट होती है। अपने इन गुणों के कारण वे धनी होने पर भी कुछ समय बाद अभावग्रस्त हो गए। डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त ने भारतेंदु के स्वभाव के बारे में लिखा है कि 'अपनी प्रिय जनता के लिए भारतेंदु जहाँ लखपति से कंगाल हो गए थे, वहाँ उन्होंने अपने नाम को भी घिसकर 'हरिश्चंद्र' से 'हरिचंद्र' बना डाला था परंतु अपनी स्वाभिमानी स्वभाव के कारण कभी अपने लिए किसी से सहायता नहीं माँगी।' भारतेंदु ने एक कवित्त द्वारा स्वयं अपना परिचय दिया है जिसकी कुछ पंक्तियाँ आप यहाँ पढ़ें और संपूर्ण कवित्त अवश्य पढ़ें क्योंकि इसके बिना भारतेंदु का जीवन-वृत्त अधूरा रहेगा।

सेवक गुनीजन के, चाकर चतुर के हैं,
कविन के मीत, चित हित गुनगानी के।
सीधन सों सीधे, महाबाँके हम बाँकन सों।
'हरिचन्द' नगद दामाद अभिमानी के॥

ऐसी पंक्तियों को पढ़कर कौन विजयदेव नारायण साही की तरह न कह देगा? 'भारतेंदु आधुनिक हिंदी साहित्य के बाबा हैं।'

भारतेंदु की चार व्यक्तिगत इच्छाएँ थीं - कृष्ण भगवान का मंदिर अपने बगीचे में बनवाना, धार्मिक उत्सवों के लिए विदेश यात्राएँ करना, हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना करना, पश्चिमोत्तर में भारतीय शिल्पकला का कॉलेज स्थापित करना। भारतेंदु का व्यक्तित्व और उनका निजी जीवन और उनकी इच्छाएँ उनके आर्थिक अभाव और अल्पायु में मृत्यु हो जाने के कारण पूरे न हो सके।

इस प्रकार भारतेंदु के व्यक्तित्व में एक ओर तो अभिजात्य संस्कार थे तो दूसरी ओर वे

आम आदमी के साथ तादात्म्य स्थापित करने की क्षमता भी रखते थे। वे विशिष्ट और सामान्य दोनों एक साथ थे। राजभक्त और देशभक्त, सनातनी और आडंबर विरोधी, परंपरावादी वैष्णव और आधुनिक एक साथ। राजभक्ति उन्हें संस्कारों में मिली थी और सामाजिक परिस्थितियों ने इनमें देश भक्ति की भावना को अंकुरित किया था। भारतेंदु ने समाज और साहित्य की आवश्यकताओं को पहचाना और उन्हें अपने छोटे से जीवन काल में ही पूरा भी किया। उनके चंद्रमा के समान लोकप्रिय व्यक्तित्व के आकर्षण का कारण यह भी था कि उन्होंने कभी अपने तथाकथित 'कलंक' और दोषों को कभी छिपाया नहीं। धन का अपव्यय करते हुए वे एक बार कह उठे थे, 'इस धन ने मेरे पूर्वजों को खाया है, अब मैं इसे खाऊँगा।

बोध प्रश्न

- धनी परिवार में जन्म लेने पर भी बालक हरिश्चंद्र को बचपन में किन बातों का दुख था?
- जगन्नाथ धाम की यात्रा का हरिश्चंद्र के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में क्या योगदान है?
- भारतेंदु के व्यक्तित्व की कुछ विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
- भारतेंदु की चार इच्छाएँ कौन सी हैं जो पूरी न हो सकीं?

1.3.2 रचना यात्रा

भारतेंदु हरिश्चंद्र एक ऐसे लेखक थे जिनकी अल्पायु में मृत्यु अवश्य हो गई थी पर उन्होंने अपनी लेखनी से विपुल मात्रा में अनेक विधाओं में लिख कर हिंदी के साहित्य कोश में अभिवृद्धि की। आचार्य शुक्ल जी के अनुसार 'उन्होंने एक ओर तो हिंदी साहित्य की नवीन गति के प्रवर्तन में योगदान दिया, दूसरी ओर पुरानी परिपाटी की रचना के साथ भी अपना पूरा संबंध बनाए रखा।' अपने समय की परिस्थितियों, घटनाओं पर जम कर लिखा।

भारतेंदु ने समाज और साहित्य दोनों के लिए अतुलनीय योगदान दिया। उन्होंने तीन पत्रिकाएँ निकालीं - सन 1868 में 'कवि-वचन-सुधा', सन 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' (बाद में 'हरिश्चंद्र चंद्रिका') और सन 1874 में 'बाला बोधिनी'। इसके अतिरिक्त इनके चारों ओर लेखकों और कवियों का एक मंडल तैयार हो गया था जिसमें उस युग के प्रसिद्ध साहित्यकारों जैसे बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, अंबिका दत्त व्यास, राधाकृष्ण गोस्वामी, जगमोहन सिंह और लाला श्रीनिवासदास के नाम प्रमुख हैं। भारतेंदु ने 'पेनी रीडिंग' नाम से एक गोष्ठी स्थापित की और 'तदीय समाज' के नाम से एक सभा की स्थापना की। शिक्षा के प्रसार के लिए 'चौखम्भा स्कूल' खोला जो आजकल 'हरिश्चंद्र डिग्री कॉलेज' कहा जाता है।

भारतेंदु ने अनेक भारतीय नगरों की यात्राएँ की जो उनके लिए लाभकारी रहा। इन यात्राओं में दिए गए व्याख्यानों से हिंदी की चहुँमुखी उन्नति हुई। बलिया वाला व्याख्यान 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है' तो जग-प्रसिद्ध है ही। भारतेंदु के लिए उन्नति में निज

भाषा का 'सुधार' और 'प्रगति' या 'विकास' दोनों ही सम्मिलित हैं।

बोध प्रश्न

- भारतेंदु ने कौन सी तीन पत्रिकाएँ निकालीं?
- भारतेंदु मंडल के चार प्रमुख साहित्यकारों के नाम लिखिए।
- भारतेंदु के अनुसार भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?

1.3.3 रचनाओं का परिचय

भारतेंदु के रचनाकार-व्यक्तित्व को प्रस्तुत करना कठिन है। वे हृदय से कवि हैं और उनकी कविता ब्रजभाषा में है। यही नहीं अधिकतर भक्ति संस्कारों और रीतिकालीन भंगिमा से युक्त है। कुछ कविताएँ खड़ी बोली में भी हैं। नाटकों में तो उनका मन रमा ही है। भारतेंदु की अभिव्यक्ति व्यवस्था के दो प्रमुख पक्ष हैं। विचार और आंदोलन के लिए खड़ी बोली गद्य का प्रयोग और संस्कार रचना तथा पद्य के लिए प्रायः ब्रजभाषा के प्रयोग का आग्रह।

भारतेंदु के व्यक्तित्व के समान ही उनका कृतित्व भी बहुल और विविधता गुणयुक्त है। अपनी विलक्षण मेधा और उर्वर लेखनी से दस-बीस वर्षों में ही आपने इतने ग्रंथों की रचना की है कि आप आश्चर्य से भर जाएँगे। विद्वान अध्येता उनकी रचनाओं को भाव और विषयानुसार चार भागों में विभाजित करते हैं - भक्ति-प्रधान, शृंगार प्रधान, देश-प्रेम की भावना प्रधान और सामाजिक समस्या प्रधान।

भारतेंदु के जीवन और साहित्य सर्जना के दो सिद्धांत वाक्य थे, 'स्वत्व निज भारत गहै' और 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।' भारत अपना स्वत्व ग्रहण करे और मातृभाषा हिंदी का सर्वांगीण विकास हो, वह नए रूप में ढले। भारतेंदु की धारणा के अनुसार सन 1873 में 'हिंदी नई चाल में ढली'। यह 'चाल' शिल्प और संवेदना की दृष्टि से एकदम अनोखी और नवीन थी। खड़ी बोली गद्य में हिंदी की यात्रा जातीय संवेदना से अनुप्राणित होकर प्रारंभ हुई थी जिसे भारतेंदु और उनके समकालीन रचनाकारों ने अपनी साहित्य साधना से अपेक्षित गति प्रदान की।

भारतेंदु हरिश्चंद्र की काव्य-कृतियों के संख्या 70 बताई जाती है। इनका संकलन काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा 'भारतेंदु ग्रंथावली-भाग 2' में किया गया है। इन काव्य ग्रन्थों की सूची की नामावली इस प्रकार है - भक्त सर्वस्व, प्रेम मालिका, कार्तिक स्नान, वैशाख महात्म्य, प्रेम सरोवर, प्रेमाश्रुवर्षण, जैन कुतूहल, प्रेम माधुरी, प्रेम तरंग, उत्तरार्ध भक्तमाल, प्रेमप्रलाप, गीत गोविंदानंद, सतसई शृंगार, होली, मधु मुकुल, राग संग्रह, वर्षा-विनोद, विनय प्रेम पचासा, फूलों का गुच्छा, प्रेम फुलवारी, कृष्ण चरित, श्री अलवरत वर्णन, श्री राजकुमार सुस्वागत पत्र, सुमनावली, प्रिंस ऑफ वेल्स के पीड़ित होने पर कविता, देवी छदय प्रताप, प्रातः

स्मरण मंगल पाठ, चतुरंग, तन्मय लीला, दैन्य प्रताप, उरेहना, दानलीला, रानी छद्म लीला, संस्कृत लावणी, बसंत होली।

भारतेंदु ने मूल संस्कृत, बंगला और अँग्रेजी से अनुवाद को मिलाकर कुल सत्रह नाटक रचे। 'नाटक' (1883) शीर्षक से एक लंबा निबंध भी लिखा जो हिंदी आलोचना की आधारशिला कहा जा सकता है। मौलिक नाटकों में विषय, नाट्य रूप, ऐतिहासिक विकासक्रम प्रत्येक दृष्टि से ताजगी है। इनमें से 'अंधेर नगरी'(1881) सरल शैली में लिखा गया तीखा व्यंग्य है। जोनाथन स्विफ्ट की अंग्रेजी रचना 'गलिवर्स ट्रेवल्स' के समान इसमें अर्थ की परतें अनेक स्तरों पर खुलती हैं। शासन सत्ता का अंधापन और अंधेर इस नाटक का प्रमुख उपजीव्य है। उन्होंने बांग्ला के नाटकों का अनुवाद भी किया जिनमें धनंजय विजय, विद्या सुंदर, पाखंड विडंबन तथा मुद्राराक्षस आदि प्रमुख हैं। वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, श्री चंद्रावली, भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी, नील देवी आदि उनके मौलिक नाटक हैं।

भारतेंदु की कुछ रचनाएँ उनकी राजभक्ति की ओर संकेत करती हैं। भारतेंदु के व्यक्तित्व में द्वैत तब परिलक्षित होता है जब आप उनकी रचनाओं का गंभीर पाठ करते हैं। वे ऐसे भक्त थे जिनकी पैनी दृष्टि तत्कालीन राजनीति पर केंद्रित थी। रामस्वरूप चतुर्वेदी 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' में लिखते हैं - ब्रिटिश शासन के युग में पराधीनता जितनी गहरी होती गई अपनी अस्मिता का बोध उतना ही तीव्र हुआ। 'हिंदुस्तान का मेवा - फूट और बैर' कहकर वे 'अंधेर नगरी' नाटक में भारतीयों को चेताते हैं। महारानी विक्टोरिया के कल्याण की कामना अवश्य करते हैं, पर 1857 के स्वतंत्रता-संग्राम के प्रति भी आकृष्ट होते हैं, पर कुछ भयभीत होकर - जिन भय सिर न हिलाय सकत कहूँ भारतवासी। स्वतंत्र अभिव्यक्ति की तड़प और विदेशी राज में देशवासियों की विवशता का संकेत शासन की वक्र दृष्टि से बचने के लिए है। 1882 में अंग्रेजों की मिश्र देश में विजय पर भारतेंदु ने 'विजयिनी-विजय-पताका' कविता लिखी थी। उन्हें अंग्रेज़ और अंग्रेज़ी दोनों से शिकायत है और वे कटाक्ष करना नहीं भूलते –

अंग्रेज़ राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन बिदेश चलि जात इहै अति ख़्वारी॥

और अंग्रेज़ी के लिए वह मुकरी जिसमें वे अंग्रेज़ी में 'भीतर तत्व न झूठी तेज़ी' कहकर उपहास करते हैं, क्या कोई भूल सकता है?

भारतेंदु हरिश्चंद्र के कृतित्व पर दो दृष्टियों से विचार किया जा सकता है- एक गद्य भाषा के स्वरूप के प्रतिष्ठापक के रूप में और दूसरे आधुनिक साहित्य परंपरा के प्रवर्तक के रूप में। भारतेंदु की कृतियों की विशेषताओं के आधार पर उनके कृतित्व के कुछ गुणों को निम्नवत प्रस्तुत

किया जा सकता है -

देश तथा जाति प्रेम - भारतेंदु जातीय कवि हैं जिन्हें सदा हिंदी, हिंदू और हिंदुस्तान का ध्यान रहता था। उनकी रचनाओं में अपने देश का गौरव, तत्कालीन दीन अवस्था और भविष्य के सपने सर्वत्र हैं।

हिंदी गद्य और नाटक के जन्मदाता - भारतेंदु से कुछ वर्ष पहले सैयद इंशा अल्लाह खाँ, लल्लू लाल, सदल मिश्र और राजा शिव प्रसाद आदि गद्य लेखक हुए किंतु या तो वे लल्लू लाल की तरह ब्रजभाषा मिश्रित पद्य का अधिक प्रयोग करते थे या शिव प्रसाद की तरह अरबी-फारसी के शब्दों का अधिक प्रयोग करते थे।

भारतेंदु ने गद्य को अनिश्चितता से निकाल कर उसे निश्चित रूप दिया। इसलिए उन्हें आधुनिक हिंदी गद्य का जन्मदाता कहा जाता है। हिंदी में नाट्य साहित्य की नीव भी भारतेंदु ने ही डाली थी। उनके पिता गोपाल चंद्र ने 'नहुष नाटक' लिखा अवश्य था पर वह ब्रजभाषा में था। इसके बाद लक्ष्मण सिंह ने अनुवाद किए। भारतेंदु ने पहली भर हिंदी के पाठकों को नाटक और नाटक पर सैद्धांतिक विवेचन प्रस्तुत किया।

भाषा की परिष्कृति - भारतेंदु ने प्राचीन प्रचलित ब्रजभाषा के स्थान पर हिंदी को नई चाल में ढाला। भाषा की नई शैली, नए शब्दों और नए मुहावरों का प्रकाशन किया। पद्य को ब्रजभाषा में ही रखकर गद्य को उन्होंने बोलचाल की खड़ी बोली में ही रखा।

विविध विषय प्रतिपादिकता - भारतेंदु विविध विषयों और विधाओं का समयानुसार प्रयोग करते थे। कविता में वे अन्य कवियों के समान भक्ति और शृंगार तक ही सीमित न रहे बल्कि प्रेम, भक्ति, प्रकृति वर्णन, स्वदेश प्रेम, इतिहास, संस्कृति आदि अनेक विषयों पर और हास्य, वीर, वीभत्स तथा करुणा आदि रसों से युक्त कविता करते थे। हास्य, विनोद, प्रहसन और कटाक्ष के चित्रण में भारतेंदु की कुशलता की दाद देनी होगी।

कहा जा सकता है कि हिंदी में उस समय जिस बात की कमी उन्हें दिखाई दी वह उन्होंने पूरी की। गद्य लेखन-शैली निश्चित की, नाट्य साहित्य की नीव डाली, भाषा का संशोधन किया, और हिंदी-भाषा को विविध विषयों तथा नए भावों से समृद्ध किया तथा हिंदी में हास्य रस की कमी को यथा संभव दूर किया। धर्म, भारत की गौरवमयी संस्कृति, भीतरी कलह का दुख, देशभक्ति, समाजसुधार, राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता के लिए आग्रह आदि भारतेंदु में हैं। अपने समय के अनेक लेखकों को विभिन्न प्रकार से प्रेरित करते हुए उन्होंने कल्पवृक्ष के समान छाया और मनोवांछित आश्रय दिया। भारतेंदु हिंदी साहित्य के नवरत्नों में स्थान पाने योग्य हैं। 'भारतेंदु' की उपाधि नोबेल पुरस्कार से बढ़कर रही। 1950 में भारतेंदु की जन्मशती के अवसर पर उनके समान ही स्वाभिमानी कवि निराला ने कहा था, 'मैं उनके दरबार का दरबान मात्र हूँ।"

बोध प्रश्न

- भारतेंदु की रचनाओं को भाव और विषयानुसार विभाजित कीजिए।
- 'भारतेंदु की राजभक्ति' से क्या तात्पर्य है?
- भारतेंदु के कृतित्व के चार गुण बताइए।
- भारतेंदु ने हिंदी भाषा के विकास के लिए क्या-क्या कदम उठाए?

1.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान और महत्व

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य भाग से हिंदी नई चाल में ही नहीं ढली कविता ने भी एक नया मोड़ लेती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म एक ऐसे वर्ष में हुआ जब एक ओर तो रीति-काल समाप्त होता है और एक नया युग - आधुनिक युग - का प्रारंभ होता है। भारतेंदु इसी से आधुनिक युग के जनक कहलाते हैं। इस शताब्दी के उत्तरार्ध में राजनीति, धर्म, विज्ञान, शिक्षा, समाज, सभी क्षेत्रों में आंदोलन और नवजागरण के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं। इसी काल में 1857 का स्वतंत्रता संग्राम हुआ, इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई, आर्य-समाज की नींव पड़ी, रेल-तार-डाक और सड़कों का जाल बिछा, विश्वविद्यालय खुले, विधवा विवाह, बाल विवाह, वृद्ध विवाह और स्त्री-शिक्षा की समस्याओं पर गंभीरता से विचार-विमर्श हुआ। इन परिस्थितियों का प्रभाव उस युग के कवियों की रचनाओं पर पड़ा। देश में नवीन चेतना व्याप्त हो रही थी। कविता की भाषा अभी मुख्य रूप से ब्रज ही रही पर उस युग के गद्य ने खड़ी बोली को स्वीकार करना प्रारम्भ कर दिया था। खड़ी बोली में पद्य लिखने का स्फुट प्रयत्न स्वयं भारतेंदु ने भी किया।

भारतेंदु के वृहत साहित्यिक योगदान के कारण ही 1857 से 1900 तक के काल को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, भारतेंदु अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा के बल से एक ओर तो पद्माकर और द्विजदेव की परंपरा में दिखाई पड़ते थे, तो दूसरी ओर बंग देश के माइकेल मधुसूदन दत्त और हेमचंद्र की श्रेणी में। प्राचीन और नवीन का सुंदर सामंजस्य भारतेंदु की कला का विशेष माधुर्य है। डॉ. तारकनाथ बाली ने 'हिंदी साहित्य का आधुनिक इतिहास' में विद्वत्तापूर्ण टिप्पणी करते हुए लिखा है कि "भारतेंदु हरिश्चंद्र के सामने एक ओर तो परंपरा थी, जिसमें श्रेयस्कर तत्व भी थे और लोक विरोधी रूढ़ियाँ तथा अंधविश्वास भी थे। इसके अतिरिक्त उनकी दृष्टि प्रधान रूप से अपने समकालीन समाज की दुर्दशा भी थी, जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शोषण और राष्ट्र-विरोधी नीतियाँ भी थीं। परंपरा से उन्हें दर्शन, भक्ति और शृंगार आदि का विपुल साहित्य प्राप्त हुआ तथा सती प्रथा, विधवाओं की दुर्दशा आदि कुप्रथाओं का भी सामना करना पड़ा। उनकी कविता में प्रायः इन सभी विषयों को उजागर किया गया है।"

भारतेंदु का विपुल सृजनात्मक लेखन तो है ही उल्लेखनीय, उनका दूसरा सबसे बड़ा योगदान हिंदी भाषा को नई चाल में ढालने का भी रहा। उनसे पहले राजा लक्ष्मण सिंह की संस्कृतनिष्ठ हिंदी और राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' की फारसीनिष्ठ शैली का बोलबाला था। भारतेंदु ने मध्यम मार्ग चुना और इन दोनों प्रवृत्तियों का मेल करके भाषा के उस रूप को प्रचारित किया जिसमें संस्कृत और अरबी-फारसी के शब्द प्रयोग में संतुलन आता चला गया। नई चाल में ढली यही हिंदी बाद में प्रेमचंद आदि के द्वारा परवान चढ़ी। वे गद्य खड़ी बोली में लिखते थे लेकिन कविता के लिए उन्होंने ब्रज भाषा को चुना था। उर्दू में भी आपने 'रसा' उपनाम से कुछ लेखन किया। इस प्रवृत्ति को 'भाषा का द्वैध' कहा गया जो इनके बाद दो दशक तक चलता रहा और जिसे महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके गुरुत्व से प्रेरित कवियों के अनथक प्रयासों से 1900 में खड़ी बोली के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी भाषा और साहित्य को एक नई दिशा दी। साहित्य में नई विधाओं का प्रणयन किया। काव्य में विविध विषयों का समावेश किया। सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर काव्य रचना की। भारतेंदु युग के आगमन से पूर्व 1857 का स्वाधीनता संग्राम हो चुका था। विदेशी शासन से जनता दुखी थी। साहित्य में राजनीतिक, सामाजिक समस्याओं को स्थान देकर जनता में जन-जागरण लाने का कार्य शुरू किया गया। भारतेंदु के प्रभाव से तत्कालीन सभी कवियों में देश-प्रेम एवं भाषा-प्रेम बढ़ा। कवियों ने पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। कविता में राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया गया। भारतेंदु के परवर्ती साहित्यकारों ने उनके द्वारा अधूरे छोड़े कार्यों को पूरा करने का प्रयत्न किया।

भारतेंदु युग पर एक महत्वपूर्ण कृति के लेखक और प्रख्यात आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा का मत है - भारतेंदु एक विशाल आंदोलन के केंद्र थे। वह दूसरों को एक सहकारी की भाँति उत्साहित करते थे। उन्होंने वे विषय दिए जिन पर वह ग्राम गीत लिखना आवश्यक समझते थे। भारतेंदु देश के राजनीतिक आंदोलन की बहुत सी बातें पहले ही सोच चुके थे। समाज सुधार से लेकर स्वदेशी आंदोलन तक उनकी दृष्टि गई थी। वे देश की जनता में एक नई चेतना जगाना चाहते थे जो प्रत्येक क्षेत्र में उसे सजग रखे। (भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा, 1943, पृष्ठ 13-14)।

विश्वभर मानव के शब्दों में भारतेंदु के व्यक्तित्व और काव्य की महत्ता यह है कि प्राचीन को आत्मसात करके उन्होंने नवीन की सृष्टि की। डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय के अनुसार प्राचीन से नवीन के संक्रमण काल में भारतवासियों की नवोदित आकांक्षाओं और राष्ट्रीयता के प्रतीक थे; वे भारतीय नवोत्थान के अग्रदूत थे। उनके राधा-कृष्ण संबंधी पदों और प्रेम-संबंधी कवित्त-सवैयों से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि वे भक्ति और रीतिकाल दोनों योगों के सपने एक साथ देखते थे। साथ ही राष्ट्रीयता, समाज-सुधार और हास्य-व्यंग्य पर लेखनी चलाने के कारण वे नवयुग के

जन्मदाता भी सिद्ध हुए। हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए उन्होंने जीवन भर अथक प्रयत्न किया। वे भाषा-प्रेमी, भाषा-प्रचारक और भाषा-उन्नायक थे। इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के भारतेंदु अकेले महाकवि हैं। किशोरीलाल गुप्त का कहना सही है कि भारतेंदु उन महाकवियों में हैं जो अपनी पूर्व परंपरा पर चलते हुए अपनी भी एक परंपरा छोड़ जाते हैं। जैसा कि डॉ. योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण' ने लिखा है -

> "भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र प्राचीन रूढ़ियों और रुग्ण परंपराओं से निरंतर जूझकर जिस आधुनिकता, लोकधर्मिता और सबसे बढ़कर अदम्य जन चेतना को लेकर हिंदी साहित्य में सर्वथा नई और प्राणवान संस्कृति के संवाहक बने उसने उन्हें कालजयी बना दिया है। 'कामायनी' के प्रणेता महाकवि जयशंकर प्रसाद ने तो भारतेंदु हरिश्चंद्र को ही आधुनिकता और यथार्थवाद का प्रवर्तक माना है।" (गगनांचल, भारतेंदु विशेषांक, जुलाई-अक्टूबर 2013)।

बोध प्रश्न

- भारतेंदु युग से क्या तात्पर्य है?
- भारतेंदु की कविता और नाटकों के प्रमुख चार विषय कौन से हैं?
- 'भारतेंदु की देश-भक्ति' से क्या तात्पर्य है?

विवेचनात्मक टिप्पणी

प्रिय छात्रो! भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन और कार्यों के बारे में पढ़कर अब तक आप यह समझ चुके होंगे कि वे हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के प्रवर्तक और हिंदी नवजागरण के सूत्रधार थे। जैसा कि आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है -

> "ये केवल चौंतीस वर्षा और चार महीने जीवित रहे। .... इतने अल्पकाल में शायद ही किसी अन्य व्यक्ति ने इतना बड़ा साहित्यिक कार्य किया हो। इनकी अपूर्व प्रतिभा ने भाषा और साहित्य दोनों पर प्रभाव डाला। सिर्फ पंद्रह वर्ष की अवस्था में अपने परिवार के साथ ये जगन्नाथ धाम गए। इस यात्रा में इनका परिचय बंगाल के उगते हुए साहित्य से हुआ।... इस नई जागृति को देखकर भारतेंदु बहुत प्रभावित हुए; और हिंदी में नवयुग का आरंभ नहीं हुआ है, ऐसा अनुभव करने लगे।" (हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, पृ. 208)

हिंदी साहित्य में नए युग का सूत्रपात तभी संभव था जब साहित्य को रीतिकालीन दरबारी संस्कृति से मुक्त करके आम जन गण के व्यापक सुख-दुख से जोड़ा जा सकता। भारतेंदु ने सजगतापूर्वक यह कार्य करके दिखाया।

छात्रो! 'आधुनिकता' के दो लक्षण माने जाते हैं - 1. मध्यकाल से भिन्नता और 2. नवीन इहलौकिक दृष्टिकोण। रीतिकाल में हिंदी साहित्य घोर शृंगारिकता में डूब चुका था। एक ही विषय को बार-बार दुहराया जा रहा था। परलोकवादी दृष्टि की प्रबलता के कारण पुनर्जन्म और

भाग्यवाद इतने हावी हो चुके थे कि देश अकर्मण्यता के अंधे कुएँ में घिरा जा रहा था। लोग गुलामी को भी ईश्वर की इच्छा और भाग्य का लेखा मानने लगे थे। ऐसी स्थिति में समाज और साहित्य दोनों ही में आधुनिक दृष्टिकोण की स्थापना के लिए नवजागरण जरूरी था। समूचे हिंदी क्षेत्र में इसे प्रसारित करने का बीड़ा भारतेंदु ने उठाया। इसके लिए जनता तक पहुँचने की नई युक्ति का सहारा लेना जरूरी थी। और यह नई युक्ति थी पत्रकारिता। जगन्नाथ धाम से लौटने के बाद भारतेंदु ने हिंदी नवजागरण के अपने किशोर स्वप्न को साकार करने के लिए पत्रकारिता का सहारा लिया और साहित्य को व्यापक जनता के साथ जोड़ा। यथा -

> "घर लौटकर केवल सत्रह वर्ष की अवस्था में उन्होंने 'कविवचन सुधा' नामक की एक पत्रिका निकाली। पहले तो इसमें केवल प्राचीन कवियों की कविताएँ छपा करती थीं, किंतु बाद में गद्य लेख भी रहने लगे। सन् 1873 ई. में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' नाम की दूसरी पत्रिका निकाली। आठ संख्याओं (अंकों) के बाद पत्रिका का नाम बदलकर 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' कर दिया गया। इस चंद्रिका में हरिश्चंद्र की परिमार्जित हिंदी का प्रथम दर्शन हुआ।" (हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, पृ. 208)

भारतेंदु के संबंध में यह बात भी ध्यान खींचती है कि उनका परिवार अपनी राजभक्ति के लिए ब्रिटिश राज द्वारा प्रशंशित था, लेकिन उन्होंने स्वयं राजभक्ति से आगे निकलकर राष्ट्र भक्ति का मार्ग अपनाया। उन्होंने हिंदी भाषी जनता को अशिक्षा, अज्ञान, अपौरुष, अकर्मण्यता और आत्महीनता के अंधकार से निकालने के लिए स्वभाषा और स्वदेशी को अपनाने का ऐसा मंत्र दिया जिसने उस काल के युवकों के मन में स्वतंत्रता की चेतना जगाने का काम किया। यथा -

> "भारतेंदु हरिश्चंद्र ने एक ओर 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से उत्पन्न राष्ट्रीय चेतना को प्रखर अभिव्यक्ति दी। और ब्रिटिश राज के शोषण व दमन चक्र से जनता को परिचित कराते हुए उसे स्वदेश, स्वभाषा और स्वतंत्रता का संस्कार दिया। दूसरी ओर उन्होंने हिंदी साहित्य के तत्कालीन परिवेश को नेतृत्व प्रदान करते हुए... युगानुरूप नया तेवर दिया। ... यही कारण है कि साहित्य के इतिहासकारों ने हिंदी साहित्य के आधुनिक काल का प्रवर्तक तो माना ही, उसके प्रथम उत्थान का नामकरण भी उनके नाम पर किया है।" (कविता के पक्ष में, पृ.116)

1.4 पाठ सार

हिंदी साहित्य के पितामह भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885) को काव्यप्रतिभा अपने पिता गोपाल चंद्र से विरासत में मिली। अपने छोटे से जीवन में उन्होंने साहित्य सेवा के साथ-साथ

समाज सुधार और अन्य अपने मित्रों-साहित्यिकों की सहायता करते रहना अपना कर्तव्य समझा। भारतेंदु ने 70 काव्य ग्रंथों की रचना की और समाज-सुधार, राष्ट्र-प्रेम आदि नवीन विषयों को भी अपनाया। उनकी कविता शृंगार-रस प्रधान, भक्ति-रस प्रधान, सामाजिक समस्या प्रधान तथा राष्ट्र प्रेम प्रधान हैं। प्रकृति चित्रण में वे मानव-प्रकृति के प्रति अधिक आकर्षित रहे। भाषा शैली में ब्रज भाषा के साथ ही रीति कालीन रसपूर्ण अलंकार शैली का प्रयोग है। नाटक का प्रवर्तन किया। हिंदी गद्य को नई चाल में ढाला और निज भाषा हिंदी को सब उन्नति का मूल मानते हुए उसके विकास के लिए अनेक प्रयत्न किए। भारतेंदु का व्यक्तित्व और कृतित्व इतना प्रभावशाली रहा कि उनका युग 'भारतेंदु युग' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सुमित्रानंदन पंत ने इनके बारे में ठीक ही लिखा है -

भारतेंदु कर गए, भारती की वीणा निर्माण।
किया अमर स्पर्शों में, जिसका बहु विधि स्वर संधान॥

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र की जीवन गाथा बहुत छोटे समय में बहुत बड़ी उपलब्धियों की गाथा है।
2. भारतेंदु के साहित्यिक व्यक्तित्व के निर्माण में उनके जीवन-चर्या की केंद्रीय भूमिका है। उन्होंने अपनी सारी शक्ति भाषा और साहित्य के विविध रूपों को समृद्ध करने में लगाई।
3. भारतेंदु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनका अनुभव और अध्ययन बहुत गहन था। इसके प्रमाण उनके विभिन्न विधाओं के मौलिक और अनूदित साहित्य में देखे जा सकते हैं।
4. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने पीछे से चली आती साहित्य की मध्यकालीन परिपाटी को उलट दिया। तथा लेखन को आम जन-गण के साथ जोड़ा।
5. भारतेंदु हरिश्चंद्र का हिंदी साहित्य पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्हें आधुनिक काल के प्रवर्तन का श्रेय दिया गया।

1.6 शब्द संपदा

1. अनुप्राणित = प्रेरित, समर्पित
2. अभिजात्य = उच्च कुल (में जन्म लेने) के योग्य
3. अस्मिता = अहंभाव, अपनी सत्ता का भाव, आपा, अहंकार, अभिमान
4. आडंबर = दिखावा, अनावश्यक या दिखाऊ आयोजन
5. उपजीव्य = जिसके सहारे जीवन चलता हो
6. कटाक्ष = वक्र दृष्टि, तिरछी निगाह, व्यंग्य, ताना मारना
7. कुशाग्र = कुश की नोक के समान, अति तीक्ष्ण, नुकीला, बुद्धिमान

8. तादात्म्य = तल्लीनता, एक जान होना

9. परिलक्षित = अच्छी तरह देखा-भाला हुआ

10. प्रादुर्भाव = प्रकट होना, उत्पत्ति

11. भंगिमा = कलापूर्ण शारीरिक मुद्रा, अदा (जैसे अंग भंगिमा), कुटिलता, वक्रता (जैसे भाव भंगिमा)

12. मेधा = धारण शक्ति, बुद्धि

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

1.7.1 सही विकल्प चुनिए।

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म स्थान है –

(अ) काशी (आ) जबलपुर (इ) जयपुर (ई) पटना

2. भारतेंदु हरिश्चंद्र कृत 'नाटक' किस विधा की रचना है –

(अ) नाटक **(आ) निबंध** (इ) कहानी (ई) कविता

3. हिंदी गद्य और नाटक के जन्मदाता कौन है ?

(अ)महावीर प्रसाद द्विवेदी (आ) मैथिलीशरण गुप्त

(इ)लाला श्रीनिवास दास **(ई) भारतेंदु**

4. "मैं उनके दरबार का दरबान मात्र हूँ।" कथन किस साहित्यकार का है?

(अ) विजय देव नारायण साही **(आ) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला**

(इ) आचार्य रामचंद्र शुक्ल (ई) रामविलास शर्मा

5. 'हिंदी नई चाल में ढली।' यह कथन किस पुस्तक का है?

(अ) दिल्ली दरबार दर्पण (आ) नाटक **(इ) काल चक्र** (ई) सत्य हरिश्चंद्र

6. भारतेंदु का जन्म कब हुआ?

(अ) 1800 **(आ) 1850** (इ)1900 (ई)1958

7. 'बाला बोधिनी' पत्रिका के संपादक कौन हैं ?

(अ) भारतेंदु (आ) प्रतापनारायण मिश्र (इ)लाला श्रीनिवास दास (ई)राजा लक्ष्मण सिंह

8. 'अंधेरी नगरी' नाटक का प्रकाशन कब हुआ ?

(अ) 1800 (आ) 1850 **(इ)1881** (ई)1958

9. भारतेंदु के व्यक्तित्व की विशेषता है ?

(अ) सत्यनिष्ठा (आ) दानलीला (इ)वचन बद्धता **(ई)उपरोक्त सभी**

10. 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' यह पंक्ति किस लेखक हैं ?

(अ) विजय देव नारायण साही **(आ) भारतेंदु**

(इ) आचार्य रामचंद्र शुक्ल (ई) रामविलास शर्मा

खंड (ब)

1.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. भारतेंदु ने हिंदी के लिए जो कार्य किए उनमें से सबसे प्रमुख कौन से हैं और क्यों?
2. भारतेंदु ने अपने नाटकों में किन प्रमुख समस्याओं को रेखांकित किया?
3. भारतेंदु के 'भाषा-द्वैध' को स्पष्ट कीजिए।
4. भारतेंदु का पत्रकार-रूप पर टिप्पणी लिखिए।

खंड (क)

1.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र का जीवन परिचय और प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनके साहित्यिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
2. 'अपने देश में अपनी भाषा के माध्यम से उन्नति करो' कथन से क्या तात्पर्य है? वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. भारतेंदु की हिंदी सेवा पर एक सारगर्भित निबंध लिखिए।
4. "भारतेंदु के व्यक्तित्व और कृतित्व में राजभक्ति और देशभक्ति का समावेश और संतुलन है।" प्रमाण सहित विवेचन कीजिए।
5. हिंदी साहित्य के विकास में भारतेंदु के योगदान को सुनिश्चित कीजिए।
6. क्या भारतेंदु को 'आधुनिकता का अग्रदूत' कहा जा सकता है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र : ब्रजरत्नदास
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र : लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
3. भारतेंदु और अन्य सहयोगी कवि : किशोरी लाल गुप्त
4. भारतेंदु हरिश्चंद्र : रामविलास शर्मा
5. भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा : रामविलास शर्मा
6. भारतेंदु समग्र : सं. हेमंत शर्मा
7. कविता के पक्ष में : ऋषभदेव शर्मा एवं पूर्णिमा शर्मा

इकाई 2 : गंगा-यमुना : भारतेंदु हरिश्चंद्र

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 मूल पाठ : गंगा-यमुना : भारतेंदु हरिश्चंद्र

2.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

2.3.2 अध्येय कविता

2.3.3 विस्तृत व्याख्या

2.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

2.4 पाठ सार

2.5 पाठ की उपलब्धियाँ

2.6 शब्द संपदा

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आधुनिक हिंदी कविता की यह दूसरी इकाई है। पहली इकाई में भारतेंदु हरिश्चंद्र के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय आपने प्राप्त किया। आप यह जान चुके हैं कि हिंदी के गद्य और पद्य को नई चाल में ढालने का कार्य भारतेंदु ने किया। गद्य के लिए खड़ी बोली का प्रयोग करने के बावजूद उन्होंने ब्रज भाषा में काव्य रचना की और इसमें परंपरा का निर्वाह किया। इस इकाई में भारतेंदु द्वारा रचित दो प्रसिद्ध कविताएँ 'गंगा-यमुना' हैं। गंगा और यमुना नदियों के सौंदर्य का वर्णन करती ये कविताएँ उनके दो नाटकों का अंश हैं। भारतेंदु ने प्रचलित छंद विधान - कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा आदि का प्रयोग किया और यहाँ दिए जा रहे दो पद भी इसी परंपरा का पालन करते हैं।

भारतेंदु के प्रकृति वर्णन में वही प्रवृत्ति रही जो इस युग के अधिकांश कवियों की थी। जहाँ पूर्ववर्ती कवियों ने नायक-नायिकाओं के प्रेम-विरह आदि के लिए ही प्रकृति वर्णन किया, वहाँ अब प्रेम की सीमा से बाहर जीवन के विशाल क्षेत्र को ध्यान में रखकर प्रकृति वर्णन किया जाने लगा। देश दशा का वर्णन करने के निमित्त भारतेंदु होली-दिवाली त्योहारों का चित्रण करते हैं। विदेशी शासन द्वारा भारत में निष्क्रियता, निरीहता, अज्ञान का वातावरण बन गया था। भारतेंदु ने प्रकृति से उसे जोड़ कर देखा। कवि प्रकृति में अपने जीवन और समाज का अक्स

देखते हैं। प्रकृति को मानव-समाज के संपर्क के रूप में देखते हुए भारतेंदु के गंगा-यमुना के इन प्रसिद्ध वर्णनों में प्रकृति की सुषमा का उपयोग उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह आदि अलंकारों की सृष्टि के लिए हुआ है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई में आप भारतेंदु की दो कविताओं का अध्ययन करेंगे। स्मरण रहे ये दोनों कवितांश उनके दो अलग अलग नाटकों में आए हैं। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- निर्धारित काव्यांशों में निहित प्रकृति चित्रण की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।
- इन काव्यांशों में निहित भक्ति भावना को समझ सकेंगे।
- इन काव्यांशों के भाव सौंदर्य का आस्वादन कर सकेंगे।
- इन काव्यांशों की शिल्पगत विशेषता से परिचित हो सकेंगे।
- इन काव्यांशों में निहित पौराणिक और मिथकीय संदर्भों से अवगत हो सकेंगे।
- निर्धारित काव्यांशों की व्याख्या कर सकेंगे।

2.3 मूल पाठ : गंगा-यमुना : भारतेंदु हरिश्चंद्र

2.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित दो कविताओं का पाठ आप अब करने जा रहें हैं। एक में गंगा नदी की शोभा का वर्णन है। दूसरी कविता में यमुना नदी के सौंदर्य का वर्णन है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के कवि रूप की उनके नाटककार और हिंदी के उन्नायक साहित्यकार से बहुत भिन्नता है। कवि के रूप में वे आपको खड़ी बोली के स्थान पर ब्रज भाषा का प्रयोग अधिक करते दिखाई देंगे। इन दोनों काव्यांशों में अलंकारों की बहुलता, पौराणिक मिथकों का उल्लेख और वर्णन वैचित्र्य की प्रचुरता आपका मन मोह लेगी।

2.3.2 अध्येय कविता : गंगा-यमुना

1. गंगा-वर्णन

नव उज्ज्वल जलधार हार हीरक सी सोहति।
बिच-बिच छहरति बूंद मध्य मुक्ता मनि पोहति॥
लोल लहर लहि पवन एक पै इक इम आवत।
जिमि नर-गन मन बिबिध मनोरथ करत मिटावत॥
सुभग स्वर्ग सोपान सरिस सबके मन भावत।
दरसन मज्जन पान त्रिविध भय दूर मिटावत॥
श्रीहरि पद-नख-चंद्रकांत-मनि-द्रवित सुधारस।
ब्रह्म कमण्डल मंडन भव खंडन सुर सरबस॥
शिवसिर-मालति-माल भगीरथ नृपति पुण्यफल।

एरावत-गत गिरिपति-हिम-नग-कण्ठहार कल॥
सगर-सुवन सठ सहस पारस जल मात्र उधारन।
अगनित धारा रूप धारि सागर संचारन॥

2. यमुना- वर्णन

तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
झुके कूल सौं जल-परसन हित मानहु सुहाये॥
किधौं मुकुर में लखत उझकि सब निज-निज सोभा॥
कै प्रनवत जल जानि परम पावन फल लोभा॥
मनु आतप वारन तीर कौं, सिमिटि सबै छाये रहत॥
कै हरि सेवा हित नै रहे, निरखि नैन मन सुख लहत॥

निर्देश : इन काव्यांशों का सस्वर वाचन कीजिए।
इन काव्यांशों का मौन वाचन कीजिए।

2.3.3 विस्तृत व्याख्या

गंगा वर्णन

नव उज्ज्वल जलधार हार हीरक सी सोहति।
बिच-बिच छहरति बूंद मध्य मुक्ता मनि पोहति॥
लोल लहर लहि पवन एक पै इक इम आवत।
जिमि नर-गन मन बिबिध मनोरथ करत मिटावत॥
सुभग स्वर्ग सोपान सरिस सबके मन भावत।
दरसन मज्जन पान त्रिविध भय दूर मिटावत॥

शब्दार्थ : उज्ज्वल = चमकदार। सोहति = सुंदर लगती है। छहरति = बिखरना, छितरना। पोहति= पिरोना। लोल = कंपायमान, चंचल। लहि = प्राप्त होना, पहुँचना। जिमि = जिस प्रकार से। बिबिध = अनेक। सोपान = सीढ़ी, रास्ता, पथ। सरिस = के समान। दरसन = दर्शन। मज्जन= स्नान। पान = पीना, आचमन करना।

संदर्भ : प्रस्तुत पदयांश भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित सत्य विचार पर आधारित 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक का अंश है और गंगा छवि वर्णन के रूप में विख्यात है।

प्रसंग : भारतेंदु हरिश्चंद्र अपनी कवित्व शक्ति का परिचय देते हुए वाराणसी में गंगा नदी के सहज प्रवाह को कविता के शिल्प में प्रस्तुत करते हैं। इसके साथ ही गंगा माता के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा भक्ति को भी व्यक्त करते हैं।

व्याख्या : कवि ने गंगा नदी के जल प्रवाह के सौंदर्य पर मुग्ध होकर इन पंक्तियों के द्वारा उसका एक शब्द चित्र प्रस्तुत किया है। गंगा के जल की नवीन और जगमग जगमग करती धारा हीरे के हार के समान शोभायमान हो रही है। जल की अविरल धारा के बीच बीच में जल की बूंदें ऐसी

भली लग रहीं हैं जैसे जल की धारा में मणि-मोतियों को गूँथ दिया गया हो। जब जब कोई सुंदर लहर हवा के बहाव से जल की गति को बढ़ाते हुए एक दूसरे पर सवार होकर अठखेलियाँ करती है तो ऐसा प्रतीत होता है मानो मन में आते जाते विभिन्न भावों में उथल-पुथल हो रही हो। स्वर्ग की ओर जाने वाले सुंदर मार्ग को देखकर जैसा आनंद होता है वैसा ही यह लहरों का लहराना सबको आनंदित करता है। कवि का मत है कि इस शोभा के दर्शन से और दर्शन के उपरांत गंगा स्नान और गंगा-जल के आचमन से तीनों प्रकार के भयों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

काव्यगत विशेषता

'नव उज्जवल जलधार हार हीरक सी सोहति' पंक्ति में उपमा अलंकार की शोभा अपनी पूर्णता से है। यहाँ 'नव उज्जवन जलधार' उपमेय, 'हीरे का हार' उपमान, 'सोहति' साधर्म्य (क्रियारूप) और 'सी' वाचक शब्द है। उपमा के चारों अंगों के कथन से यहाँ पूर्णोपमा तो है ही, 'सी' वाचक के कारण श्रोती (श्रोती का अर्थ है श्रवण मात्र से ही) भी है। कमल सा मुख में जैसे 'कमल सा' सुनते ही तुरत जिज्ञासा होती है और 'मुख' सुनते ही वह शांत हो जाती है। इस पंक्ति में उपमेय-उपमान का संबंध स्वतः सिद्ध है। इस प्रकार यहाँ 'श्रोती पूर्णोपमा' अलंकार है। 'हार हीरक', 'बिच-बिच', 'मध्य-मुक्ता मणि' आदि शब्दों में एक ही वर्ण की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति हो रहे है, इसलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

त्रिविध भय - त्रिविध भय हैं (क) आध्यात्मिक - शरीर में रोग आदि (ख) आधिभौतिक- बाह्य वस्तुओं आदि से प्राप्त जैसे व्याघ्र चोर आदि (ग) आधिदैविक - प्रकृति के प्रकोप जैसे भूकंप तूफान आदि। विश्व का प्रत्येक जीव दुखी है। वह तीन प्रकार के तापों (दुखों) से तप रहा है। आध्यात्मिक (दैहिक - शारीरिक, मानसिक), आधिभौतिक (भौतिक), और आधिदैविक (दैविक)। रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड की एक अर्धाली है - दैहिक, दैविक, भौतिक तापा।

बोध प्रश्न

- गंगा जल की धारा को हीरे के हार के समान क्यों कहा गया है?
- गंगा को 'स्वर्ग सोपान' और 'त्रिविध भय हारी' से कवि किस ओर संकेत कर रहा है?

श्रीहरि पद-नख-चंद्रकांत-मनि-द्रवित सुधारस।
ब्रह्म कमण्डल मंडन भव खंडन सुर सरबस॥
शिवसिर-मालति-माल भगीरथ नृपति पुण्यफल।
एरावत-गत गिरिपति-हिम-नग-कण्ठहार कल॥
सगर-सुवन सठ सहस पारस जल मात्र उधारन।
अगनित धारा रूप धारि सागर संचारन॥

शब्दार्थ : द्रवित = बहना, भर जाना। सुर = देवता। मालति-माल = मालती (चमेली, मोगरा) के फूलों की माला। गिरिपति = हिमालय। हिम-नग = हिमालय। सहस = सहस्त्र। सुवन=पुत्र।

पारस = लोहे से सोना बनानेवाला एक कल्पित पत्थर, बहुत लाभदायक और उपयोगी वस्तु। उधारण = उद्धार करने वाला। सागर = समुद्र। संचारण = फैलना, फैलाना।

संदर्भ : प्रस्तुत पदयांश भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित सत्य विचार पर आधारित 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक के तीसरे अंक का अंश है और गंगा छवि वर्णन के रूप में विख्यात है।

प्रसंग : इन काव्य पंक्तियों में भारतेंदु ने प्रकृति वर्णन से एक पग आगे जाकर अपनी भक्ति भावना को भी अभिव्यक्ति दी है। यहाँ गंगा एक नदी मात्र न होकर धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से संपन्न पतित-पावनी 'गंगा मैया' हो गईं हैं।

व्याख्या : भारतेंदु गंगा की लहरों को देखकर उनके प्रति अपने आनंद की अभिव्यक्ति करने के पश्चात अपने वर्णन को आगे बढ़ाते हैं। वे अब उन धार्मिक, सांस्कृतिक और पौराणिक विश्वासों का उल्लेख करते हैं जो गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर उतार लाने के विषय में कहे जाते हैं। भगवान विष्णु के चंद्रकांत मणि के समान पैरों के नाखूनों से अमृत तुल्य जो जल निकला वह ब्रह्मा जी के कमंडल में समाकर समस्त देवी देवताओं के लिए उपलब्ध हुआ।

पृथ्वी पर जब सगर-पुत्रों के उद्धार के लिए राजा भगीरथ के अथक प्रयत्नों से गंगा का अवतरण हुआ तब उसके वेग को संभालने के लिए शंकर जी की जटा-जूटों में जा समाई। गंगा शिवजी की जटा में जा समाई। उसका वेग और प्रवाह कम हो गया। तदुपरांत भगीरथ गंगा को समतल भूमि की ओर ले गए। यहाँ सगर के साठ हजार मृत पुत्रों का इस जल के स्पर्श से पारस पत्थर के स्पर्श के समान उद्धार हुआ।

मानव-जाति के कल्याण के लिए अनवरत बहती स्वर्ग की नसैनी हिमालय पुत्री गंगा अनगिनत धारा प्रवाह से समस्त भारत को आप्लावित करके अंत में समुद्र में मिल जाती है। स्वर्ग से उतरी ऐसी पुण्य-सलिला गंगा नदी का सौंदर्य वर्णनातीत है अर्थात इसके अतीत और वर्तमान के सौंदर्य का वर्णन करना कठिन है।

काव्यगत विशेषता

इस काव्यांश में गंगावतरण की पृष्ठभूमि और मिथकीय प्रसंगों के उल्लेख से कवि ने वर्णन के सौंदर्य में अभिवृद्धि की है। कुछ प्रसंगों का विवरण इस प्रकार है।

चंद्रकांत मणि : सुश्रुत संहिता (45/27) में यह उल्लेख मिलता है कि इस मणि से चंद्र किरणों की उपस्थिति में उत्पन्न जल कीटाणुओं का नाश करके शीतलता प्रदान करता है।

ऐरावत : 'इरा' का अर्थ जल है, अत: इरावत (समुद्र) से उत्पन्न हाथी को ऐरावत नाम दिया गया है। समुद्रमंथन से प्राप्त 14 रत्नों में ऐरावत भी था। इसे शुक्लवर्ण और चार दाँतोंवाला बताया गया है। रत्नों के बँटवारे के समय इंद्र ने उक्त दिव्यगुणयुक्त हाथी को अपनी सवारी के लिए ले लिया था। इसलिए इसका इंद्रहस्ति अथवा इंद्रकुंजर नाम भी पड़ा।

सगर-सुवन : पौराणिक कथा के अनुसार माता गंगा श्री विष्णु जी के चरणों से अवतरित हुई। अपने पूर्वजों का उद्धार करने के लिए राजा दिलीप के पुत्र भगीरथ ने गंगा जी की कठिन तपस्या

की ताकि भगवान शिव माता गंगा को पृथ्वी पर उतारे। गंगा माता राजा भागीरथ के पीछे-पीछे कपिल मुनि के आश्रम में गई और उनका स्पर्श पाते ही भागीरथ के पूर्वजों यानि राजा सगर के 60 हजार भस्म हुए पुत्रों का उद्धार हुआ।

पारस : पारस पत्थर या स्पर्श मणि (तेलुगु-परुसवेदी) एक ऐसा काल्पनिक पत्थर है जिसके छूने से लोहा सोना बन जाता है।

बोध प्रश्न

- कवि ने प्रायः प्रत्येक पंक्ति में एक कथा का स्मरण किया है, इनमें से दो का एक एक वाक्य में उल्लेख कीजिए।
- यहाँ कवि की भक्ति भावना प्रबल है या प्रकृति चित्रण?

यमुना वर्णन

तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
झुके कूल सौं जल-परसन हित मनहु सुहाये॥
किधौं मुकुर में लखत उझकि सब निज-निज सोभा।
कै प्रनवत जल जानि परम पावन फल लोभा॥
मनु आतप वारन तीर कौं, सिमिटि सबै छाये रहत।
कै हरि सेवा हित नै रहे, निरखि नैन मन सुख लहत॥

शब्दार्थ : तरनि-तनूजा = सूर्यपुत्री यमुना। तमाल = एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष। कूल = किनारा। परसन = स्पर्श करने के लिए। सुहाये = शोभायमान हो। किंधौ = अथवा। मुकुर = दर्पण। लखत = देखना। उझकि = उचक कर। प्रनवत = प्रणाम करते हैं। आतप = धूप। वारन = निवारण करना। तीर = तट। निखि = देखकर नै रहे-झुक रहे हैं। लहत = प्राप्त करना।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित 'अविचल प्रेम' को प्रदर्शित करने वाले नाटक 'चंद्रावली नाटिका' से लिया गया है।

प्रसंग : प्रस्तुत पदयांश में भारतेंदु ने यमुना नदी के किनारे छाए हुए तमाल के अनेक वृक्षों का आलंकारिक भाषा में वर्णन किया है। इनको देखकर कवि के हृदय पटल पर अनेक छाया चित्र निर्मित हुए हैं। कवि भारतेंदु ने यमुना के जल पर पड़ने वाले चंद्रमा के प्रतिबिंब का वर्णन किया है। चंद्रमा का यह रूप कवि को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है जिसे देखकर कवि के मन में भिन्न-भिन्न प्रकार की कल्पनाएँ मुखर हो रहीं हैं।

व्याख्या : नदी के किनारे खड़े वृक्षों को देखकर कवि को ऐसा प्रतीत होता है जैसे तमाल के वृक्ष यमुना नदी को स्पर्श करना चाहते हों या फिर वे झुककर नदी के जल में अपना प्रतिबिंब देखना चाहते हों। कभी कभी कवि को लगता है मानो वे नदी के तट को धूप से बचाने के लिए उसे छाया प्रदान कर रहें हों या वे तट पर, कृष्ण को नमन करने और उनकी सेवा करने के लिए झुके हुए हों। कवि जब यमुना नदी के जल पर चंद्रमा के प्रतिबिंब को देखता है तो कभी उसे लहरों

पर सौ-सौ चंद्रमा दिखाई देते हैं। कभी वह उसे दूर जाकर अदृश्य होता हुआ अनुभूत होता है। कभी वह उसे जल में झूला झूलते हुए प्रतीत होता है तो कभी उसे उसमें बच्चे द्वारा उड़ाई गई पतंग की अनुभूति होती है।

कवि कह रहे हैं कि यमुना के किनारे की ओर झुके हुए तमाल के वृक्षों को देखकर ऐसा लग रहा है मानो तट को धूप-ताप से बचाने के लिए वे एक साथ सिमट कर उसे छाया प्रदान कर रहे हो या वे तट पर, कृष्ण को नमन करने एवं उनकी सेवा करने के लिए झुके हुए हों। उनके तट पर झुके होने का कारण कृष्ण का दर्शन पाना भी हो सकता है, जिनके दर्शन से मन एवं आँखों को अत्यधिक शीतलता एवं सुख मिलता है।

काव्यगत विशेषता

भारतेंदु के इस पद में कुछ ऐसा आकर्षण है कि पाठक भावविभोर हो जाता है। यह यमुना तट राधा-कृष्ण के दिव्य प्रेम का आधार है। यहीं तो शरद पूर्णिमा की रात महा रास हुआ था। यह तमाल उनकी लीला का प्रथम साक्षी है। जयदेव ने गीत-गोविंद के प्रथम श्लोक में लिखा है कि बादलों के उमड़ने-घुमड़ने से आकाश और सघन तमालों से भूमि पहले ही श्यामल हो रही थी कि रात घिर आयी। श्याम तमाल के फूलों की मादक गंध का वर्णन करते हुए जयदेव लिखते हैं, ऐसा लगता है मानो इसने कस्तूरी की गंध को अपने वश में कर लिया है। (मृगमद सौरभ रभस वशंवद नवदल माल तमाले)

प्रस्तुत पद में कवि ने अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है। 'तरनि तनुजा तट तमाल' में 'त' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार, 'सब निज-निज सोभा' में 'निज-निज' की पुनरावृत्ति के कारण पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार व 'मनु आतप वारन तीर कौं' में उत्प्रेक्षा अलंकार है। सम्पूर्ण पदयांश में मानवीकरण अलंकार की प्रतिष्ठा है। कवि ने ब्रज भाषा का प्रयोग करते हुए मुक्तक शैली में काव्य रचना की है। जल पर पड़ने वाली चंद्रमा की छाया का वर्णन करते हुए पदयांश में शृंगार रस की प्रधानता विद्यमान है। माधुर्य गुण और लक्षणा शब्दशक्ति भी काव्य में विद्यमान हैं। छंद : छप्पय है।

'अनुप्रास' शब्द के तीन खंड हैं - अनु+ प्र+ आस, अनु = वर्णनीय रसादि के अनुकूल, प्र= प्रकृष्ट, आस = वर्ण विन्यास, अर्थात अनुप्रास का अर्थ है वर्णनीय रसभावादि के अनुसार उत्कृष्ट वर्णों का विन्यास। इस अलंकार के अनेक भेद-प्रभेद हैं किंतु आप केवल इतना ही जान लें कि जिस काव्य पंक्ति में एक ही वर्ण की एक से अधिक बार आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। जैसे - तरणी तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाए - इस पंक्ति में 'त' व्यंजन का प्रयोग एक से अधिक बार हुआ है, इसलिए यहाँ 'अनुप्रास' अलंकार मानना होगा।

भुवनभास्कर सूर्य इसके पिता, मृत्यु के देवता यम इसके भाई और भगवान श्रीकृष्ण इसके पति स्वीकार्य किए गए हैं। जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ब्रज संस्कृति के जनक कहे जाते हैं, वहाँ यमुना

इसकी जननी मानी जाती है। इस प्रकार यह सच्चे अर्थों में ब्रजवासियों की माता है। अतः ब्रज में इसे यमुना मैया कहते हैं।

तमाल का वृक्ष : पंडित विद्या निवास मिश्र ने अपने एक ललित निबंध 'तमाल के झरोखे से' में लिखा है, "इसे पहचानते ही लगा था कि जाने कब से इसे पहचानता हूँ। काली कालिंदी को इसी ने अपनी घनी काली छाया से और काला भँवर बना दिया। इसी ने गोरी राधा के उज्जवल-नील प्यार की छाँह और सघन और आर्द्र कर दी। इसको मैं हर वसंत में झरते और झीने-झीने फूलों से भरते देखता हूँ। हर वर्षा में इसे सघन पत्र-जाल का छत्र बना देखता हूँ। इसकी छाँह में जो रसवर्षा होती है वह बाहर की रसवर्षा होती है वह बाहर की रसवर्षा से कहन अधिक जोरदार होती है। यह तमाल दोनों रसवर्षाओं से भीग-भीगकर सिहरता रहता है।"

बोध प्रश्न

- यमुना नदी के किनारे खड़े वृक्षों को देखकर कवि को क्या प्रतीत होता है?
- कवि को यमुना नदी के जल पर पड़े चंद्रमा के प्रतिबिंब को देखकर क्या अनुभूति होती है?
- पदयांश का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
- 'यमुना वर्णन' की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
- 'ससि' व 'नभ' शब्दों के दो दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।
- क्या आपको 'चंद्रावली' और 'तरणि-तनूजा' में कुछ अर्थ साम्य प्रतीत होता है? यदि हाँ तो वह क्या है?

2.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

भारतेंदु जी की यह विशेषता रही कि जहाँ उन्होंने ईश्वर भक्ति आदि प्राचीन विषयों पर कविता लिखी वहाँ उन्होंने समाज सुधार, राष्ट्र प्रेम आदि नवीन विषयों को भी अपनाया। भारतेंदु की रचनाओं में अंग्रेजी शासन का विरोध, स्वतंत्रता के लिए उद्दाम आकांक्षा और जातीय भावबोध की झलक मिलती है। विषय के अनुसार उनकी कविता शृंगार-प्रधान, भक्ति-प्रधान, सामाजिक समस्या प्रधान तथा राष्ट्र प्रेम प्रधान है। भारतेंदु जी ने शृंगार के संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों का सुंदर चित्रण किया है।

भारतेंदु जी कृष्ण के भक्त थे और पुष्टि मार्ग के मानने वाले थे। उनको कविता में सच्ची भक्ति भावना के दर्शन होते हैं। भारतेंदु ने अपने काव्य में अनेक सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों पर तीखे व्यंग्य किए। इनके काव्य में राष्ट्र-प्रेम भी भावना स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। प्रकृति चित्रण में भारतेंदु जी को अधिक सफलता नहीं मिली, क्योंकि वे मानव-प्रकृति के शिल्पी थे, बाह्य प्रकृति में उनका मन पूर्ण रूप से नहीं रम पाया। अतः उनके अधिकांश प्रकृति चित्रण में मानव हृदय को आकर्षित करने की शक्ति का अभाव है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (पृ. 565) में भारतेंदु के प्रकृति चित्रण में पुरानी परिपाटी को रेखांकित किया है। शुक्ल जी का मत है कि भारतेंदु प्रकृति को उद्दीपन के रूप में तथा अलंकारों के रूप में प्रस्तुत किया है। विशुद्ध प्रकृति का वर्णन बहुत कम हुआ है। वास्तव में भारतेंदु मानव प्रकृति के कवि थे, बाह्य प्रकृति की अनंतरूपता के साथ उनके हृदय का सामंजस्य नहीं पाया जाता। अपने नाटकों में दो स्थान पर उन्होंने जो प्राकृतिक वर्णन रखें हैं (जैसे सत्य हरिश्चंद्र में गंगा का वर्णन, चंद्रावली नाटिका में यमुना का वर्णन) वे केवल परंपरा का पालन मात्र करते हैं। उनके भीतर उनका हृदय नहीं पाया जाता।

इसके विपरीत शुक्ल जी के समकालीन गोपाल लाल खन्ना ने लिखा है कि 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक में जिस गंगा का और 'चंद्रावली' नाटिका में जिस यमुना का वर्णन किया गया है, वह वही है, जिस रूप में उन्होंने उनको देखा और जैसा भाव उनके हृदय में आया।

वन, नदी, पर्वत आदि के चित्रों द्वारा इन्होंने मनुष्य की कल्पना की मैल छाँट उसे स्वस्थ और स्वच्छ करने का भार अपने ऊपर नहीं लिया। इनकी रचनाओं में विशुद्ध प्राकृतिक वर्णनों का अभाव बराबर पाया जाता है। वस्तु वर्णन में इन्होंने मनुष्य की कृति ही की ओर अधिक रुचि दिखाई जैसे 'सत्य हरिश्चंद्र' के गंगा के इस वर्णन में। 'चंद्रावली' नाटिका में एक जगह यमुना के तट का वर्णन आया है। वह भी नियमानुगत और परंपराभुक्त (कान्वेंशनल) ही है। इसमें उपमाओं की भरमार इस बात को सूचित करती है कि कवि का ध्यान उल्लिखित प्राकृतिक वस्तुओं पर रमता नहीं था, हट-हट जाता था। (रामचंद्र शुक्ल, नागरीप्रचारिणी पत्रिका, अप्रैल 1911 ई.)

यहाँ यह कहना आवश्यक है कि गंगा और यमुना के संबंध में भारतेंदु की रचनाओं को केवल प्रकृति चित्रण के रूप में नहीं देखना चाहिए। इन कविताओं के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति के गौरव के प्रति पाठकों को आकर्षित किया है। इनमें निहित आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संदर्भ प्रकृति और पर्यावरण के प्रति भारतीय समाज में चले आ रहे आदर भाव को प्रकट करते हैं। दोहराना न होगा कि भारत में नदियों को माता के समान पूजनीय माना जाता है। यह पूज्यता का भाव आज फिर से जगाने की जरूरत है क्योंकि सांस्कृतिक परंपराओं को भूलकर लोगों ने नदियों के जल को इतना प्रदूषित कर दिया है कि अमृतवाहिनी कही जाने वाली नदियाँ विषैली हो गई हैं। अंततः डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दों में यह कहा जा सकता है कि -

> "भारतेंदु ऐसे भक्त थे जो समकालीन राजनीति पर पूरी दृष्टि रखते थे। और उनकी रचना इस पूरी स्थिति में निष्पन्न होती है। एक ओर 'श्रीचंद्रावली' नाटिका है जिसमें चंद्रावली के माध्यम से लेखक ने अपनी ही 'प्रेमाभक्ति' को निष्ठापूर्ण अभिव्यक्ति दी है। इसमें केवल नारी पात्र हैं। कृष्ण भी रंगमंच पर जोगिन के वेश में आते हैं। दूसरी ओर 'मुद्रारक्षस' का रूपांतर है जिसमें नारी पात्रों का प्रायः

एकांत अभाव है और जहाँ कूटनीति के दाँव-पेंच पूरी जटिलता में अंकित हुए हैं। इन दोनों को मिलाकर भरातेंदु का संश्लिष्ट व्यक्तित्व बंता है जो पुनर्जागरण चेतना के अनुरूप है। हिंदी साहित्य में पुनर्जागरण भारतेंदु के माध्यम से अवतरित होता है, और तब यह स्वाभाविक है कि वे आधुनिक काल के प्रवर्तक माने जाते हैं।"

(हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ. 85)

बोध प्रश्न

- भारतेंदु का प्रकृति चित्रण कैसा है?
- विषय के अनुसार भारतेंदु की कविताओं में किन विषयों को प्रमुख रूप से देखा जा सकता है?

2.4 पाठ सार

आधुनिक हिंदी साहित्य में नव जागरण का संदेश लेकर आए भारतेंदु बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि विधाओं में आपने बहुतायत से लेखन किया। गद्य के लिए हिंदी को नई चाल में ढालते हुए खड़ी बोली का प्रयोग किया किंतु कविता के लिए उन्होंने ब्रज भाषा का प्रयोग ही जारी रखा। अपने नाटकों में अनेक पद्यों का प्रयोग करते हुए कवि ने सत्य-हरिश्चंद्र और चंद्रावली नाटिका में क्रमशः गंगा और यमुना का बहुत सुंदर और आलंकारिक वर्णन किया है। इन वर्णनों को आलंकारिक कहा गया है और उद्दीपनकारी भी।

यदि गंगा की लहरें हीरे के हार सी सुंदर हैं तो यमुना के किनारे भी तमाल के वृक्षों से सुसज्जित हैं। शोभा दोनों की ही नयनाभिराम है। चाहे आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे प्रतिष्ठित लेखक इन पद्यों की कितनी भी आलोचना करें किंतु इनकी चित्रात्मकता से कोई इंकार नहीं कर सकता। भक्ति-भावना को प्रकृति चित्रण से मिलाकर प्रस्तुत करके कवि ने इन पदों को काव्य-गुणों से भी सराबोर किया है। डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने इस विषय में ठीक ही कहा है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हृदयगत अनुराग को प्रकृति के रेखाचित्र में अंकित कर घटना को अलौकिक रूप दिया है और उसमें समस्त रागात्मक अनुभावों का स्पष्टीकरण किया है जो पुष्टिमार्ग की साधना में पूर्ण रूप से घटित होते हैं।

2.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. भारतेंदु पद्य और गद्य दोनों ही क्षेत्रों में युग प्रवर्तक माने जाते हैं।
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने नाटकों में बीच-बीच में आवश्यकता के अनुसार कविताओं का सुंदर प्रयोग किया हैं।
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने गंगा का वर्णन 'सत्य हरिश्चंद्र' नाटक में किया है।
4. यमुना का आलंकारिक वर्णन 'चंद्रावली' नाटिका में मिलता है।
5. भारतेंदु ने गंगा और यमुना का वर्णन करते समय प्रकृति चित्रण से आगे बढ़कर अपनी भक्ति भावना को भी प्रकट किया है।

6. गंगा और यमुना विषयक कविताएँ भारतेंदु की सांस्कृतिक चेतना की भी परिचायक हैं।

2.6 शब्द संपदा

1. अनंतरूपता = अनेक स्वरूपों में दिखाई पड़ना
2. अर्धाली = छंद विशेषतः चौपाई का आधा भाग। चौपाई की एक पंक्ति में दो भाग होते हैं तथा प्रत्येक भाग अर्धाली कहलाता है। दैहिक दैविक भौतिक ताप। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
3. आर्द्र = गीला , तरल, नम , सना हुआ, लथ-पथ।
4. आलंबन = आधार
5. उद्दीपन = 'उत्' उपसर्ग पूर्वक 'दीप' मूल शब्द में 'णिच्' (संस्कृत) 'अन' (हिंदी) प्रत्यय लगने पर 'उद्दीपन' शब्द की निष्पत्ति होती है। इसका शाब्दिक अर्थ है -ज्योति, अग्नि अथवा किसी भाव को बढ़ा देना। इस शब्द का प्रयोग प्रायः काव्य की आत्मा माने जाने वाले तत्त्व **रस** के संदर्भ में होता हुआ मिलता है। विभाव दो कहे गए हैं - आलंबन और उद्दीपन। आलंबन वह है जिसके प्रति आश्रय या पात्र के हृदय में कोई भाव स्थित हो। जैसे नायक के लिये नायिका और नायिका के लिये नायक। उद्दीपन वह है जिससे आलंबन के प्रति स्थित भाव उद्दीप्त या उत्तेजित हो। यहाँ भारतेंदु ने प्रकृति वर्णन के द्वारा वही कार्य साधन किया है।
6. नयनाभिराम = नयनों को सुंदर लगनेवाला। सुंदर, मनोहर।
7. परिपाटी = वह विचार, प्रथा या क्रम जो बहुत दिनों से प्रायः एक ही रूप में चला आया हो, किसी जाति, समाज आदि में कोई काम करने का कोई विशिष्ट बँधा हुआ ढंग अथवा शैली।
   विशिष्ट अवसर पर कोई विशिष्ट काम करने की प्रथा।
8. सराबोर = तरबतर, भरा हुआ, परिपूर्ण
9. सामंजस्य = मेल, अपने परिवेश व परिस्थितियों के साथ समायोजन कर लेना ।

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

2.7.1 सही विकल्प चुनिए।

1. गलत जोड़ा चिह्नित कीजिए -

   (अ) तरुणी-स्त्री (आ) तनुजा-पुत्री (इ) तट-किनारा **(ई) तरणी-वृक्ष**

2. 'गंगा-यमुना' कविताओं में छंद का प्रयोग है -

(अ) दोहा **(आ) रोला** (इ) छप्पय (ई) हरिगीतिका

3. 'गंगा-यमुना' कविताओं की भाषा है -

(अ) खड़ी बोली (आ) हिंदी **(इ) ब्रज भाषा** (ई) सुंदर भाषा

4. सगर के पुत्रों की संख्या थी -

(अ) साठ हजार (आ) छह (इ) सात (ई) साठ

5. 'तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये' यह पंक्ति किस कविता की है?

(अ) गंगा **(आ) यमुना** (इ) दोनों में से ही (ई) दोनों में कोई नहीं है.

6. 'नव उज्ज्वल जलधार हर हीरक सी सोहति' यह पंक्ति किस कवि की हैं?

(अ) भारतेंदु (आ) कबीर (इ) मैथिलीशरण गुप्त (ई) जयशंकर प्रसाद

7. 'तमाल के झरोखे से' ललित निबंध किस का है ?

(अ) पं. विद्यानिवास मिश्र (आ) आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी

(इ) भारतेंदु (ई) कोई नहीं है

8. गंगा-यमुना कविताओं में कौनसा गुण की बहुतायत है ।

(अ) दास्य (आ) वात्सल्य (इ) शृंगार **(ई) माधुर्य**

9. भारतेंदु ने प्रकृति को किस रूप में प्रस्तुत किया है?

(अ) बहन तथा सहचरी **(आ) माता तथा सहचरी**

(इ) दोनों भी (अ) तथा (आ) (ई) कोई नहीं है

10. गंगा यमुना कविताओं मे क्या प्रधान है?

(अ) स्त्री (आ) समाज **(इ) प्रकृति** (ई) कोई नहीं है

खंड (ब)

2.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. भारतेंदु के अनुसार गंगा किस प्रकार 'त्रिविध पापों' को दूर करती है?
2. सगर पुत्रों के उद्धार में गंगा किस प्रकार सहायक हुई?
3. यमुना तट और तमाल के वृक्षों से कृष्ण राधा का संबंध क्या है और कवि उसे किस प्रकार स्थापित करता है?
4. "गंगा-यमुना नदियाँ भारतीय संस्कृति और पर्यावरण की धरोहर हैं।" पठित पद्यों के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

खंड (क)

2.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. पठित कविताओं के आधार पर भारतेंदु हरिश्चंद्र के काव्य में प्रकृति चित्रण पर एक दो पंक्ति के उदाहरण देते हुए अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. 'गंगा-यमुना' के वर्णन में कवि भारतेंदु ने परंपरा का पालन मात्र किया है।" क्या आप इस कथन से सहमत हैं?
3. 'गंगा-यमुना' कविताएँ भारतेंदु की भक्तिभावना का किस प्रकार परिचय देती हैं? स्पष्ट कीजिए।
4. 'गंगा-यमुना' कविताओं में अलंकारों का प्रयोग जिस उद्देश्य से किया गया है, क्या वह पूरा होता है?
5. गंगा और यमुना के सौंदर्य वर्णन में किन किन प्राचीन मिथकीय कथाओं का प्रयोग किया गया है? कम से कम चार कथाओं का उल्लेख करते हुए उनकी उपयोगिता पर विचार कीजिए।

2.8 पठनीय पुस्तकें

1. भारतेंदु समग्र : सं. हेमंत शर्मा
2. हिंदी साहित्य कोश (भाग 2) : नामवाची शब्दावली
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र : बृजरत्न दास
4. भारतेंदु हरिश्चंद्र : लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय

इकाई 3 : विरह वेदना : भारतेंदु हरिश्चंद्र

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 मूल पाठ : विरह वेदना : भारतेंदु हरिश्चंद्र

3.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

3.3.2 अध्येय कविता

3.3.3 विस्तृत व्याख्या

3.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

3.4 पाठ सार

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

3.6 शब्द संपदा

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

3.8 पठनीय पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आपने पूर्व की एक इकाई में भारतेंदु हरिश्चंद्र के जीवन और व्यक्तित्व के विषय में विस्तार से पढ़ और समझ लिया है। हिंदी प्रदेश और साहित्य के इतिहास में उनके जैसा रोमांटिक व्यक्तित्व न उनसे पहले हुआ न उनके बाद। डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के शब्दों में "वे मातृभाषा के निःस्वार्थ सच्चे सेवक, देश-भक्त, परदुखकातर, उदार, धर्मपारायण आदि एक साथ अनेक रूप ग्रहण कर साहित्य-क्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे और अपने समय के प्रतिनिधि साहित्यकार थे।" उनके कवि रूप का भी परिचय आपको अवश्य मिला होगा। परंपरानुरूप रचनाओं के अंतर्गत उनकी भक्ति-संबंधी रचनाओं का प्रधान और प्रमुख स्थान है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जीवन प्रेम से ओतप्रोत रहा। उनकी रचनाओं के शब्द-शब्द से प्रेम टपकता है। अनेक प्रकार से प्रेम की व्याख्या उन्होंने की और उसके महत्व को बताया। रसिकता और पीड़ा का अनोखा मेल भारतेंदु के कवित्त सवैयों में पाया जाता है। इन रचनाओं की मार्मिकता के मूल में एक प्रकार की अतृप्ति की भावना है। प्रेम में बहुत कुछ पाकर भी कवि का मन पूर्ण रूप से कभी संतुष्ट नहीं हुआ। यही कारण है कि संयोग की अपेक्षा वियोग संबंधी उनकी रचनाओं में अधिक मधुरता आ गई है। भारतेंदु के पिता भक्त थे और भक्ति भावना उन्हें पैतृक-दाय के रूप में प्राप्त हुई थी। अपने आराध्य कृष्ण के विभिन्न रूपों को और उनकी विभिन्न लीलाओं को भारतेंदु कविता के शिल्प में प्रस्तुत करते रहे। राधा कृष्ण की छवि को उन्होंने भक्त

की दृष्टि से देखा।

भारतेंदु की अनेक रचनाओं जैसे प्रेम सरोवर और प्रेम-माधुरी आदि में विशुद्ध शृंगार भावना की अभिव्यक्ति हुई है। शृंगार के दोनों रूपों - संयोग और वियोग - में कवि का प्रेम-संबंधी आदर्श प्रकट हुआ है। भारतेंदु के वियोग शृंगार से अभिसिंचित कवित्त-सवैये और विशेष रूप से समस्या-पूर्ति के निमित्त रचित पदों में विभिन्न अनुभूतियों की व्यंजना अत्यंत स्वाभाविक है। इन पदों का अक्टूबर 1875 में 'कविवचन सुधा' में प्रकाशन हुआ फिर चंद्र-प्रभा प्रेस में 1882 में दूसरी आवृत्ति हुई। यहाँ प्रस्तुत पद 'जानि सुजान मैं प्रीति करि' 108 वाँ और 'इन दुखियान को' 129 वाँ पद हैं।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत आप भारतेंदु हरिश्चंद्र की कविता 'विरह वेदना' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप -

- भारतेंदु के कृष्ण के प्रति भक्ति भाव को समझ सकेंगे।
- भक्ति भाव के साथ ही प्रेम और उसमें भी 'वियोग' पक्ष का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भारतेंदु के कवित्त-सवैयों के भावगत सौंदर्य से अवगत हो सकेंगे।
- भारतेंदु की कविता 'विरह वेदना' की शिल्पगत विशेषता से परिचित हो सकेंगे।
- निर्धारित पदों की सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।

3.3 मूल पाठ : विरह वेदना : भारतेंदु हरिश्चंद्र

3.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

अध्येय कविता के रूप में यहाँ दो पद दिए गए हैं। दोनों पदों में कृष्ण और गोपिकाओं के प्रेम का वर्णन है। बल्कि कहें तो गोपिकाओं का कृष्ण के प्रति प्रेम और कृष्ण की उपेक्षा और उसके कारण गोपिकाओं की मनोदशा का काव्यात्मक और भावपूर्ण विवरण है। पहले पद में एक गोपिका दूसरी से अपनी मनोव्यथा कहती है और अपने भोलेपन में बाहरी आकर्षण में पड़ जाने का रोना रोती है। दूसरे पद में कृष्ण के वियोग की पराकाष्ठा होने पर मर जाने की अवस्था में भी प्रतीक्षारत रहने और आँखें खुली रह जाने की अनूठी बात कही गई है। दोनों पदों में कृष्ण के प्रति गोपिकाओं के अनन्य प्रेम की चर्चा में कवि ने लोकोक्तियों और लोक विश्वासों के द्वारा ऐसा शब्द चित्र प्रस्तुत किया है कि आप ब्रज भाषा में लिखे गए इन पदों को पढ़कर भाव को समझते चले जाएँगे। कवित्त-सवैये जब सस्वर पढ़े जाते हैं तब उनका अर्थ आसानी से समझ में आ जाता है, इसलिए सीख-समझकर इनका सस्वर वाचन अवश्य करें।

3.3.2 अध्येय कविता : विरह वेदना

[1]

जानि सुजान मैं प्रीति करि सहिके जग की बहु भाँति हँसाई।
त्यों 'हरिचंदजू' जो-जो कहौ सो करयो चुप है करि कोटी उपाई।
सोऊ नहीं निबही उनसों, उन तोरत बार कछू न लगाई ।
साँची भई कहनावति वा अरी, ऊँची दुकान की फीकी मिठाई ॥

[2]

इन दुखियान को न चैन सपनेहुं मिल्यौ,
तासों सदा व्याकुल बिकल अकुलायेंगी।
प्यारे 'हरिचंद जू' की बीती जानि औध, प्रान
चाहत चले पै ये तो संग न समायंगी।
देख्यो एक बारहू न नैन भरि तोहिं यातें,
जौन जौन लोक जैहें तहाँ पछताएँगी।
बिना प्रान-प्यारे भये दरस तुम्हारे, हाय!
मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जाएँगी॥

निर्देश : इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

3.3.3 विस्तृत व्याख्या

जानि सुजान मैं प्रीति करि सहिके जग की बहु भाँति हँसाई।
त्यों 'हरिचंदजू' जो-जो कहौ सो करयो चुप है करि कोटी उपाई ।
सोऊ नहीं निबही उनसों, उन तोरत बार कछू न लगाई।
साँची भई कहनावति वा अरी, ऊँची दुकान की फीकी मिठाई॥

शब्दार्थ : जानि = जान कर। सुजान = सुसभ्य, अच्छा। सहिके = सहकर। कोटी = अनेक। उपाई= उपाय। निबही = निभाना। कहनावती = कहा जाता है।

संदर्भ : यह पद 'विरह वेदना' (प्रेम माधुरी कविता-संग्रह का 108वाँ पद 'जानि सुजान मैं प्रीति करि' है) शीर्षक से प्रस्तुत है जिसे आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने रचा है।

प्रसंग : गोपिकाएँ श्री कृष्ण के प्रेम में पड़ तो गई हैं पर वे उनको निर्मोही भी मानती हैं। वे कहती हैं कि कृष्ण को निर्मोही जानते हुए भी उन्होंने उनसे प्रेम करने की भूल की है उसका

परिणाम यह हुआ है कि वह भूल ही उनके अब गले पड़ गई है। इसमें किसी ओर का भला क्या दोष? उन्होंने ही कृष्ण को 'सुजान' अर्थात भला आदमी समझा था।

व्याख्या : एक गोपिका दूसरी से अपने मन की पीड़ा बताते हुए कहती है कि जिस प्रकार जन्म-मरण और सुख-दुख दोनों सभी के जीवन में आते हैं और चाहे कितना भी तर्क-वितर्क करो, इनसे छुटकारा नहीं होता वैसे ही कृष्ण जी के वृंदावन में रहते यदि उन्हें सुख मिलता है तो उनके मथुरा चले जाने पर दुख भी होता है। भोली-भाली वे आपस में इसी बात पर विचार विमर्श और बहस कर कर के हार जाती हैं। उन्हें कुछ समझ नहीं आता। कभी वे भाग्य को दोष देती हैं और कभी कृष्ण को निर्मोही बताती हैं। वे इसे समझने की कोशिश करती हैं। वे कहती हैं कि उन्होंने कृष्ण के रूप-स्वरूप को देखकर और उस पर मुग्ध होकर बड़ी भूल है। उन्होंने यह भी भूल की है कि जिसे उन्होंने सुजान समझा था, बुद्धिमान और भरोसेमंद माना था वह भी ऐसा निकला जैसे किसी हलवाई की दुकान पर अनेक मिठाइयाँ सजाकर रख दी गईं हों और उनके आकर्षण से बंधकर ग्राहकों का झुंड आकर मिठाई खरीद ले। इस मिठाई को बड़े चाव से खाने के बाद वे जब यह सच जान जाते हैं कि यह मिठाई तो फीकी और स्वाद रहित है तो जैसी निराशा उन ग्राहकों को हो रही है वैसी ही कृष्ण की मोहनी मुस्कान से आकृष्ट हुई उनको होती है। वे इसकी खीज प्रकट करके रह जाती हैं।

काव्यगत विशेषता

भारतेंदु कविता में प्रतिदिन की बोलचाल की कहावतों और लोकोक्तियों का बहुत अच्छा प्रयोग करते हैं। इससे कविता में भावों की पुष्टि तो होती ही है, गज़ब का आकर्षण भी आ जाता है। इस पद का सर्वाधिक आकर्षण इसमे प्रयोग की गई लोकोक्ति है - ऊँची दुकान फीके पकवान। भारतेंदु के इस भाषा प्रयोग को रामचंद्र शुक्ल ने 'चलती भाषा प्रयोग' कहा है। 'भाषा की रूप प्रतिष्ठा' के लिए ये प्रयोग उल्लेखनीय हैं।

बोध प्रश्न

- गोपिका कृष्ण को 'निर्मोही' क्यों कहती हैं?
- गोपिकाओं ने कृष्ण को लेकर क्या भूल की? यह भूल हो क्यों गई?
- इस भूल का परिणाम क्या हुआ?
- यहाँ प्रयुक्त लोकोक्ति को लिखकर उसका अर्थ बताते हुए उसका अपने वाक्य में प्रयोग भी कीजिए ।

इन दुखियान को न चैन सपनेहुं मिल्यौ,
तासों सदा व्याकुल बिकल अकुलायेंगी।
प्यारे 'हरिचंद जू' की बीती जानि औध, प्रान
चाहत चले पै ये तो संग न समायंगी।

देख्यो एक बारहू न नैन भरि तोहिं यातें,
जौन जौन लोक जैहें तहाँ पछताएँगी।
बिना प्रान-प्यारे भये दरस तुम्हारे, हाय !
मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जाएँगी॥

शब्दार्थ : चैन = शांति, सुख। बिकल = बेचैन। औध=अवधि। जौन-जौन = जिस जिस।

संदर्भ : यह पद 'विरह वेदना' (प्रेम माधुरी कविता-संग्रह का 129वां पद) शीर्षक से प्रस्तुत है जिसे आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने रचा है ।

प्रसंग : इस सवैये में श्री कृष्ण के विरह में व्याकुल गोपियों के नेत्रों की दशा का मार्मिक चित्रण किया गया है। प्रेम भी बेचारा ऐसा दो के बीच में पड़ा है कि कुछ कहा नहीं जा सकता। प्रतिक्षण मिलना होता रहे तभी ठीक है, नहीं तो कभी एक पक्ष की विरहाग्नि प्रबल, कभी दूसरे पक्ष की। इसी प्रेम में दुखी होकर गोपिका अपने आप को कोस रही है।

व्याख्या : विरहिणी गोपिका कहती हैं कि प्रियतम श्रीकृष्ण के विरह में व्याकुल इन नेत्रों को सपने में भी शांति नहीं मिल पाती है क्योंकि इन्होंने कभी स्वप्न में भी श्रीकृष्ण के दर्शन नहीं किए। इसलिए ये सदा प्रिय-दर्शन के लिए व्याकुल होते रहेंगे। प्रियतम के लौट आने की अवधि को बीतती हुई जानकर उनके प्राण इस शरीर से निकलकर जाना चाहते हैं, परंतु मरने पर भी ये नेत्र प्राणों के साथ नहीं जाना चाहते क्योंकि इन्होंने अपने प्रियतम कृष्ण को जी भरकर नहीं देखा है। इसलिए जिस किसी भी लोक में ये नेत्र जाएँगे वहाँ पश्चाताप ही करते रहेंगे।

गोपिका विलाप के स्वर में दुखी होकर कह उठती है, "हे उद्धव ! तुम श्री कृष्ण से कहना कि हमारे नेत्र मृत्यु के पश्चात भी उनके दर्शन की प्रतीक्षा में खुले रहेंगे"। इस अनोखे किंतु सहज कथन से गोपिका वास्तव में सभी श्रोताओं को अवाक कर देतीं हैं। मरने पर आँखों का खुले रह जाना सबने देखा होगा किंतु प्रिय की प्रतीक्षा में इनका खुले रह जाना 'दूर की कौड़ी लाना' है। यही इस पद का स्वाभाविक और अनूठा सौंदर्य है।

काव्यगत विशेषता

गोपियों के एकनिष्ठ प्रेम का चित्रण है। भाषा - ब्रज, 'सपनेहूँ चैन न मिलना', 'देखो एक बारहू न नैन भरि' में मुहावरों का सुंदर प्रयोग है। शैली - मुक्तक, रस - वियोग शृंगार, छंद - सवैया, अलंकार - अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश। भाव साम्य - सूरदास ने भी लगभग इसी प्रकार से वर्णन किया है - अँखियाँ हरि दरसन की प्यासी ....। भावों का ऐसा उत्कर्ष बड़ा प्रभावशाली है।

अंतिम पंक्तियों को यदि उद्धव को संबोधित मान लें तो एक अनूठे भाव और संपूर्ण दृष्टांत पर ध्यान चला जाता है ।

बोध प्रश्न

- वियोगिनी गोपियों की आँखों को सदैव पश्चाताप क्यों रहेगा?

- कृष्ण के रूप-सौंदर्य को देखे बिना गोपियों के नेत्रों की क्या दशा हो रही है?
- 'मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जाएँगी' पंक्ति का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
- क्या उपरोक्त पंक्ति (मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जाएँगी) आपको वीभस्त या घिनौनी लगती है? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
- मुक्तक किसे कहते हैं ? भारतेंदु द्वारा अपनाए गए दो छंदों के नाम लिखो ।

3.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

भारतेंदु युग के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र हैं। उनका कृतित्व संक्रांतिकालीन समय में आया इसलिए गद्य में वे विचार-अभिव्यक्ति के लिए खड़ी बोली को अपनाते हैं किंतु कविता के लिए ब्रज भाषा को ही पकड़े रहते हैं। भारतेंदु के बाद ही खड़ी बोली हिंदी क्षेत्र की व्यापक काव्य भाषा बनी। आप देखेंगे कि इतने वर्षों के बाद ब्रज भाषा की ये रचनाएँ कुछ कठिन अवश्य हैं किंतु अबोधगम्य नहीं। इनका एक अलग स्वर और मिठास है। कवि-हृदय भारतेंदु की ब्रज भाषा कविता में भक्तिकालीन संस्कारों के साथ-साथ कुछ कुछ रीतिकालीन भंगिमा भी दिख जाती है। मानवीय चरित्र और स्वभाव को अभिव्यक्त करते ये दो पद अपने आप में एक अलग आख्यान रच रहे हैं।

भारतेंदु हरिश्चंद्र की काव्य रचनाओं से उनके व्यक्तित्व के दो रूप बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। वे प्रमुखतः शांत और शृंगार रस के कवि हैं। अन्य रसों - जैसे हास्य की रचनाएँ भी हैं, किंतु इतनी अधिक नहीं। शृंगार के दोनों पक्षों - संयोग और वियोग में से वियोग में उनका मन अधिक रमा है।

साहित्य का श्रेष्ठ रस शृंगार है और इसका भी परिष्कृत रूप विरह वर्णन में मिलता है। शृंगार के अंतर्गत वियोग-पक्ष का लगभग सभी रीतिकालीन कवियों ने वर्णन किया है। किंतु उनके विरह वर्णन में नैसर्गिकता के स्थान पर नायिका के साथ खिलवाड़ किया गया मिलता है। विरह वेदना के वर्णन में कवि काम से मुक्त प्रेम की अभिव्यक्ति करता है। प्रथमानुराग, मान, प्रवास और करुण वियोग के चार रूप हैं। आप उपरोक्त दो पदों में देख सकते हैं कि पहले पद में मान-विरह है तो दूसरे में अंत में करुण रस की व्याप्ति हो जाती है। गोपियों की विरह वेदना उपालंभ (उलाहना) के रूप में अभिव्यक्त हुई है। यदि भ्रमर-गीत परंपरा में रखकर इन पदों को देखा जाए तो इनकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि वर्णन और उक्ति की नवीनता होगी।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी कवित्व शक्ति से अपने प्रेमी स्वभाव के साथ कुल की वैष्णव परंपरा का ऐसा सामंजस्य किया कि उनकी भक्ति-भावना के अनेक आयाम उपस्थित होते चले गए। भारतेंदु जी वल्लभ संप्रदाय में दीक्षित कृष्णभक्त कवि थे। अपने आत्मपरिचय वाले प्रसिद्ध कवित्त में वे कह देते हैं, "सरबस रसिक के, सुदामा दास प्रेमिन के, सखा प्यारे कृष्ण के, गुलाम राधा रानी के।" भारतेंदु ने भक्तिपरक लगभग डेढ़ हज़ार पद लिखे। भारतेंदु ने वैष्णव घराने में जन्म लिया था और वे वल्लभाचार्य द्वारा प्रचारित संप्रदाय के अनुयायी थे। यही कारण है कि हृदय से भक्त होने के कारण कृष्ण की समस्त लीलाओं का वर्णन उन्होंने बड़े प्रेम और भक्तिभाव

से किया है। इस दृष्टि से वे विद्यापति, सूरदास और अन्य कृष्णभक्त कवियों की परंपरा में आते हैं। वे कृष्ण ही नहीं कृष्ण भक्तों का गुणगान करने में भी निपुण रहे। 'उत्तर भक्तमाल' में उन्होंने अपने वंश के उल्लेख के साथ कृष्ण-भक्त हिंदू-मुसलमान कवियों का परिचय भी दिया है। इसी पुस्तक में भारतेंदु का रसखान के लिए लिखा गया वह छप्पय है जिसमें वह प्रसिद्ध पंक्ति आती है - इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदुन वारियै।

बोध प्रश्न

- भारतेंदु किस संप्रदाय में दीक्षित कृष्णभक्त कवि थे?
- वियोग के चार रूपों का उल्लेख कीजिए।

बाबू गुलाब राय (अध्ययन और आस्वाद 1957) के मत में "भारतेंदु की भक्ति में दीनता और अक्खड़पन के साथ दाम्पत्य भाव का-सा विरहोन्माद भी है।" भारतेंदु के पदों में यह गोपिका- प्रसंग के रूप में अभिव्यक्त हुई है। हरिश्चंद्र ने कृष्ण की लीला का गान अवश्य किया किंतु किसी प्रकार की सांप्रदायिक कट्टरता उनमें नहीं है। राधा-कृष्ण-काव्य में भक्ति और शृंगार का ऐसा अद्‌भुत समावेश है कि दोनों एक हो जाते हैं। भारतेंदु से पूर्व नंददास व सूरदास ने भी गोपिकाओं या गोपियों को आधार बनाकर पद लिखे हैं।

भारतेंदु द्वारा वर्णित गोपियों का स्वरूप भी पारंपरित गोपियों से भिन्न नहीं है। कृष्ण के मथुरा गमन के पश्चात वे अपनी खीझ कभी कृष्ण, कभी कुब्जा तथा कभी अपने आप पर भी प्रकट करती हैं। मथुरा से आए उद्धव स्वयं को कृष्ण द्वारा प्रेषित निर्गुण ब्रहम के ज्ञाता बतलाते हैं और यह भी कहते हैं कि उन्हें स्वयं ने गोपियों को ज्ञानोपदेश देने के लिए ब्रज में भेजा है किंतु गोपियाँ उनके इस कथन पर विश्वास न करके उनका उपहास करती हैं। उपहासपूर्ण पदों के माध्यम से गोपिकाओं के छल रहित व्यवहार का बोध होता है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का संपूर्ण जीवन प्रेम से ओतप्रोत जीवन था। उनके द्वारा लिखित पदों में प्रेम की व्याप्ति सर्वत्र है। प्रेम के अनेक रूपों को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने प्रेम की अनुभूत व्याख्या की। रसिकता और पीड़ा का अभूतपूर्व संयोग भारतेंदु के प्रेम विषयक कवित्त-सवैयों में पाया जाता है। इन पदों में एक ओर तो रीतिकालीन प्रेमी-कवियों की सरसता है दूसरी ओर उनकी अपनी अतृप्ति की भावना है। यह भावना अनन्यता और तन्मयता का अपूर्व संगम है। प्रेम में बहुत कुछ पाकर भी भारतेंदु का प्रेमी-हृदय सदा असंतुष्ट ही रहा। इसी कारण से संयोग की अपेक्षा वियोग-संबंधी उनकी रचनाएँ अधिक प्रभावशाली और मार्मिक बन पड़ी हैं।

भारतेंदु जी का विरह वर्णन पुरानी परिपाटी के कवियों के वर्णन से कुछ भिन्न है। इनमें अतिशयोक्ति की कमी और स्वाभाविकता की पूर्णता है। हिंदी में नखशिख वर्णन और उर्दू में सरापा लिखने की प्रथा प्राचीन है। आँखों की आकर्षण शक्ति पर भी कवियों ने खूब लिखा है। किंतु भारतेंदु के निम्नलिखित पद में संवेदना का अतिरेक हो गया है और ब्रजरत्न दास के शब्दों में कहें तो, "ये आँखें उर्दू शायरी की बेवफाई छोड़कर यहीं 'लहद' (कब्र) तक ही देखने को नहीं तरसतीं बल्कि जन्मजन्मांतर में जिस जिस लोक में वे जाएँगी वहाँ वहाँ उन्हें इस दर्शन की याद बनी रहेगी।" -

इन दुखियान को न चैन सपनेहुं मिल्यौ,..... मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जाएँगी॥

उपर्युक्त उद्धृत एक दूसरे पद में लोकोक्ति के प्रयोग से जो अनूठापन आ गया है और कवि का वाक्-चातुर्य पद में विलक्षणता ले आया है, यह भी स्मरणीय और रेखांकित करने योग्य है। अपने भावों की पुष्टि के लिए कहावतों और लोकोक्तियों का प्रयोग करके भारतेंदु ने एक ओर तो गोपिकाओं के भोलेपन को दिखाया है दूसरी ओर उनकी व्यावहारिक समझ को भी दिखा दिया है, "और हमने तो उन्हें भला आदमी सुजान समझा था, जानती न थीं कि वे ऐसे निकलेंगे, नहीं तो यह जग हँसाई न होती।" प्रेम और विरह में दग्ध होकर इस तरह कहना बड़ा स्वाभाविक है। विकल होकर गोपिकाएँ ऐसे ही उपालंभ तो देंगी और क्या? यहाँ तो केवल दो पद ही आपने पढ़ें हैं, इनके अतिरिक्त भी अनेक पद हैं जहाँ ऐसी लोकोक्तियों का प्रयोग हुआ है। गद्य में, मुख्यतः नाटकों में, भी ऐसी योजना बहुत है। उनकी भलमनसाहत और भोलापन विरह के पदों में बिखरा पड़ा है। अंत में कुछ न समझ पाने पर वे कह उठती हैं कि कुछ नहीं ये विरह भाग्य के अधीन है - सबको जहाँ भोग मिल्यो तहाँ हाय वियोग हमारे ही बांटें परयो। 'बांटे पड़ना' में जो बात है वह कितना अनूठा है, बस समझ लीजिए। कहा जा सकता है कि भारतेंदु अपनी काव्य रचना में जीवन और जीवंतता का समावेश करते थे। वे स्वयं लाइफ-फुल या जीवन रस से लबरेज थे और अपनी कविता के लिए उक्तियाँ समाज के सभी लोगों के साथ 'दस तरह के लोगों के साथ' उठ बैठकर या अनुभव से प्राप्त करते थे।

भारतेंदु का कवि रूप कभी यह मान ही नहीं सका कि ब्रजभाषा के अतिरिक्त भी किसी और भाषा-बोली में अच्छी कविता हो सकती है। उनकी काव्य प्रतिभा कहीं सूरदास के स्वर में स्वर मिलाकर गाती है, "उधौ जो अनेक मन होते", कहीं वे रसखान कवि के समान ब्रज भूमि के प्रति अपना आकर्षण और प्रेम दिखाते हैं, 'ब्रज की लता पता मोहि कीजै', कभी वे समर्पित पुष्टि मार्गी के समान बोल उठते हैं, 'श्री बल्लभ बल्लभ कहौ, छोड़ उपाय अनेक' और कभी घनानंद के प्रेम की टीस लेकर 'काले परे कोस चलि थक गए पाय' कहकर आराध्य के दर्शन के लिए आतुर और व्याकुल दिखाई देते हैं।

भक्तिकाल से लेकर रीतिकाल तक मुक्तक शैली में कविता करने के लिए कवियों ने प्रायः दोहा, कवित्त और सवैया छंदों का प्रयोग किया। रसखान, घनानंद और आलम ने यदि कवित्त सवैयों का प्रयोग भक्ति के पद रचने में किया तो भूषण ने वीर रस के लिए। भारतेंदु ने आधुनिक युग के आरंभ में इस परंपरा को अपने अनेक समकालीनों के समान जारी रखा। यूँ तो सवैये 14 प्रकार के होते हैं किंतु आपको इतने विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है। बस इतना जानना पर्याप्त होगा कि अमुक पदयांश की रचना किस छंद में हुई है। भारतेंदु अपनी कविता में नित्य की बोलचाल की कहावतों और लोकोक्तियों का बहुत ही अच्छा प्रयोग करते हैं। इससे कविता के भावों की पुष्टि होती है।

भारतेंदु ने काव्य रचना के लिए खड़ी बोली का प्रयोग नहीं किया क्योंकि उस समय तक इसमें काव्य रचना की परिपाटी शुरू नहीं हुई थी। इसके स्थान पर चली आ रही ब्रज भाषा को ही सरल, सरस और परिष्कृत करके उन्होंने कविता की। संस्कृत के तत्सम शब्दों के स्थान पर तद्भव शब्दों का अधिक प्रयोग किया। उदाहरण के लिए, उपरोक्त पद संख्या 2 को देखें तो यहाँ प्रान, बिकल, नैन और औध आदि तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनके तत्सम शब्द क्रमशः प्राण, विकल, नयन और अवधि हैं। इस प्रकार भारतेंदु की कविता में अनेक शब्दों को रेखांकित किया जा सकता है। उर्दू के प्रचलित शब्दों और कहावतों का भी बहुत सुंदर प्रयोग करके भारतेंदु ने भाषा की रवानी को बनाए रखा है। अप्रचलित शब्दों को भी छोड़ दिया और काव्य की ब्रज भाषा का एक चलता हुआ सर्वसाधारण के उपयुक्त स्वरूप विकसित किया। उपरोक्त दो पदों से इसे आर भी अधिक समझा जा सकता है। प्रचलित लोकोक्तियों और लोक विश्वासों और परंपराओं का प्रयोग करके भाषा को आकर्षक बनाया गया है। कहना न होगा कि भारतेंदु ने लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग करते हुए ब्रजभाषा की लाक्षणिकता बनाए रखी। भारतेंदु साहित्य के अध्येताओं को यह स्मरण रखना चाहिए कि वे जीवन के किसी क्षेत्र में अतिवादी नहीं थे। राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने समन्वयात्मक दृष्टिकोण को अपनाया। हिंदी भाषा और साहित्य के उस दौर में ऐसे ही साहित्यकार की आवश्यकता थी।

यहाँ इस तथ्य का उल्लेख भी आवश्यक है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी काव्य को नए-नए विषयों की ओर उन्मुख करने के बावजूद भक्ति और शृंगार का बहिष्कार नहीं किया। संभवतः इसीलिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने यह लिखा है कि

> "गद्य को जिस परिमाण में भारतेंदु ने नए-नए विषयों और मार्गों की ओर लगाया उस परिमाण में पद्य को नहीं। उनकी अधिकांश कविता तो कृष्ण भक्त कवियों के अनुकरण पर गेय पदों के रूप में है जिनमें राधा कृष्ण की प्रेम लीला और विरह का वर्णन है। (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.402)

भारतेंदु जी राधा-कृष्ण के भक्त थे। इस नाते उन्होंने कृष्ण की लीलाओं का वर्णन गोपी भाव से किया है। गोपी भाव का अर्थ है कि भक्त अपने आप को श्रीकृष्ण की प्रेमिका गोपी मानता है। इसी भाव के अनुरूप कृष्ण के गोकुल से मथुरा चले जाने पर उनके विरह में व्याकुल गोपिकाएँ यह अनुभव करती हैं कि जिस प्रकार जन्म-मरण और सुख-दुख दोनों सभी के जीवन में आते हैं और चाहे कितना भी तर्क-वितर्क करो, इनसे छुटकारा नहीं होता वैसे ही कृष्ण जी के वृंदावन में रहते यदि उन्हें सुख मिलता है, तो उनके मथुरा चले जाने पर दुख भी होता है। विरह में व्याकुल होने पर कृष्ण को उलाहना देने के अंदाज़ में वे यहाँ तक कहती हैं कि जिसे हमने सुजान समझा था, बुद्धिमान और भरोसेमंद माना था वह भी ऐसा निकला जैसे किसी हलवाई की दुकान पर अनेक मिठाइयाँ सजाकर रख दी गईं हों और उनके आकर्षण से बंधकर ग्राहकों का

झुंड आकर मिठाई खरीद ले और बाद में पछताए। गोपियों के प्रेम का चरम उत्कर्ष तब दिखाई देता है जब वे उद्धव को यह कहती हैं कि श्रीकृष्ण के लौट आने की अवधि को बीतती हुई जानकर हमारे प्राण शरीर से निकलकर जाना चाहते हैं, परंतु मरने पर भी ये नेत्र प्राणों के साथ नहीं जाना चाहते क्योंकि इन्होंने अपने प्रियतम कृष्ण को जी भरकर नहीं देखा है। इसलिए जिस किसी भी लोक में ये नेत्र जाएँगे वहाँ पश्चाताप ही करते रहेंगे। इस प्रकार भारतेंदु ने अभिलाषा से लेकर मृत्यु तक विरह की विविध दशाओं का मार्मिक चित्रण किया है।

प्रिय छात्रो! भारतेंदु के जीवन और रचनाओं के बारे में पढ़कर अब तक आप यह जान चुके होंगे कि उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। वे एक साथ प्राचीन और नवीन दोनों प्रवृत्तियों को साथ लेकर चल सकते थे। विषय वस्तु और शैली शिल्प दोनों ही स्तरों पर वे एक ओर तो मध्यकालीन परंपरा का विकास करते हैं तथा दूसरी ओर उसे तोड़कर नए युग का सूत्रपात भी करते हैं। डॉ. सुरेश चंद्र गुप्त के शब्दों में -

> "उन (भारतेंदु) की प्रमुख विशेषता यह है कि अपनी अनेक रचनाओं में जहाँ वे प्राचीन काव्य प्रवृत्तियों के अनुवर्ती रहे, वहीं नवीन काव्य धारा के प्रवर्तन का श्रेय भी उन्हीं को प्राप्त है। राजभक्त होते हुए भी वे देशभक्त थे, दास्य भाव की भक्ति के साथ ही उन्होंने माधुर्य भाव की भक्ति भी की है, नायक-नायिका के सौंदर्य वर्णन में ही न रमकर उन्होंने उनके लिए नवीन कर्तव्य क्षेत्रों का भी निर्देश किया है और इतिवृत्तात्मक काव्य शैली के साथ ही उनमें हास्य-व्यंग्य का पैनापन भी विद्यमान है। अभिव्यंजना क्षेत्र में भी उन्होंने ऐसी ही परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाली प्रवृत्तियों को अपनाया है जो उनकी प्रयोगधर्मी मनोवृत्ति का प्रमाण है। (हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. नगेंद्र, पृ. 451)

बोध प्रश्न

- भारतेंदु के प्रेम विषयक कवित्त-सवैयों में क्या पाया जाता है?
- भारतेंदु की प्रमुख विशेषता क्या है?
- भारतेंदु ने कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किस भाव से किया है?
- भारतेंदु ने अपनी भाषा को आकर्षक कैसे बनाया?

3.4 पाठ सार

हिंदी क्षेत्र में पुनर्जागरण की पहली सशक्त साहित्यिक अभिव्यक्ति भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885) के व्यक्तित्व में मिलती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी भाषा और साहित्य के उन महान रचनाकारों में से एक हैं जिन्होंने न केवल अपनी पूर्व परंपरा पर चलते हुए काव्य रचना की बल्कि स्वयं एक परंपरा भी प्रारंभ की। भारतेंदु की कविता में भक्ति और प्रेम की प्राचीन कवियों से चली आ रही धारा के दर्शन होते हैं। उनके भक्ति काव्य में कबीर, सूरदास, तुलसी की झलक है और रीतिकाल के घनानंद, रसखान, ठाकुर, बोधा और आलम का प्रभाव भी भारतेंदु

की कविता पर है। उन्होंने कवित्त सवैयों की रीतिकालीन परंपरा को आगे बढ़ाया। विरह का अस्वाभाविक वर्णन उन्होंने नहीं किया। उनकी विरह वेदना को अभिव्यक्त करती रचनाओं में स्वाभाविकता और अबोध प्रेम की उदभावना हुई है। वे राधा-कृष्ण और गोपिकाओं के परस्पर प्रेम को अपने युगानुकूल भाषा में व्यक्त करते हैं। कविता के लिए ब्रज भाषा को अपनाए रखना उन्हें पसंद आया। खड़ी बोली को उन्होंने गद्य के लिए रखा।

यदि आप भारतेंदु काव्य की संरचनागत विशेषताओं पर विचार करते हैं तो इसके अंतर्गत भाषा, काव्य रूप, छंद, रस, अलंकार आदि आते हैं। सरल, सरस, प्रचलित और परिष्कृत भाषा का प्रयोग करके और अनेक नए पुराने काव्य रूपों में भाषा प्रयोग करते हुए कवि ने मुक्तकों की झड़ी लगा दी। रसों में शृंगार और उसमें भी वियोग के चित्रण में बहुत नवीनता दिखाई। 'प्रेम माधुरी' संग्रह में संयोग और वियोग के जो अनेक पद हैं उनमें से केवल दो यहाँ प्रस्तुत किए गए। इन दो नमूनों से भी भारतेंदु की अनुपम प्रतिभा का अंदाजा लगाया जा सकता है। काव्यालंकारों के प्रयोग का एक अतिशयता पूर्ण रूप आपने 'गंगा' और 'यमुना' के वर्णन में देखा किंतु इनके संयत प्रयोग को यहाँ निर्धारित पदों में देखकर आप यह कह उठेंगे कि रीति कालीन काव्य व्यवस्था से भारतेंदु ने धीरे धीरे ही सही किंतु नाता अवश्य तोड़ा। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप भी इस बात को मानेंगे।

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. भारतेंदु की कविता में भक्ति और शृंगार के अद्‌भुत समावेश को देखा जा सकता है।
2. भारतेंदु ने विरह वेदना के वर्णन में उदात्त प्रेम की अभिव्यक्ति की है।
3. भारतेंदु के भक्ति एवं प्रेमपरक काव्य में अनन्यता और तन्मयता का अपूर्व संगम द्रष्टव्य है।
4. भारतेंदु ने सूरदास की भाँति ब्रज की गोपियों के स्वभाव में भोलेपन के साथ-साथ व्यावहारिकता का समावेश किया है।

3.6 शब्द संपदा

1. अभिसिंचित = अच्छी तरह सींचा हुआ, भावनात्मक स्तर पर पोषित
2. उपालंभ = उपालंभ का सरल अर्थ है 'उलाहना'। किंतु कवियों ने इसके द्वारा प्रेम और आत्मीयता को भी चित्रित किया है। शृंगार के वियोग पक्ष में यह संयोग की आकांक्षा से भर देता है। भक्ति-काव्य के अंतर्गत उपालंभ काव्य का प्रमुख आधार कृष्ण का मथुरा प्रवास है। गोपियों की वियोग-वेदना कृष्ण के मित्र उद्धव को आया देखकर और मुखर हो जाती है। वे भ्रमर के बहाने खूब अपने मन की कह देती हैं। ये दो पद तो बानगी हैं । भारतेंदु ने 'चंद्रावली' में इसका व्यापक चित्रण किया है।

3. ओतप्रोत = परस्पर मिला हुआ, भरा हुआ

4. तन्मयता = व्यस्त होने की स्थिति, लीन, दत्त चित्त

5. दीक्षित = जिसने दीक्षा प्राप्त की हो, सुयोग्य

6. निर्गुण ब्रह्म = निर्गुण संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ विशिष्टता रहित या गुण रहित ईश्वर या ब्रह्म है।

7. पराकाष्ठा = चरम सीमा, अति

8. परिष्कृत = साफ-सुथरा

9. पुष्टिमार्ग = संसार में दैहिक, दैविक एवं भौतिक दु:खों से दु:खी प्राणियों के लिए पुष्टिमार्ग साधना का वह पथ है, जिस पर चलकर व्यक्ति कष्टों से मुक्त होकर श्रीकृष्ण की भक्ति के अलौकिक आस्वाद को पाकर धन्य हो जाता है।

10. खड़ी बोली पैतृक दाय = पूर्वजों द्वारा प्राप्त विरासत

11. भ्रमर गीत = श्रीमदभागवत में गोपियों द्वारा भ्रमर को संबोधित करके उपालंभ (ताना) देना ही भ्रमर गीत कहलाता है। हिंदी साहित्य में सूरदास से लेकर अनेक कवियों ने इस परंपरा के अनुसार पदों को लिखा है। भारतेंदु ने भी कुछ पद इस परंपरा के अनुसार लिखे हैं।

12. मार्मिकता = किसी वस्तु या तथ्य के अंदर तक समझबूझ कर चलने का भाव

13. मुक्तक शैली = काव्य का वह रूप जिसमें एक ही छंद में एक विचार, एक भाव या एक अनुभूति को बिना किसी पूर्वापर संबंध के अपने आप में पूर्णता के साथ प्रस्तुत किया गया हो। भारतेंदु हरिश्चंद्र का लगभग समूचा काव्य मुक्तक के अंतर्गत आता है।

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

सही विकल्प चुनिए

1. भारतेंदु गद्य में विचार-अभिव्यक्ति के लिए किस भाषा को अपनाते हैं?

(अ) ब्रज भाषा **(आ) खड़ी बोली** (इ) अवधी (ई) भोजपुरी

2. भारतेंदु के भाषा प्रयोग को किसने 'चलती भाषा प्रयोग' कहा है?

(अ) रामचंद्र शुक्ल (आ) नगेंद्र (इ) रामस्वरूप चतुर्वेदी (ई) हजारी प्रसाद द्विवेदी

3. गोपिकाएँ किसके विरह में डूबी हैं?

(अ) उद्धव **(आ) श्रीकृष्ण** (इ) राधा (ई) यशोदा

4. अँखियाँ ..... दरसन की प्यासी।

(अ) सूरज (आ) यशोदा (इ) उद्धव **(ई) हरि**

5. भारतेंदु की रचनाओं में क्या मार्मिक हैं?

(अ) संयोग **(आ) वियोग** (इ) दोनों भी (ई) कोई नहीं

6. उद्धव अपने आपको किसके द्वारा प्रेषित निर्गुण ब्रहम का ज्ञाता बताते हैं ?

(अ) राम (आ) राधा **(इ) श्रीकृष्ण** (ई) लक्ष्मण

7. भारतेंदु वल्लभ संप्रदाय में दीक्षित कौनसे भक्त कवि थे।

(अ) शंकर भक्त (आ) हनुमान भक्त (इ) रामभक्त (ई) **श्रीकृष्ण भक्त**

8. भारतेंदु हरिश्चंद्र का लगभग समूचा काव्य किसके अंतर्गत आता है ?

(अ) आदिकाल (आ) भक्तिकाल (इ) रीतिकाल **(ई) आधुनिक काल**

9. "बिना प्रान-प्यारे भये दरस तुम्हारे, हाय! मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जाएँगी"॥ यह पंक्तियाँ किस कवि की हैं ?

(अ) भारतेंदु (आ) कबीर (इ) तुलसीदास (ई) मैथिलीशरण गुप्त

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए -

(अ) अन्य कृष्ण भक्त कवि और भारतेंदु की भक्ति

(आ) भारतेंदु की कविता में विरह वेदना

(इ) भारतेंदु के कवित्त सवैयों का प्रतिपाद्य

(ई) भारतेंदु की काव्य भाषा

2. "ऊँची दुकान फीके पकवान" लोकोक्ति का प्रयोग करके कवि भारतेंदु ने क्या भाव व्यंजना की है? स्पष्ट कीजिए ।

3. भारतेंदु के पदों से उनके चपल वाग्वैभव का अहसास किस प्रकार होता है, उदाहरण देकर बताइए?

4. आपके विचार से भारतेंदु ने किस भक्त कवि का अपनी कविता में अधिक अनुसरण किया है?

5. भारतेंदु के विरह के पद पढ़कर क्या आपको भी लगता है कि वे अपनी कविता के लिए भाव 'दस तरह के आदमियों के साथ उठ बैठकर' भी प्राप्त करते थे?

खंड (क)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. कृष्ण भक्त परंपरा में भारतेंदु के योगदान का विवेचन कीजिए।

2. वियोग के रूपों के आधार पर पठित पदों में वर्णित विरह वेदना के स्वरूप का निर्धारण करें ।

3. “भारतेंदु के पदों में भाव व काव्य सौंदर्य का अनूठा संतुलन है।” तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।
4. पठित पदों के आधार पर गोपियों के वाकचातुर्य का विश्लेषण ‘भ्रमर-गीत परंपरा’ के विशेष संदर्भ में कीजिए ।

3.8 पठनीय पुस्तकें

1. भारतेंदु समग्र : सं. हेमंत शर्मा
2. भारतीय साहित्य शास्त्र कोश : राजवंश सहाय हीरा
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र : ब्रजरत्न दास
4. भारतेंदु हरिश्चंद्र : लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

इकाई 4 : मातृभाषा प्रेम : भारतेंदु हरिश्चंद्र

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 मूल पाठ : मातृभाषा प्रेम : भारतेंदु हरिश्चंद्र

4.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

4.3.2 अध्येय कविता

4.3.3 विस्तृत व्याख्या

4.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

4.4 पाठ सार

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

4.6 शब्द संपदा

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

4.8 पठनीय पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! भारतेंदु युग के कवियों का 'मातृभाषा प्रेम' एक से बढ़कर एक है। उन्होंने अपने इस प्रेम की अभिव्यक्ति कविताओं के माध्यम से भी की है। इस पथ का श्रीगणेश भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1885) ने किया। भारतेंदु ने हिंदी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। उन्हें हिंदी की तत्कालीन दुर्दशा पर अत्यंत क्षोभ था। फारसी के बाद तब उर्दू का राजकाज में बोलबाला था। उस युग के कवियों ने उर्दू बीबी का जो मज़ाक उड़ाया और भारतेंदु ने 'उर्दू का स्यापा' (1868) लिखा वह भी उनके हिंदी प्रेम का ही सूचक है। अंग्रेजी के प्रति भी वे शंकाशील थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र के हिंदी प्रेम की पराकाष्ठा उनके हिंदी की उन्नति पर व्याख्यान से प्रकट होती है। हिंदी पढ़ने के पक्ष में वे इतने तर्क देते हैं कि यहाँ इन 10 दोहों में कुल 98 दोहों का मर्म पूर्णतः प्रकट नहीं हो सकता। फिर भी उसकी एक स्पष्ट झलक यहाँ अवश्य दिखाई देगी। स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रयत्नों के फलस्वरूप स्वतंत्रता के पश्चात संविधान ने उसे राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित किया गया। इसका कुछ श्रेय भारतेंदु हरिश्चंद्र के 'मातृभाषा प्रेम' को भी अवश्य देना होगा। भारत के भविष्य का पूर्वानुमान करके भारतेंदु ने 'निज भाषा' को सभी प्रकार की उन्नति का 'मूल' और उसके अज्ञान को हिय का 'शूल' घोषित

किया था।

4.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई में आप भारतेंदु हरिश्चंद्र की कविता 'मातृभाषा प्रेम' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप -

- निर्धारित कविता की सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।
- निर्धारित कविता के शिल्प सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।
- भारतेंदु हरिश्चंद्र के भाषा संबंधी विचारों से अवगत हो सकेंगे।
- स्वभाषा और मातृभाषा का महत्व समझ सकेंगे।
- व्यक्तित्व विकास में मातृभाषा की भूमिका से परिचित हो सकेंगे।
- सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान में अपनी भाषा की आवश्यकता को समझ सकेंगे।

4.3 मूल पाठ : मातृभाषा प्रेम : भारतेंदु हरिश्चंद्र

4.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

प्रिय छात्रो! भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित 10 दोहों के इस संकलन का हिंदी भाषा और साहित्य के अध्येताओं में बहुत सम्मान है। शायद ही कोई हिंदी प्रेमी होगा जो इनमें से कई दोहों को न जानता हो। भारतेंदु ने जून 1877 में 'हिंदी वर्धिनी सभा' में 'हिंदी की उन्नति पर एक व्याख्यान' (हिंदी प्रदीप खंड 1, संख्या 1-2, काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा 'हिंदी भाषा' नाम से प्रकाशित) नामक काव्यात्मक निबंध पढ़ा था। इस निबंध में 98 दोहें हैं और इन सबका आधार है हिंदी, हिंदुस्तानी और हिंदुस्तान के प्रति असीम प्रेम। निज भाषा ज्ञान को संस्कृत और अंग्रेज़ी के ज्ञान से अधिक उपयोगी मानते हुए हरिश्चंद्र कहते हैं कि निज भाषा हिंदी की उन्नति करके ही अपने देश भारत या हिंदुस्तान की सब प्रकार की उन्नति हो सकती है। बाबू भारतेंदु हरिश्चंद्र विरचित यहाँ संकलित 10 दोहों को 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से प्रस्तुत किया गया है। मातृभाषा की उन्नति कैसे हो? यहाँ मातृभाषा के दो अर्थ हैं - व्यापक अर्थ में यह 'निज भाषा' है और कोई भी भाषा हो सकती है। दूसरी ओर यह 'हिंदी' है जिसकी उन्नति का लक्ष्य है। किसी भी समाज और व्यक्ति के लिए ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में उन्नति तभी संभव है जब अपनी भाषा (हिंदी) की उन्नति और अभिवृद्धि हो। इसके लिए उसका व्यापक प्रयोग हो और दूसरी देशी-विदेशी भाषाओं का सम्मान करते हुए अपनी मातृभाषा की उन्नति के सभी प्रयत्न किए जाने चाहिए। यदि हम अपनी सर्वांगीण उन्नति चाहते हैं तो अपनी भाषा के माध्यम से ही कर सकते हैं।

4.3.2 अध्येय कविता : मातृभाषा प्रेम

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

बिन निज भाषा-ज्ञान के मिटत न हिय को सूल । 1।
अंग्रेज़ी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन । 2।
उन्नति पूरी है तबहिँ, जब घर उन्नति होय
निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय । 3।
निज भाषा उन्नति बिना, कबहूं न ह्वैहैं सोय ।
लाख उपाय अनेक यों, भले करे किन कोय । 4।
इक भाषा इक जीव इक, मति सब घर के लोग
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग। 5।
और एक अति लाभ सब, बात सुनै जो कोय
निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात । 6।
तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनाई जो कोय
यह गुन भाषा और महं, कबहुँ नाहीं होय । 7।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार । 8।
भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात
विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात । 9।
सब मिल तासों छांड़ि कै, दूजे और उपाय
उन्नति भाषा की करहु, अहो भ्रातगन आय । 10 ।

निर्देश : इन दोहों का सस्वर वाचन कीजिए।
इन दोहों का मौन वाचन कीजिए।

4.3.3 विस्तृत व्याख्या

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के मिटत न हिय को सूल ।

शब्दार्थ : निज = अपनी। हिय = हृदय। सूल = पीड़ा।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से संकलित और मूलतः 'मातृभाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के रूप में आधुनिक काल के युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित है।

प्रसंग : हिंदी भाषा के विकास और प्रचार के लिए सदैव तत्पर भारतेंदु ने इस दोहे में सूत्र रूप से 'निज भाषा' की उन्नति के विषय में अपने विचार व्यक्त किए हैं।

व्याख्या : कवि भारतेंदु का स्पष्ट मत है कि अपनी भाषा की उन्नति में ही सब प्रकार की उन्नति और विकास निर्भर है। इसकी ही उन्नति से जीवन में सभी प्रकार की उन्नति संभव है और यही एकमात्र उपाय है। अपने हृदय की पीड़ा और मानसिक क्लेश से छुटकारा तभी संभव है जब अपनी भाषा का विकास हो। दूसरों की भाषा के प्रयोग से अपना भला कदापि संभव नहीं।

व्याख्या : 'निज भाषा' से कवि का सीधा और स्पष्ट संकेत यहाँ 'हिंदी' से है। भारतेंदु से समय में अंग्रेज़ी भाषा का राजकाज में वर्चस्व होता जा रहा था जो भारतीयों के लिए अपमानजनक था। यह भाव 'शूल' या काँटे जैसा चुभा जा रहा था कि अपने देश में अपनी भाषाओं की उन्नति नहीं हो रही है।

काव्यगत विशेषता

यह दोहा ब्रज भाषा में है जो हिंदी क्षेत्र की 18 बोलियों में से एक है। हिंदी भाषा की प्राण प्रतिष्ठा करना इसका मुख्य लक्ष्य है। अंग्रेज़ी शासन के प्रति संकेत रूप में आ-विकर्षण का भाव 'हिय को सूल' कहकर व्यक्त किया गया है।

(आप आगे दूसरे 9 दोहों में कोई काव्यगत विशेषता न देखें तो यहाँ दी गई विशेषताओं को ही वहाँ लिखा गया मान लें। यह भी उल्लेखनीय है कि दोहा एक ऐसा छंद हैं जो शब्दों की मात्राओं के अनुसार निर्धारित होता है। इसके दो पद होते हैं तथा प्रत्येक पद में दो चरण होते हैं। पहले चरण को विषम चरण तथा दूसरे चरण को सम चरण कहा जाता है। विषम चरण की कुल मात्रा 13 होती हैं तथा सम चरण की कुल मात्राएँ 11 होती हैं। अर्थात दोहा का एक पद 13-11 की यति (रुकावट, विश्राम) पर होता है। इस यति का ध्यान आप दोहा पढ़ते समय अवश्य रखें।)

बोध प्रश्न

- 'निज' भाषा से क्या तात्पर्य है?
- हृदय की पीड़ा क्या है और यह कैसे दूर हो सकती है?
- इस दोहे की सार्वभौमिकता पर टिप्पणी कीजिए।

अंग्रेज़ी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन ।

शब्दार्थ : जदपि = यद्यपि। गुन = गुण। प्रवीन = प्रवीण, योग्यता प्राप्त करना। पै = फिर भी।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से संकलित और मूलतः 'मातृभाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के रूप में आधुनिक काल के युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित है।

प्रसंग : जहाँ 'निज' भाषा से हिंदी और समस्त भारतीय भाषाओं से तात्पर्य है और दूसरी ओर विदेशी भाषा अंग्रेज़ी का प्रचार प्रसार है जिसको सर्व ज्ञान का स्रोत कहा जा रहा है किंतु ऐसा

नहीं है।

व्याख्या : भारतेंदु हरिश्चंद्र के मतानुसार अंग्रेज़ी भाषा के पठन-पाठन से भारतीय अनेक गुणों से चाहे माला माल हो जाए और चाहे ज्ञान विज्ञान की अनेक जानकारी उन्हें सहज ही अंग्रेज़ी के माध्यम से प्राप्त हो जाए। किंतु फिर भी अपनी भाषा के ज्ञान के बिना उनका सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। वे हीन के हीन ही रहेंगे। तात्पर्य यह है कि उनका सम्मान तभी होगा जब वे अपनी भाषा में प्रवीणता प्राप्त करके गौरवान्वित होंगे।

काव्यगत विशेषता

भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक गौरव की स्थापना का पहला कदम निजभाषा ज्ञान है। बिना मातृभाषा के ज्ञान और अध्ययन या अंग्रेज़ी माध्यम से प्राप्त जानकारी अधूरी रहेगी।

बोध प्रश्न

- 'हीन के हीन' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उन्नति पूरी है तबहिं, जब घर उन्नति होय ।
निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय ॥

शब्दार्थ : घर = स्वदेश। निज = अपनी। मूढ़ = मूर्ख।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से संकलित और मूलतः 'मातृभाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के रूप में आधुनिक काल के युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित है।

प्रसंग : इस दोहे में कवि ने स्व की उन्नति से पहले स्वदेश की उन्नति का विचार करने के विचार पर गंभीरता से सोचने को कहा है।

व्याख्या : भारतेंदु ने स्वदेश के प्रति जन-चेतना जाग्रत करने के लिए इस दोहे में देश को देह से आगे रखकर देखने के लिए कहा है। वे कहते हैं कि तब तक हमारी उन्नति अधूरी रहेगी जब तक हमारा घर उन्नति प्राप्त नहीं कर लेता। हमारा 'घर' हमारा देश है। देश वंदना का सबसे अच्छा मार्ग है अपने घर अर्थात देश को विकास के मार्ग पर अग्रसर करने की चेष्टा करना। आत्मोन्नति या अपनी उन्नति और विकास के फलस्वरूप भी सबका मूर्ख और अज्ञानी रह जाना संभव है।

बोध प्रश्न

- हमारी उन्नति कब पूरी होगी? कब नहीं?

निज भाषा उन्नति बिना, कबहूं न ह्वैहैं सोय ।
लाख उपाय अनेक यों, भले करे किन कोय ।

शब्दार्थ : ह्वैहैं = होंगे। यों का अर्थ = इस प्रकार से। किन = क्यों। कोय = कोई।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से संकलित और मूलतः 'मातृभाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के रूप में आधुनिक काल के युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित है।

प्रसंग : इस दोहे में कवि अपनी भाषा की उन्नति के साधन के विषय में अपने विचार व्यक्त करते

हैं।

व्याख्या : कवि ने इस दोहे के द्वारा अपने पाठकों को यह सलाह और सीख दी है कि अपनी भाषा की उन्नति और विकास के लिए हमें विश्राम या नींद लेना गंवारा नहीं करना चाहिए। अपनी भाषा की उन्नति के अभाव में कैसी नींद और काहे का विश्राम?

बोध प्रश्न

- इस दोहे में निज भाषा की उन्नति के बिना क्या न करने के लिए कहा गया है?

इक भाषा इक जीव इक, मति सब घर के लोग।
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग।।

शब्दार्थ : इक = एक। मति = बुद्धि, विचार। तबै=तभी। सों = के। मूढ़ता = मूर्खता। सोग= शोक, दुख।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से संकलित और मूलतः 'मातृभाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के रूप में आधुनिक काल के युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित है।

प्रसंग : कवि इस दोहे में अपनी भाषा की उन्नति के लिए आपसी मतभेद को मिटाने के लिए कहते हैं ।

व्याख्या : कवि का मत है कि तभी हमारे मन का शोक और हमारी मूर्खता पर हमारी विजय होगी जब हम एक एक करके सभी अपनी विद्या बुद्धि से विचार कर एक साथ एक स्वर में अपनी मातृ भाषा की उन्नति के प्रति सचेत होंगे। कवि घर को सामान्य अर्थ - परिवार से लेकर इसके व्यापक अर्थ की ओर भी संकेत करते हैं। आपसी बातचीत में अपनी भाषा प्रयोग और व्यापक रूप से उसका प्रयोग दोनों ही हमारी जड़ता, अज्ञान और मूर्खता को नष्ट करने वाले हैं।

बोध प्रश्न

- मूर्खता से शोक कैसे बढ़ता है और इसे दूर करने का क्या उपाय है?

और एक अति लाभ सब, बात सुनै जो कोय।
निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात।।

शब्दार्थ : सुनै = सुनेंगे। निज भाषा = अपनी भाषा

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से संकलित और मूलतः 'मातृभाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के रूप में आधुनिक काल के युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित है।

प्रसंग : कवि अपनी मातृ भाषा के माध्यम से आपसी विचार विनिमय करने का एक ओर लाभ भी बताते हैं।

व्याख्या : भारतेंदु के अनुसार अपनी भाषा में वार्तालाप करने से और उसका प्रयोग सूचना और ज्ञान के प्रचार प्रसार के लिए करने से एक लाभ यह होगा कि सब आपकी बातों को सुनेंगे। यही नहीं जो भी सुनेगा वह उस बात को उसी अर्थ में ग्रहण भी करेगा। किसी प्रकार की कोई गलतफहमी न हो सकेगी।

बोध प्रश्न

• अपनी भाषा में बातचीत करने का एक दूसरा लाभ यहाँ क्या बताया गया है?

तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनाई जो कोय।

यह गुन भाषा और महं, कबहुँ नाहीं होय।।

शब्दार्थ : तेहि = इसको। पावै= प्राप्त करते हैं। महं = में। कबहुँ = कभी भी। होय = होगा।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से संकलित और मूलतः 'मातृभाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के रूप में आधुनिक काल के युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित है।

प्रसंग : इस दोहें में भी इस बात को एक बार फिर से कहा गया है कि अपनी भाषा में आपसी विचार विमर्श करना दूसरी भाषा में कुछ कहने सुनने से अच्छा है।

व्याख्या : कवि के विचार में अपनी भाषा के प्रयोग से सभी को लाभ होता है। सभी बात को सही सही सुन समझ लेते हैं। यह गुण किसी ओर भाषा में कभी न होगा। कहने का अर्थ है कि अन्य भाषा प्रयोग से सबको एक साथ वह लाभ प्राप्त नहीं कराया जा सकता। यह कभी नहीं हो सकता कि अपनी भाषा प्रयोग के मुक़ाबले दूसरी भाषा में वह लाभ हो।

बोध प्रश्न

• मातृभाषा को छोड़कर अन्य भाषा में कौनसा गुण नहीं हो सकता?

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।

सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।

शब्दार्थ : अमित = बेहद, अत्यधिक। देसन = देशों में। माहि = माध्यम से।

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से संकलित और मूलतः 'मातृभाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के रूप में आधुनिक काल के युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित है।

प्रसंग : इस दोहे में भारतेंदु अपनी भाषा के महत्व को समझाने के बाद उसके माध्यम से दूसरी भाषाओं के ज्ञान के प्रसार के महत्व को बताते हैं।

व्याख्या : विश्व में अनेक भाषाएँ हैं। अनेक भाषाओं में विज्ञान, कला, शिक्षा आदि के विविध क्षेत्रों में बहुत सी ज्ञानवर्धक बातें भरी पड़ी हैं। हमें अपनी भाषा की उन्नति के लिए सब देशों की सब भाषाओं से उस ज्ञान को लेकर अपने लोगों में अपनी भाषा के द्वारा उसका प्रचार करना चाहिए। यहाँ कवि अनुवाद के महत्व को स्वीकार करते हुए अपनी भाषा की उन्नति के लिए उसके उपयोग को सुनिश्चित करना चाहता है।

बोध प्रश्न

• सब देशों से क्या और किस प्रकार लेना चाहिए?

भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात।

विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात।

शब्दार्थ : अति = बहुत। ताहीं= तभी। सों = तो। उत्पात = विघ्न, बाधा। मतहू= मत, विचार-

धाराएँ, लखात = देखना

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से संकलित और मूलतः 'मातृभाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के रूप में आधुनिक काल के युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित है।

प्रसंग : कवि यहाँ भारत की भिन्नता और विविधता के संदर्भ में अनेक भाषाओं की भूमिका का विश्लेषण करते हैं।

व्याख्या : कवि भारतेंदु के अनुसार भारत में भाषाई एकता के मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं। हमारे देश में सब कुछ अलग अलग और भिन्न-भिन्न है और शायद यह भी झगड़े की जड़ प्रतीत होता है। यहाँ इतने मत, संप्रदाय, विचारधाराएँ और राज्य तो हैं ही, भाषाएँ और बोलियाँ भी अनेक देखी जाती हैं। इस भिन्नता के कारण हिंदी की उन्नति में बाधा आ जाती है।

बोध प्रश्न

- 'उत्पात' शब्द का यहाँ प्रयोग करके कवि किस ओर संकेत कर रहा है?

सब मिल तासों छांड़ि कै, दूजे और उपाय।

उन्नति भाषा की करहु, अहो भ्रातगन आय।।

शब्दार्थ : तासों = उनको (भिन्नताओं को)। छांड़ि= छोड़ कर। दूजे = दूसरा। अहो = अरे!

संदर्भ : प्रस्तुत दोहा 'मातृभाषा प्रेम' शीर्षक से संकलित और मूलतः 'मातृभाषा की उन्नति पर व्याख्यान' के रूप में आधुनिक काल के युग प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा विरचित है।

प्रसंग : इस दोहे में कवि आपसी सद्भाव और मेलमिलाप के द्वारा अपनी भाषा (हिंदी) की उन्नति में लग जाने को कहता है।

व्याख्या : भारतेंदु जी कहते हैं कि हम सब भारतवासियों को प्रांत, भाषा, पंथ, मत, संप्रदाय आदि की भिन्नता को छोड़कर या त्यागकर भारतवर्ष की उन्नति के लिए दूसरा एक अचूक उपाय करना चाहिए। सभी भाइयों और बहनों को एक साथ मिलकर अपनी भाषा हिंदी की उन्नति करनी चाहिए।

बोध प्रश्न

- सब कुछ छोड़कर सबसे पहले क्या करना चाहिए और कैसे?

4.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

यह कथन अब आपको मुँह जबानी याद ही हो गया होगा कि 1877 में 'हिंदी वर्धिनी सभा' में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी के संबंध में एक काव्यात्मक व्याख्यान दिया था। इसमें कवि का निज-भाषा प्रेम छलक-छलक पड़ता है। उनका मत है कि आप संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेज़ी आदि देशी विदेशी भाषाओं के चाहे कितने ही बड़े विद्वान क्यों न हों, परंतु अपनी भाषा के ज्ञान के बिना आपका यह ज्ञान व्यर्थ है। भारतेंदु स्वयं बहुभाषाविद थे। वे हिंदी के अतिरिक्त कई अन्य भाषाएँ भी जानते थे। उन्होंने संस्कृत, बंगला और अंग्रेज़ी से अनुवाद किए। उर्दू में भी

लिखा। किंतु अपने जातीय गौरव, धार्मिक अस्मिता, सामाजिक महत्ता और ऐतिहासिक आवश्यकता के कारण वे हिंदी को निज भाषा के रूप में अंगीकार कर प्रेरणास्पद बने।

भारतेंदु के निज भाषा प्रेम में कोई धार्मिक संकीर्णता नहीं है। उन्होने निजी स्वार्थ की तुलना में देश, धर्म और समाज के हित को अधिक महत्व दिया। हिंदी भाषा और नागरी लिपि के विकास, प्रचार और प्रसार को भारतीयों के उत्थान और उन्नति की पहली शर्त माना। बलिया में दिये गए व्याख्यान 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है' (1884) को एक बार ही पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि भारतेंदु में स्वदेशी की भावना और राष्ट्र की धर्मनिरपेक्ष परिकल्पना अपने समय से बहुत आगे थी। वे मानो आधुनिक भारत के संविधान की प्रस्तावना को बहुत पहले से पूर्वाशित करते दिखाई देते हैं। वे कहते हैं, 'परदेसी वस्तु और परदेसी भाषा का भरोसा मत करो। अपने देश में, अपनी भाषा में उन्नति करो।' हंटर कमीशन के समक्ष अपनी गवाही में भी आपने मातृभाषा हिंदी का पक्ष प्रस्तुत किया था।

यहाँ उनका तर्क यह है कि प्रत्येक जाति अपनी ही भाषा को छोड़कर कभी किसी अन्य अधिक पूर्ण भाषा को नहीं अपनाती। अंग्रेजी में उच्चारण आदि के अनेक प्रकार के दोष हैं, पर अंग्रेज़ जाति ने कभी किसी अन्य अधिक पूर्ण भाषा को नहीं अपनाया। बल्कि वे अनेक देशों की भाषाओं के शब्द और ज्ञान को अपनी भाषा को समृद्ध बनाने के लिए प्रयोग करते हैं। भारतेंदु का मत है कि जब अपने समर्थकों की शक्ति से एक अपूर्ण भाषा इतनी व्यापक बन सकती है तो क्या एक वैज्ञानिक और पूर्ण भाषा इस स्थिति को प्राप्त नहीं कर सकती। हिंदी की महत्ता और अँग्रेजी तथा उर्दू के समक्ष तत्कालीन हिंदी की चिंताजनक स्थिति और इसकी उन्नति को सब उन्नति का मूल मानते हुए भविष्य-दृष्टा की तरह अपने इस सुचिंतित व्यक्तित्व में वे देशवासियों को हिंदी के बहाने निज भाषा के उत्थान के लिए प्रेरणा देते हैं।

भारतेंदु ने एक ओर तो संस्कृत और फारसी भाषा की जटिलता की ओर ध्यान आकृष्ट किया दूसरी ओर उर्दू और हिंदी के प्रश्न को भी विचारार्थ प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुतीकरण में किसी भी भाषा के प्रति कोई दुराग्रह या बैर भाव न था। वे न तो अंग्रेजी के महत्व को नकारते हैं और न बहुभाषा के ज्ञान को व्यर्थ समझते हैं। उन्होंने यह अवश्य बल देकर कहा कि अपनी भाषा के संस्कारों के बिना कोई चाहे कितना भी बहुभाषाविद हो जाए परंतु वह अधूरा ही रहेगा। उन्होंने उदाहरण देकर यह भी कहा कि विदेशियों की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति का रहस्य यही है कि वे अपनी भाषा में ज्ञान-विज्ञान व साहित्य का संग्रह और विकास करते हैं। भारतेंदु ने यह भी बता दिया कि संसार का विविध ज्ञान जहाँ से भी मिले उसे अनुवाद के माध्यम से अपनी भाषा में लाना चाहिए। अपनी भाषा को भी पूरी कोशिश करके संसार भर में फैलाना चाहिए। इसके लिए हमें आपसी वैर विरोध छोड़कर मिल जुलकर अनेक माध्यमों से अपनी भाषा के प्रचार द्वारा उसकी उन्नति करनी चाहिए। हिंदी से और हिंदी में अनुवाद और पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन, सृजनात्मक लेखन और ज्ञान विज्ञान का निज भाषा के माध्यम से पठन-पाठन आदि भारतेंदु के लिए निज भाषा उन्नति के साधन हैं।

'हिंदी साहित्य का इतिहास' के लेखक आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनेक निबंध 'चिंतामणि' (1939) पुस्तक में संग्रह किए गए हैं। इनमें से एक निबंध का शीर्षक है - भारतेंदु हरिश्चंद्र। इसे आपको अवश्य पढ़ना चाहिए। 'हिंदी गद्य साहित्य के स्वरूप प्रतिष्ठापक' और 'वर्तमान साहित्य परंपरा के प्रवर्तक' (शुक्ल जी के शब्द) के रूप में भारतेंदु हिंदी भाषा को परिष्कृत, परिमार्जित और परिनिष्ठित करने के लिए विविध प्रकार से जुट पड़े थे। वे हिंदी की स्वतंत्र सत्ता को स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने हमारे जीवन के साथ हमारे साहित्य को फिर से लगा दिया। देशभक्ति को कविता का विषय बनाया। नीलदेवी, भारत दुर्दशा आदि नाटकों में संवाद के रूप में जो कविताएँ भारतेंदु के लिखीं उनमें अतीत का गौरव गान, वर्तमान के प्रति रोष, भविष्य की चिंता आदि भरे पड़े हैं। स्वदेशाभिमान, स्वजाति-प्रेम, समाज-सुधार आदि भावनाओं को अपनी रचनाओं में गूँथा। उन्होंने अपनी कविताओं में नए नए भाव तो भरे किंतु उसके स्वरूप को परंपरानुसार ही रखा। प्रचलित दोहा छंद का प्रयोग करते हुए और भाषा को ब्रज ही रखते हुए भारतेंदु उनमें 'निज भाषा' के प्रति प्रेम के भाव भर देते हैं।

बोध प्रश्न

- भारतेंदु का निज भाषा प्रेम कैसा था?
- भारतीयों के उत्थान और उन्नति की पहली शर्त के रूप में किसे माना गया?

विवेचनात्मक टिप्पणी

प्रिय छात्रो! भारतेंदु हरिश्चंद्र का भाषा संबंधी दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट और उदार था। उनके समय में एक ओर तो यह विवाद चल रहा था कि हिंदी साहित्य की भाषा का स्वरूप क्या हो - ब्रज भाषा अथवा खड़ी बोली। उन्होंने यह अनुभव किया कि पत्रकारिता जैसे नए माध्यम द्वारा हिंदी साहित्य को यदि अधिक व्यापक पाठक समूह तक पहुँचना है, तो ब्रज भाषा की तुलना में खड़ी बोली अधिक उपयुक्त होगी। इसलिए उन्होंने गद्य के लिए खड़ी बोली की वकालत की। आगे चलकर पद्य के लिए भी खड़ी बोली ही स्वीकार कर ली गई। दूसरा विवाद यह था कि हिंदी भाषा का स्वरूप कैसा हो - संस्कृत निष्ठ या अरबी-फारसी निष्ठ। भारतेंदु ने इन दोनों ही स्वरूपों को अतिवादी माना और लोक प्रचलित हिंदी को साहित्य की भाषा बनाने पर ज़ोर दिया। कहना न होगा कि आगे चलकर प्रेमचंद और महात्मा गांधी ने इसी भाषा रूप को अपनाया। एक तीसरा विवाद और था जो इन दोनों विवादों की तुलना में विकट था। अंग्रेजी और भारतीय भाषा के बीच चुनाव का विवाद। भारतेंदु हरिश्चंद्र बड़ी सीमा तक इस बात के पक्षधर तो थे कि सभी भारतीयों को आधुनिक शिक्षा और ज्ञान-विज्ञान से परिचित होना चाहिए। लेकिन इसके लिए अंग्रेजी भाषा को माध्यम बनाना उन्हें उचित नहीं लगता था। इसीलिए उन्होंने 'निज भाषा' के रूप में अपनी-अपनी मातृभाषाएँ अपनाने का संदेश दिया। वे मानते थे कि भले ही कोई व्यक्ति या समाज अंग्रेजी के माध्यम से अनेक विद्याओं में प्रवीण हो जाए, लेकिन यदि वह अपनी भाषा से अपरिचित है तो उसकी उन्नति संभव नहीं। उन्होंने अपने

इस संदेश द्वारा भारतीयों को भाषागत हीनता की ग्रंथि से मुक्त होने में सहायता की। उन्होंने समझाया कि निज भाषा के ज्ञान के बिना आप हीन के हीन ही रह जाते हैं।

हिंदी साहित्य के इतिहास में भारतेंदु हरिश्चंद्र को युग प्रवर्तक माने जाने का एक बड़ा कारण उनकी भाषा संबंधी क्रांतिकारी चेतना भी है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने माना है कि हिंदी साहित्य में भाषा का निखरा हुआ शिष्ट सामान्य रूप भारतेंदु की कला के साथ ही प्रकट हुआ। उनके प्रभाव से उसका काल के सब लेखकों ने अपनी भाषा की प्रकृति को अच्छी तरह परख कर युग के अनुरूप नया मुहावरा गढ़ा। यथा -

> "हरिश्चंद्र काल के सब लेखकों में अपनी भाषा की प्रकृति की पूरी परख थी। संस्कृत के ऐसे ही शब्दों और रूपों का व्यवहार वे करते थे जो शिष्ट समाज के बीच प्रचलित चले आते हैं। जिन शब्दों या उनके जिन रूपों से केवल संस्कृत भाषी ही प्रचलित होते हैं और जो भाषा के प्रवाह के साथ ठीक चलते नहीं उनका प्रयोग वे बहुत औचट में पड़कर ही करते थे। ... सारांश यह कि उस काल में हिंदी का शुद्ध साहित्य-उपयोगी रूप ही नहीं, व्यवहार-उपयोगी रूप भी निखरा। (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.308)

4.4 पाठ सार

उपर्युक्त संकलित दोहों के द्वारा भारतेंदु हरिश्चंद्र के निज भाषा प्रेम की बानगी मिलती है। यहाँ निज भाषा से तात्पर्य हिंदी भाषा से है। हिंदी, हिंद-देशवासी और हिंदुस्तान के प्रति भारतेंदु का प्रेम जितना प्रबल है उतनी ही विरक्ति उन्हें विदेशी भाषा अंग्रेजी से है। भारतेंदु का स्वदेश प्रेम यही है। उनका मानना है कि निज भाषा के प्रचार प्रसार के द्वारा ही हमारा पूर्ण विकास संभव है। उन्होंने निज भाषा हिंदी की उन्नति करके अपने देश भारतवर्ष की सर्वांगीण उन्नति करने के लिए अपने देशवासियों का आह्वान किया है। उनका मानना था कि किसी देश या जाति की समग्र प्रगति उस देश या जाति की अपनी भाषा की उन्नति में निहित होती है। वे इसके लिए अंग्रेजों और उनकी भाषा अँग्रेजी को इसका प्रमाण मानकर प्रस्तुत करते हैं।

अंग्रेज़ जाति ने अपनी भाषा की उन्नति करके ही अपने साम्राज्य को विश्व भर में फैलाया। अपनी भाषा की सम्यक जानकारी और उसके बहुविध प्रयोग के द्वारा ही हमारे सब दुख दूर होंगे। समस्त ज्ञान जब अपनी भाषा के माध्यम से उपलब्ध होता है तो देशवासियों के मन की पीड़ा तो दूर होती ही है उनके जीवन का अंधकार भी ज्ञान के प्रकाश से मिट जाता है। इससे भाव और चिंतन की कुछ ऐसी एकता स्थापित होती है कि अन्य लोग भी प्रेरणा प्राप्त करने लगते हैं। इसलिए अपनी भाषा की उन्नति की दिशा में प्रयत्न करना हरेक नागरिक का पावन कर्तव्य है।

आओ, अपनी भाषा की उन्नति में लगें। इसे राजकाज की भाषा बनाएँ। अपनी भाषा में हर तरह के अनुसंधान करें। आपस का बैर विरोध छोड़कर एक प्राण हो जाएँ। सभी तत्पर होकर भारतमाता की आदर्श संतान बनें। कब तक हम दुख सहते रहेंगे। विदेशी भाषा के गुलाम बने रहेंगे। अब न कोरे ज्ञान से काम चलेगा और न आराम फरमाने से। बुद्धि, विज्ञान और समृद्धि से

पीछे रहने का कारण हमारा अज्ञान है। आपस के वैर भाव को भुलाकर निज भाषा की उन्नति लक्ष्य हो। देश के जीवन में सवेरा तभी होगा जब मिलकर हम इस लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भारत की भाषा समस्या को गहराई से समझा था।
2. भारतेंदु की मान्यता है कि कोई भी समाज तभी उन्नति कर सकता है जब वह अपने दैनिक कार्यों से लेकर ज्ञान-विज्ञान तक सारे प्रयोजनों के लिए अपनी भाषा का व्यवहार करे।
3. भारतेंदु ने भारतीयों की दीनता और पराधीनता को दूर करने के लिए निज भाषा द्वारा आत्मगौरव का संदेश दिया।
4. भारतेंदु अंग्रेजी और पाश्चात्य ज्ञान के विरोधी नहीं थे। परंतु वे अवश्य चाहते थे कि राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक के रूप में हर भारतीय को अपनी भाषा में अवश्य प्रवीण होना चाहिए।

4.6 शब्द संपदा

1. अनुनय = विनय, विनती
2. आकांक्षा = इच्छा
3. क्षोभ = बहुत दुख, व्याकुलता
4. निधि = खजाना, संपत्ति
5. पराकाष्ठा = चरम सीम
6. पुरोधा = प्रमुख
7. प्रतिपाद्य = किसी बात को साबित करना (कविता का प्रतिपाद्य का अर्थ है कि उस कविता के माध्यम से कवि ने किस बात पर किस प्रकार से बल दिया है और वास्तव में क्या कहना चाहा है।)
8. प्रतिष्ठापक = प्रतिष्ठा करने वाला, संस्थापक
9. मनीषा = बुद्धि
10. विरक्ति = किसी वस्तु या व्यक्ति में रुचि न रह जाना
11. सर्वांगीण = सभी अंगों में व्याप्त होने वाला, पूर्ण

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

4.7.1 सही विकल्प चुनिए।

1. भारतेंदु किस काल या युग के कवि नहीं हैं -

(अ) भक्ति काल (आ) भारतेंदु युग **(इ) आधुनिक काल** (ई) आदि काल

2. वियोग में उपालंभ का अर्थ है -

(अ) दुख **(आ) शिकायत** (इ) अशिष्ट व्यवहार (ई) उपदेश

3. 'भारतेंदु हरिश्चंद्र' निबंध किसकी रचना है?

(अ) हेमंत शर्मा (आ) ब्रजरत्नदास **(इ) रामचंद्र शुक्ल** (ई) रामविलास शर्मा

4. भारतेंदु के द्वारा रचित 'मातृभाषा प्रेम' के दोहों की भाषा क्या है?

(अ) ब्रजभाषा (आ) पुरानी हिंदी (इ) आधुनिक हिंदी (ई) इनमें से कोई नहीं

5. भारतेंदु के अनुसार ..... की उन्नति सब उन्नति की जड़ है।

(अ) मातृभाषा (आ) स्त्रोत भाषा **(इ) निज भाषा** (ई) इनमें से कोई नहीं

6. भारतेंदु ने 'मातृभाषा प्रेम' में कितने दोहे संकलित किए हैं?

(अ) 10 (आ) 15 (इ) 20 (ई) 25

7. भारतेंदु के लिए यहाँ व्यापक अर्थ में निज भाषा का तात्पर्य ..... से है।

(अ) अंग्रेजी **(आ) हिंदी** (इ) ब्रज (ई) अवधी

8. भारतेंदु कौनसी भाषा जानते थे ?

(अ) संस्कृति (आ) हिंदी (इ) ब्रज **(ई) उपरोक्त सभी**

9. 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल / बिन निज भाषा-ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।। यह पंक्ति किस कवि की है?

(अ) हेमंत शर्मा (आ) ब्रजरत्नदास **(इ) भारतेंदु** (ई) प्रतापनारायण मिश्र

10. भारतेंदु के लिए यहाँ व्यापक अर्थ में निज भाषा का तात्पर्य क्या है?

(अ) जनमानस की बोली (आ) मातृभाषा **(इ) दोनों भी (अ) और (आ)** (ई) कोई नहीं हैं

खंड (ब)

4.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. संस्कृत और हिंदी भाषा में क्या अंतर है?
2. अपनी भाषा के ज्ञान के बिना क्या होता है?
3. मूढ़ता का शोक क्या है और इसे कैसे मिटाया जा सकता है?
4. मातृभाषा की उन्नति कैसे हो सकती है?

खंड (क)

4.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. भारतेंदु के मत में अंग्रेज़ी या कोई अन्य भाषा से हिंदी भाषा क्यों श्रेष्ठ है?

2. भारतेंदु के मत के आधार पर मातृ भाषा की उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
3. भारतेंदु के 'मातृभाषा प्रेम' की उनके द्वारा लिखित दोहों के आधार पर चर्चा कीजिए।
4. भारतेंदु रचित 'मातृभाषा-प्रेम' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

4.8 पठनीय पुस्तकें

1. भारतेंदु समग्र : सं. हेमंत शर्मा
2. चिंतामणि ('भारतेंदु हरिश्चंद्र' निबंध) : आचार्य रामचंद्र शुक्ल
3. भारतेंदु हरिश्चंद्र : ब्रजरत्न दास

इकाई 5 : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 मूल पाठ : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

5.3.1 जीवन परिचय

5.3.2 रचना यात्रा

5.3.3 रचनाओं का परिचय

5.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

5.4 पाठ सार

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

5.6 शब्द संपदा

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' को खड़ी बोली हिंदी के प्रथम महाकवि के रूप में जाना जाता है। इन्हें 'आधुनिक हिंदी के व्यास' भी कहा जाता है। कवि के साथ-साथ वे उपन्यासकार, आलोचक और इतिहासकार भी थे। महाकाव्यत्व की दृष्टि से उनका 'प्रिय प्रवास' एक सफल ग्रंथ है। गद्य के क्षेत्र में भी हरिऔध का स्थान उल्लेखनीय है। उनकी चिंताओं में लोकमंगल की भावना को देखा जा सकता है। उन्होंने हिंदी गद्य को सरलता प्रदान की। छात्रो! इस इकाई में आप अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित कुछ प्रमुख बातों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत आप अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप -

- महाकवि 'हरिऔध' की वैयक्तिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।
- 'हरिऔध' जी के कृतित्व की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- 'हरिऔध' जी के युगीन परिवेश को समझ सकेंगे।

- 'हरिऔध' जी की प्रमुख रचनाओं का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- 'हरिऔध' जी की रचनाओं की प्रासंगिकता से अवगत हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में 'हरिऔध' के स्थान और उनके महत्व को समझ सकेंगे।

5.3 मूल पाठ : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

"भारतेंदु के पीछे और द्वितीय उत्थान के पहले ही हिंदी के लब्धप्रतिष्ठित कवि पं.अयोध्या सिंह उपाध्याय (हरिऔध) नए विषयों की ओर चल पड़े थे। खड़ी बोली के लिए उन्होंने पहले उर्दू के छंदों और ठेठ बोली को उपयुक्त समझा, क्योंकि उर्दू के छंदों में खड़ी बोली अच्छी तरह मँज चुकी थी।" (रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 412)। छात्रो! आगे हम हरिऔध के व्यक्तित्व और रचना संसार की जानकारी प्राप्त करेंगे।

5.3.1 जीवन परिचय

द्विवेदी युग के प्रमुख रचनाकारों में अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का स्थान उल्लेखनीय है। उनका जन्म 15 अप्रैल, 1865 को आजमगढ़ में हुआ तथा 6 मार्च, 1947 को उनकी मृत्यु हुई। उनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा निजामाबाद एवं आजमगढ़ में हुई। निजामाबाद से मिडिल स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद काशी के क्वींस कॉलेज में अंग्रेजी पढ़ने के लिए गए, किंतु स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण उन्हें कॉलेज छोड़ना पड़ा। अतः घर पर ही रह कर संस्कृत, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी का अध्ययन करने लगे। 1884 में निजामाबाद के मिडिल स्कूल में अध्यापक बने।

1889 में हरिऔध जी कानूनगो बने थे; 1924 में हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रधान पद को सुशोभित किया था। 1932 में कानूनगो पद से अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अवैतनिक शिक्षक के रूप में अध्यापन का कार्य किया था। इस अध्यापन कार्य से भी मुक्त होने के बाद वे अपने गाँव जाकर बस गए और साहित्य सेवा में लीन हो गए।

हरिऔध के संबंध में उमाकांत गोयल लिखते हैं कि "पुरातन संस्कृति का पुनरुद्धार, देश के वर्तमान युवक का उचित मार्गदर्शन तथा कविता में उपदेशात्मक वृत्ति को इन्होंने आरंभ से ही अपना ध्येय रखा।" (सं. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 485)।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' बड़े मिलनसार व्यक्ति थे। उनके इसी स्वभाव पर प्रकाश डालते हुए गिरिजादत्त शुक्ल लिखते हैं कि "छोटे से छोटे व्यक्ति भी उनसे सरलता के साथ मिल सकता है, क्योंकि वे छोटे-बड़े सभी का आदर करते हैं। किसी हिंदी-हितैषी के मिल जाने पर तो वे ऐसे प्रसन्न होते हैं जैसे कोई स्वजन या सगा मिल गया हो। अपनी शक्ति भर वे सभी की सहायता करते हैं और करना चाहते हैं।" (महाकवि हरिऔध, पृ. 29)

बोध प्रश्न

- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' किस युग के रचनाकार थे?

- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म कहाँ हुआ?
- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का ध्येय क्या था?
- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के स्वाभाव को स्पष्ट कीजिए।

5.3.2 रचना यात्रा

हरिऔध जी संस्कृत, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के प्रतिष्ठित विद्वान थे। पहले तो उन्होंने अपनी रचनाएँ ब्रजभाषा में की लेकिन बाद में खड़ी बोली में काव्य सृजन करने लगे। खड़ीबोली के मानक रूप को स्थिर करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने उस परिपाटी को समाप्त किया जिसके अनुसार यह माना जाता था कि काव्य के लिए अवधी और ब्रज भाषा ही उपयुक्त है। उन्होंने खड़ी बोली में महाकाव्य का सृजन करके खड़ी बोली की क्षमता को सिद्ध किया। अतः उनको 'खड़ीबोली के प्रथम महाकवि' और 'आधुनिक हिंदी के व्यास' कहा जाता है।

हरिऔध जी जब साहित्य के क्षेत्र में अवतरित हुए तब भारत पराधीनता की जंजीरों में जकड़ी हुई थी। नवजागरण की लहर दौड़ रही थी। समाज में उथल-पुथल मचा हुआ था। आर्य समाज, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी आदि भारतीय समाज में सुधार लाने का प्रयास कर रहे थे। अतः उन परिस्थितियों का प्रभाव हरिऔध पर पड़ना स्वाभाविक था। उन्होंने समय की नब्ज को पहचाना तथा तत्कालीन सामाजिक और राजनैतिक उथल-पुथल के प्रति आक्रोश अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया। उनका काव्य नायक जनकल्याण की भावना रखता है। उनके काव्य में लोक मंगल की भावना को देखा जा सकता है। हरिऔध कवि के साथ-साथ उपन्यासकार, नाटककार, आलोचक और बाल साहित्यकार भी थे। प्रारंभ में वे नाटक और उपन्यास लेखन की ओर आकर्षित थे लेकिन बाद में कविता की ओर बढ़े। हरिऔध की प्रतिभा का विकास कवि के रूप में हुआ है।

उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं -

नाटक : प्रद्युम्न विजय (1893), रुक्मिणी परिणय (1894); उपन्यास - प्रेमकान्ता (1894), ठेठ हिंदी का ठाट (1899), अधखिला फूल (1907)

काव्य : रसिक रहस्य (1899), प्रेमाम्बुवारिधि (1900), प्रेम प्रपंच (1900), प्रेमाम्बु प्रश्रवण (1904), प्रेमाम्बु प्रवाह (1909), प्रेम पुष्पहार (1904), उद्बोधन (1906), काव्योपवन (1909), प्रिय प्रवास (1914), कर्मवीर (1916), ऋतु मुकुर (1917), पद्म प्रसून (1925), पद्म प्रमोद (1927), चोखे चौपदे (1932), चुभते चौपदे (1932), वैदेही वनवास (1940) और रस कलश (1940)।

आलोचना : हिंदी भाषा और साहित्य का विकास। इनके अतिरिक्त हरिऔध ने बाल साहित्य का भी सृजन किया था। उनके बाल साहित्य में बाल विभव, बाल विलास, फूल पत्ते, चन्द्र खिलौना, खेल तमाशा, उपदेश कुसुम, बाल गीतावली, चाँद सितारे आदि उल्लेखनीय हैं।

बोध प्रश्न

- खड़ीबोली के प्रथम महाकवि कौन हैं और क्यों?
- हरिऔध की कुछ काव्य कृतियों का नाम बताइए।

- हरिऔध ने किस परिपाटी को तोड़ा?

5.3.3 रचनाओं का परिचय

छात्रो! अब तक आपने अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के जीवन और रचनाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। अब हम उनकी प्रमुख कृतियों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे जिससे उनकी काव्यागत विशेषताओं के बारे में आसानी से समझा जा सकता है।

प्रिय प्रवास (1914)

'प्रिय प्रवास' खड़ी बोली में रचित प्रथम महाकाव्य है। इसमें कृष्ण के बाल काल से लेकर मथुरा प्रवास तक की कथा है। इसके संबंध में अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य के इतिहास' में रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है कि "उक्त काव्य में श्रीकृष्ण ब्रज के रक्षक नेता के रूप में अंकित किए गए हैं। खड़ी बोली में इतना बड़ा काव्य अभी तक नहीं निकला है। यह काव्य अधिकतर भावव्यंजनात्मक और वर्णात्मक है। कृष्ण के चले जाने पर ब्रज की दशा का वर्णन बहुत अच्छा है। विरह वेदना से क्षुब्ध वर्णावली प्रेम की अनेक अंतर्दशाओं की व्यंजना करती बहुत दूर तक चलती है।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 413)। 'प्रिय प्रवास' पर हरिऔध को 'मंगलाप्रसाद पारितोषक' प्रदान किया गया था।

यह 17 सर्गों में रचित महाकाव्य है। प्रथम सर्ग में संध्या का चित्रण है। गोचारण कराने के बाद कृष्ण अपने सखाओं के साथ गोकुल की ओर लौट रहे हैं। कवि कहते हैं कि इस दृश्य को देखने के लिए सारा गाँव उमड़ पड़ता है। कृष्ण की बंसी सुनते ही सब काम-धाम छोड़कर दौड़ पड़ते हैं -

सकल वासर आकुल से रहे।
अखिल मानव गोकुल ग्राम के।
अब दिनांत विलोकित ही बढ़ी।
ब्रज-विभूषण दर्शन लालसा।
सुन पड़ा स्वर यों कल वेणु का
सकल ग्राम समुत्सुक हो उठा।

दूसरे सर्ग में यह घोषणा सुनाई जाती है कि कल कृष्ण मथुरा चले जाएँगे। इस सूचना से सभी ग्रामवासी व्याकुल हो जाते हैं -

कमल लोचन कृष्ण वियोग की
अशनि पात सभा यह सूचना।
परम आकुल गोकुल के लिए
अति निष्टकारी घटना हुई।

तीसरे सर्ग में नन्द बाबा और यशोदा माँ की व्याकुलता और कृष्ण की कुशलता के लिए मनौतियों का चित्रण है -

प्रमुदित मथुरा के मानवों को बना के
सकुशल रह के औ विघ्न बाधा बचा के।
निज प्रिय सुत दोनों साथ लेके सुखी हो

जिस दिन पलटेंगे गह स्वामी हमारे।

चौथे सर्ग में कृष्ण के प्रति राधा के आपार प्रेम का चित्रण है -

हृदय चरण में तो मैं चढ़ ही चुकी हूँ।
सविधि वर्ण की थी कामना और मेरी।

पाँचवे सर्ग में माता यशोदा का विरह चित्रण है। वह कहती हैं -

अहह दिवस ऐसा हाय! क्यों आज आया।
निज प्रियसुत से जो मैं जुदा हो रही हूँ।
अगणित गुणवाली प्राण से नाथ प्यारी।
यह अनुपम थाती मैं तुम्हें सौंपती हूँ।

छठे सर्ग में गोकुल वासियों का विरह चित्रण है। इस सर्ग में राधा की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण है। श्री कृष्ण की विरह वेदना से दग्ध राधा की मनोदशा का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि राधा रूपी चातकी के लिए श्रीकृष्ण रूपी घनश्याम ही जीवन का आधार थे और वह उनके आने का मार्ग देख रही थी -

नाना चिंता सहित दिन को राधिका थी बिताती।
आंखों को थी सजल रखती उन्मना थी बिताती।
शोभा वाले जलद वपु की, हो रही चातकी थी।
उत्कंठा थी परम प्रबला, वेदना वर्द्धिता थी॥

राधा पवन को दूत बनाकर अपनी विरह वेदना व्यक्त करती है -

तू जाती है सकल थल ही, वेगवाली बड़ी है।
है सीधी तरल हृदया, ताप उन्मूलती है।
मैं हूँ जी में बहुत रखती, वायु तेरा भरोसा।
जैसे हो ऐ भगिनी, बिगड़ी बात मेरी बना दे॥

सातवें सर्ग में यह दिखाया गया है कि जब बाबा नन्द मथुरा से अकेले गोकुल लौट आते हैं तो माता यशोदा अपने लाल के बारे में उत्सुकता वश तरह-तरह के प्रश्न करती हैं -

प्रिय पति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दुख जलधि निमग्न का सहारा कहाँ है?
अब तक जिसको मैं देख के जी सकी हूँ?
वह हृदय हमारा नेत्र तारा कहाँ है?

आठवें सर्ग में यह दिखाया गया है कि गोकुलवासी कृष्ण के साथ बिताए हुए दिनों को याद कर रहे हैं। नवें सर्ग में श्रीकृष्ण गोकुल वासियों को याद करते हुए दिखाई देते हैं। दसवें सर्ग में जब उद्धव गोकुल आता है तो यशोदा माँ और नन्द बाबा अपने लाल के बारे में पूछते हैं -

मेरे-प्यारे सकुशल सुखी और सानंद तो है
कोई चिंता मलिन उनको तो नहिं है बनाती?

ग्यारहवें सर्ग में उद्धव गोकुल वासियों को सांत्वना और उपदेश देते हुए दिखाई देते हैं। इसी सर्ग में कालीय मर्दन घटना का भी चित्रण है। इस सर्ग में कवि ने कृष्ण के लोकोपकारक रूप का चित्रण किया है -

अतः करूँगा यह कार्य स्वयं
स्व-हस्त में दुर्लभ प्राण को लिए
****
प्रवाह होते तक शेष-श्वास के
स-शकत होते तक एक लोभ के
किया करूँगा हित सर्व-भूत का

बारहवें सर्ग में भी कृष्ण के लोक कल्याणकारक रूप का चित्रण है। तेरहवें सर्ग में कृष्ण का समाज सेवक और जन नायक रूप व्यंजित है। चौदहवें सर्ग गोपि-उद्धव संवाद पर आधारित है। पंद्रहवें सर्ग में गोपियों की विरह वेदना का चित्रण है। सोलहवें सर्ग में राधा-उद्धव संवाद है। उद्धव राधा के प्रेम को व्यर्थ साबित करने में लग जाता है लेकिन राधा अपने प्रेम की महानता एवं उपयोगिता के बारे में बताती है। अंत में राधा की ही जीत होती है। सत्रहवें सर्ग में कवि ने यह दर्शाया है कि वैयक्तिक प्रेम से ऊंचा है वैश्विक प्रेम।

'प्रिय प्रवास' में श्रीकृष्ण के मानवीय स्वरूप की प्रतिष्ठा करके हरिऔध ने अपने आधुनिक दृष्टिकोण का परिचय दिया है। उनके श्रीकृष्ण 'रसराज' या 'नटनागर' होने की अपेक्षा लोकरक्षक नेता है। इसके माध्यम से हरिऔध यह निरूपित करना चाहते हैं कि मानवीय गुणों से युक्त व्यक्ति ही देश की रक्षा कर सकता है।

बोध प्रश्न

- किस रचना पर हरिऔध को मंगलाप्रसाद पारितोषक' प्राप्त हुआ?
- 'प्रिय प्रवास' के किस सर्ग में कृष्ण के लोकोपकारक रूप व्यंजित है?
- 'प्रिय प्रवास' का ग्यारहवाँ सर्ग क्यों महत्वपूर्ण है?
- 'पवन दूत' का प्रसंग किस सर्ग में है?
- सोलहवें सर्ग में कवि ने किस विषय की सार्थकता के बारे में बताया है?
- 'प्रिय प्रवास' में कृष्ण का कौन-सा रूप व्यंजित है?

पद्म प्रसून (1925)

इस संग्रह की अधिकांश कविताओं में सामाजिक, धार्मिक, नैतिक आदि अवस्थाओं के शब्द चित्र हैं। हरिऔध 'परिवर्तन' शीर्षक कविता में यह संकेत करते हैं कि समय के साथ चलना चाहिए -

परिवर्तन है प्रकृति नियम का नियमन कारक।
प्रवाहमान जीवन प्रवाह का पाठ बिस्तारक।
परिवर्तन के समय जो न परिवर्तन होगा।
साथ रहेगा अहित, हित न उसका हित होगा॥

हरिऔध की कविताओं में देशभक्ति की भावना को यत्र-तत्र देखा जा सकता है। यथा -

न जिसने घर संभाला देश को क्या वह संभालेगा।
न जो मक्खी उड़ा पाता है वह पंखा झलेगा क्या॥ (कुछ उलटी सीधी बातें)
बालक ही है देश जाति का सच्चा-संबल।
वही जाति-जीवन-तरु का है परम मधुर फल॥ (अविनय)

मानवता के संबंध में हरिऔध के विचार देखें -

हिंसा-प्रतिहिंसा प्रवंचना पामरता से रह कर दूर।
देश-जाति-हित व्रत-रत रह वह बनता है पातक-तम-सूर॥
मुक्ति से अधिक विभुवर की शुचि भक्ति को करेगा वह प्यार।
प्राणिमात्र का सुख-साधन ही होता है उसका संसार॥
धरा-धाम में धर्म-प्राण ही जान सके हैं क्या है धर्म।
वह मानव-ही-मानव है जो समझ सके मानवता-मर्म॥

बोध प्रश्न

- मानवता के संबंध में हरिऔध के विचार को स्पष्ट करें।

वैदेही वनवास (1940)

यह 1940 में प्रकाशित खंड काव्य है। इसमें कुल 18 सर्ग हैं। इस काव्य का प्रधान रस करुण है। इसकी कथावस्तु का आधार है रामकथा। विजयेंद्र स्नातक का कथन है कि 'वैदेही वनवास' में हरिऔध ने "सीता के गौरव की रक्षा की है, इसलिए यह प्रसंग उत्साह, आनंद, गौरव और सद्भावना से पूर्ण है।" (द्विवेदी युगीन हिंदी नवरत्न, पृ. 44)। इसमें राम के जीवन के उत्तरार्द्ध चरित्र का वर्णन है। इसमें यथासंभव बोचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। सरल और सुबोध शैली में कवि कहते हैं -

मन का नियमन प्रति-पालन शुचि-नीति का।
प्रजा-पुंज-अनुरंजन भव-हित-साधना॥
कौन कर सका भू में रघुकुल-तिलक सा।
आत्म-सुखों को त्याग लोक-अराधना॥

बोध प्रश्न

- 'वैदेही वनवास' की कथा का आधार क्या है ?

कर्मवीर (1916)

इस कविता में कवि ने श्रम सिद्धांत के महत्व को दर्शाया है। उनके अनुसार वे लोग बहुत ही प्रशंसनीय हैं जो मेहनत करते हैं। भाग्य के भरोसे बैठने वालों की अपेक्षा वे लोग अभिनंदनीय हैं जो परिश्रम करके लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। सच्चे कर्मवीर मुश्किलों से रस्ता निकालकर मंजिल तक पहुँच जाते हैं -

देख कर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं।
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।

हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले

बोध प्रश्न

- कर्मवीर का क्या कर्तव्य है ?

रस कलश (1940)

यह ब्रजभाषा काव्य संग्रह है। इसमें उनकी आरंभिक स्फुट कविताएँ संकलित हैं। ये कविताएँ शृंगारिक हैं तथा काव्य निरूपण की दृष्टि से लिखी गई हैं।

ठेठ हिंदी का ठाट (1899)

इस उपन्यास की कहानी बिल्कुल सीधी सादी है। देवबाला की शादी देवनंदन के साथ सामाजिक कुरीति के कारण नहीं हो पाती। देबाला का विवाह रमाकांत से होता है। वह बुरी आदतों का शिकार हो जाता है और पत्नी तथा बच्चे को छोड़कर चला जाता है।

देवनंदन साधु वेष धारण कर लेता है जो "सांसारिक विषयों के प्रति विराग का सूचक है।" उसका प्रेम त्यागमय है। इसका परिचय उस वक्त मिलता है जब देवबाला कष्ट में पड़ती है। वह देवबाला के बच्चे की बीमारी का इलाज भी करता है और रमाकांत को ढूँढ़कर देवबाला के पास ले आता है। देवनंदन के माध्यम से हरिऔध यह टिप्पणी करते हैं कि "देस की बुरी रीतियों, झूठे घमंडों से कितने फूल जो ऐसे ही बिना बेले कुम्हला जाते हैं, कितनी लहलही बेलियाँ जो नुच कर धूल में मिल जाती हैं, नहीं कहा जा सकता राम! क्या तुम यही चाहते हो, यह देस बुरी रीतियों के बस में पड़ ऐसे ही दिन दिन मिट्टी में मिलता रहे?"

इस उपन्यास के माध्यम से हरिऔध ने एक ओर प्रेम की स्वाभाविकता को दर्शाया है वहीं दूसरी ओर नैतिकता की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है।

बोध प्रश्न

- 'ठेठ हिंदी का ठाट' के माध्यम से हरिऔध ने पाठकों को क्या समझाने का प्रयास किया है?

अधखिला फूल (1907)

इस उपन्यास की नायिका है देवहूती और नायक है देवस्वरूप। इस उपन्यास में हरिऔध देवस्वरूप के माध्यम से पाखंडी साधुओं पर टिप्पणी करते हैं - "आज कल साधु होना भेड़ियाधसान हो गया है - जिसको देखो वही साधु बना फिरता है, पर इस भाँत साधु होने से साधु न होना ही अच्छा है।" इस तरह झूठ के आवरण में लोगों को ठगने से अच्छा है उनके लिए कुछ कर दिखाना। इस उपन्यास में देवस्वरूप लोगों का भला करता है - "देवस्वरूप बहुत दिन तक इस धरती पर रहे, उनके हाथों देस का, देस के लोगों का बहुत कुछ भला हुआ, देवहूती भी उनकी छाया थी।"

बोध प्रश्न

- 'अधखिला फूल' उपन्यास के माध्यम से हरिऔध क्या कहना चाहते हैं?

5.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कवि सम्राट और साहित्य वाचस्पति जैसे उपाधियों

से सम्मानित हुए। इनकी साहित्यिक सेवाओं का ऐतिहासिक महत्व है। निःसंदेह ये हिंदी साहित्य की एक महान विभूति हैं। हरिऔध के संबंध में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का यह कथन उल्लेखनीय है - "खड़ी बोली के उस काल के कवियों में पं. अयोध्या सिंह 'हरिऔध' की काव्य-साधना विशेष महत्व की ठहरती है। सहृदयता और व्यक्तित्व के विचार से भी ये अग्रगण्य हैं। इनके समस्त पद औरों की तुलना में अधिक मधुर हैं, जो इनकी कवित्त शक्ति के परिचायक है।"

हरिऔध की काव्यगत विशेषताओं को भी देखना उचित होगा। उन्होंने विविध विषयों पर काव्य रचना की है। राधा-कृष्ण, सीता-राम से संबंधित विषयों के साथ-साथ उन्होंने आधुनिक समस्याओं को भी अपनी रचनाओं में सम्मिलित किया है। प्राचीन और आधुनिक भावों का सम्मिश्रण उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है।

'प्रिय प्रवास' में उन्होंने यशोदा माँ का करुण चित्र इस प्रकार खींचा है कि पाठक का हृदय द्रवित हो उठता है। यथा -

प्रिय प्रति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
दुःख जल निधि डूबी का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका मैं आजलौं जी सकी हूँ।
वह हृदय हमारा नैन तारा कहाँ है?

वहीं 'चोखे चौपदे' में 'माँ की ममता' का हृदयस्पर्शी अंकन किया है -

प्यार माँ के समान है किस का।
है कढ़ी धार किस हृदय-तल से।
छातियों में हमें दिये किस ने।
दूध के दो भरे हुए कलसे॥

हरिऔध का प्रकृति चित्रण अद्‌भुत है। जहाँ भी अवसर मिला वहाँ उन्होंने प्रकृति का मनोरम चित्र खींचा है। संध्या का सुंदर दृश्य देखें -

दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु शिखा पर थी जब राजती,
कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा॥ (प्रिय प्रवास)

कृष्ण के वियोग में ब्रज के वृक्ष भी रोते हैं। इसका चित्रण देखें -

फूलों-पत्तों सकल पर हैं वादि-बूँदें लखातीं,
रोते हैं या विपट सब यों आँसुओं की दिखा के।

'अधखिला फूल' उपन्यास में अंकित प्रकृति का चित्र देखें - "बैसाख का महीना, दो घड़ी रात बीत गई है। चमकीले तारे चारों ओर आकास में फैले हुए हैं, दूज का बाल सा पतला चाँद, पच्छिम ओर डूब रहा है, अंधियाला बढ़ता आता है, ज्यों ज्यों अंधियाला बढ़ता है, तारों की चमक बढ़ती जान पड़ती है। उनमें जोत सी फूट रही है, वह कुछ हिलते भी हैं, उनमें चुपचाप कोई कोई टूट पड़ते हैं, जिससे सुनसान आकास में रह कर फुलझड़ी सी छूट जाती है।"

हरिऔध अपनी रचनाओं में सामाजिक विसंगतियों पर भी प्रहार करते हुए दिखाई देते हैं। वे अपने कृष्ण को लोक नायक के रूप में दर्शाते हैं जो समाज कल्याण के लिए तत्पर रहता है-

अपूर्व-आदर्श दिखा नरत्व का।
प्रदान की है पशु को मनुष्यता।
सिखा उन्होंने चित की समुच्चता।
बना दिया मानव गोप-वृन्द को॥ (प्रिय प्रवास, तेरहवाँ सर्ग)

समाज में चारों ओर फैली ढोंग पर प्रहार करते हुए हरिऔध कहते हैं -

ढोंग रच रच ढकोसले फ़ैला।
जब उन्होंने कि जाति घर घाले।
तब रखें पाँव फ़ूँक फ़ूँक न क्यों।
और के कान फूँकने वाले। (चुभते चौपदे)

सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए हरिऔध ने हर तरह का प्रयास किया है। 'जीवन-मरण' शीर्षक कविता में वे खुलकर कहते हैं कि

झोंपड़ी किसी की फुँकती है तो भले ही फुँके
उसे क्या जो फूँक फूँक देता पर टट्टी है।
कैसे भला लोक-लाभ-लालसा लुभाये उसे
जिसने कि लूटपाट ही की पढ़ी पट्टी है।
हरिऔधा मानवता ममता न होगी उसे
पामरता प्रीति घटे होती जिसे घट्टी है।
पड़ के खटाई में न खट्टी मीठी जान सके
आज भी हमारी आँख की न खुली पट्टी है

समाज की सबसे बड़ी कमजोरी है जाति प्रथा। इसने मानवता को निगल लिया। हरिऔध छुआछूत को नहीं मानते। इस संबंध में उनका स्पष्ट विचार द्रष्टव्य है -

इन्हें हम छूते नहीं समझ अछूत,
जो हैं माने गए सदा परम पतित।
पास उनके हैं होता क्या नहीं हृदय,
वेदनाओं से वे होते क्या नहीं व्यथित?

***

आदमी हैं, आदमीयत है बहाली,
बात यह कोई कहे इतरा नहीं।
छेद छाती में अछूतों के हुए
जो अछूता जी गया छितरा नहीं।

हरिऔध समाज और लोक सेवा पर अधिक जोर देते हैं -

हो न जिसमें जाति-हित का राग कुछ,

बात वह जी में ठनी तो क्या ठनी!
हो सकी जब देश की सेवा नहीं,
तब भला हमसे बनी तो क्या बनी!

तत्कालीन समाज में वृद्ध विवाह का प्रचलन था। उस पर प्रहार करते हुए हरिऔध कहते हैं कि

हो बड़े बूढ़े न गुड़ियों को ठगे।
पाउडर मुंह पर न अपने वे मले।
ब्याह के रंगीन जामा को पहन
बेमानी का पहन जामा न लें।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के संबंध में रामवृक्ष बेनीपुरी का कहना है कि "उपाध्याय जी पूरे शब्द-शिल्पी हैं। आपके एक-एक शब्द कहने-चुनाए नेप-तुले होते हैं। जहाँ आपने केवल संस्कृत की ही सरिता बहाई है, वहाँ भी - उस सरिता-स्रोत पर भी - आपकी सुंदर शब्द-तरंग-माला अठखेलियाँ करती दीख पड़ती हैं।" (अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली, पृ. 6)

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस संबंध में नन्ददुलारे वाजपेयी का यह कथन उल्लेखनीय है - "हरिश्चंद्र के बाद हिंदी के क्षेत्र में जिन दो पुरुषों ने पदार्पण किया है उनके नाम हैं पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय और बाबू मैथिलीशरण गुप्त। इन दोनों का कविता-काल प्रायः एक ही है, दोनों ने हिंदी की खड़ी बोली की कविता को अपनाया और सफलतापूर्वक काव्य ग्रंथों की रचना की। दोनों ही देश-भक्त तथा जाति-भक्त आत्माएँ हैं। पर इतनी समानता होते हुए भी कविता की दृष्टि से उपाध्याय जी का स्थान गुप्त जी से ऊंचा है।" (महाकवि हरिऔध, पृ.16 से उद्धृत)। पं. लोचनप्रसाद पांडे का कथन है कि "जिस भाँति बाबू हरिश्चंद्र 'आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक' कहलाए उसी भाँति खड़ी बोली की कविता के विषय में आपका स्थान है।" (वही, पृ. 18)।

बोध प्रश्न

- छुआछूत के संबंध में हरिऔध का विचार स्पष्ट कीजिए।
- हिंदी साहित्य में हरिऔध का क्या महत्व है?

5.4 पाठ सार

छात्रो! इस पाठ के अध्ययन से आप यह समझ ही चुके हैं कि हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। हरिऔध जहाँ तत्सम निष्ठ शब्दावली का प्रयोग करते हैं वहीं सीधी सरल शब्दों का प्रयोग भी करते हैं। जहाँ एक ओर वे 'ब्रज-विभूषण-दर्शन-लालसा' (प्रिय प्रवास) लिखते हैं वहीं दूसरी ओर यह लिखते हैं कि 'देखो लड़को, बंदर आया, एक मदारी उसको लाया।' (बंदर और मदारी)। कहने का आशय है कि हरिऔध ने हर विषय पर लिखा है। रामवृक्ष बेनीपुरी कहते हैं कि भाषा उनकी अनुचरी है। छंद, अलंकार आदि का प्रयोग हरिऔध की कविता में देखा जा सकता है। वे प्रकृति प्रेमी थे। उनकी

रचनाओं में प्रकृति के मनोरम चित्रों को देखा जा सकता है। साथ ही देश प्रेम, राष्ट्र प्रेम आदि को देखा जा सकता है। अपनी काव्य कृति 'प्रिय प्रवास' के कारण हरिऔध खड़ी बोली के प्रथम महाकवि बने।

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' खड़ी बोली हिंदी के प्रथम महाकवि के रूप में जाने जाते हैं।
2. 'प्रिय प्रवास' खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है। 'प्रिय प्रवास' पर 'हरिऔध' जी को मंगलाप्रसाद पारितोषक प्राप्त हुआ।
3. 'हरिऔध' जी कवि के साथ-साथ उपन्यासकार, आलोचक, इतिहासकार और बाल साहित्यकार भी थे।
4. उनकी रचनाओं में लोक जागरण और समाज सुधार की भावना को देखा जा सकता है।
5. उन्होंने उस परिपाटी को तोड़ा जिसके अनुसार यह माना जाता था कि काव्य के लिए अवधी और ब्रज भाषा ही उपयुक्त है।
6. उनकी रचनाओं में जहाँ एक ओर प्रकृति चित्रण है, वहीं दूसरी ओर देशप्रेम, राष्ट्रीय भावना, लोक जीवन और भारतीय संस्कृति भी समाहित है।

5.6 शब्द संपदा

1. अंतर्दशा	=	मानसिक स्थिति
2. अवैतनिक	=	बिना वेतन के
3. कानूनगो	=	राजस्व महकमे का वह क्षेत्रीय अधिकारी जो लेखपालों के कागज की जांच करता है
4. नवजागरण	=	किसी युग में विचार तथा व्यवहार के स्तर पर होने वाली नवीन चेतना या जागृति
5. परिपाटी	=	परंपरा, नियम
6. पुनरुद्धार	=	किसी नष्ट हुई टूटी-फूटी वस्तु को फिर से ठीक करना
7. प्रतिभा	=	असाधारण बुद्धि, विलक्षण बौद्धिक शक्ति
8. भावव्यंजनात्मक	=	भावबोधक, अच्छे प्रकार से या स्पष्ट रूप से भाव को प्रकट करना
9. मानक	=	प्रामाणिक
10. लब्धप्रतिष्ठित	=	यशस्वी
11. लोकमंगल	=	जनकल्याण, जनता की भलाई

5.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

5.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1. किस रचना पर हरिऔध को मंगलाप्रसाद पारितोषक प्राप्त हुआ?
   (अ) ठेठ हिंदी का ठाठ **(आ) प्रिय प्रवास** (इ) रुक्मिणी परिणय (ई) अधखिला फूल
2. इसमें एक हरिऔध की रचना नहीं है।
   (अ) ठेठ हिंदी का ठाट (आ) प्रिय प्रवास (इ) चोखे चौपदे **(ई) सरोज स्मृति**
3. 'प्रिय प्रवास' का रचना काल क्या है?
   (अ) 1914 (आ) 1915 (स) 1916 (ई) 1917
4. 'वैदेही वनवास' काव्य का प्रधान रस क्या है?
   (अ) शृंगार (आ) करुण (स) रौद्र (ई) हास्य
5. हरिऔध किस युग के कवि थे।
   (अ) आदिकाल (आ) भक्तिकाल (स) रीतिकाल (ई) आधुनिक काल
6. खड़ी बोली के प्रथम महाकाव्य कौनसा है?
   (अ) ठेठ हिंदी का ठाट **(आ) प्रिय प्रवास** (इ) चोखे चौपदे (ई) कोई नहीं है
7. 'प्रिय प्रवास' में 'पवन दूत' का प्रसंग किस सर्ग में है?
   (अ) तीसरे सर्ग (आ) चौथा सर्ग (इ) पांचवां सर्ग **(ई) छटवां सर्ग**
8. "दिवस का अवसान समीप था/गगन था कुछ लोहित हो चला"। यह पंक्ति किस काव्य की है?
   (अ) ठेठ हिंदी का ठाट **(आ) प्रिय प्रवास** (इ) चोखे चौपदे (ई) कोई नहीं है
9. "आदमी हैं, आदमीयत है बहाली, बात यह कोई कहे इतरा नहीं"। यह पंक्ति किस कवि की हैं?
   (अ) हरिऔध (आ) मैथिलीशरण गुप्त (इ)मुक्तिबोध (ई) रामधारी सिंह दिनकर
10. निम्नलिखित रचनाओं का आरोह क्रम बताइए.
(अ) वैदेही वनवास, ठेठ हिंदी का ठाट, अधखिला फूल, प्रिय प्रवास
(आ) ठेठ हिंदी का ठाट, प्रिय प्रवास, अधखिला फूल, वैदेही वनवास
(इ) अधखिला फूल, प्रिय प्रवास, वैदेही वनवास, ठेठ हिंदी का ठाट
(ई) ठेठ हिंदी का ठाट, अधखिला फूल, प्रिय प्रवास, वैदेही वनवास

खंड (ब)

5.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के जीवन पर प्रकाश डालिए।
2. हरिऔध की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

खंड (क)

5.73 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. हरिऔध की रचना यात्रा पर प्रकाश डालिए।
2. 'प्रिय प्रवास' की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
3. हिंदी साहित्य में हरिऔध के स्थान को निरूपित कीजिए।
4. हरिऔध की काव्यागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. तत्कालीन सामाजिक विसंगतियों पर हरिऔध ने किस प्रकार प्रहार किया? स्पष्ट कीजिए।

5.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य कोश, भाग 2 : सं धीरेंद्र वर्मा
4. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली
5. द्विवेदी युगीन हिंदी नवरत्न : विजयेंद्र स्नातक

इकाई 6 : दिवस का अवसान : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 मूल पाठ : दिवस का अवसान : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

6.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

6.3.2 अध्येय कविता

6.3.3 विस्तृत व्याख्या

6.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

6.4 पाठ सार

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

6.6 शब्द संपदा

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

द्विवेदी युगीन कवियों में हरिऔध जी का स्थान महत्वपूर्ण है। उन्होंने उस परंपरा को तोड़ा जिसके अनुसार यह माना जाता रहा कि काव्य के लिए अवधी और ब्रजभाषा ही उपयुक्त है। उन्होंने खड़ी बोली को काव्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया। खड़ी बोली हिंदी में 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य की रचना की। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में 'प्रिय प्रवास' को खड़ी बोली हिंदी का प्रथम महाकाव्य होने का गौरव प्राप्त है। छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत आप अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' के प्रथम सर्ग के दस छंदों का अध्ययन करेंगे।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत आप अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' के प्रथम सर्ग के दस छंदों का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप -

- 'प्रिय प्रवास' के छंदों की सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।
- इन छंदों में निहित साहित्यिक सौंदर्य पर प्रकाश डाल सकेंगे।
- हरिऔध की काव्यागत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

6.3 मूल पाठ : दिवस का अवसान : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

6.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

'प्रिय प्रवास' (1914) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' द्वारा रचित महाकाव्य है। इसमें कुल मिलाकर सत्रह सर्ग हैं। इसके चरित नायक श्रीकृष्ण हैं। इस काव्य में कृष्ण के चरित्र की आधुनिक व्याख्या प्रस्तुत है। इसमें लोकोद्धार की भावना को देखा जा सकता है। कवि ने इस काव्य में प्रमुख रूप से पाँच पात्रों - यशोदा, नंद, राधा, कृष्ण और उद्धव के चरित्रांकन पर ध्यान केंद्रित किया है। इस काव्य में उन्होंने यशोदा और राधा के विरह वर्णन पर विशेष ध्यान दिया है।

'प्रिय प्रवास' अर्थात प्रिय का प्रवास। गोकुल ग्राम के प्रिय कृष्ण का मथुरा प्रवास। "नाम से जैसा लगता है प्रिय प्रवास यानी ब्रजवासियों के प्रिय कृष्ण का मथुरा प्रवास चरम घटना होनी चाहिए। या कंस वध जैसी महत्वपूर्ण घटना के कार्य के रूप में चित्रित किया जा सकता था। लेकिन संपूर्ण ग्रंथ में ब्रजवासियों के विरह वर्णन को ही अपेक्षाकृत अधिक महत्व मिला है।" (हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास, पृ. 697)

'प्रिय प्रवास' के प्रथम सर्ग का छंद द्रुतविलंबित छंद है। द्रुत का अर्थ है तेज और विलंबित का अर्थ है मंदता अर्थात जिसमें तीव्रता न हो। कहने का आशय है कि काव्य पंक्ति का आधा भाग तेज गति से चलती है और अगले भाग में उतनी तीव्रता नहीं होती। इससे संगीतात्मकता पैदा होती है। इस प्रथम सर्ग में कवि ने प्रकृति का विशेष रूप से संध्या का मनोरम चित्रण किया है।

संध्याकाल का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि दिन का अंत निकट है। अर्थात सूरज ढलने वाला है। सारा आकाश लाल रंग से ढका हुआ है। सूर्य की किरणें पेड़ों की चोटियों पर सुशोभित हैं। शाम होते ही पक्षी घर वापस लौट रहे हैं। जंगल के बीचों बीच उनका कलरव बढ़ रहा है। विभिन्न प्रकार के पक्षी शोर करते हुए आसमान में उड़ रहे हैं। आकाश में लालिमा बढ़ रही है। दसों-दिशाएँ साँझ की लालिमा में डूब चुकी हैं। जंगल के सभी पेड़ों की हरियाली पर सूर्य की लालिमा चढ़ गई। आकाश की यह लालिमा नदी और तालाब के किनारों पर भी दिखाई देने लगी। जल में दिखाई पड़ने वाली यह लालिमा अत्यंत सुंदर है। अब वह पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ गई। और अब सूरज का बिंब धीरे-धीरे आकाश से अदृश्य होने लगा।

घर लौटने का संकेत करते हुए श्रीकृष्ण मुरली बजाने लगे तो जंगल में मुरली की ध्वनि गूँजने लगी। कृष्ण की मुरली की ध्वनि सुनकर सभी गोप भी अपने वाद्य यंत्र बजाने लगे। यह सुनकर सभी गाय और बछड़े दौड़ते हुए आ गए। गायों के चलने से आकाश में धूल छा गई। सभी गोप कृष्ण के साथ मिलकर गोकुल वापस लौटने लगे। गोकुल गाँव के हर घर में प्रसन्नता बहने लगी क्योंकि सारे लोग श्रीकृष्ण के दर्शन की लालसा में बैठे हुए हैं।

छात्रो! आगे हम प्रथम सर्ग के 10 छंदों की व्याख्या करेंगे।

6.3.2 अध्येय कविता : दिवस का अवसान

दिवस का अवसान समीप था।
गगन था कुछ लोहित हो चला।

तरु-शिखा पर थी अब राजती।
कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा।। 1 ।।
विपिन बीच विहंगम वृंद का।
कलनिनाद विवर्द्धित था हुआ।
ध्वनिमयी-विविधा विहगावली।
उड़ रही नभ-मण्डल मध्य थी।। 2 ।।
अधिक और हुई नभ-लालिमा।
दश-दिशा अनुरंजित हो गई।
सकल-पादप-पुंज हरीतिमा।
अरुणिमा विनिमज्जित सी हुई।। 3 ।।
झलकने पुलिनों पर भी लगी।
गगन के तल की यह लालिमा।
सरि सरोवर के जल में पड़ी।
अरुणता अति ही रमणीय थी।। 4 ।।
अचल के शिखरों पर जा चढ़ी।
किरण पादप-शीश-विहारिणी।
तरणि-बिंब तिरोहित हो चला।
गगन-मण्डल मध्य शनैः शनैः।। 5 ।।
ध्वनि-मयी कर के गिरि-कंदरा।
कलित-कानन केलि निकुंज को।
बज उठी मुरली इस काल की।
तरणिजा-तट-राजित-कुंज में ।। 6 ।।
क्वणित मंजु-विषाण हुए कई।
रणित शृंग हुए बहु साथ ही।
फिर समाहित-प्रांतर-भाग में।
सुन पड़ा स्वर धावित-धेनु का।। 7 ।।
निमिष में वन-व्याप्ति-वीथिका।
विविध-धेनु-विभूषित हो गई।
धवल-धूसर-वत्स-समूह भी।
विलसता जिनके दल साथ था।। 8 ।।
जब हुए समवेत शनैः शनैः।
सकल गोप सधेनु समंडली।
तब चले ब्रज-भूषण को लिये।
अति अलंकृत-गोकुल-ग्राम को।। 9 ।।
गगन मंडल में रज छा गई।

दश-दिशा बहु-शब्दमयी हुई।
विशद-गोकुल के प्रति-गेह में।
बह चला वर-स्रोत विनोद का।। 10 ।।

निर्देश : इन छंदों का सस्वर वाचन कीजिए।
इन छंदों का मौन वाचन कीजिए।

6.3.3 विस्तृत व्याख्या

[1]

दिवस का अवसान समीप था।
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु-शिखा पर थी अब राजती।
कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा।।

शब्दार्थ : दिवस = दिन। अवसान = समाप्ति। गगन = आकाश। लोहित = लाल रंग। तरु-शिखा = पेड़ों के शिखर। कमिलिनी-कुल-वल्लभ = सूर्य। प्रभा = चमक।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंग : इस पद में संध्या का सुंदर दृश्य अंकित है।

व्याख्या : दिवस का अवसान समीप आ रहा है अर्थात दिन ढल रहा है। शाम का समय है। सूरज पश्चिम की ओर धीरे-धीरे डूब रहा है। ऐसी स्थिति में आसमान लाल दिखाई दे रहा है। ढलती सूर्य की किरणें आकाश में फैली हुई हैं। उन किरणों के कारण आकाश में लालिमा छाई हुई है। पश्चिम में ढलते सूरज की चमक पेड़ों के शिखरों दिखाई दे रहा है।

सूर्यास्त के समय आकाश में सूर्य का प्रतिबिंब लाल दिखाई देता है। सूर्य की किरणों आकाश में इस तरह फैलती हैं कि सारा आकाश लाल हो उठता है। लाल रंग की अनेक छटाएँ दिखाई देंगे जो देखने में सुंदर लगते हैं। प्रस्तुत छंद पढ़ते समय आँखों के सामने सूर्यास्त का चित्र उपस्थित होना स्वाभाविक है।

विशेष :

1. महाकाव्य की शुरूआत मंगलाचरण से होती है। यहाँ कवि ने सीधे-सीधे भगवान की प्रार्थना से शुरू न करके संध्या चित्रण से काव्य की शुरूआत की है। यह भी एक तरह से मंगलाचरण ही है।
2. सायंकालीन प्रकृति का मनोरम चित्र इस छंद में अंकित है।
3. पहला चरण दूसरे चरण का कारण है अर्थात गगन में लालिमा दिवस के अवसान के कारण है। अतः इसे काव्यलिंग अलंकार कहा जाता है।
4. कवि ने सूर्य का प्रयोग न करके कमलिनी-कुल-वल्लभ का प्रयोग किया है। अतः इसे पर्यायोक्ति अलंकार कहा जाता है।
5. स्वभावोक्ति अलंकार, समासोक्ति अलंकार, पर्याय अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।
6. बिंबात्मकता।

बोध प्रश्न

- इस छंद में चित्रित प्राकृतिक घटकों को पहचानिए।
- संध्या के समय सूर्य की प्रभा कैसी थी?
- 'कमलिनी-कुल-वल्लभ' से कवि का क्या आशय है?
- इस छंद में प्रयुक्त अलंकारों को पहचानिए।

[2]

विपिन बीच विहंगम वृंद का।
कलनिनाद विवर्द्धित था हुआ।
ध्वनिमयी-विविधा विहगावली।
उड़ रही नभ-मण्डल मध्य थी।।

शब्दार्थ : विपिन = जंगल। विहंगम = पक्षी। वृंद = समूह। कलनिनाद = कलरव की ध्वनि। विवर्द्धित = बढ़ना। विहग = पक्षी। नभ = आकाश।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंग : शाम के समय घोंसलों की ओर लौट रहे पक्षियों के समूहों का सुंदर चित्र अंकित है।

व्याख्या : सूरज ढल रहा है। सुबह खाने की तलाश में निकली पक्षियाँ शाम होते ही अपनी-अपनी घोंसलों की ओर लौट रहे हैं। जंगल का वातावरण विविध पक्षियों की आवाजों से भर चुका है। और आवाज बढ़ती ही जा रही है। अलग-अलग प्रकार की पंछी तो अलग-अलग प्रकार की ध्वनियाँ। इस तरह कलरव करते हुए - शोर मचाते हुए आकाश मंडल में पक्षियों का समूह पंक्तिबद्ध होकर उड़ रहा है। यह दृश्य मन को प्रफुल्लित करता है।

विशेष :

1. ध्वन्यात्मकता।
2. अनुप्रास अलंकार बार-बार कुछ वर्णों की आवृत्ति हुआ है।
3. कलनिनाद विवर्द्धित - कानों को मधुर लगने वाले ध्वनियों की आवृत्ति हुई है। अतः इसे श्रुत्यानुप्रास अलंकार कहा जाता है।

बोध प्रश्न

- अपने शब्दों में इस दृश्य का चित्रण करें।
- 'कलनिनाद विवर्द्धित' से क्या आशय है?
- विविध पक्षियों की आवाज सुनने में आपको किस तरह की अनुभूति होती है?
- 'ध्वनिमयी-विविधा विहगावली' कहने से आप में अनोखे के समक्ष कौन से चित्र उभर रहा है?

[3]

अधिक और हुई नभ-लालिमा।
दश-दिशा अनुरंजित हो गई।
सकल-पादप-पुंज हरीतिमा।

अरुणिमा विनिमज्जित सी हुई।।

शब्दार्थ : नभ = आकाश। लालिमा = लाल। दश-दिशा = दसों दीक्षाएँ, चारों ओर। अनुरंजित = जिसका दिल बहलाया गया हो, अनुरक्त। पादप = पौधे। पुंज = समूह। हरीतिमा = हरियाली। अरुणिमा = लाल। विनिमज्जित = डूबी हुई।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंग : सूर्यास्त के समय पूरा आकाश लाल दिखाई देता है। उस दृश्य का मनोरम चित्रण।

व्याख्या : आकाश में लालिमा अधिक हो रही है। अर्थात सूरज पश्चिम की ओर धीरे-धीरे ढल रहा है। दिन छिपने का समय और निकट आ रहा है। दसों-दीशाएँ साँझ की लालिमा में रंग गए। यह दृश्य अत्यंत आह्लादकारक होता है। सभी प्रकार के पेड़-पौधों के समूहों पर अरुणिमा छा गई। ऐसा लगता है कि मानो पेड़ों की हरियाली पर सूर्य की किरणों की लालिमा चढ़ गई। हरे भरे पेड़ों पर लाल रंग की किरणों की छाया पड़ने से ऐसा लगता है कि हरा और लाल एक-दूसरे में मिल गए हों।

विशेष :

1. दृश्यात्मकता।
2. संध्या के बढ़ते वातावरण का चित्रण।
3. 'अरुणिमा विनिमज्जित सी हुई' - इसमें वस्तुत्प्रेक्षा अलंकार है। जहाँ एक वस्तु में दूसरी वस्तु की संभावना की जाए अर्थात एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान ली जाए वहाँ वस्तुत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
4. अनुरंजित होने का अर्थ होता है अनुरागपूर्ण होना। लेकिन यहाँ इसका प्रयोग रंग में रंग जाने के अर्थ में किया गया है। अतः यह श्लेष अलंकार है।

बोध प्रश्न

- 'अरुणिमा विनिमज्जित सी हुई' - इस पंक्ति को पढ़ते समय आपके आँखों के सामने क्या दृश्य उभर रहा है?
- वस्तुत्प्रेक्षा अलंकार किसे कहते हैं?
- श्लेष अलंकार से क्या अभिप्राय है?

[4]

झलकने पुलिनों पर भी लगी।
गगन के तल की यह लालिमा।
सरि सरोवर के जल में पड़ी।
अरुणता अति ही रमणीय थी।।

शब्दार्थ : पुलिन = नदी या सागर का रेतीला किनारा, तट। गगन = आकाश। तल = निचला भाग, सतह। सरि = झरना। सरोवर = तालाब। अरुणता = लालिमा। रमणीय = सुंदर, मनोहर।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंग : संध्याकालीन लालिमा का स्वाभाविक और मनोरम चित्रण अंकित है।

व्याख्या : झरने और तालाब के तट पर लालिमा दिखाई देने लगी। अब तक जो लालिमा पेड़-पौधों के शिखरों पर थी अब वह नदी, झरने और तालाब के तट पर दिखाई देने लगी। कहने का यह आशय है कि उसका पटल विस्तार हो रहा है और वह पूरे आकाश में फ़ैल रही है। नदी और तालाबों के जल में भी लालिमा प्रतिबिंबित होने लगी है। मानो ऐसा लग रहा है कि लालिमा उछल उछल कर जगह-जगह पहुँच रही है। यह चित्र देखने में मनमोहक होता है।

विशेष :

1. स्वभावोक्ति अलंकार।

बोध प्रश्न

- सूरज की लालिमा कहाँ पहुँची?
- संध्याकालीन चित्र को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

[5]

अचल के शिखरों पर जा चढ़ी।
किरण पादप-शीश-विहारिणी।
तरणि-बिंब तिरोहित हो चला।
गगन-मण्डल मध्य शनैः शनैः।।

शब्दार्थ : अचल = पर्वत, पहाड़। पादप = पौधा। शीश = सिर। तरणि = सूर्य। बिंब = परछाई। तिरोहित = अदृश्य, लुप्त। शनैः शनैः = धीरे-धीरे।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंग : सूर्य धीरे-धीरे पहाड़ों के पीछे छिप रहा है। सूर्यास्त का चित्रण है।

व्याख्या : पौधों की चोटियों पर खेलने वाली किरणें अब पर्वत शिखर पर जा चढ़ीं। और उसके बाद धीरे-धीरे सूर्य की परछाई आकाश में छिपने लगी। सायंकाल के समय सूर्य की किरणें धीरे-धीरे सिमटती हुई जा रही हैं।

बोध प्रश्न

- 'तरणि-बिंब तिरोहित हो चला' से आप क्या समझते हैं?
- अचल के शिखरों पर जा चढ़ी। / किरण पादप-शीश-विहारिणी। इसकी व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए।

[6]

ध्वनि-मयी कर के गिरि-कंदरा।
कलित-कानन केलि-निकुंज को।
बज उठी मुरली इस काल की।
तरणिजा-तट-राजित-कुंज में ।।

शब्दार्थ : कंदरा = गुफ़ाएँ। कानन = वन। निकुंज = उपवन। तरणिजा = यमुना, कालिंदी। राजित = सुशोभित। कुंज = बाग-बगीचा, उपवन।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंग : शाम हो चुका है। घर वापस लौटना का समय समीप आ चुका है। अतः कृष्ण मुरली बजाकर सबको संकेत कर रहे हैं।

व्याख्या : दिन छिपने का समय होने से घर लौटने के लिए संकेत करते हुए श्रीकृष्ण मुरली बजाते हैं। इससे पर्वत की गुफ़ाएँ गूँजने लगी। मुरली बजने से विहार स्थल, जंगल सब ध्वनिमय हो गए। यमुना नदी के किनारे स्थित बाग-बगीचे में भी श्रीकृष्ण की मुरली बज उठी। कृष्ण की बंसी की मधुर ध्वनि से सारा वातावरण सुरमय हो गया।

विशेष :

1. कवि ने यह नहीं कहा कि कृष्ण ने मुरली बजाई बल्कि 'बज उठी मुरली' का प्रयोग किया है। अतः इसे पर्यायोक्ति अलंकार का उदाहरण कहा जा सकता है।
2. ध्वन्यात्मकता।
3. 'कलित-कानन केलि-निकुंज को' अनुप्रास अलंकार का उदाहरण है। इसमें 'क' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

बोध प्रश्न

- किन शब्दों से ध्वन्यात्मकता प्रकट होता है?

[7]

क्वणित मंजु-विषाण हुए कई।
रणित शृंग हुए बहु साथ ही।
फिर समाहित-प्रांतर-भाग में।
सुन पड़ा स्वर धावित-धेनु का।।

शब्दार्थ : क्वणित = ध्वनित, झंकृत। मंजु = मनोहर, सुंदर। विषाण = सींग, सींग से बना बाजा। रणित = बजता हुआ। शृंग = सींग, सींग से बना बाजा। प्रांतर = मध्य भाग। धावित = तज दौड़ता हुआ। धेनु = गाय।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंग : शाम का समय हो चुका है। सब घर वापस लौट रहे हैं। वाद्य यंत्रों के बजने और गायों के दौड़ने का चित्र अंकित है।

व्याख्या : कृष्ण की मुरली बजने से सभी गोप-बालाओं को घर लौटने का संकेत मिल चुका है। तो उन लोगों ने भी अपने-अपने गायों को मध्य भाग में एकत्रित करने के लिए - विषाण और शृंग - जानवरों की सींगों से बने तरह-तरह के वाद्य यंत्रों को बजाने लगे। सारा वातावरण तरह-तरह के सुरों से सुरमय हो गया। वाद्य यंत्रों की आवाज सुनकर जंगल में चरने वाले गाय दौड़ने लगे। सभी तरफ से दौड़ती हुई गायों की आवजें सुनाई देने लगीं।

विशेष :

1. पहली पंक्ति में प्रयुक्त 'क्वणित' शब्द 'कामायनी' की इस पंक्ति की याद दिलाती है - कंकण

क्वणित रणित नूपुर थे, हिलते थे छाती पर हार ।

2. यहाँ प्रयुक्त 'धेनु' शब्द जातिवाचक संज्ञा का सूचक है।

3. ध्वन्यात्मकता का प्रयोग।

बोध प्रश्न

- ध्वन्यात्मक शब्दों को छाँटिए।

[8]

निमिष में वन-व्याप्ति-वीथिका।
विविध-धेनु-विभूषित हो गई।
धवल-धूसर-वत्स-समूह भी।
विलसता जिनके दल साथ था।।

शब्दार्थ : निमिष = क्षण, पल। वीथिका = मार्ग। विभूषित = सुशोभित। धवल = सफेद। धूसर = मटमैला। वत्स = गाय का बच्चा, बछड़ा। विलसिता = विलास करता हुआ।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंग : शाम को घर वापस लौटने का संकेत पाकर दौड़कर आ रहे गायों का चित्रण किया गया है।

व्याख्या : देखते-देखते पल भर में जंगल के चारों ओर के मार्गों से विविध प्रकार की गाएँ दौड़ते हुए आ गए। उनके साथ-साथ उनके सफेद और मटमैले बछड़ों का समूह भी वहाँ आ पहुँचा जो उन गायों के साथ चर रहा था।

बोध प्रश्न

- इस छंद को पढ़ने से आपके सामने कौन सा दृश्य उभर रहा है?

[9]

जब हुए समवेत शनैः शनैः।
सकल गोप सधेनु समंडली।
तब चले ब्रज-भूषण को लिये।
अति अलंकृत-गोकुल-ग्राम को।।

शब्दार्थ : समवेत = एकत्र। शनैः शनैः = धीरे-धीरे। ब्रज-भूषण = कृष्ण।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंग : गोचारण के बाद कृष्ण और सभी गोप-बालाओं का घर वापस लौटने का चित्रण।

व्याख्या : सभी गोप गायों की मंडली के साथ धीरे-धीरे एक जगह एकत्रित हो चुके हैं। तब ब्रज-भूषण अर्थात श्रीकृष्ण को साथ लेकर सभी लोग अलंकृत गोकुल ग्राम अर्थात सुंदर गोकुल ग्राम की ओर चलने लगे।

विशेष :

1. इस पद में सामूहिक चेतना को देखा जा सकता है। 'समवेत' और 'समंडली' इस चेतना के

द्योतक शब्द हैं।

बोध प्रश्न

- कवि ने 'अलंकृत गोकुल ग्राम' का प्रयोग क्यों किया है?

[10]

गगन मंडल में रज छा गई।
दश-दिशा बहु-शब्दमयी हुई।
विशद-गोकुल के प्रति-गेह में।
बह चला वर-स्रोत विनोद का।।

शब्दार्थ : गगन = आकाश। रज = धूल। विषाद = विशाल। गेह = घर। वर-स्रोत = झरना। विनोद = हँसी-खुशी।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' महाकाव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है।

प्रसंग : गोचारण के बाद कृष्ण और सभी गोप-बालाओं का घर वापस लौटने का चित्रण।

व्याख्या : जब गाएँ चलती हैं तो आकाश मंडल में गो-रज अर्थात धूल उड़ता है। चारों ओर गायों की रंभाने की आवाज गूँज रही है। विशाल गोकुल के हर घर में हँसी-खुशी का झरना बहने लगा क्योंकि उनके प्रिय कृष्ण और गोप घर वापस लौट रहे हैं।

विशेष :

1. 'दश-दिशा बहु शब्दमयी हुई' - अतिशयोक्ति अलंकार
2. 'स्रोत' शब्द का प्रायः प्रयोग पानी के साथ होता है। जैसे जल स्रोत। लेकिन यहाँ कवि ने विनोद के साथ 'स्रोत' शब्द का मार्मिक प्रयोग किया है - रूपक अलंकार

बोध प्रश्न

- इस छंद में प्रयुक्त अलंकारों को पहचानिए।

6.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

'प्रिय प्रवास' अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत खड़ी बोली हिंदी का प्रथम महाकाव्य है। इसकी रचना का प्रारंभ 15 अक्टूबर, 1909 में किया गया था और 24 फरवरी, 1913 में इसका लेखन पूरा हुआ। इसका प्रकाशन 1914 में हुआ था। इस ग्रंथ का नाम 'ब्रजांगना-विलाप' था लेकिन कवि ने इसका नामकरण 'प्रिय प्रवास' किया। इसके संबंध में स्वयं कवि उद्गार देखें - "मैंने पहले इस ग्रंथ का नाम 'ब्रजांगना-विलाप' रखा था, किंतु कई कारणों से मुझको इसका नाम बदलना पड़ा, जो इस ग्रंथ के समग्र पढ़ जाने पर आप लोगों को स्वयं अवगत होंगे।"

'प्रिय प्रवास' की भाषा तत्समनिष्ठ है। इसमें श्रीकृष्ण महापुरुष की तरह, एक लोकोपकारक की तरह अंकित है न कि ब्रह्म की तरह। कवि ने इस काव्य कृति में पौराणिक कथा को नया आयाम प्रदान किया है। आपको पहले भी बताया गया है कि यह काव्य खड़ी बोली में लिखा गया है। 'प्रिय प्रवास' की भूमिका में स्वयं अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने इस ग्रंथ की आवश्यकता के संबंध में स्पष्ट किया है कि "खड़ी बोली में छोटे-छोटे काव्य-ग्रंथ अब तक

लिपिबद्ध हुए हैं, परंतु उनमें से अधिकांश सौ दो सौ पद्यों में समाप्त हैं, जो कुछ बड़े हैं, वे अनुवादित हैं मौलिक नहीं। सहृदय कवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त का 'जयद्रथ वध' निस्संदेह मौलिक ग्रंथ है, परंतु यह खंड काव्य है। इसके अतिरिक्त ये समस्त ग्रंथ अंत्यानुप्रास विभूषित हैं; इसलिए खड़ी बोलचाल में मुझको एक ऐसे काव्य ग्रंथ की आवश्यकता देख पड़ी, जो महाकाव्य हो; और ऐसी कविता में लिखा गया हो जिसे भिन्नतुकांत कहते हैं। अतएव मैं इस न्यूनता की पूर्ति के लिए कुछ साहस के साथ अग्रसर हुआ और अनवरत परिश्रम कर के इस 'प्रिय प्रवास' नामक ग्रंथ की रचना की।" छात्रो! यदि आप 'प्रिय प्रवास' के छंदों को ध्यान से पढ़ेंगे तो आप पाएँगे कि इन छंदों में तुकांत बिल्कुल भिन्न है। उदाहरण के लिए देखें इसका प्रथम छंद - दिवस का अवसान समीप था/ गगन था कुछ लोहित हो चला/ तरु-शिखा पर थी अब राजती/ कमलिनी-कुल-वल्लभ की प्रभा।

'प्रिय प्रवास' के प्रकाशन के बाद इस के संबंध में 'अभ्युदय' में पं. वेंकटेश नारायण तिवारी आ अग्रलेख प्रकाशित हुआ था। इसमें उन्होंने यह स्पष्ट किया कि "अतुकांत छंदों में कविता रचने का हिंदी में यह पहला ही प्रयत्न है, और हम यह कहने का साहस करते हैं कि तुकांत काव्य के इतिहास में कवि चंदबरदाई आ जो स्थान है, और हिंदी गद्य में जो गौरव लल्लू लाल को प्राप्त है, वही स्थान और वही गौरव श्रीयुत अयोध्या सिंह उपाध्याय को 'प्रिय प्रवास' की बदौलत अतुकांत काव्य की गाथा से उस समय तक दिया जाएगा जब तक हिंदी साहित्य में नवीनता और सजीवता का आदर है। इन में कोई संदेह नहीं कि हिंदी साहित्य में 'प्रिय प्रवास' ने एक महत्वपूर्ण नवीन युग का प्रारंभ किया है।" (महाकवि हरिऔध, पृ. 6 से उद्धृत)

बोध प्रश्न

- हिंदी साहित्य के इतिहास में 'प्रिय प्रवास' का क्या महत्व है?
- 'भिन्नतुकांत' से क्या अभिप्राय है?
- 'प्रिय प्रवास' का प्रारंभिक नाम क्या था?

6.4 पाठ सार

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो ही चुका है कि 'प्रिय प्रवास' खड़ी बोली हिंदी में लिखित प्रथम महाकाव्य है। इसमें कुल सत्रह सर्ग हैं। इस पाठ में आपने प्रथम सर्ग के दस छंदों का अध्ययन किया है। इन छंदों में साँझ का चित्रण है। सूर्यास्त के समय सूरज पश्चिम की ओर डूबने से पहले पूरे आकश में लालिमा बिखेरता है। पेड़-पौधों, पर्वत शिखरों, सरोवर के किनारों, नदी जल आदि में लालिमा बिखेरते हुए सूरज धीरे-धीरे सिमट जाता है। शाम को पंछी कलरव करते हुए घोंसलों में वापस जाते हैं। घर वापस लौटने का संकेत देते हुए कृष्ण मुरली बजाने लगते हैं। मुरलीनाद सुनकर सभी गोप भी अपने-अपने वाद्य यंत्र बजाने लगते हैं। सभी गाय अपने बछड़ों के साथ दौड़ते हुए आते हैं और सभी गोकुल ग्राम वापस लौटते हैं। कृष्ण के आगमन का समय निकट आने से सभी गोकुल वासी प्रफुल्लित हो उठते हैं।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने खड़ी बोली को हिंदी पद्य की भाषा के रूप में तो प्रतिष्ठित किया ही, 'प्रिय प्रवास' के रूप में 'खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य' रचकर उसकी क्षमता के बारे में भारतेंदु युग से चली आ रही आशंकाओं को निर्मूलन कर दिया।
2. हरिऔध ने अपने महाकाव्य 'प्रिय प्रवास' का आरंभ महाकाव्य की एक काव्य रूढ़ि के अनुरूप प्रकृति चित्रण के साथ किया।
3. 'प्रिय प्रवास' का आरंभिक संध्या वर्णन का चित्र बृज संस्कृति को साकार करने में समर्थ है।
4. इस संध्या वर्णन में कवि ने तत्सम प्रधान भाषा और द्रुत-विलंबित छंद के प्रयोग द्वारा खड़ी बोली के लालित्य का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया है।

6.6 शब्द संपदा

1. अनवरत	=	बिना रुके, लगातार
2. पौराणिक	=	जिसका विवरण पुराणों में मिलता हो, प्राचीन काल का
3. प्रतिबिंब	=	परछाई
4. प्रतिष्ठित	=	सम्मान
5. प्रवास	=	पना देश चूड़कर किसी अन्य देश में रहने का भाव, देशांतरण
6. बिंबात्मकता	=	चित्रात्मकता
7. महाकाव्य	=	वह बड़ा विस्तृत और सर्गबद्ध काव्य ग्रंथ जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन हो
8. लोकोद्धार	=	लोक का उद्धार, जन साधारण का उद्धार
9. लोकोपकारक	=	जन साधारण का हित करने वाला

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

6.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1. दिवस का अवसान समीप था, गगन था कुछ हो चला ।
   (अ) मोहित **(आ) लोहित** (इ) सोहित (ई) शोभित
2. सकल-पादप-पुंज हरीतिमा, अरुणिमा ..... सी हुई ।
   (अ) सज्जित (आ) अर्जित **(इ) विनिमज्जित** (ई) लज्जित
3. कमलिनी-कुल-वल्लभ का अर्थ ..... है।
   (अ) सूर्य (आ) चंद्र (इ) ग्रह (ई) नक्षत्र

4. *'विहंगम'* का अर्थ क्या है?

(अ) मनुष्य **(आ) पक्षी** (इ) जानवर (ई) जलचर

5. प्रिय प्रवास में कुल कितने सर्ग हैं ?

(अ) 10 (आ) 11 **(इ) 17** (ई) 20

6. 'प्रिय प्रवास' कब प्रकाशित हुआ ?

(अ) 1900 **(आ) 1914** (इ) 1920 (ई) 1925

7. शोर मचाते हुए आकाश मंडल में किस का समूह पंक्तिबद्ध होकर उड़ रहा है।

(अ) मनुष्य **(आ) पक्षी** (इ) जानवर (ई) जलचर

8. 'प्रिय प्रवास' की भाषा कौनसी है ?

(अ) अवधि (आ) ब्रज (इ) अंग्रेजी **(ई) खड़ी बोली**

9. 'प्रिय प्रवास' में कृष्ण का कौनसा रूप अंकित है?

(अ) मानवीय (आ) पक्षीय (इ) जानवर (ई) कोई नहीं

10. 'प्रिय प्रवास' कब से लिखने की शुरुआत की थी ?

(अ) 1909 (आ) 1914 (इ) 1920 (ई)1921

खंड (ब)

6.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. दिवस का अवसान समीप था/ गगन था कुछ लोहित हो चला/ तरु-शिखा पर थी अब राजती/ कमलिनी-कुलवल्लभ की प्रभा। इस छंद की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
2. अधिक और हुई नभ-लालिमा/ दश-दिशा अनुरंजित हो गई/ सकल-पादप-पुंज हरीतिमा/ अरुणिमा विनिमज्जित सी हुई। इस छंद की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
3. झलकने पुलिनों पर भी लगी/ गगन के तल यह लालिमा / सरि सरोवर के जल में पड़ी/ अरुनता आती ही रमणीय थी। इस छंद की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

6.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. विवेच्य कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. पठित पाठ के आधार पर कविता की विषय वस्तु पर प्रकाश डालिए।
3. 'प्रिय प्रवास' की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

6.8 पठनीय पुस्तकें

1. प्रिय प्रवास : अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
2. हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास : शंभुनाथ सिंह
3. महाकवि हरिऔध : गिरिजादत्त शुक्ल

इकाई 7 : मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना
7.2 उद्देश्य
7.3 मूल पाठ : मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्तिव एवं कृतित्व
7.3.1 जीवन परिचय
7.3.2 रचना यात्रा
7.3.3 रचनाओं का परिचय
7.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व
7.4 पाठ सार
7.5 पाठ की उपलब्धियाँ
7.6 शब्द संपदा
7.7 परीक्षार्थ प्रश्न
7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल साहित्यिक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण युग माना जाता है। इसमें हिंदी की अनेक नई विधाओं का विकास हुआ। यह काल खड़ी बोली, ब्रजभाषा व गद्य लेखन की दृष्टि से स्वर्ण काल माना जाता है। आधुनिक काल को भिन्न-भिन्न चरणों में बाँटा गया है, जैसे - भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता। इन सभी चरणों के अंतर्गत अलग-अलग प्रवृत्तियाँ पाई गई। तथा इन्हीं प्रवृत्तियों के अनुरूप इस समय बहुत से कवि एवं लेखक हुए। अतः द्विवेदी युग के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त का नाम भी इस समय सर्वश्रेष्ठ कवियों में आता है। इन्हें राष्ट्रकवि के रूप में जाना जाता है। गुप्त जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से तथा जन-जागरण का काम बहुत अधिक किया तथा उनकी कविताओं से खड़ी बोली हिंदी को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने में बहुत अधिक सहायता मिली। गुप्त जी अपनी कृति भारत-भारती के कारण राष्ट्रकवि कहलाए। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना चरम विकास पर पहुँची। नारी भावना का चित्रण करने में भी गुप्त जी हिंदी काव्य के इतिहास में बेजोड़ है।

7.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो ! इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

- द्विवेदी युग के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व को जान सकेंगे।
- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना यात्रा क्रमिक विकास से अवगत हो सकेंगे।
- मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की प्रमुख विशेषताओं को जान सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त के योगदान को समझ सकेंगे।

7.3 मूल पाठ: मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

7.3.1 जीवन परिचय

हिंदी के लोकप्रिय कवि मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनका जन्म चिरगाँव, झाँसी में 3 अगस्त, 1886 में हुआ तथा मृत्यु 1964 ई. में हुई। हिंदी साहित्य के इतिहास में वे खड़ी बोली के प्रथम महत्वपूर्ण कवि हैं। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना चरम विकास पर देखी जा सकती है। प्रारंभ में इनकी रचनाएँ कलकत्ता निकलने वाले पत्र 'वैश्योपकारक' में छपती थी। बाद में इनका परिचय महावीरप्रसाद द्विवेदी से हुआ और उसके बाद उनकी रचनाएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगी। द्विवेदी जी गुप्त जी के गुरू के समान थे उनसे गुप्त जी को बहुत अधिक प्रेरणा मिली। जिसके परिणामस्वरूप इनकी काव्यकला में बहुत निखार आया। गुप्त जी की खड़ी बोली हिंदी में लिखी रचनाएँ सरस्वती पत्रिका में 1906 ई. से छपने लगी थी। इनकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना चरम सीमा पर पाई जाती है। इन्हें अपनी कविता 'भारत भारती' से बहुत अधिक लोकप्रियता मिली। 'भारत भारती' में गुप्त जी ने देश के अतीत और वर्तमान का चित्र खीचा था तथा भविष्य की सुखद कामना की है। इनकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन 1909 में हुआ तथा 'भारत भारती' का प्रकाशन 1912 ई. में हुआ और इसी कविता से इन्हें प्रसिद्धि मिली। 'भारत भारती' ने हिंदी भाषि जनता में जाति, देश के प्रति गर्व और गौरवपूर्ण भावनाएँ प्रबुद्ध की अतः इसी काव्य के कारण उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि से सम्मानित किया गया। ये उपाधि गुप्त जी को महात्मा गांधी ने प्रदान की थी। वे 1952 में राज्यसभा के सदस्य भी नियुक्त किए गए।

मैथिलीशरण गुप्त जी की कविताओं ने खड़ी बोली हिंदी को काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में अहम भूमिका निभाई। इन्होंने अपने कविता के माध्यम से जन-जागरण का कार्य बहुत ही सफलता के साथ किया। स्वदशानुराग में निमग्न रहने वाले गुप्तजी सदैव भारतीय संस्कृति के गौरव के गुणगान के साथ-साथ स्त्री, कृषक और वंचित के हक में खड़े रहते थे।

गुप्त जी एक रामभक्त कवि थे। 'रामचरित मानस' के बाद रामकाव्य का दूसरा ग्रन्थ साकेत है, जिसकी रचना गुप्त जी ने की थी। अपनी कविता में उन्होंने बहुत अधिक संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने साधारण बोलचाल की खड़ी बोली, हिंदी के जातीय मात्रिक छंद, गृहस्थ जीवन में प्रचलित पौराणिक आख्यान तथा अपने विचारों में विनम्र आत्मविश्वास ये सभी ही बुनियादी तत्व है, जिनसे गुप्त जी का रचनात्मक व्यक्तित्व निर्मित हुआ।

हिंदी के कवियों में प्रबंध-काव्य सबसे अधिक लिखने वाले कवि गुप्त जी ही हैं। उनकी वास्तविक काव्य प्रतिभा प्रबंध काव्यों में दिखाई देती है। इनके प्रबंध काव्य ज्यादातर पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानक पर आधारित है। इन प्रबंध काव्यों की मूल संवेदना आधुनिक है, इनमें

पौराणिक कथानक को नवीणता से जोड़कर दिखाया गया है। इन काव्यों में गुप्त जी धार्मिक विश्वासों का पूरी मर्यादा रखते हुए कथा के भाव पक्ष को नवीणता से जोड़ दिया है। जो पाठकों को पढ़ने में बहुत रूचिकर लगता है। गुप्त जी के लेखन में संवेदना का अंश बहुत अधिक पाया जाता था। उनकी संवेदना की व्यापकता हम मार्क्स की पुत्री जैनी पर लिखित उनके लेख 'जियनी' से आंक सकते हैं।

गुप्त जी के दो मुख्य महाकाव्य 'साकेत' और 'यशोधरा' है। जो उनकी कीर्ति के आधार है। इन दोनों काव्य में गुप्त जी की प्रतिभा बहुत ही सुंदर ढंग से प्रदर्शित हुई है। 'साकेत' में कवि ने विशेष रूप से लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला की भावात्मक अनुभूतियों तथा उसकी त्याग भरी व्यथा को दिखाया है।

"युग युग तक चलती रहे कठोर कहानी।
रघुकुल में भी थी एक अभागिन रानी॥"

इन पदों के माध्यम से गुप्त जी ने कैकेयी के चरित्र का चित्रण किया है। 'यशोधरा' में गुप्त जी ने नारी मन की करुण व्यथा को बहुत ही सुंदर ढंग से दिखाया है। उन्होंने समकालीन परिस्थितियों में नारी के दर्द को इन शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आँखों में पानी॥"

यहाँ 'दूध' माँ के वात्सल्य और आँखों में पानी उसकी विरह वेदना का द्योतक है।

यशोधरा भी एक कमज़ोर नारी नहीं है वह कहती हैं-

"सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह, तो क्या वे मुझको अपनी पथ-बाधा ही पाते?"

गुप्त जी को अपनी मातृभूमि से भी बहुत लगाव था। मातृभूमि की शोभा का वर्णन करते हुए वे कहते हैं-

"नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है,
सूर्य चंद्र युग-मुकुट मेखला रत्नाकर है॥"

गुप्त जी की भाषा शुद्ध सरल, प्रसाद गुण से युक्त संस्कृत निष्ठ परिभार्जित खड़ी बोली है। इन्होंने विविध प्रकार के काव्यों की रचना की। साथ ही भाषा के सौंदर्य को बढ़ाने के लिए अलंकारों का भी प्रयोग किया। गुप्त जी को बहुत सी उपाधि और पुरस्कार भी प्रदान किए गए 1948 में इन्हें आगरा विश्वविद्यालय से उन्हें डी लिट की उपाधि से सम्मानित किया गया। 1962 ई. में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उन्हें अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया। 1954 में इन्हें साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। हिंदु विश्वविद्यालय ने भी इन्हें डी लिट की उपाधि से सम्मानित किया। इन्होंने 1911 में साहित्य सदन नाम का एक स्वयं के प्रेस की स्थापना भी की तथा मानस मुद्रण की स्थापना 1954-55 में झांसी में की। अतः इन सब गुणों से परिपूर्ण गुप्त जी जनता के प्रतिनिधि कवि हैं।

बोध प्रश्न

- मैथिलीशरण गुप्त की कौन सी रचना देश में राष्ट्र प्रेम की धूम मचा दी थी?
- मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि की उपाधि किसने दी थी?

7.3.2 रचना यात्रा

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त भारतीय संस्कृति प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का पवित्र आदर्श है। इनकी रचना में भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय जनजागरण को सुन्दरता के साथ दिखाया गया है। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से गुप्त जी ने अपनी रचनाओं को लिखने के लिए खड़ी बोली को चुना। तथा खड़ी बोली को अपनी कविताओं के द्वारा काव्य भाषा का दर्जा दिया। इस तरह ब्रजभाषा जैसी समृद्ध भाषा को छोड़कर समय के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने खड़ी बोली को ही काव्य भाषा के रूप में चुना। हिंदी साहित्य के इतिहास में गुप्त जी का यह योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

गुप्त जी की रचनाओं में पवित्रता, नैतिकता और परंपरागत मानवीय सम्बन्धों की रक्षा जैसे गुण देखने को मिलते हैं। सर्वप्रथम द्विवेदी जी ने बारह वर्ष की अवस्था में ब्रजभाषा में 'कनकलता' नाम से कविता लिखी। बाद में उनकी खड़ी बोली में लिखी गई कविताएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगी।

मैथिलीशरण गुप्त जी का रचनाकाल लगभग अर्द्धशताब्दी तक चला इस पूरी अवधि में इन्होंने दो महाकाव्यों, 19 खंडकाव्यों तथा अनेक स्फुट कविताओं की रचना की। इनके कुछ प्रमुख काव्य ग्रन्थ है- जयद्रथ-वध (1910), भारत-भारती (1912), पंचवटी (1925), झंकार (1929), साकेत (1931), यशोधरा (1932), द्वापर (1936), जयभारत (1952), विष्णुप्रिया (1957)। इन्होंने तिलोत्तमा, चंद्रहास और अनघ नाम के तीन नाटक तथा कुछ मुक्तकों की भी रचना की। पलासी का युद्ध, मेघनाद-वध, वृत्र-संहार आदि गुप्त जी के अनूदित काव्य हैं।

1909 में गुप्त जी का प्रथम काव्य संग्रह 'रंग में भंग' प्रकाशित हुआ तथा उसके बाद 1910 में 'जयद्रथ-वध' सामने आया। उन्होंने 1912 में राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण भारत-भारती का प्रकाशन किया। इस काव्य के कारण उनकी लोकप्रियता सर्वत्र फैल गई। गुप्त जी ने बहुत से काव्यग्रंथ का अनुवाद भी किया जैसे बंगाली काव्य ग्रंथ 'मेघनावध', 'विरहिणी', 'ब्रजांगना' तथा 'वीरांगना' का अनुवाद किया। इसी प्रकार उन्होंने संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'स्वप्नवासवद्रत्ता' का भी अनुवाद किया। सन् 1916-17 ई. में गुप्त जी ने महाकाव्य 'साकेत' की रचना आरंभ की तथा 1931 में यह ग्रंथ पूर्ण हुआ। गुप्त जी का दूसरा महत्वपूर्ण महाकाव्य यशोधरा सन् 1932 ई. में पूर्ण हुआ साकेत के लिए मंगला प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साकेत उनकी रचना का सर्वोच्च शिखर है। गुप्त जी भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता माने जाते हैं तथा इनकी सभी रचनाएँ

राष्ट्रीयता से ओत प्रोत है। भारत-भारती ने उत्तर भारत में राष्ट्रीयता के प्रचार और प्रसार में बहुत अहम भूमिका निभाई है।

बोध प्रश्न

- मैथिलीशरण गुप्त के किसी एक महाकाव्य का नाम बताइए?
- भारत-भारती काव्य का रचना काल क्या है?

7.3.3 रचनाओं का परिचय

हिंदी के लोकप्रिय कवि मैथिलीशरण गुप्त की कृत्तियों में आधुनिक युग की लोकोन्मुखता मानवीय करूणा के साथ घुल-मिल गई है। उनकी कृतियों पर गांधीवाद का प्रभाव देखा जाता है। वे अपने समय की समस्याओं के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील थे। सबसे बड़ी बात यह है कि वे नए विचारों का हृदय से अपने काव्य में उपयोग करते थे। गुप्त जी ने राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक जागृति और नैतिक मूल्यों पर बल दिया तथा अपनी रचनाओं के माध्यम से यह संदेश जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है। गुप्त जी लोक की महिमा प्रतिष्ठित करने वाले रचनाकार हैं। साकेत के राम कहते हैं-

'संदेश नहीं मैं यहाँ स्वर्ग का लाया,
इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया।"

गुप्त जी मानववादी रचनाकार है। इन्होंने प्राचीन कथा में नवीणता को दर्शाया है। इन्होंने इसका अच्छा उदाहरण हम 'साकेत' में देख सकते हैं। साकेत में इन्होंने प्राचीन आख्यानों में आधुनिक बोध को कलात्मकता के साथ दर्शाया है।

राम तुम मानव हो, ईश्वर नहीं हो क्या?

तब मैं निरीखर हूँ, ईश्वर क्षमा करें।

गुप्त जी ने अपने काव्य में पारिवारिकता को केन्द्रीय संवेदना के रूप में उभारा है। संयुक्त परिवार भारतीय समाज की महत्वपूर्ण विशेषता है। इन्होंने पारिवारिक संबंधों का चित्रण भी नई चेतना के आलोक में किया है। उर्मिला, कैकेयी, यशोधरा, लक्ष्मण, सबमें कुछ न कुछ नवीनता दिखाने का प्रयास कवि ने किया है।

गुप्त जी के काव्य में नारी का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। नारी भावना को पहचानने और उसका चित्रण करने में गुप्त जी हिंदी काव्य के इतिहास में बेजोड़ है। नारी पात्रों पर स्थितियों का जो प्रभाव पड़ता है उसका चित्रण गुप्त जी बहुत ही स्वाभाविकता के साथ करते हैं। उन्हें नारी पत्र बहुत ही स्वाभिमानी, देशभक्त कर्तव्यपरायण होकर अपनी निजी वेदना खो नहीं देते। साकेत की उर्मिला, यशोधरा की गोपा इसका अच्छा उदाहरण है। भारतीय नारी के विषय गुप्त जी की यह उक्ति बहुत मार्मिक है-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥

गुप्त जी के काव्य में देश प्रेम की भावना कुट-कुट कर भरी हुई है। इसका उदाहरण हम

भारत-भारती में देख सकते हैं। इनकी रचनाओं के माध्यम से हम सत्याग्रह अहिंसा, विश्वप्रेम, किसानों के प्रति प्रेम सब की झलक हम देख सकते हैं।

गुप्त जी के काव्य के कला पक्ष पर ध्यान दिया जाए तो हम पाते हैं कि इसमें शैली, छंद, भाषा, अलंकार आदि से बहुत ही समृद्ध है। इन्होंने खड़ी बोली को ही अपने काव्य का माध्यम बनाया। गुप्त जी ने अपने काव्य में प्रसाद, ओज व माधुर्य तीनों गुणों का समावेश किया है। लक्षणा और व्यंजना शब्द शब्द-शक्ति का प्रयोंग भी जगह-जगह देखा जा सकता है। इन्होंने अपने काव्य में विविध शैलियों का भी प्रयोग किया है। 'साकेत', 'जयद्रथ वध' और 'सिद्धराज' प्रबंधात्मक शैली में लिखा गया उनका काव्य है। उन्होंने अपने काव्य में छन्दों का भी सुन्दरता के साथ प्रयोग किया है।

बोध प्रश्न

- गुप्त जी के काव्य प्रमुख रूप से किस भावना को देखा जा सकता है?
- प्रबंधात्मक शैली में लिखे गए गुप्त जी के काव्यों के नाम बताइए।

मैथिलीशरण गुप्त जी की मुख्य रचनाएँ

भारत भारती

भारत भारती गुप्त जी की महत्वपूर्ण रचनाओं में एक है। इसका सृजन 1912 में हुआ तथा इसका प्रकाशन 1914 में किया गया। भारत भारती की रचना के प्रयोजन के बारे गुप्त जी बताते हैं कि "कोई दो वर्ष हुए मैंने 'पूर्व दर्शन' नाम की एक तुकबंदी लिखी थी। उस समय चित्र में आया था कि हो सकता है तो कभी इसे पल्लवित करने की चेष्टा करूँगा। इसके कुछ ही दिन बाद उक्त राजा (राजा रामपाल सिंह) का एक कृपा पत्र मुझे मिला, जिसमें उन्होंने मौलाना हाली के 'मुसद्दस' को लक्ष्य करके इस ढंग की एक कविता पुस्तक हिंदुओं के लिए लिखने का मुझसे अनुग्रहपूर्वक अनुरोध किया।" 'भारत भारती' में गुप्त जी ने स्वदेश प्रेम को दर्शाया है। तथा देश की दशा में सुधार लाने का प्रयोस किया है। गुप्त जी की इस कृति को हम सांस्कृतिक नवजागरण का ऐतिहासिक दस्तावेज़ कह सकते हैं। भारत भारती तीन खंडों में बाँटा गया है, अतीत खंड, वर्तमान खंड तथा भविष्यत खंड। इस कृति में राष्ट्रीयता की भावना को दर्शाया गया है।

भारतीय समाज और संस्कृति के अतीत, वर्तमान और भविष्य पर सोच-विचार के लिए पाठकों को विवश करने वाली यह रचना इस सद्भावना के साथ आरंभ होती है कि सारे संसार में भारत और भारती का गौरव फिर से स्थापित हो जाए। इसके लिए कवि ने कोरी भावुकता के स्थान पर देश की दशा के ऊपर गंभीर विचार विमर्श की ज़रूरत बताई है -

हम कौन थे क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।

गुप्त जी मानते थे कि अपने इतिहास को जाने बिना भारतीयों का सोया हुआ स्वाभिमान

जाग नहीं सकता। जबकि स्वतंत्रता के संघर्ष में कूद पड़ने के लिए इसकी बड़ी आवश्यकता थी। इसलिए उन्होंने याद दिलाया कि भारतवर्ष अतीत में संसार का सिरमौर रहा है तथा किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति भारत जितनी पुरानी नहीं है। भारतवर्ष विद्या और कौशल के क्षेत्र में दुनिया का प्रथम आचार्य है। कवि ने यह भी याद दिलाया है कि हमारे पूर्वजों की कीर्ति अपार है। उनके लिए दैहिक सुख कोई महत्व नहीं रखते थे। बल्कि मानव कल्याण के लिए हमारे पूर्वजों ने प्राण नौछावर करने के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए थे। उनकी चेतना पूर्ण स्वाधीन थी-

वे मोह बंधन मुक्त थे, स्वच्छंद थे, स्वाधीन थे,

संपूर्ण सुख संयुक्त थे, वे शांति शिखरासीन थे।

कवि ने अपने पूर्वजों का गुणगान करते समय यह दर्शाया है कि भारतवर्ष अतीत में जगद्गुरू था। उनकी मान्यता है कि -

है आज पश्चिम में प्रभा जो, पूर्व से ही है गई,

हरते अंधेरा यदि न हम, होती न खोज नई-नई।

लेकिन जब कवि अपने समकालीन भारत की वर्तमान दशा पर विचार करते हैं तो दुख और क्षोभ से उनका हृदय हाहाकार करने लगता है। विदेशी आक्रमणों और लंबी गुलामी के कारण भारत का प्राचीन गौरव धूल में मिल गया। समाज का पतन हो गया। मर्यादाएँ भंग हो गईं। स्वार्थ, अहंकार, मद, दरिद्रता, दुर्भिक्ष और आत्महीनता ने भारतीयों को घेर लिया। स्वदेशी के स्थान पर विदेशी के आकर्षण ने भारतीय गौरव को नष्ट कर दिया। ऐसे समय कवि ने अपने देशवासियों को जागने और अपने कर्तव्य को पहचानने की प्रेरणा दी। साहित्यकारों को युग के चारण मानते हुए उन्होंने यह संदेश दिया कि काव्य का उद्देश्य मनोरंजन और चमत्कार नहीं, बल्कि लोक हित और जनता में उच्च भावों को जगाना है। वे कहते हैं -

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,
उसमें चित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।
कवियो! उठो अब तो अहो, कविकर्म की रक्षा करो,
सब नीच भावों का हरण कर उच्च भावों को भरो।

'भारत भारती' के भविष्यत खंड में कवि ने यह प्रार्थना की है कि भारतीयों की 'पशु तुल्य परवशता' मिटे और यथार्थ मनुष्यता प्रकट हो। वे यह शुभकामना करते हैं कि -

सब की नसों में पूर्वजों का पुण्य रक्त प्रवाह हो,
गुण, शील, साहस, बल तथा सबमें भरा उत्साह हो।
सबके हृदय में सदा समवेदना का दाह हो,
हमको तुम्हारी चाह हो, तुमको हमारी चाह हो॥

बोध प्रश्न

- 'भारत-भारती' में गुप्त जी ने किस प्रेम को दर्शाया है?
- स्वतंत्रता के संघर्ष में कूद पड़ने के लिए किसकी आवश्यकता थी?
- 'भारत-भारती' को सांस्कृतिक नवजागरण का ऐतिहासिक दस्तावेज़ क्यों कहा जा सकता है?
- 'भारत-भारती' कितने खंडों में विभाजित है?

साकेत

साकेत राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित महाकाव्य है। इसमें उर्मिला को केंद्र में रखा गया है। यह एक रामकथा है। साकेत के नवम सर्ग में उर्मिला की विरह वेदना का वर्णन किया है। इस महाकाव्य में पूरी कथा बारह सर्गों विभक्त है। कवि ने अपना पूरा ध्यान उर्मिला पर ही केंद्रित किया है। चूँकि, उर्मिला काव्य में उपेक्षित रही है। किसी ने भी उस पर काव्य लिखने का प्रयास नहीं किया था। आठवें सर्ग में कैकेयी के पश्चाताप का वर्णन कवि ने किया है जिसमें उन्होंने अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया है।

'साकेत' नवजागरण और स्वतंत्रता आंदोलन काल की समग्र चेतना को व्यक्त करने वाली अभिनव रामकथा है। मैथिलीशरण गुप्त मानते हैं कि राम का चरित्र इतना विराट है कि उस पर कलम चलाने वाला कोई भी व्यक्ति कवि बन सकता है। लेकिन राम के इस चरित्र को गुप्त जी ने अपने युग के अनुरूप नए स्वरूप में प्रस्तुत किया। इस रचना के द्वारा उन्होंने लोक कल्याण का एक नया आदर्श स्थापित किया तथा उर्मिला के चरित्र को केंद्र में रखते हुए राम कथा का स्त्री केंद्रित पाठ प्रस्तुत करके समाज के निर्माण और राष्ट्र के उत्थान में स्त्री जाति के योगदान को रेखांकित किया। कवि ने यह दर्शाया है कि सीता और उर्मिला दोनों की तपस्या अपनी अपनी जगह महान है। सीता ने जहाँ पति के साथ रहकर वन को ही राजभवन समझा, वहीं उर्मिला ने पति से अलग रहते हुए राजभवन में तपोवन जैसा जीवन जिया। नारी चरित्रों के उदात्त चित्रण की दृष्टि से 'साकेत' एक अनुपम कृति है।

बोध प्रश्न

- कवि ने 'साकेत' में अपना पूरा ध्यान उर्मिला पर ही क्यों केंद्रित किया?
- 'साकेत' को राम कथा का स्त्री केंद्रित पाठ क्यों कहा जा सकता है?
- 'साकेत' की रचना का मूल उद्देश्य क्या था?
- 'साकेत' के किस सर्ग में उर्मिला की विरह वेदना का चित्रण है?

यशोधरा

'यशोधरा' गुप्त जी द्वारा रचित प्रबंधकाव्य है। गद्य और पद्य मिश्रित होने के कारण इसे चंपू काव्य की कोटि में रखा जाता है। इसमें गौतम बुद्ध के गृह त्याग की कहानी को केंद्र में रखकर लिया गया है। इसमें नारी के विरहजन्य पीड़ा को विशेष रूप से दर्शाया गया है। इस काव्य का प्रमुख पात्र यशोधरा ही है। इस काव्य की रचना भी 'साकेत' की भाँति ही उपेक्षित नारी चरित्र को प्रतिष्ठा प्रदान करने के लिए की गई है। पति परित्यक्ता यशोधरा के हार्दिक दुख को प्रकट करना यहाँ कवि का मुख्य प्रयोजन रहा है। इसे इतिहास की विडंबना ही कहा जा

सकता है कि भगवान बुद्ध के व्यक्तित्व की चकाचौंध के पीछे यशोधरा की पीड़ा कई शताब्दी तक अदृश्य रही। मानवीय सम्बन्धों के अमर गायक और मानव सुलभ सहानुभूति को प्रतिष्ठा प्रदान करने वाले राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने उन्हें नेपथ्य से निकालकर काव्य के रंगमंच पर प्रस्तुत किया।

इस काव्य में यह दर्शाया गया है कि रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु के दृश्यों को देखकर गौतम इतने विचलित और भयभीत हो उठते हैं कि पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को सोते हुए छोड़कर अमृत तत्व की खोज में निकल जाते हैं। उनके जाने के बाद आँचल में दूध और आँखों में पानी लिए यशोधरा किस प्रकार धैर्य पूर्वक जीवन यापन करती है यही इस काव्य का केंद्रीय कथ्य है। सिद्धि प्राप्त होने पर बुद्ध के लौटने पर मानिनी यशोधरा उतावली होकर स्वागत के लिए नहीं दौड़ती, बल्कि खुद बुद्ध उनके द्वार पर आकर भीख माँगते हैं। यशोधरा के पास सबसे बड़ा धन उनका पुत्र राहुल ही था। उसे ही वे उन्हें सौंप देती हैं और स्वयं भी उनका अनुसरण करती हैं। इस काव्य की ये पंक्तियाँ नारी जाति की मर्मवेदना की गायत्री बन गई हैं -

अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

बोध प्रश्न

- गौतम किसे देखकर विचलित हुए?
- 'यशोधरा' काव्य का केंद्रीय कथ्य क्या था?
- यशोधरा के पास क्या धन था?

7.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

आधुनिक काल के प्रमुख कवियों में गुप्त जी का नाम आता है। ये आम जनता में बहुत लोकप्रिय थे। इन्होंने हिंदी साहित्य की सेवा बड़े उत्साह और इमानदारी के साथ किया। गुप्त जी द्विवेदी जी के आग्रह पर खड़ी बोली हिंदी को काव्य भाषा के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ी बोली को अपने काव्य की भाषा बना ली। उनकी रचनाएँ बहुत अधिक जनप्रिय हैं। हिंदी साहित्य में तुलसीदास के बाद मैथिलीशरण गुप्त ही एक ऐसे कवि हैं जिन्हें जनता ने बहुत अधिक प्यार दिया है। नव-जागरण की चेतना ने इनके काव्य संवेदना में मिलकर नया काव्य-संस्कार पाया है। भारतेंदु ने जो राष्ट्रीयता की भावना का बीज़ काव्य में डाला था उसका विकास गुप्त जी के काव्य में बहुत अधिक देखा गया और उनका काव्य नए युग की नई चेतना का वाहक बना।

गुप्त जी की कविता ने जन-जागरण का काम बहुत अधिक सफलता के साथ किया। ये भारतीय सभ्यता और संस्कृति के परमभक्त थे, किंतु वे अंधभक्त नहीं थे। उन्हें सभी धर्मों से बहुत अधिक प्यार था। अन्य धर्मों के गुण लेने में वे संकोच नहीं करते थे। गुप्त जी के बारे में पं.रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है- "गुप्त जी प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता है कालानुसरण की क्षमता अर्थात उत्तरोतर बदलती हुई भावनाओं और काव्य प्रणालियों को ग्रहन करते चलने की शक्ति। इस दृष्टि से ये निस्संदेह हिंदी भाषी जनता के प्रतिनिधि कवि कहे जा सकते हैं। भारतेंदु के समय से

स्वदेश-प्रेम की भावना जिस रूप में चली आ रही थी उसका विकास 'भारत भारती' में मिलता है। इधर के राजनीतिक आंदोलनों ने जो रूप धारण किया उसका पूरा-पूरा अभास पिछली रचनाओं में मिलता है। इनमें हम सत्याग्रह, अहिंसा, मनुष्यत्ववाद, विश्वप्रेम, किसानों और श्रमजीवियों के प्रति प्रेम और सम्मान सबकी झलक पाते हैं।"

भारतीय-संस्कृति और इतिहास की गुप्त जी को बहुत अधिक जानकारी थी और इसका प्रयोग वह अपने काव्य में करते थे। अतीत से वर्तमान का इतना घनिष्ठ संवाद उनकी कविता में निरंतर मिलता है। वे दोनों को मिलाने वाले सेतु हैं।

गुप्त जी का महत्त्व इस बात में है कि बहुत आधिक आलोचना के बावजूद वे आधुनिक काल के एक बड़े कवि हैं। उनकी लोकप्रियता के अनेक कारण हैं जैसे सीधी सरल भाषा, पौराणिक कथानकों का चुनाव, गृहस्त जीवन की महिमा का महत्त्व, राष्ट्रीय भाव की अभिव्यक्ति आदि।

मैथलीशरण गुप्त का 'साकेत' महाकाव्य ही नहीं आधुनिक हिंदी का युग प्रवर्तक महाकाव्य है। 'साकेत' में उर्मिला के पारंपरिक चरित्र को एकदम बदल दिया गया है। मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीयता, समाजसुधार, नव जागरण, स्वतंत्र चेतना, मानवतावाद, समाजिक समता और गाँधीवाद आदि मूल्यों का समावेश किया है।

हमारी भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत सम्मान दिया जाता है। गुप्त जी ने भी अपने काव्य में इसका अनुसरण किया है। उन्होंने नारी के अनेक प्रकार के चरित्र अपने काव्य में उपस्थित किए हैं। हम कह सकते हैं कि हिंदी के किसी भी कवि ने नारी के इतने विभिन्नतापूर्ण चरित्र नहीं प्रस्तुत किए होंगे। नारी की पीड़ाओं में गुप्त जी को गहरी सहानुभूति थी।

अतः हम कह सकते हैं कि हिंदी साहित्य के इतिहास में कवि मैथिलीशरण गुप्त का स्थान अपने राष्ट्रीय चेतना एवं सामाजिक जागृति और नैतिक मूल्यों पर बल देने वाले काव्य के लिए हमेशा याद किया जाएगा।

बोध प्रश्न

- मैथिलीशरण गुप्त के किस काव्य में स्वदेश प्रेम की भावना की झलक मिलती है?
- मैथिलीशरण गुप्त ने अपने कावयाओं में किन मूल्यों का समावेश किया?

7.4 पाठ-सार

मैथिलीशरण गुप्त, द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। प्रारम्भ में इनकी रचनाएँ कलकत्ता से निकलने वाले पत्र 'वैश्योपकारक' में प्रकाशित होती थी। द्विवेदी जी से मिलने के बाद इनकी रचनाएँ सरस्वती में प्रकाशित होने लगी। हरिऔध यही द्विवेदी युग के पहले कवि हैं, तो गुप्त जी इस युग के सम्पूर्ण प्रतिनिधि कवि हैं। द्विवेदी युग के काव्य को जितनी ही महत्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ है, वे सभी गुप्त जी की रचनाओं में देखी जाती है। उन्होंने ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ी बोली हिंदी में काव्य रचना किया। गुप्त जी की रचनाओं में राष्ट्रीयता, समाज-सुधार, नवजागरण, स्वतंत्र चेतना, मानवतावाद, सामाजिक सभ्यता और गांधीवाद जैसे मुल्य देखने को मिलते हैं। इनकी प्रथम रचना 'रंग में भंग' का प्रकाशन सन् 1909 में हुआ, किंतु इनकी

ख्याति 'भारत-भारती' (1912 ई.) से हुई। भारत-भारती को अंग्रेजों ने जब्त भी कर लिया था। इन कृति के प्रकाशन के बाद इन्हें राष्ट्रकवि के रूप में प्रसिद्धि मिली। भारत-भारती में भारत के अतीत का गौरवगान तथा तत्कालीन स्थिति का चित्रण किया गया है। इन्होंने दी महाकाव्यों तथा 19 खण्ड-काव्यों की रचना की। इनके दो महाकाव्य साकेत और यशोधरा है। इन्होंने लगभग 40 कृतियों की रचना की।

गुप्त जी के काव्य में पारिवारिक संबंधों का चित्रण नई चेतना के आलोक में किया गया है। साकेत में कवि ने उर्मिला को केन्द्र में रखकर काव्य की रचना की है। गुप्त जी ने नारी को अपने काव्य में मुख्य स्थान दिया है। अबला नारी में उन्हें गहरी सहानुभूति थी।

अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं कि गुप्त जी अपने युग के महान कवि थे तथा अपने काव्य के माध्यम से समाज का सुधार करने वाले महान सुधारक थे।

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग की राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं।
2. मैथिलीशरण गुप्त ने दो महाकाव्यों 'साकेत' और 'यशोधरा' तथा 19 खंड काव्यों की रचना की।
3. गुप्त जी की रचनाओं में 'भारत-भारती' का प्रमुख स्थान है।
4. गुप्त को 'राष्ट्रकवि' के रूप में सबसे पहले महात्मा गांधी ने संबोधित किया।
5. गुप्त जी रामभक्त कवि थे। उन्होंने 'साकेत' में रामकथा को उर्मिला के अवलोकन बिंदु से प्रस्तुत किया है।
6. 'यशोधरा' गौतम बुद्ध के गृह त्याग पर आधारित काव्य ग्रंथ है।

7.6 शब्द संपदा

1. उपाधि	=	सम्मान
2. कालानुसरण	=	समय के अनुसार
3. गृह-त्याग	=	घर छोड़कर जाना
4. गौरवपूर्ण	=	सम्मानित
5. प्रतिनिधि	=	स्थानापत्र व्यक्ति
6. माध्यम	=	साधन, उपाय
7. विरह	=	वियोग, अभाव
8. वेदना	=	कष्ट
9. सर्वश्रेष्ठ	=	सब में अच्छा

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

7.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1. मैथिलीशरण गुप्त की वह रचना जिसने देश में राष्ट्रप्रेम की धूम मचा दी।
   (क) साकेत (ख) यशोधरा **(ग) भारत-भारती** (घ) जयभारत
2. साकेत के केन्द्र में किस पात्र की कथावस्तु है।
   (क) उर्मिला (ख) लक्ष्मण (ग) राम (घ) सीता
3. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं।
   (क) छायावादी (ख) भारतेंदु युग **(ग) द्विवेदी** (घ) प्रगतिवादी युग
4. मैथिलीशरण गुप्त की प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन कब हुआ?
   (क) 1990 (ख) 1899 (ग) 1900 **(घ) 1909**
5. 'भारत भारती' का प्रकाशन कब हुआ ?
   (क) 1912 (ख) 1812 (ग) 1900 (घ) 1909
6. "अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी। आंचल में है दूध और आँखों में पानी॥" यह किस कवि की पंक्तियाँ हैं ?
   (क) हरिऔंध (ख) भारतेंदु **(ग) मैथिलीशरण गुप्त** (घ) कोई नहीं
7. मैथिलीशरण गुप्त को 'डी लिट' की उपाधि किस विश्वविद्यालय से मिली?
   (क) हिंदु विश्वविद्यालय (ख) दिल्ली विश्वविद्यालय
   (ग) जे एन यू विश्वविद्यालय (घ) इनमें से कोई नहीं
8. मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं को आरोह क्रम बताइए.
   (क) साकेत, भारत-भारती, यशोधरा, द्वापर (ख) भारत-भारती, साकेत, द्वापर,यशोधारा
   (ग) भारत-भारती, साकेत, यशोधरा, द्वापर (घ) साकेत, यशोधरा, द्वापर, भारत-भारती
9. "राम तुम मानव हो, ईश्वर नहीं हो क्या?" यह पंक्ति की रचना से लिया गया है ?
   (क)भारत-भारती **(ख) साकेत** (ग) यशोधरा (घ) द्वापर
10. हम कौन थे क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी, आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी। यह पंक्ति की रचना से लिया गया है ?
    (क)भारत-भारती (ख) साकेत (ग) यशोधरा (घ) द्वापर

खंड (ब)

7.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'भारत-भारती' के मूल चेतना पर प्रकाश डालिए।
2. 'साकेत' के संदर्भ अनुसार उर्मिला के विरह का वर्णन करें।
3. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य के मूल स्वरों पर प्रकाश डालिए।
4. 'यशोधरा' के मूल कथ्य पर प्रकाश डालिए।
5. हिंदी साहित्य में मैथिलीशरण गुप्त के स्थान एवं महत्व को रेखांकित कीजिए।

खंड (स)

7.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. मैथिलीशरण गुप्त के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. मैथिलीशरण गुप्त की रचना यात्रा का वर्णन कीजिए।

7.8 पठनीय पुस्तकें

1. भारत भारती : मैथिलीशरण गुप्त
2. साकेत : मैथिलीशरण गुप्त
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
4. मैथिलीशरण गुप्त रचनावली

इकाई 8 : आदर्श : मैथिलीशरण गुप्त

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 मूल पाठ : आदर्श : मैथिलीशरण गुप्त

8.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

8.3.2 अध्येय कविता

8.3.3 विस्तृत व्याख्या

8.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

8.4 पाठ सार

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

8.6 शब्द संपदा

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो, बी.ए. तृतीय सत्र में आधुनिक हिंदी कविता से संबंधित इस पाठ्यक्रम का यह इकाई 8 है। इस इकाई में आप द्विवेदी युगीन प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित भारत भारती नामक काव्य संकलन से आदर्श खंड का पाठ करेंगे। मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के प्रमुख कवि थे। भारतीय नवजागरण के विकास में गुप्तजी का योगदान अविस्मरणीय रहा है। अतीत गौरव गान के माध्यम से गुप्त जी ने राष्ट्र भक्ति एवं राष्ट्रीय चेतना को जन-जन में जाग्रत किया है। ऐतिहासिक, पौराणिक गाथा को गुप्त ने तत्कालीन परिस्थिति के अनुरूप इस प्रकार चित्रित किया है जिससे इतिहास और पुराण की जानकारी तो होती ही थी साथ ही तत्कालीन समाज को दिशा निर्देश भी मिलता रहा। उनकी रचनाएँ भविष्य के लिए भी मार्ग प्रशस्त करती रहीं, यही कारण है कि आज भी मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य में राष्ट्रकवि के रूप में पहचाने जाते हैं और उनकी रचनाओं का हम निरंतर अध्ययन करते हैं।

गुप्त जी पहले रसिकेंद्र उपनाम से ब्रजभाषा में लेखन कार्य करते थे। कलकत्ते से निकलनेवाले वैश्योपकारक नामक जातीय पत्र में उनकी रचनाएँ छपती थीं। इसके बाद वे झांसी में पं. महावीरप्रसाद द्विवेदी से मिले, जो सरस्वती पत्रिका का संपादन कर रहे थे। सरस्वती पत्रिका में अपनी रचनाएँ छपवाने की गुप्त जी को प्रबल इच्छा थी और इस इच्छा की पूर्ति के

लिए उन्होंने अपनी रचनाएँ भेजी किंतु उनकी वह कविता सरस्वती में नहीं छपी और द्विवेदी जी ने उन्हें पत्र लिखकर सूचित किया- "आपकी कविता पुरानी भाषा में लिखी गई है।" सरस्वती में हम बोलचाल की भाषा में ही लिखी गई कविताएँ छापना पसंद करते हैं। उन्होंने यह भी लिखा था कि रसिकेंद्र बनने का जमाना अब गया। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की इन दोनों बातों का गुप्तजी पर विशेष असर पड़ा और उन्होंने खडीबोली में लिखना प्रारंभ किया। उपनाम को भी त्याग दिया। हेमंत नामक कविता लिखकर सरस्वती पत्रिका में छपने के लिए भेजी, जो अनगढ एवं अस्त-व्यस्त थी, किंतु द्विवेदी जी ने उसका संशोधन करके सरस्वती में छाप दी। इस प्रकार द्विवेदी जी के मार्गदर्शन में मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्याकाश में सूर्य के समान देदीप्त है।

गुप्त जी की भारत भारती 1914 में प्रकाशित हुई है। इस कृति के तीन खंड हैं जिनमें भारत का अतीत, वर्तमान व भविष्य चित्रित हैं। कवि ने इसमें परतंत्रता की बेडियाँ तोड़ने का आह्वान किया है। देशवासियों को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति पाने का संदेश देते हुए गुप्त जी ने कहा है :

शासन किसी परजाति का चाहे विवेक विशिष्ट हो।
संभव नहीं है किंतु सर्वांश में वह इष्ट हो॥

सीधी सपाट बयानी अभिव्यक्ति के कारण इस कृति को तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था। बावजूद इसके गुप्त जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रप्रेम, देश सेवा, त्याग और बलिदान की प्रेरणा देते रहे। भारत भारती में संकलित आदर्श नामक कविता के अंश का विस्तृत अध्ययन आप आगे इस इकाई में करेंगे।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई में आप राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'आदर्श' का अध्ययन करेंगे। इसके अध्ययन के उपरांत आप -

- 'भारत भारती' के कथ्य और महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की सांस्कृतिक चेतना से अवगत हो सकेंगे।
- अध्येय कविता की व्याख्या कर सकेंगे।
- अध्येय कविता के काव्यागत सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।

8.3 मूल पाठ : आदर्श : मैथिलीशरण गुप्त

8.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, आप भारत-भारती से आदर्श शीर्षक कविता का अध्ययन कर रहे हैं। आदर्श शीर्षक कविता के भावार्थ एवं लक्ष्यार्थ को समझने से पहले मूल कृति भारत-भारती के बारे में जानलेना आवश्यक है। अत: यहाँ भारत-भारती पर संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत है। आशा है कि इसके अध्ययन से आप भारत-भारती की विषयवस्तु, कृति का आशय तथा गुप्त जी की

रचनाधर्मिता को समझ पाएँगे। तो चलिए, भारत-भारती का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लें।

मैथिलीशरण गुप्त की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना है भारत-भारती। इस रचना का लेखन कार्य 1912 में पूरी हो चुकी थी, लेकिन दो वर्षों तक विद्वानों के परामर्श से इसमें संशोधन और संपादन करने के बाद 1914 में प्रकाशित कराया। इसके प्रकाशन के बाद संपूर्ण हिंदी क्षेत्र में इसकी ख्याति फैल गई और प्रभात-फेरियों में तथा अनेक विद्यालयों में प्रार्थना के रूप में इसके छंद गाए जाने लगे।

इस रचना की प्रसिद्ध उक्ति है- "हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी"। इसी के अनुसार यह काव्य तीन खंडों में विभाजित हैं- अतीत खंड, वर्तमान खंड और भविष्यत खंड। वर्तमान खंड अतीत खंड से थोडा बडा है और भविष्यत खंड सबसे छोटा। अतीत खंड में गुप्त जी ने भारत की असाधारण शक्ति एवं क्षमता का उल्लेख करते हुए अतीत गौरव का गान किया है। मंगलाचरण से इस खंड का प्रारंभ हुआ है तथा क्रमश: अलग-अलग शीर्षकों में कृति का विकास हुआ है। जैसे- मंगलाचरण, उपक्रमणिका, भारतवर्ष की श्रेष्ठता, हमारा उद्भव, हमारे पूर्वज, आदर्श, आर्य स्त्रियाँ, हमारी सभ्यता, जैसे शीर्षकों से कवि ने अतीत वर्तमान तथा भविष्य को दर्शाया है। वर्तमान खंड में भारत की तत्कालीन दुर्दशा का चित्रण है। अतीत और वर्तमान के बीच वैषम्य दिखलाकर उसे भविष्य-निर्माण के लिए तैयार करना कवि का उद्देश्य रहा है।

भारत-भारती का अतीत खंड भारतवर्ष के इतिहास पर गर्व करने को बाध्य करता है। उस समय का दर्शन, धर्म, प्राकृतिक संपदा, स्थापत्य कला कौशल, आयुर्वेद, सामाजिक व्यवस्था, आदि तत्वों का स्मरण कराते हैं। मेगस्थनीज से लेकर आर.सी.दत्त तक के कथनों को प्रासंगिक ढंग से पाठकों के समक्ष रखा गया है। मुगल कालीन कुछ क्रूर घटनाओं की निंदा भी की गई है। अकबर जैसे कुशल शासक का बखान भी हुआ है। आविष्कार और आधुनिकीकरण के प्रचार हेतु अंग्रेजों की प्रशंसा भी इस खंड में की गई है। अतीत खंड में गुप्तजी ने पौराणिक घटनाएँ एवं चरित्र का वर्णन इतिहास की दृष्टि से किया है। इसमें कवि ने पहले पौराणिक पुरुष-चरित्रों का जिक्र किया है और उसके बाद स्त्री चरित्रों का। जैसे-

आमिष दिया अपना जिन्होंने श्येन-भक्षण के लिए,
जो बिक गए चांडाल के घर सत्य-रक्षण के लिए !
दे दीं जिन्होंने अस्थियाँ परमार्थ-हित जानी जहाँ,
शिवि, हरिश्चंद्र, दधीचि-से होते रहे दानी यहाँ ॥

शिवि, हरिश्चंद्र, दधीचि, पुरु, भरत, प्रह्लाद, ध्रुव, कुश, लव, अभिमन्यु आदि पुरुष चरित्रों की महानता का वर्णन किया है। इसी तरह सावित्री, सुकन्या अंशुमती, गांधारी, दमयंती आदि स्त्री चरित्रों को गौरव प्रदान किया है ।

मूँदें रही दोनों नयन आमरण 'गांधारी जहाँ
पति-संग 'दमयंती' स्वयं वन वन फ़िरी मारी जहाँ।
यों ही जहाँ की नारियों ने धर्म का पालन किया,
आश्चर्य क्या फ़िर ईश ने जो दिव्य बल उनको दिया॥

इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक घटनाओं एवं चरित्रों का भी उल्लेख हुआ है । जैसे-

यूनान ही कह दे कि वह ज्ञानी-गुणी कब था हुआ?
कहना न होगा, हिंदुओं का शिष्य वह जब था हुआ ।

गुप्त जी ने इस प्रकार के वर्णन से भारत भूमि की महिमा को गौरव प्रदान किया है। भारत दर्शन का दूर-दूर तक पहले से हुए प्रचार का कवि उजागर करते हैं। जापान में प्रचलित बौद्ध धर्म का जन्म भारत में हुआ था। जापान के लिए उन्होंने जयपाणि शब्द का प्रयोग किया है। चारों वेद, वेदांतसूत्र के रचयिता व्यास, गौतम, कपिल, जैमिनि, पतंजलि, कणाद जैसे महान मनीषियों का चित्रण करते हुए गुप्त ने इस रचना को उत्कृष्ट बनाया है। गुप्त जी की एक विशेषता यह है कि उन्होंने अतीत में भारतीय वीरता का गुणगान करते हुए उसकी आध्यात्मिक चेतना को भी सिंचित किया है। अतीत खंड की समाप्ति कवि निम्नलिखित बंद से करते हैं-

हा दैव ! अब वे दिन कहाँ हैं और वे रातें कहाँ?
हैं काल की घातें कि कम की आज हैं बातें कहाँ?
क्या थे तथा अब क्या हुए हम, जानता बस काल हैं;
भगवान जानें, काल की कैसी निराली चाल है॥

इस व्यथित हृदय से कवि भारत-भारती के वर्तमान खंड में प्रवेश करता है ।

वर्तमान खंड : इस खंड में नैतिक पतन, अव्यवस्था और आपसी भेदभाव से जूझते उस समय के देश की दुर्दशा को दर्शाते हुए सामाजिक नूतनता की कवि ने माँग की है। नैतिक तथा धार्मिक पतन के लिए गुप्तजी ने उपदेशकों, संत-महंतों और ब्राह्मणों की निष्क्रियता और मिथ्या-व्यवहार को दोषी ठहराया है। इस खंड में हमारे सामाजिक दायित्व एवं कर्तव्य के प्रति सुप्त चेतना को जाग्रत करने का प्रयास कवि ने किया है। उनका प्रवेश सबसे पहले अकाल से होता है जो अंग्रेजी हुकूमत की देन है। दुर्भिक्ष शीर्षक कविता का यह बंद देखिए-

दुर्भिक्ष मानो देह धरके घूमता सब ओर है,
हा ! अन्न ! हा ! हा ! अन्न का रव गूँजता घनघोर है।
सब विश्व में सौ वर्ष में रण में मरे जितने हरे,
जन चौगुने उनसे यहाँ दस वर्ष में भूखों मरे॥

भारत कृषि प्रधान देश है। कवि ने कृषि और कृषक शीर्षक कविता में कृषकों की अवस्था का वर्णन करते हैं। अंग्रेजों ने भारत के धंधों को नष्ट कर अपने लिए सिर्फ़ एक कच्चे माल की आपूर्ति करनेवाला देश बनाकर छोड दिया था। भारत भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट होती जा रही थी। अंग्रेजों के विरोध में देश में स्वदेशी आंदोलन शुरू हो चुके थे। शिक्षा की स्थिति भी ऐसी थी कि वह विक्रय की वस्तु बन चुकी थी, जिससे साधारण जनता वंचित हो रहा था, धार्मिक स्थिति, नैतिक स्थिति में भी गिरावट आई थी, कवि ने इन्हीं सारी परिस्थितियों पर गंभीर चिंतन करते हुए वर्तमान खंड को संवारा है।

भविष्यत खंड : इस खंड में अपने ज्ञान, विवेक और विचारों की सीमा को छूते हुए गुप्तजी ने समस्या समाधान के हल खोजने और लोगों से उसके लिए आवाहन करने का भरसक प्रयास किया है। भविष्यत खंड में मुख्यत: नवीन उत्थान के लिए हिंदू जाति को कवि ने उद्बोधित किया

है। संपूर्ण भारत की एकता का आह्वान कवि यदि ऐक्य हो तो फ़िर तुम्हारा कौन जग में जोड हो? पंक्ति से करता है। इतना ही नहीं कवि विज्ञान और वैज्ञानिक युग में प्रवेश, औद्योगिक सभ्यता का ज्ञान आदि की अनिवार्यता पर भी प्रकाश डालता है। गांधीवादी तथा आर्यसमाजी विचारधारा भी इस रचना में झलकती है। इस कृति की अंतिम दो रचनाएँ शुभकामना और विनय गुप्तजी के देशभक्ति की परिचायक हैं। कवि ने ईश्वर से इस प्रकार प्रार्थना की है-

इस देश को हे दीनबन्धो ! आप फ़िर अपनाइए,
भगवान ! भारतवर्ष को फ़िर पुण्य-भूमि बनाइए,
जड़-तुल्य जीवन आज इसका विघ्न-बाधा पूर्ण है,
हेरम्ब ! अब अवलंब देकर विघ्नहर कहलाइए ।

इस प्रकार यह कह सकते हैं कि स्वदेश प्रेम, राष्ट्र प्रेम एवं राष्ट्रभक्ति का यह उत्कृष्ट काव्य है। वर्तमान खंड में देश की गहन निराशपूर्ण स्थिति का वर्णन होने पर भी भविष्यत खंड से पता चलता है कि कवि निराश नहीं है, बल्कि चिंता जताते हुए भी उससे उभरने का आह्वान किया है। कुलमिलाकर यह कहा जा सकता है कि भारत-भारती अपनी रचनाधर्मिता तथा विषय वस्तु की दृष्टि से आज भी एक प्रासंगिक है।

बोध प्रश्न

- गुप्त जी पहले किस उपनाम से लेखन करते थे?
- वैश्योपकारक कहाँ से प्रकाशित होती थी?
- भारत-भारती की रचना किस वर्ष संपन्न हुई थी?
- भारत-भारती में वर्णित किन्हीं चार आदर्श स्त्रियों का नाम लिखिए ।

भारत-भारती से आदर्श का संक्षिप्त परिचय

छात्रो ! अब तक के अध्ययन से आप जान चुके हैं कि भारत-भारती की रचना कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने अलग-अलग शीर्षकों में किया है। उनमें से एक शीर्षक है आदर्श। जैसा कि नाम ही सूचित करता है, इस शीर्षक के अंतर्गत कवि गुप्त ने भारत का आदर्श, भारत के गौरवमय इतिहास, भारत के आदर्श मनीषि, स्वर्णिम परंपरा आदि का वर्णन किया है। इस वर्णन के अध्ययन से यही ज्ञात होता है कि कवि का मूल उद्देश्य अतीत के गौरवमय इतिहास एवं आदर्श मनीषियों का वर्णन करते हुए भारत भूमि को गरिमा प्रदान करना तथा उसके प्रति सम्मान तथा समर्पण की भावना जागृत करना रहा है। कवि की राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रप्रेम को उजागर करने वाली यह रचना है। इसी रचना के माध्यम से गुप्त जी की ख्याति को चार चाँद लगे थे।

आदर्श शीर्षक के अंतर्गत कवि आर्यों की विशेषता, उनके द्वारा किए गए कार्य आदि का भरपूर प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि ऐसे महान आर्यों क्या कोई अन्य देश में मिल सकते हैं? यह भारत ही है जहाँ आर्य, ऋषि-मुनि, श्रेष्ठ राजा, सत्य के मार्ग पर चलने वाले राजा हुए हैं। न केवल भारतवासी बल्कि जो बाहर से आते हैं, विदेशी भी इसका वर्णन करते न थकते हैं। गौतम, वशिष्ठ, मनु, वाल्मीकि, वेदव्यास जैसे महान साधकों की यह धरती है। यहाँ पृथु, पुरु, भरत, राम जैसे महान राजा हुए हैं। सत्य के राह पर चलने के लिए अपना सर्वस्व त्यागने वाले राजा-

महाराजाओं की यह धरती है। सत्य हरिश्चंद्र जैसे राजा अपना सर्वस्व त्यागकर चाण्डाल के पास बिकने के लिए मजबूर हो जाते हैं। यह धरती न केवल त्याग और बलिदान के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि दान, अतिथि सत्कार आदि सद्भावना, सदाचरण की दृष्टि से भी महान रही है। ऐसे कई कहानियाँ इस धरती पर विद्यमान हैं जिनके अध्ययन से हमारे मन में ऊर्जा उत्पन्न होती है। देशभक्ति की भावना जाग्रत होती है, देश के प्रति सम्मान की भावना तथा आदर्श के बीज बोये जाते हैं। इस प्रकार यह रचना अपने आप में महत्वपूर्ण रचना है।

8.3.2 अध्येय कविता : आदर्श

आदर्श जन संसार में इतने कहाँ पर हैं हुए?
सत्कार्य-भूषण आर्यगण जितने यहाँ पर हैं हुए।
हैं रह गये यद्यपि हमारे गीत आज रहे सहे।
पर दूसरों के भी वचन साक्षी हमारे हो रहे ॥1।
गौतम, वशिष्ठ-समान मुनिवर ज्ञान-दायक थे यहाँ,
मनु, याज्ञवल्क्य-समान विधि-विधायक थे यहाँ।
वाल्मीकि-वेदव्यास-से गुण-गान-गायक थे यहाँ,
पृथु, पुरु, भरत, रघु-से अलौकिक लोक-नायक थे यहाँ ॥2॥
लक्ष्मी नहीं, सर्वस्व जावे, सत्य छोडेंगे नहीं,
अंधे बनें पर सत्य से संबंध तोडेंगे नहीं।
निज सुत-मरण स्वीकार है पर वचन की रक्षा रहे,
है कौन जो उन पूर्वजों के शील की सीमा कहे? ॥3॥
सर्वस्व करके दान जो चालीस दिन भूखे रहे,
अपने अतिथि-सत्कार में फ़िर भी न जो रूखे रहे।
पर तृप्ति कर निज तृप्ति मानी रंतिदेव नरेश ने,
ऐसे अतिथि-संतोष-कर पैदा किये किस देश ने?॥4॥
आमिष दिया अपना जिन्होंने श्येन-भक्षण के लिए
जो बिक गये चांडाल के घर सत्य-रक्षण के लिए !
दे दीं जिन्होंने अस्थियाँ परमार्थी-हित जानी जहाँ,
शिवि, हरिश्चंद्र, दधीचि-से होते रहे दानी यहाँ ॥5॥

निर्देश : इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

8.3.3 विस्तृत व्याख्या

आदर्श जन संसार में इतने कहाँ पर हैं हुए?
सत्कार्य-भूषण आर्यगण जितने यहाँ पर हैं हुए।
हैं रह गये यद्यपि हमारे गीत आज रहे सहे।

पर दूसरों के भी वचन साक्षी हमारे हो रहे॥1।

शब्दार्थ : सत्कार्य = अच्छा काम, आर्यगण = श्रेष्ठ लोग। साक्षी = गवाह।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश राष्ट्रकवि मैथिलीशरणगुप्त द्वारा रचित भारत-भारती के आदर्श खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : भारत-भारती रचना के माध्यम से कवि ने भरसक यह प्रयास किया है कि भारतवासियों के मन में सुप्त चेतना को जाग्रत कर उन्हें प्रेरणा एवं स्फूर्ति प्रदान करें। आदर्श की स्थापना हेतु कवि ने अनेकों महान मनीषियों का वर्णन इस अंश के अंतर्गत किया है।

व्याख्या : भारत भूमि की महानता का बखान करते हुए कवि आदर्श पुरुषों का वर्णन करते हैं और हमारे मन में यह प्रश्न छोड़ जाते हैं कि इस संसार में इतने सारे आदर्श पुरुष क्या आपको कहीं और मिलेंगे? आर्यों के योगदान, उनके द्वारा किए गए कार्य आदि का कवि यहाँ पर वर्णन करता है। कवि कहते हैं कि श्रेष्ठ कार्यों से सम्मानित आर्यजन जितने यहाँ पर हुए हैं, उतने आदर्श जन संसार में कहाँ पर हुए हैं। यद्यपि आज भारतीय संस्कृति और गौरवमय परंपरा के गीत आज कम ही गाए जा रहे हों, हमारी गौरवशाली गाथाएँ कमजोर पड़ गई हों, तथापि अन्य लोगों के वचन भी यही दर्शाता है कि इस देश का श्रेष्ठतम इतिहास रहा है।

विशेषताएँ : भारत की गौरवमय परंपरा का उल्लेख हुआ है। हरिगीतिका छंद में रचित रचना है और गेय के अनुरूप है। भावानुकूल शब्दावली का प्रयोग हुआ है।

बोध प्रश्न

- उपर्युक्त पद्यंश में किसका चित्रण है?
- इस पद्यंश की विशेषताओं के बारे में बताइए।

गौतम, वशिष्ठ-समान मुनिवर ज्ञान-दायक थे यहाँ,
मनु, याज्ञवल्क्य-समान विधि-विधायक थे यहाँ।
वाल्मीकि-वेदव्यास-से गुण-गान-गायक थे यहाँ,
पृथु, पुरु, भरत, रघु-से अलौकिक लोक-नायक थे यहाँ ॥2॥

शब्दार्थ : अलौकिक = दिव्य, जो लोक में न हो।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश राष्ट्रकवि मैथिलीशरणगुप्त द्वारा रचित भारत-भारती के आदर्श खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : भारत एक ऐसा देश है जहाँ अनेकों आदर्श पुरुषों ने जन्म लिया है और इस धरती को पावन बनाया है, पुण्य भूमि बनाया है। कवि ऐसे ही आदर्श पुरुषों का बखान करते हैं और आदर्श भारत की गरिमा को शिखर प्रदान करते हैं।

व्याख्या : भारत में उस युग में गौतम, वशिष्ठ जैसे ज्ञान प्रदान करने वाले श्रेष्ठ मुनि हुए थे। मनु और याज्ञवल्क्य जैसे उत्कृष्ट विधान व कानून के ग्रंथ बनाने वाले भी इस देश में ही हुए। संस्कृत में रामायण की रचना करने वाले वाल्मीकि, महाभारत के रचयिता वेदव्यास भी इसी धरती में जन्म लिए। ऐसे महान मनीषियों के चरित्र एवं काव्य कृतियों से न जाने कितने ही लोग प्रेरित हुए होंगे। पृथु, पुरु, भरत और रघु जैसे असाधारण मनीषियों की यह पावन भूमि है। मर्यादा की

राह पर चलकर शासन करने वाले अनेकों राजा-महाराजा भी इस धरती के अंग हुए हैं।

विशेषताएँ : गौतम ऋषि षड्दर्शनों में से एक न्याय दर्शन के प्रणेता थे। इनके दर्शन को तर्कशास्त्र भी कहा जाता है। वाद-विवाद की कला में ये श्रेष्ठ थे। वशिष्ठ ऋषि योगवशिष्ठ नामक महान ग्रंथ के रचयिता हैं। यह ग्रंथ वशिष्ठ रामायण के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसमें वशिष्ठ ऋषि ने श्रीराम को वेदांत का उपदेश दिया है। मनु को आदि मानव भी कहा जाता है, इनके द्वारा रचित मनुस्मृति एक प्रामाणिक विधि ग्रंथ है। याज्ञवल्क्य भी स्मृतिकार हैं और सामाजिक व्यवस्था पर आधारित इनकी रचना है। संस्कृत में रामायण की रचना करने वाले महान रचनाकार हैं वाल्मीकि। महाभारत जैसे महान ग्रंथ की रचना करने वाले वेदव्यास हैं। पृथु एक महान राजा हुए। पुरु ययाति के राजा के छोटे पुत्र थे। राम भरत रघुकुल के तिलक हैं। ऐसे महान मनीषियों को गुप्त जी ने स्मरण किया है।

बोध प्रश्न

- इस पद्यंश को पढ़ने के बाद आपने क्या समझा?

लक्ष्मी नहीं, सर्वस्व जावे, सत्य छोड़ेंगे नहीं,
अंधे बनें पर सत्य से संबंध तोड़ेंगे नहीं।
निज सुत-मरण स्वीकार है पर वचन की रक्षा रहे,
है कौन जो उन पूर्वजों के शील की सीमा कहे? ॥3॥

शब्दार्थ : सर्वस्व = सब कुछ। पूर्वज = बुज़ुर्ग, पितर। सुत = पुत्र।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश राष्ट्रकवि मैथिलीशरणगुप्त द्वारा रचित भारत-भारती के आदर्श खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : आदर्शों की चर्चा करते हुए कवि ऐसे व्यक्तियों की चर्चा करते हैं जिन्होंने सत्य पालन के लिए अपना सर्वस्व, दृष्टि एवं पुत्र तक न्यौछावर कर दिए थे। पूर्वजों के सदाचरण का उल्लेख है।

व्याख्या : प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने ऐसे आदर्श पुरुषों एवं मनीषियों का वर्णन किया है जो अपार कष्ट सहकर भी सत्य के मार्ग पर डटे रहे। कवि कहते हैं कि भारत ऐसी भूमि है जहाँ ऐसे महान लोग हुए हैं जिनकी अपनी लक्ष्मी अर्थात संपत्ति, राजपाट, तेज आदि सभी नष्ट हो जाने पर भी, सत्य का मार्ग कभी न छोड़ने का जिन्होंने प्रण ली हो, हर हाल में सत्य का पालन करने का आदर्श जिनमें हो, अंधे होने पर भी सत्य से अपना नाता नहीं तोड़ेंगे, ऐसा व्रत जिन्होंने लिया था, अपने पुत्र की मृत्यु का दुख सहकर भी वचन निभाने की क्षमता जिनके अंदर थी, ऐसे हमारे पूर्वज हैं। हमारे ऐसे महान पूर्वजों का गुणगान करने की भला कोई सीमा हो सकती है? अर्थात उनके उत्तम आचरण का पूरा-पूरा ब्यौरा कौन दे सकता है? कवि हमारे लिए प्रश्न छोड़ देते हैं कि हम स्वयं ही सोचकर तय कर लें और भारत की महिमा को जान लें।

विशेषताएँ : प्रथम चरण में राजा सत्यव्रत की कथा कही गई है। राजा सत्यव्रत ने अपने वचन की सत्यता रखने के लिए शनिवार को लोहे की प्रतिमा खरीद ली जिसके कारण शील, तेज, लक्ष्मी उसे त्याग कर जाने को तैयार हो गए, फ़िर भी वह अपनी बात पर अडिग रहा। दूसरे चरण में कवि ने अलर्क राजा की ओर संकेत किया है जो सूर्यवंशी थे, कुवलयाश्व और मदालसा

के पुत्र थे, सत्यपालन के लिए इन्होंने अपना नेत्रदान कर दिया था। तीसरे चरण में कवि ने राजा मोरध्वज की ओर संकेत किया है जिन्होंने वचन की रक्षा के लिए पत्नी के साथ मिलकर पुत्र को आरे से चीर दिया था। महाभारत का यह प्रसंग है। वक्रोक्ति अलंकार है। सांकेतिक भाषा एवं व्यंजना का प्रयोग है।

बोध प्रश्न

- इस काव्यांश में गुप्त जी ने किन महान मनीषियों का स्मरण किया?

सर्वस्व करके दान जो चालीस दिन भूखे रहे,
अपने अतिथि-सत्कार में फ़िर भी न जो रूखे रहे ।
पर तृप्ति कर निज तृप्ति मानी रंतिदेव नरेश ने,
ऐसे अतिथि-संतोष-कर पैदा किये किस देश ने?॥4॥

शब्दार्थ : अतिथि = मेहमान। सत्कार = सेवा।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित भारत-भारती के आदर्श खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : आदर्शों की चर्चा करते हुए अब कवि राजा रंतिदेव के अनुपम आदर्श को प्रस्तुत करते हैं-

व्याख्या : प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने ऐसे आदर्श पुरुष का चित्रण करते हैं जो अपना संपूर्ण वैभव त्याग दिया, दान में दे दिया, स्वयं चालीस दिन तक भूखा रहना स्वीकार किया, परंतु उस दशा में भी घर आए अतिथि का सत्कार, सम्मान में कोई कमी नहीं रखी, जिनका व्यवहार कभी कठोर न रहा। लोग यदि अभावग्रस्त हों और कोई अतिथि ऐसे में घर आ जाएँ तो अवश्य कुढने लगते हैं, तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगते हैं, परंतु इस पुरुष ने अतिथि के सत्कार में कोई कसर न रखा। दूसरे की तृप्ति में स्वयं तृप्त होते रहे। ऐसे महान राजा रन्तिदेव इस धरती की शोभा है। स्वयं कष्ट में रहकर भी अतिथि को संतुष्ट करने वाले मनुष्य भारत के अतिरिक्त और किस देश ने पैदा किए हैं? हर पद्यांश में कवि ने पाठक वर्ग के लिए एक प्रश्न छोडा है और हमें सोचने के लिए मजबूर किया है।

विशेषताएँ : कहा जाता है कि रन्तिदेव मध्यप्रदेश के किसी भाग के राजा थे। एक बार उनके राज्य में भयंकर अकाल पड़ गया। भूखी प्रजा की पेट भरने के लिए राजा ने अपना कोष और धान बाँट दिया। राजा स्वयं चालीस दिन तक भूखे रहे, इकतालीसवें दिन उन्हें कहीं से थाली भर भोजन प्राप्त हुआ। वे जैसे ही हाथ-पांव धोकर भोजन करने बैठे, तभी एक ब्राह्मण अतिथि आ पहुँचे। राजा ने भोजन का आधा हिस्सा उन्हें दे दिया। अपना हिस्सा खाने ही वाले थे, इतने में कहीं से एक चाण्डाल कुत्तों के साथ आ पहुँचा। राजा ने अपने हिस्से का सारा अन्न उसे दे दिया। राजा ने जब पानी पीना चाहा तो एक प्यासा आ गया और पानी की याचना करने लगा। राजा ने प्रसन्नता से उसे पानी पिला दिया और प्रसन्नता का अनुभव किया।

यहाँ परायी तृप्ति से अपने को तृप्त मानने में असंगति अलंकार है। किस देश ने उत्पन्न किए? अर्थात किसी ने भी नहीं, इस आशय में काकुवक्रोक्ति अलंकार है। तृप्ति की आवृत्ति से लाटानुप्रास है।

बोध प्रश्न

- उपर्युक्त अंश में कवि ने किसका चित्रण किया है?

आमिष दिया अपना जिन्होंने श्येन-भक्षण के लिए
जो बिक गये चांडाल के घर सत्य-रक्षण के लिए !
दे दीं जिन्होंने अस्थियाँ परमार्थी-हित जानी जहाँ,
शिवि, हरिश्चंद्र, दधीचि-से होते रहे दानी यहाँ ॥5॥

शब्दार्थ : आमिष = मांस। रक्षण = रक्षा।

संदर्भ : प्रस्तुत पद्यांश राष्ट्रकवि मैथिलीशरणगुप्त द्वारा रचित भारत-भारती के आदर्श खंड से उद्धृत है।

प्रसंग : आदर्श चित्रण के अंतर्गत कवि ऐसे मनीषियों का भी बखान करते हैं जिन्होंने सत्य का पालन करने के लिए अपने मार्ग में अनेकों कष्ट झेले।

व्याख्या : प्रस्तुत पद्यांश में कवि ऐसे मनीषियों का बखान कर रहे हैं जो सत्य के मार्ग पर चलने के लिए स्वयं को कठोर परिस्थितियों में डाला, स्वयं काँटों पर चलते रहे, किंतु सत्य के मार्ग से नहीं हटे। ऐसे राजाओं में से एक थे, शिवि राजा जिन्होंने कबूतर के बदले बाज को भोजन देने के लिए अपने ही शरीर का मांस दे दिया। सत्य की रक्षा के लिए राजा हरिश्चंद्र ने चाण्डाल के हाथों बिकना स्वीकार किया, दधीचि ऋषि जिन्होंने दूसरों के उपकार के लिए अपने शरीर की हड्डियाँ भी दे डाली थी । ऐसे दानी महापुरुष की यह जन्म भूमि है।

विशेषताएँ : राजा शिवि की परीक्षा लेने के लिए धर्म और अग्नि बाज और कबूतर के रूप में उपस्थिति हुए। कबूतर अपने आप को बचाने के लिए राजा शिवि की गोद पर जा बैठा। बाज अपने भोजन की मांग करने लगा और एक शर्त पर उस कबूतर को छोडने के लिए तैयार हो गया, वह था, स्वयं राजा शिवि को उसका मांस भोजन बनना पडेगा। कबूतर की रक्षा के उद्देश्य से राजा शिवि अपने ही मांस को काटकर देने लगा, किंतु बाज का वजन बढता ही गया, अंत में शिवि ने अपना सिर काटने पर तुले। इस प्रकार की यह कहानी है, जिन्होंने अपने निजी खुशी और जीवन की परवाह नहीं की। गुरु विश्वामित्र को दिए गए वचन निभाने हेतु राजा हरिश्चंद्र को अपना सर्वस्व यहाँ तक कि बेटा और पत्नी को भी त्यागकर चांडाल का शरण लेना पडा। सत्य के पालन में उन्हें अनेकों संकटों का सामना करना पडा, किंतु सत्य से कभी न हटे। कवि ऐसे ही महान राजाओं का प्रस्तुत अंश में बखान कर रहे हैं।

बोध प्रश्न

- बाज़ को भोजन देने के लिए अपने ही शरीर का मांस किसने दिया?
- दधीचि ऋषि ने क्या किया?

8.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

भारतीय नवजागरण और मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के द्विवेदी युग के महान रचनाकार हैं जिन्हें राष्ट्रकवि के रूप में संबोधित किया जाता है। भारतेंदु युग से ही अर्थात 19वीं सदी से ही

पुनर्जागरण या नवजागरण काल की शुरूआत हो जाती है। अंग्रेजों के शासन के दौरान विदेशी शिक्षा नीति, ज्ञान-विज्ञान के नए रूपों के साथ-साथ वैचारिक एवं सांस्कृतिक आंदोलन भी प्रारंभ हो चुके थे। द्विवेदी युग तक आते-आते स्वाधीनता आंदोलन अधिक शक्तिशाली हो गया था। ब्रिटीश सम्राज्यवाद के विरुद्ध देश के बुद्धिजीवि, क्रांतिकारी डटकर संघर्ष के लिए खडे थे। साहित्य के क्षेत्र में भी काफ़ी बदलाव होने लगे थे। खडी बोली में लेखन कार्य चल रहा था। द्विवेदी युग में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जी ने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से खडी बोली हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित कर रहे थे, साथ ही लेखकों को अपने कर्तव्य का बोध भी करवा रहे थे। गुप्त जी को भी उन्होंने कहा था कि अब रसिकेंद्र बनने का समय नहीं रहा। इसके माध्यम से वे लेखक को उनके कर्तव्य के प्रति सजग बना रहे थे।

ब्रजभाषा कविता की सामंतवादी रूढ़ियों को पीछे छोड़कर खडी बोली में साहित्य लेखन को महत्व दिया जाने लगा था। गद्य और पद्य दोनों विधाओं की रचनाएँ खडी बोली में ही होने लगी थी। इस युग के जितने भी साहित्यकार हुए सभी ने राष्ट्रप्रेम की अलख जगाई। गुप्त जी की यशोधरा, साकेत, भारत-भारती, जयद्रथ वध आदि रचनाएँ भारतीय आख्यान के साथ-साथ नारी शक्ति, स्वाधीनता, मानवीय मूल्य आदि के संदेश देते थे। इस प्रकार भारतीय नवजागरण में गुप्त जी का विशेष योगदान रहा है।

बोध प्रश्न

- राजा शिवि की परीक्षा लेने के लिए बाज और कबूतर के रूप में कौन उपस्थित हुए थे?
- राजा रन्तिदेव कितने दिनों तक भूखे थे?
- गुप्तजी की प्रारंभिक रचनाएँ किस भाषा में लिखी गई हैं?

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का रचना संसार

द्विवेदी युग के प्रख्यात रचनाकार, राष्ट्रीय कवि के रूप में ख्याति प्राप्त मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) ने आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से ही ब्रजभाषा को छोड़कर खडीबोली में लेखन कार्य करने लगे। तत्कालीन परिस्थितियों का स्पष्ट प्रभाव उनकी रचनाओं में परिलक्षित होती हैं। उन्होंने काव्य के प्राचीन विषयों को द्विवेदीयुगीन नैतिकता का जामा पहनाकर नए मानवतावादी रूप में प्रस्तुत किया, देश के अतीत का गौरव गान किया, वर्तमान की दुर्दशा पर आक्रोश प्रकट किया और भविष्य के लिए आशा का बीज बोते हुए नूतन संदेश दिया। उनकी विशेषता यह रही कि वे बदलते परिवेश तथा भावनाओं के अनुरूप रचनाएँ करते थे। इसीलिए उनकी रचनाओं में एक ओर द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता दिखाई देती है तो दूसरी ओर छायावादी बिंब भी दिखाई देती है।

गुप्त जी की काव्य रचना का प्रारंभ 1909 से माना जाता है जो कि उनके जीवन के अंत तक अनवरत चलता रहा। लगभग छ: दशकों में गुप्तजी की लगभग साठ कृतियों का उल्लेख किया जाता है। उनमें से कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं- रंग में भंग, जयद्रथ-वध, भारत-भारती, शकुंतला, किसान, पत्रावली, हिंदू, वैतालिक, पंचवटी, स्वदेश संगीत, त्रिपथगा, शक्ति, गुरुकुल, झंकार, साकेत, यशोधरा, सिद्धराज, द्वापर, मंगलघट, आस्वाद, नहुष, कुणाल गीत, काबा और कर्बला, वन-वैभव, हिडिंबा, विष्णुप्रिया आदि। इनके अतिरिक्त गुप्त जी ने बंगला के माइकेल

मधुसूदन दत्त के विरहिणी ब्रजांगना तथा मेघनाद वध, नवीन चंद्र सेन के काव्य का पलासी का युद्ध, हेमचंद्र के महाकाव्य का वृत्तसंहार और उमर खैयाम की रुबाइयत उमर खैयाम आदि ग्रंथों का काव्यानुवाद भी हिंदी में प्रस्तुत किया है। खडी बोली की उनकी प्रारंभिक रचनाओं में कृत्रिमता एवं सरल शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है, किंतु आगे की रचनाओं में परिमार्जित भाषा, सुगठित विचार परिलक्षित होती है। पंचवटी उनकी उत्कृष्ट खंडकाव्य है जिसमें गुप्तजी की काव्य कला अधिक निखर आई है। साकेत, यशोधरा, द्वापर उनके उत्कर्षकालीन रचनाएँ हैं। भाषा प्रयोग की दृष्टि से यदि देखा जाय तो हम पाते हैं कि गुप्त जी ने खडीबोली के व्यावहारिक, स्वच्छ, स्पष्ट, गद्यमय-भाषा के साथ-साथ तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया है। प्राय: इसीलिए डॉ. सहदेव वर्मा ने कहा है- खडी बोली के उत्कर्ष में गुप्तजी का योग सुनार और जडिये का सा है, जिस प्रकार स्वर्णकार गहने को आकार देता है, अनगढ़ से सुगढ़ बनाता है और जडिया उसमें नग, मोती, आदि जड़कर अधिक सौंदर्य प्रदान करता है, वैसे ही गुप्तजी ने आरंभ में खडीबोली का व्याकरण सम्मत रूप प्रस्तुत कर धीरे-धीरे गुण,वृत्ति, शब्दशक्ति आदि का समावेश किया है। गुप्त जी ने खडीबोली को नवीन शब्द, उनके नवीन प्रयोग तथा नवीन अर्थ दिए जिनका विकास छायावादी कवियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।"(मैथिलीशरण गुप्त का खडी बोली के उत्कर्ष में योगदान, डॉ. सहदेव वर्मा, पृ.सं 446)

गुप्तजी की राष्ट्रीय भावना

गुप्तजी की रचनाओं में समाज सुधार की भावना, राष्ट्रीयता, जन-जागरण की प्रवृत्ति, एवं युगबोध विद्यमान हैं। उनकी कृति भारत-भारती में भारत के अतीत गौरव के साथ-साथ वर्तमान दुर्दशा की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है और परतंत्रता की बेडियों को तोडने का आग्रह है। इन्हीं कारणों से तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था। इसके अतिरिक्त उनके अन्य काव्य-ग्रंथों में भी राष्ट्रप्रेम, देश सेवा, त्याग और बलिदान की प्रेरणा दी गई है। स्वदेश संगीत में गुप्त जी ने परतंत्रता की घोर निंदा करते हुए भारत की सुप्त चेतना को जगाने का प्रयास किया है। अनघ में सत्याग्रह की प्रेरणा देते हुए राष्ट्र सेवा, राष्ट्र रक्षा, आत्मोत्सर्ग की भावनाओं का निरूपण किया। वकसंहार में गुप्त जी ने अन्याय दमन की प्रेरणा दी है। साकेत में स्वावलंबन का पाठ पढाया। यशोधरा और द्वापर में नारी भावना की अभिव्यक्ति तथा राष्ट्र और समाज को उसके कर्तव्य का बोध कराते हैं। इस प्रकार गुप्त जी की लगभग सभी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम और समाज सुधार की भावना झलकती है। लोककल्याण की भावना उसमें निहित है।

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए ॥

गुप्तजी की नारी भावना

गुप्तजी ने साकेत महाकाव्य में वियोगिनी उर्मिला का, मातृत्व भावयुक्त कैकेयी का, द्वापर काव्य में विधृता का, यशोधरा खंडकाव्य में यशोधरा का, तथा विष्णुप्रिया में नायिका का चित्रण बडे ही मार्मिक एवं मनोयोग से किया है। नारी के संबंध में गुप्त जी की दो पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी

आंचल में है दूध और आँखों में पानी ॥

उपरोक्त पंक्तियों में नारी को अबला कहते हुए उसकी अक्षमता पर दुख व्यक्त किया गया है तथा उसमें मातृत्व भाव की प्रबलता को स्वीकार करते हैं। इसका तात्पर्य यह नहीं कि गुप्त जी नारी को नर से हीन मानते हैं। वे नारी को नर की तुलना में अधिक गरिमा प्रदान करते हुए नर से श्रेष्ठ निरूपित करते हुए एक नहीं दो-दो मात्राएँ नर से भारी नारी कहकर नारी का सम्मान भी करते हैं।

आजादी से पूर्व सामंती युग में नारी पर हुए अत्याचार पर दुखी होकर नारी की महत्ता की स्थापना करते हैं। द्वापर में विधृता को अन्याय का विरोध करने वाली तेजस्विनी नारी के रूप में चित्रित कर नारी की महत्ता को स्थापित किया है। अन्याय के समक्ष कभी न झुकने का आह्वान करती हुई वह कहती है-

जाती हूँ जाती हूँ अब मैं और नहीं रुक सकती ।
इस अन्याय समक्ष मरूं मैं कभी नहीं रुक सकती ॥

गुप्तजी की रचनाओं में नारी के विविध रूपों का चित्रण मिलता है। जैसे- कुलवधू, गृहिणी, विरहिणी, वीरांगना, पति- परायण स्त्री, वात्सल्यमयी माँ, जन-सेविका आदि। पति ही पत्नी की गति है कहकर गुप्त जी आदर्श पत्नी का चित्रण करते हैं।

बोध प्रश्न

- गुप्त जी ने नारी के किन-किन रूपों का चित्रण किया है?

8.4 पाठ सार

प्रिय छात्रों, अब तक आपने हिंदी साहित्याकाश में राष्ट्रकवि के रूप में विराजमान मैथिलीशरण गुप्त को पढ़ रहे थे। आपने समझ लिया होगा कि गुप्त जी किस युग के कवि हैं और किसके द्वारा उन्हें संवारा गया। गुप्त जी ने महावीरप्रसाद द्विवेदी की विचारधारा तथा मार्गदर्शन को स्वीकारा तथा उसका अनुपालन किया जिसके फ़लस्वरूप वे हिंदी साहित्य जगत में राष्ट्रकवि कहलाए। भारत की प्राचीन परंपरा को विषय वस्तु के रूप में स्वीकृत करते हुए गुप्त जी ने नवीन उद्बोधन तथा नूतन संभावनाओं की स्थापना की है। उनकी प्रत्येक रचना अपने आप में मोती के समान है। भारत-भारती में उन्होंने अतीत, वर्तमान एवं भविष्य का चित्रण किया है। साठ से भी अधिक काव्य कृतियों की रचना कर गुप्त जी ने महत्तम कार्य किया है। समाज सुधार, राष्ट्र प्रेम, देश भक्ति की अलख जगाना आदि उनकी रचनाओं का मूल उत्स है। स्त्री-पुरुष, गौरवमय इतिहास, महान पुरुषों आदि सभी का चित्रण आपकी रचनाओं में मिलती हैं।

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के प्रमुख रचनाकार हैं। उन्होंने नवजागरण काल के अनुरूप देशवासियों को प्रेरित करने वाले साहित्य की रचना की।
2. मैथिलीशरण गुप्त का काव्य राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित है।

3. मैथिलीशरण गुप्त ने भारतीय जनता के मन में राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वाधीनता की भावना जगाने के लिए अतीत का गौरव गान किया है।
4. मैथिलीशरण गुप्त यह मानते थे कि प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों और आदर्शों की पुनः स्थापना करके भारतवासियों को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

8.6 शब्द संपदा

1. उत्थान = उठाना, उठना, बढती
2. उद्बोधक = जगाने वाला, उठाने वाला, याद दिलाने वाला
3. दुर्भिक्ष = अकाल
4. निष्क्रियता = जो कोई भी कार्य नहीं करता, कोई काम-धाम न करने वाला
5. प्रासंगिक = प्रसंगोचित, प्रसंग के अनुरूप
6. मिथ्या व्यवहार = झूठा व्यवहार करना, झूठ का सहारा लेना

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

8.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1. रसिकेंद्र उपनाम आपका है-

क) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ख) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
ग) **मैथिलीशरण गुप्त** घ) उपरोक्त सभी

2. गुप्त की रचना हेमंत को इन्होंने सुधारा

क) **महावीरप्रसाद द्विवेदी** ख) हजारीप्रसाद द्विवेदी ग) दोनों घ) इनमें से कोई नहीं

3. "पति ही पत्नी की गति है"- किसकी पंक्ति है?

क) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ख) सोहनलाल द्विवेदी
ग) माखनलाल चतुर्वेदी **घ) मैथिलीशरण गुप्त**

4. आदर्श कविता किस कविता संग्रह में संगृहीत हैं ?

क) साकेत **ख) भारत भारती** ग) यशोधरा घ) जयद्रथ वध

5. भारत-भारती काव्य कितने खंडों में विभाजित हैं?

क) दो ख) पांच **ग) तीन** घ) चार

6. आदर्श कविता में कवि ने किस देश का गौरव किया है ?

क) भारत ख) जापान ग) चीन घ) कोई नहीं है

7. 'योगवशिष्ठ' ग्रंथ के रचयिता कौन हैं?

क) जयदेव ख) वाल्मीकि **ग) वशिष्ठ ऋषि** घ) कोई नहीं है

8. मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं की विशेषता क्या है?

क) समाज सुधार की भावना ख) राष्ट्रीयता ग) जन-जागरण की प्रवृत्ति **घ) उपरोक्त सभी**

9. "आमिष दिया अपना जिन्होंने श्येन-भक्षण के लिए, जो बिक गये चांडाल के घर सत्य-रक्षण के लिए" यह पंक्ति किस कवि की हैं ?

क) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ख) सोहनलाल द्विवेदी

ग) माखनलाल चतुर्वेदी **घ) मैथिलीशरण गुप्त**

10. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं ?

क) भारतेंदु युग **ख) द्विवेदी युग** ग) छायावाद युग घ) प्रगतिवाद युग

खंड (ब)

8.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. गुप्तजी की नारी भावना पर प्रकाश डालिए।
2. गौतम, वशिष्ठ.....लोक नायक थे यहाँ पद की व्याख्या कीजिए।
3. सर्वस्व करके दान जो चालीस दिन भूखे रहे- इस पद के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?
4. गुप्त जी और नवजागरण विषय पर टिप्पणी लिखिए।

खंड (स)

8.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'भारत भारती' के मूल उद्देश्य को अपने शब्दों में लिखिए।
2. गुप्त जी की रचनाओं में निहित राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिए।
3. भारत-भारती का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
4. गुप्तजी की राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए ।

8.8 पठनीय पुस्तकें

1. मैथिलीशरण : नंदकिशोर नवल
2. मैथिलीशरण गुप्त - व्यक्ति और काव्य : कमलाकांत पाठक
3. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि : द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

इकाई 9 : जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 मूल पाठ : जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

9.3.1 जीवन परिचय

9.3.2 रचना यात्रा

9.3.3 रचनाओं का परिचय

9.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

9.4 पाठ-सार

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

9.6 शब्द संपदा

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

9.8 पठनीय पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल का तीसरा उत्थान छायावाद युग के नाम से जाना जाता है। इसका विकास द्विवेदीयुगीन कविता के बाद हिंदी में हुआ। छायावादी काव्य की समय सीमा मोटे तौर पर 1918 से 1936 ई. तक मानी जा सकती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने छायावाद का प्रारंभ 1918 ई. से माना है, क्योंकि छायावाद के प्रमुख कवियों पंत, प्रसाद, निराला ने अपनी रचनाएँ लगभग इसी वर्ष के आसपास लिखनी शुरू की थी। 1918 ई. में प्रसाद का झरना तथा 1916ई. में निराला की प्रसिद्ध कविता 'जुही की कली' प्रकाशित हुई थी। पंत के पल्लव की कुछ कविताएँ तथा प्रसाद की कामायनी भी इसी समय प्रकाशित हुई। छायावादी काव्य का जन्म द्विवेदी युगीन काव्य की विशेषताओं को देखते हुए किया गया था। क्योंकि द्विवेदीयुगीन कविता अधिकतर विषयनिष्ठ, वर्णन प्रधान और स्थूल थी जबकि छायावादी कविता को हम देखते हैं कि वह व्यक्तिनिष्ठ, कल्पनाप्रधान एवं सुक्ष्म है। छायावाद के प्रमुख चार कवि हैं - जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत तथा महादेवी वर्मा। इन्हें छायवाद के मुख्य स्तंभ माना जाता है।

9.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व से परिचित हो सकेंगे।
- प्रसाद की रचनाओं के बारे में जान सकेंगे।
- प्रसाद के काव्यों की विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।
- छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद के महत्व को जान सकेंगे।

9.3 मूल पाठ : जयशंकर प्रसाद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

9.3.1 जीवन परिचय

छायावाद के श्रेष्ठ कवि एवं प्रर्वत्तक जयशंकर प्रसाद का जन्म 1890 ई. में काशी के एक संपन्न वैश्य परिवार में हुआ था, जो 'सुँघनी साहु' नाम से प्रसिद्ध था। बचपन से ही इन्हें कविता के प्रति बहुत रुचि थी। इन्होंने आठवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की और उसके बाद घर पर ही रहकर वे संस्कृत, हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी सीखी। अपने साहित्यिक जीवन के प्रारंभ में इन्होंने ब्रजभाषा में 'कलाधर' उपनाम से लिखी, किंतु बाद में खड़ी बोली में कविता करने लगे।

जयशंकर प्रसाद हिंदी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक है। यह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक युगप्रर्वतक लेखक थे, जिन्होंने एक ही साथ कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिंदी को गौरवान्वित होने वाली कृतियाँ दी। कवि के रूप में निराला, पन्त, महादेवी के साथ छायावाद के प्रमुख स्तंभ के रूप में उनका नाम लिया जाता है तथा नाटक लेखन में भारतेंदु के बाद इनका मुख्य रूप से नाम आता है जो एक अलग धारा बहाने वाले युगप्रर्वत्तक नाटककार माने जाते हैं। इनके नाटकों को पाठक बहुत चाव से पढ़ते हैं तथा उनकी अर्थगंभिरता तथा रंगमंचीय प्रासंगिकता भी दिनों-दिन बढ़ती ही गयी है। इनका रचना काल 26 वर्षों का रहा। ये भारतीय दर्शन, इतिहास और अध्यात्म के अधिकारी विद्वान थे। इनका प्रथम ब्रजभाषा काव्यसंग्रह 'चित्राधार' नाम से सन् 1918 ई .में प्रकाशित हुआ।

प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिमा के धनी आधुनिक हिंदी साहित्य जगत के कालजयी कलाकार तथा शिव के उपासक थे। अपने जीवन-संघर्षों, अपने लोगों से बिछड़ना, अर्थाभाव तथा पत्नी का वियोग आदि कष्टपूर्ण जीवन को झेलते हुए भी इन्होंने हिंदी काव्य जगत को अपनी कृति के रूप में अनमोल रत्न दिए हैं। अत्याधिक श्रम और क्षय रोग से पीड़ित रहने के कारण 15 नवंबर, 1937 को मात्र 48 वर्ष की अल्पायु में ही उनका निधन हो गया।

प्रसाद जी कवि होने के साथ-साथ गंभीर चिंतक भी थे। इनकी कुछ कविताओं में पौराणिक प्रसंगों को विषय बनाया गया है तथा कुछ ऐतिहासिक तथा अन्य प्रसंगों को लेकर लिखी गई है। इनकी काव्य रचनाएं हैं - 'उर्वशी' (1909), 'वनमिलन' (1909), 'प्रेमराज्य'

(1909), 'अयोध्या का उद्धार' (1910), 'शोकोच्छवास' (1910), 'वभ्रुवाहन' (1911), कानन-कुसुम) 1913), 'प्रेमपथिक' (1913), 'करुणालय' (1913), 'महाराणा का महत्व' (1914), 'झरना' (1918), 'आँसू' (1925), 'लहर' (1933) और 'कामायनी') 1935), 'प्रेम पथिक'। प्रेम पथिक की रचना पहले ब्रजभाषा में की गयी थी किन्तु बाद में उसे खड़ी बोली में रूपांतरित कर दिया गया।

जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के प्रर्वत्तक के नाम से जाने जाते हैं। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति का चित्रण बहुत ही सुंदर ढंग से किया गया है। इनके काव्य 'झरना' में सबसे पहले छायावादी प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं। इस संग्रह की कविताओं का मुख्य स्वर प्रेम और सौंदर्य से संबद्ध है। इस संबंध में आचार्य नंददुलारे बाजपेयी का मत है, "इसमें एक नई कल्पनाशीलता नूतन जागरूक चेतना, मानव वृत्तियों की सूक्ष्मतर प्रौढ़तर पकड़, एक विलक्षण अवसाद, संशय और कौतूहल, जो नई चिंतन का सूक्ष्म प्रभाव प्रकट हो रहा है।" झरना के बाद उनकी दूसरी कृत्ति 'आँसू' में कवि ने व्यक्तिगत वेदना को विश्व-कल्याण की भावना से जोड़ा है।

प्रसाद जी का एक और काव्य संग्रह 'लहर' प्रकाश में आया। इसमें प्रकृति एवं करुणा की बहुत ही सुंदर अभिव्यक्ति की गई है। 'कामायनी' प्रसाद जी की एक अमर कृति है। इस कृति पर इन्हें' हिंदी साहित्य सम्मेलन' की ओर से 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्राप्त हुआ था। प्रसाद जी के काव्य में मुख्य रूप से प्रेम और सौंदर्य को आधार बनाया गया है। इन्होंने प्रतीकात्मक, चित्रात्मक तथा गीतात्मक काव्य भाषा का प्रयोग किया है। प्रसाद जी ने हिंदी साहित्य की दोनों विधाओं गद्य और पद्य में अपनी कला का प्रदर्शन किया है। इन्होंने 'हंस' तथा 'इन्दु' पत्रिका का प्रकाशन भी कराया।

बोध प्रश्न

- जयशंकर प्रसाद के 'झरना' काव्य संग्रह का मुख्य स्वर क्या है?
- जयशंकर प्रसाद की कालजयी रचनाओं के नाम बताइए।
- जयशंकर प्रसाद की काव्य-भाषा की क्या विशेषताएँ हैं?
- इस कृति पर जयशंकर प्रसाद को मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त हुआ था?

9.3.2 रचना यात्रा

जयशंकर प्रसाद छायावाद युग के प्रमुख कवि, नाटककार, उपन्यासकार तथा निबन्धकार माने जाते हैं। प्रारंभ में वे ब्रजभाषा में काव्य रचना करते थे किंतु धीरे-धीरे खड़ी बोली को अपनाते हुए अग्रसर हुए और उनकी गणना खड़ी बोली के मूर्धन्य कवियों में की जाने लगी। उन्होंने बहुत सारे काव्य कृतियों की रचना की। जिनमें कुछ मुख्य है। 'कामायनी' प्रसाद जी सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। काव्य के क्षेत्र में प्रसाद जी के कीर्ति का मूलाधार कामायनी है।

खड़ी बोली का यह अद्वितीय महाकाव्य मनु और श्रद्धा को आधार बनाकर लिखा गया है तथा मानवता को विजयिनी बनाने का संदेश देता है। इनका अगला काव्य संग्रह 'झरना' है, जिसकी रचना 1918 ई में की गई इसमें प्रेम, सौंदर्य तथा प्राकृति का सुंदर वर्णन किया गया है।

'आँसू' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचीत एक स्मृति काव्य है। इसकी रचना 1925 ई. में की गई थी कवि की भावुकता इस काव्य में मुख्य रूप से दिखाई पड़ती है।

आँसू के बाद प्रसाद जी ने अपनी महत्वपूर्ण कृति 'लहर' की रचना 1933 में की, यह एक मुक्तक रचना है। प्रसाद जी ने इन सब के अतिरिक्त और भी बहुत सारी कृतियों की रचना की I

कहानी संग्रह -:कहानी के क्षेत्र में भी प्रसाद जी बहुत दक्ष माने जाते हैं। इन्होंने आधुनिक ढंग की बहुत ही कहानियाँ लिखी इनकी पहली कहानी 'ग्राम' मानी जाती है इनके अन्य कहानी संग्रह है छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आंधी और इंद्रजाल।

उपन्यास: प्रसाद जी ने तीन उपन्यासों की रचना की उनके मुख्य उपन्यास हैं - कंकाल, तितली तथा इरावती, इरावती एक अधूरा उपन्यास है।

नाटक: प्रसाद जी हिंदी के सर्वश्रेष्ठ नाटककार माने जाते हैं। इन्होंने 12 नाटकों की रचना की इनके मुख्य नाटक हैं - स्कंद्रगुप्त, चंद्रगुप्त, ध्रूवस्वामिनी आदि।

निबंध: गद्य की अन्य विधाओं की भाँति प्रसाद जी ने निबंध लेखन में भी उत्कृष्ट भूमिका निभाई। 'काव्य कला और अन्य निबंध' में उनके आठ निबंध संकलित है।

बोध प्रश्न

- कामायनी के द्वारा प्रसाद क्या संदेश देना चाहते हैं?
- जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित स्मृति काव्य का नाम बताइए।
- जयशंकर प्रसाद की पहली कहानी का नाम बताइए।

9.3.3 रचनाओं का परिचय

जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के प्रर्वत्तक के नाम से जाने जाते हैं। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति का चित्रण बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया है। इनके काव्य में प्रेम और सौंदर्य भी देखने को मिलता है। जयशंकर प्रसाद की रचनाओं का परिचय जानने से पहले उनके साहित्य की कुछ विशेषताओं को जान ले।

1. जयशंकर प्रसाद के साहित्य में हमें वियोग एवं विरह वेदना का निरूपण बहुत अधिक मात्रा में देखने को मिलता है। इनके काव्य आँसू में इसका अच्छा उदाहरण देखने को मिलता है।

   झंझा झकोर गर्जन था बिजली थी नीरद माला।
   पाकर इस शुन्य हृदय को सबने आ घेरा डाला।।

2. प्रसाद जी के काव्य में अतीत के प्रति आकर्षण को दिखाया गया है। उनके साहित्य का मुख्य उद्देश्य धर्म सम्प्रदाय और जातिवाद से ऊपर उठकर एक आदर्श समाज और गौरवशाली

राष्ट्र की प्रतिष्ठा करना है।

3. प्रसाद जी के साहित्य में राष्ट्र प्रेम की भावना बहुत अधिक दिखाई देती है। बलिदान, त्याग समर्पण और करुणा जैसे भावों को इनके साहित्य में देखा गया है।
4. कवि जयशंकर प्रसाद मुख्यतः प्रेम और सौंदर्य के कवि माने जाते हैं। इन्होंने कामायनी में श्रद्धा के सौंदर्य का चित्रण इस प्रकार किया हैः

नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला है ज्यों बिजली का फूल, मेध बन बीच गुलाबी रंग

5. प्रसाद जी ने सदा मानव का मुल्यांकन गुणों और चरित्रों के आधार पर किया है। इनके अनुसार ऊँच-नीच, जाति-पाति सभी हम मनुष्य द्वारा निर्मित संकीर्ण प्रवृत्तियां हैं जिसका समाज में कोई महत्व नहीं है। उनके लिए मानवता सबसे बड़ा धर्म है। इसका वर्णन यह अपने साहित्य में करते हैं।
6. छायावादी कवियों ने नारी को उदात्त रूप प्रदान करते हुए उसे पुरूष की प्रेरक शक्ति के रूप में स्वीकार किया। नारी, दया, क्षमा, करूणा, प्रेम जैसे गुणों से सम्पन्न है और श्रद्धा की पात्र है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो।
जीवन के सुंदर समतल में।।

भाषा : प्रसाद जी की भाषा के कई रूप उनके काव्य में दिखाई पड़ते हैं। प्रारम्भ में उन्होंने ब्रजभाषा का प्रयोग अपने काव्य में किया किन्तु बाद में खड़ी बोली का प्रयोग करने लगे।

शैली : प्रसाद जी की काव्य शैली में ओज, माधुर्य और प्रसाद तीनों गुणों का मिश्रण पाया जाता है।

अलंकार : प्रसाद जी के प्रिय अलंकार उत्प्रेक्षा, प्रतीक आदि है।

छंद : प्रसाद जी ने अपने काव्यों में विविध छंदों का प्रयोग किया है। विविध छंदों के माध्यम से काव्य को सफल अभिव्यक्ति प्रदान की है।

रचनाएँ : जयशंकर प्रसाद की कुछ प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं।

1. झरना

जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में 'झरना' का बहुत अधिक महत्व है। झरना में ही छायावादी प्रवृत्तियों के दर्शन सबसे पहले देखने को मिलते हैं। इस संग्रह की कविताओं का स्वर प्रेम और सौंदर्य से संबद्ध है। इसमें प्रेम, सौंदर्य तथा प्रकृति का सुंदर चित्रण किया गया है।

बोध प्रश्न

- 'झरना' काव्य संग्रह का मूल स्वर क्या है?

2. आँसू

आँसू एक विरह काव्य है। कवि की भावुकता इस काव्य में मुख्य रूप से दिखाई पड़ती है। आँसु में प्रेम की स्मृति सत्यता के साथ अभिव्यक्त की गई है। जीवन में कुछ पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है और उसमें असफल होने पर व्यक्ति चिंता, दुःख, असंतोष और कुंठा से पीड़ित होता है। आँसू एक प्रकार की प्रेम भावनाओं की चरम सीमा है। आँसू में प्रसाद जी ने लौकिक प्रेम को दर्शाया है जिसमें प्रिय के प्रेम पर विश्वास किया और उसकी ओर से प्रवंचना प्राप्त होने पर कवि ने आँसू काव्य के माध्यम से उसकी स्मृति में आँसू बरसाए। इसे 'हिंदी का मेघदूत' कहा जाता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'आँसू' को जयशंकर प्रसाद की 'पहली विशिष्ट रचना' माना है। इसकी विषय वस्तु और रचना प्रक्रिया के संबंध में उनका विचार है कि इस काव्य में बहाए गए आँसू शृंगारी विरह के हिन जिनमें अतीत के संयोग सुख की यादें रह-रहकर झलक मारती हैं। लेकिन व्यंजना की प्रधानता के कारण यह शृंगारी विरह आध्यात्मिक विरह में बदल जाता है। कवि ने इसका संकेत यह कहकर दिया है कि प्रेमी की मादकता की बेसुधी में प्रियतम अपने लोक से प्रेमी के लोक में आते हैं और संज्ञा आने पर चले जाते हैं - मादकता से आए तुम संज्ञा से चले गए थे। जिन स्थलों पर कवि ने हृदय की तरंगों के द्वारा किसी अनंत कोने को नहलाने का चित्रण किया है, वहाँ वे आँसू उस अज्ञात प्रियतम के लिए बहते प्रतीत होते हैं। इस अज्ञात प्रियतम के प्रति मिलन की बेचैनी को दर्शाने के कारण यह काव्य लौकिक विरह से आगे बढ़कर अलौकिक अथवा रहस्य भावना को प्रकट करने वाला बन जाता है। ऐसे समय कवि को यह प्रतीत होता है कि शून्य में असीम सुख आकाश तरंग बना रहे हैं। और पृष्ठभूमि में सारा नक्षत्र समाज हँसता सा प्रतीत हो रहा है। इस उच्च आकाश में पहुँचने पर कवि की चेतना जब पृथ्वी को देखती है, तो उसके आँसू उदात्त करुणा के समुद्र में बदल जाते हैं। यथा -

नीचे विपुला धारणी है दुखा भार वहन सी करती।
अपने खारे आँसू से करुणा सागर को भरती।

'आँसू' की इस उदात्त भवभूमि को उजागर करते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है -

> "(कवि जहाँ) इस चीर दग्ध दुखी वसुधा को, इस निर्मम जगती को, अपनी प्रेम वेदना कल्याणी शीतल ज्वाला का मंगलमय उजाला देना चाहता है, वहाँ वे आँसू लोक पीड़ा पर करुणा के आँसू जान पड़ते हैं।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 461)

लेकिन इस सच से इनकार नहीं किया जा सकता है कि अलौकिकता की ओर बढ़ते हुए भी जयशंकर प्रसाद के ये आँसू अपने मूल रूप में उनके निजी जीवन की पीड़ा की देन है। इसीलिए उनकी दृष्टि अपनी सदा जलती हुई अखंड ज्वाला की जलन पर जमी रहती है।

जयशंकर प्रसाद अपनी इस निजी पीड़ा को जगत की पीड़ा के साथ इस तरह जोड़ते हैं कि संवेदना के धरातल पर जगत उन्हें अपने अधिक समीप प्रतीत होने लगता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसे आत्म के विस्तार के द्वारा अवसाद से बाहर निकलने का सफल प्रयास माना जा सकता है। कवि निजी पीड़ा में डूबकर भी विश्वजनीन पीड़ा का अहसास करते हुए नई ऊर्जा की खोज करता है। इस प्रकार 'आँसू' काव्य गहन दुख और पीड़ा से परिपूर्ण होने बावजूद एक सकारात्मक प्रेरणा का काव्य बन जाता है। यथा -

तेरे प्रकाश में चेतन संसार वेदना वाला
मेरे समीप होता है पाकर कुछ करूँ उजाला

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काव्य की विवेचना करते हुए लिखा है -

> "प्रसाद जी की यह पहली काव्य रचना है जिसने बहुत लोगों को आकर्षित किया। अभिव्यंजना की प्रगल्भता और विचित्रता के भीतर प्रेम वेदना की दिव्य विभूति का, विश्व में उसके मंगलमय प्रभाव का, सुख और दुख दोनों को अपनाने की उसकी अपार शक्ति का और उसकी छाया में सौंदर्य और मंगल के संगम का भी आभास पाया जाता है।" (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 461)

बोध प्रश्न

- 'आँसू' कैसा काव्य है?

3. लहर

यह काव्य कृति प्रसाद जी की गीत-कला का बहुत अच्छा नमूना है। इन गीतों में कहीं प्राकृति के सौंदर्य का वर्णन है तो कहीं प्रणय की तीव्र अनुभूति का, कहीं करुणा की अभिव्यक्ति है तो कहीं रहस्यवादी संकेत दिखाई देते हैं। मनोरम कल्पना, भावुकता और भाषा शैली में प्रौढ़ता को इनकी रचनाओं में देखा जा सकता है।

'लहर' उस आनंद की लहर का प्रतीक है जो मनुष्य के मन रूपी सरोवर में उठती है और उसके जीवन को रसपूर्ण बनाती है। मनुष्य चाहता है कि आनंद की यह लहर उसके जीवन में सदा के लिए ठहर जाए। ताकि जीवन की तमाम नीरसता असीम सरसता में बदल जाए। कवि व्यक्तिगत जीवन से लेकर संपूर्ण मनुष्यता तक के लिए इस आनंद लहर की कामना करता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रसाद के इस काव्य को भी रहस्य भावना से युक्त माना है। इसका अर्थ है कि कवि लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम को व्यक्त करता है। शुक्ल जी के शब्दों में –

> "इसमें भी उस प्रियतम का आँख मिचौनी खेलना, दबे पाँव आना, किरण उँगलियों से आँख मूँदना (या मूँदने की कोशिश करना, क्योंकि उस ज्योतिर्मय का कुछ आभास मिल ही जाता है), प्रियतम की ओर अभिसार इत्यादि रहस्यवाद की सब सामग्री है। (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 462)

छायावाद के कवियों ने अपने अज्ञात प्रियतम का वर्णन अत्यंत सूक्ष्म और उदात्त रूप में

किया है। प्रेमी और प्रियतम के संबंध की व्याख्या भी अनेक स्थलों पर की गई है। 'लहर' में प्रसाद जी कहते हैं -

तुम हो कौन और मैं क्या हूँ?
इसमें क्या है धरा सुनो।
मानस जलधि रहे चिर चुंबित
मेरे क्षितिज उदार बनो

प्रेमी और प्रियतम का यह संबंध बड़ी हद तक अध्यात्म की कोटि का है। आध्यात्मिक दृष्टि से यह कहा जाता है कि सब जीव नदियों की भाँति है जो परमात्मा रूपी समुद्र में मिलने के लिए दौड़ती हैं। 'लहर' के एक गीत 'हे सागर संगम अरुण नील' में इसी धारणा को व्यक्त किया गया है कि सागर ने हिमालय से निकली नदी को कब देखा था, और नदी ने सागर को कब देखा था, पर नदी निकलकर स्वर्ण स्वप्न देखती उसीकी ओर चली और वह सागर भी बड़ी उमंग के साथ उससे मिला। ससीम से असीम का यह मिलन अन्य प्रतीकों के द्वारा भी प्रकट किया गया है। क्षितिज कवि को असीम आकाश और ससीम पृथ्वी के मिलन स्थल जैसा प्रतीत होता है। सारे कोलाहल से परे वह नियति रूपी नाविक से जीवन रूपी नौका को इसी क्षितिज की ओर ले जाने का निवेदन करता है -

ले चल वहाँ बुलावा देकर
मेरे नाविक धीरे धीरे
जिस निर्जन में सागर लहरी
अंबर के कानों में गहरी
निश्छल प्रेम कहती हो
तज कोलाहल की अवनी रे

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'लहर' के बारे में यह निष्कर्ष दिया है कि इस रचना में -

> "कहीं उस यौवन काल की स्मृतियाँ हैं जिनमें मधु का आदान-प्रदान चलता था, कहीं प्रेम का शुद्ध स्वरूप। यह कहकर बताया गया है कि प्रेम देने की चीज है, लेने की नहीं। पर इस पुस्तक में कवि अपने मधुमय जगत से निकलर जगत और जीवन के कई पक्षों की ओर भी बढ़ा है। वह अपने भीतर इतना अपरिमित अनुराग समझता है कि अपने सान्निध्य से वर्तमान जगत में उसके फैलने की आशा करता है। (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 463)

बोध प्रश्न

- 'लहर' में चित्रित उदात्त तत्व क्या है?

4. कामायनी महाकाव्य

कामायनी प्रसाद जी की तथा छायावाद युग की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है। साहित्य के

क्षेत्र में 'कामयानी' महाकाव्य को बहुत उच्च स्थान प्राप्त है। इसमें मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से मानव सभ्यता का क्रमिक विकास बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया। है इसमें पंद्रह सर्ग हैं- चिंता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, ईर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निवेद, दर्शन, रहस्य, आनंद। 'कामयानी' में अभिव्यक्त जीवन दर्शन के माध्यम से आधुनिक मानव को अपना जीवन सुखी बनाने के लिए प्रसाद जी ने कुछ दिशा निर्देश भी दिए हैं। इसके प्रमुख पात्र मनु जल प्लावन की घटना में देव जाति के विनाश के विषय में कहते हैं कि देव जाति अहंकार, अकर्मण्यता और भोग विलास की अधिकता के कारण नष्ट हुई।

'कामायनी' की विषय वस्तु पर विचार करते हुए डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी का यह निष्कर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है कि -

> "प्रसाद का पक्ष है कि देव सृष्टि जहाँ भोगविलास और महज भौतिक सुख साधनों में डूबी हुई थी, वहाँ मनुष्य की सृष्टि कुछ नए मान-मूल्यों का आविष्कार करती हैं। जिनमें सबसे प्रमुख है प्रेम करने की क्षमता। मृत्यु पर विजय पाने के लिए मनुष्य प्रेम की क्षमता विकसित करता है, और उसीसे जुड़ी है सर्जनात्मक शक्ति। मानवीय सृष्टि के वैशिष्ट्य का यह रूप मुख्यतः 'काम' और 'लज्जा' और अंततः 'इडा' सर्ग में चित्रित होता है। देव सृष्टि में जो काम था, वह मानवीय सृष्टि में अनंग होकर सूक्ष्म प्रेम में परिणत हो जाता है। और इसीके समानांतर देवों की तृष्णा को तृप्ति दिखाने वाली रति मानवीय सृष्टि में लज्जा बन जाती है। (हिंदी साहित्य और संवेदना विकास, पृ.118)

'कामायनी' के रूपक की व्याख्या करते हुए यह कहा जाता है कि मनु, श्रद्धा और इडा क्रमशः मानव मन और उसकी दो प्रवृत्तियों भावुकता तथा तर्कशीलता के प्रतीक हैं। इनके माध्यम से कवि ने कवि ने अपने काव्य की प्रासंगिकता को प्राप्त किया है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दों में -

> "अपने विकास क्रम में मनुष्य की संस्कृति आज जहाँ पहुँची है वहाँ, प्रसाद के अनुसार, उसकी समस्याएँ हैं अतिभौतिकता, अतिबौद्धिकता और अतियांत्रिकता। इडा के साथ मिलकर मनु ने 'विज्ञान सहज साधन उपाय' स्वीकार करते हुए सारस्वत प्रदेश की जो उद्योग प्रधान सभ्यता बनाई है, वहाँ का जीवन क्रम इन्हें जन्म देता है। इन समस्याओं से उत्पन्न संघर्ष को शमित करने के लिए कवि ने समरसता की भावभूमि संकेतित की है।" (हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ. 119)

ध्यान देने की बात यह भी है कि 'कामायनी' की यात्रा पहले सर्ग 'चिंता' से आरंभ होकर

पंद्रहवें सर्ग 'आनंद' तक पहुँचती है। चिंता अगर द्वंद्व का प्रतीक है तो आनंद समरसता का। समरसता की प्राप्ति ही 'कामायनी' का चरम लक्ष्य और उपलब्धि है -

समरस थे जड़ या चेतन
सुंदर साकार बना था
चेतनता एक विलसती
आनंद अखंड घना था

अंततः डॉ. नगेंद्र के शब्दों में -

"व्यक्तिवादी मनु आधुनिक जीवन के व्यक्तिपरक भौतिक सुखवाद का प्रतीक है, जिसका व्यक्त रूप पूंजीवाद में मिलता है। आज के पूंजीवाद से पीड़ित समाज की विडंबनाओं का समाधान ('कामायनी' में प्रतिपादित) यही माववाद है जिसका भौतिक रूप समाजवाद और आद्यत्मिक रूप गांधीवाद है।"

प्रसाद जी की रचनाओं की इन सब विशेषताओं को देखकर हम कह सकते हैं कि इनके काव्य में भारतीय संस्कृति का चित्रण बहुत ही सुंदर ढंग से किया गया है। 'कामायनी' हिंदी साहित्य की एक अमर कृति है।

बोध प्रश्न

- कमायानी में निहित दर्शन को स्पष्ट कीजिए।

9.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

कवि जयशंकर प्रसाद का हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान है। ये छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक है। वे एक युगप्रर्वतक लेखक के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने गद्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। प्रसाद जी ने कविता, नाटक, कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में हिंदी को गौरवान्वित करने वाली कृत्तियाँ दी। इनका रचनाकाल मात्र 26 वर्षों का रहा। इन्हें भारतीय दर्शन, इतिहास और अध्यात्म का अच्छा ज्ञान था। इनके साहित्य में भारतीय साहित्य और संस्कृति का बहुत ही सुन्दर चित्रण देखने को मिलता है। दरअसल ये कवि होने के साथ-साथ एक गंभीर चिंतक भी थे। इनकी कुछ कविताओं में पौराणिक प्रसंगों को कविता का विषय बनाया गया है। कविता, उपन्यास, नाटक निबन्ध सभी में उनकी गति समान थी किन्तु अपनी हर विद्या में उनका कवि रूप ही मुखरित रहा है। उनके गद्य लिखने की कला भी ऐसी थी की उसमें कविता का पूट पाया जाता है। प्रसाद जी की कल्पनाशीलता ने ही उन्हें साहित्य की अन्य विधाओं में उन्हें विशिष्ट और व्यक्तिगत प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। उनकी कहानियों की विषय वस्तु आम कहानियों से हटकर हुआ करती थी। प्रसाद जी ने अपने साहित्य के माध्यम से पौराणिक, ऐतिहासिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक चेतना से लोगों को अवगत कराया है। भारतीय संस्कृति का बहुत ही सुंदर चित्रण इनके साहित्य में पाया जाता है। इनके काव्य संग्रह 'झरना' की बहुत सी कविताओं का मुख्य स्वर प्रेम और सौंदर्य है इस संबंध में आचार्य नन्ददुलारे

बाजपेयी का मत है "इसमें एक नई कल्पनाशीलता नूतन जागरूक चेतना, मानव वृत्तियों की सूक्ष्मतर प्रौढ़तर पकड़, एक विलक्षण अवसाद, संशय और कोतूहल, जो नई चिंतन का सूक्ष्म प्रभाव प्रकट हो रहा है।" इनके साहित्य में हमें इतिहास और कल्पना का मिश्रण दिखाई पड़ता है और जिसके माध्यम से गौरवशाली अतीत का चित्रण देखने को मिलता है। इनके साहित्य का मुख्य उद्देश्य धर्म, संप्रदाय और जातिवाद से ऊपर उठकर एक आदर्श समाज और गौरवशाली राष्ट्र की प्रतिष्ठा करना है। वे अतीत की मर्यादाओं का समर्थन करते थे। तथा समाज में फैली बुराइयों का भी बहुत कड़ा विरोध किया।

जयशंकर प्रसाद राष्ट्र प्रेम के लिए व्यक्ति के बलिदान और त्याग के पक्ष में होते थे राष्ट्र का स्थान उनके जीवन में बहुत अहम भूमिका निभाता है। वे मानव को अपने साहित्य के माध्यम से बलिदान, त्याग, समर्पण और करूणा जैसे भाव के महत्व को बताने का प्रयास किया है। प्रसाद जी के साहित्य को पढ़ने के बाद हमें मानवीय मूल्यों के महत्व को भी समझने में आसानी हो गई। इनके लिए मानवता ही सर्वोपरि धर्म है। वे कहते हैं ऊँच-नीच, जाति-पाति सभी मनुष्य द्वारा निर्मित संकीर्ण प्रवृत्तियाँ हैं जिनका मानव के विकास में कोई महत्व नहीं है। अतः इनके लिए मानव, समाज और राष्ट्र सर्वोपरि रहा है। प्रेम और प्रकृति के अनन्त सौंदर्य के इस कवि ने हिंदी साहित्य को झरना, आँसू, लहर और कामायनी जैसी अनमोल काव्य रचनाएँ दी हैं। विद्वानों के अनुसार प्रसाद जी छायावादी काव्यधारा के प्रवर्तक ही नहीं हैं, बल्कि उसकी प्रौढ़ता, शालीनता एवं गंभीरता के कवि हैं।

हिंदी नाटक के विकास में प्रसाद जी का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी तेरह नाट्य-कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। इनके नाटकों में राष्ट्रीय भावना का स्वर बहुत अधिक मुखरित होता है। यह एक युग सृष्टा कवि माने जाते हैं। इनका सारा साहित्य, हिंदी साहित्य का अनमोल रत्न कहा जा सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि हिंदी साहित्य के इतिहास में कवि जयशंकर प्रसाद का स्थान अपने पौराणिक एवं ऐतिहासिक प्रसंगों तथा भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करने वाली रचनाओं के लिए हमेशा याद किया जाएगा।

बोध प्रश्न

- जयशंकर प्रसाद के काव्य का मुख्य उद्देश्य क्या था?

9.4 पाठ सार

जयशंकर प्रसाद 'छायावादी युग के प्रवर्तक' के नाम से जाने जाते हैं। इन्हें हिंदी साहित्य का कालजयी कलाकार माना जाता है। प्रसाद जी युग प्रवर्तक लेखक थे, जिन्होंने साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। इन्होंने कविता, नाटक, कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र

में हिंदी को गौरवान्वित करने वाली कृतियाँ दी। छायावाद के प्रमुख स्तम्भ के रूप में उनका नाम लिया जाता है।

प्रसाद जी बहुत ही प्रतिभावान थे। इनके जीवन में बहुत से कष्ट आए किन्तु उन सब को झेलते हुए उन्होंने हिंदी काव्य जगत को काव्य के रूप में बहुमूल्य रत्न दिए हैं। क्षयरोग (टी.बी) से पीड़ित रहने के कारण 15 नवंबर, 1937 को मात्र 48 वर्ष की छोटी सी आयु में ही इनका निधन हो गया।

प्रारंभ में प्रसाद 'कलाधर' उपनाम से ब्रजभाषा में कविताएँ लिखते थे। प्रसाद जी अपने पौराणिक एवं ऐतिहासिक तथा भारतीय संस्कृति का चित्रण करने वाली रचनाएँ हिंदी साहित्य को दी है। इनके द्वारा रचित काव्यकृति 'कामायनी' एक अमर कृति है। इस कृति पर इन्हें हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्राप्त हुआ था। प्रेम और प्रकृति के अनन्त सौंदर्य के इस कवि ने हिंदी साहित्य को झरना, आंसू, लहर जैसी अनमोल रचनाएँ दी हैं। इनके नाटकों में राष्ट्रीय भावना का स्तर बहुत अधिक देखा जाता है। उनके नाटक स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त आदि में स्वर्णिम अतीत को सामने रखकर मानो एक सोये हुए देश को जगाने की प्रेरणा दी है।

प्रसाद के काव्य का कलापक्ष भी पूर्ण सशक्त और संतुलित है। अतः इस प्रकार कह सकते हैं कि गुप्त जी अपने युग के महान कवि थे तथा अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति का चित्रण किया है।

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. जयशंकर प्रसाद छायावादी युग के प्रवर्तक कवि हैं।
2. प्रसाद जी ने खड़ी बोली को अपने काव्य का माध्यम बनाया।
3. प्रसाद जी ने हिंदी साहित्य को कामायनी, झरना और आँसू जैसी अमर कृत्तियाँ दी हैं।
4. प्रसाद जी ने काव्य के साथ-साथ गद्य की विविध विधाओं में प्रभूत लेखन किया है।
5. हिंदी नाटक के क्षेत्र में भी प्रसाद को युग प्रवर्तक माना जाता है।

9.6 शब्द संपदा

1. ईर्ष्या	=	जलन, डाल
2. उपाधि	=	सम्मान
3. काम	=	इंद्रिय सुख की इच्छा
4. गौरवपूर्ण	=	सम्मानित
5. घृणा	=	वह मनोवृत्ति जो किसी को बहुत बुरा समझकर सदा
6. निदर्शन	=	नमूना, उदाहरण

7. माध्यम = साधन, उपाय

8. वासना = भावना

9. वेदना = कष्ट

10. श्रद्धा = आस्था या विश्वास

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

9.7.1 सही विकल्प चुनिए।

1. जयशंकर प्रसाद किस युग के कवि हैं।

(अ) छायावादी (आ) भारतेंदु युग (इ) द्विवेदी युग (ई) प्रगतिवादी युग

2. 'आंसू' काव्य संग्रह का रचना काल क्या है?

(अ)1914 (आ) 1918 **(इ) 1925** (ई) 1933

3.कामायनी के प्रथम सर्ग का नाम क्या है?

(अ) काम (आ) श्रद्धा (इ) आशा **(ई) चिंता**

4. जयशंकर प्रसाद का अधूरा उपन्यास ..... है?

(अ) तितली **(आ) इरावती** (इ) कंकाल (ई) झरना

5. 'झरना' काव्य संग्रह का प्रकाशन कब हुआ?

(अ)1914 **(आ) 1918** (इ) 1925 (ई) 1933

6. जयशंकर प्रसाद के रचनाओं को आरोह क्रम में बताइए.

अ) झरना, आँसू, कामायनी, कानन-कुसुम

आ)कानन-कुसुम, आँसू, झरना, कामायनी

इ) कानन-कुसुम, झरना, आँसू, कामायनी

ई) कामायनी, कानन-कुसुम, झरना, आँसू

7. प्रसाद के साहित्य में कौनसी भावना बहुत अधिक दिखाई देती है?

अ) राष्ट्रीय प्रेम आ) नारी प्रेम इ) मानव प्रेम ई) कोई नहीं

8. निम्नलिखित प्रसाद की रचनाओं में विधाओं के आधार पर भिन्न रचना कौनसी है?

अ) स्कंद्रगुप्त आ) चंद्रगुप्त इ)ध्रूवस्वामिनी **ई) कंकाल**

9. "नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में"। यह पंक्ति किस कवि की हैं ?

अ) मैथिलीशरण गुप्त **आ) जयशंकर प्रसाद** इ) पंत ई) महादेवी वर्मा

10. कामायनी की रचना कब हुई ?

अ) 1914 (आ) 1918 **(इ) 1935** (ई) 1933

खंड (ब)

9.8.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. कामायनी में निहित मूल चेतना पर प्रकाश डालिए।
2. हिंदी साहित्य में जयशंकर प्रसाद के स्थान को स्पष्ट कीजिए।
3. 'आँसू एक विरह काव्य है।' इस उक्ति को स्पष्ट करें।

खंड (स)

9.8.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. जयशंकर प्रसाद के काव्य की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. जयशंकर प्रसाद की रचना यात्रा का वर्णन कीजिए।
3. जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व एवं कृत्तित्व पर प्रकाश डालिए।

9.8 पठनीय पुस्तकें

1. जयशंकर प्रसाद रचनावली
2. हिंदी साहित्यक का इतिहास : सं. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्यक का सरल इतिहास : विश्वनाथ त्रिपाठी
4. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल

इकाई 10 : आँसू : जयशंकर प्रसाद

इकाई की रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 मूल पाठ : आँसू : जयशंकर प्रसाद

10.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

10.3.2 अध्येय कविता

10.3.3 विस्तृत व्याख्या

10.3.4 काव्यगत विशेषताएँ

10.3.5 समीक्षात्मक अध्ययन

10.4 पाठ सार

10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

10.6 शब्द संपदा

10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

10.8 पठनीय पुस्तकें

10.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो, आधुनिक हिंदी कविता से संबंधित इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत आप छायावाद के प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद (1890-1937ई) की एक विशिष्ट रचना 'आँसू' के कुछ अंशों का भी अध्ययन करेंगे। इस रचना के शीर्षक से ही यदि आपने अंदाजा लगा लिया हो कि यह दु:ख, वेदना, विरह, करुणा भाव से ओत-प्रोत रचना हो सकती है, तो आप बिल्कुल सही सोच रहे हैं। आँसू मूलत: एक विरह काव्य है जिसमें विरही हृदय की गहन पीड़ा एवं वेदना अभिव्यक्त हुई है। कवि अपने व्यक्तिगत जीवन के दुख और वेदना को बडे ही मार्मिक शब्दों में पिरोकर एक सुंदर गुलदस्ता सजाया है। इसके प्रत्येक छंद में विरह वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। जीवन के दुखमय क्षणों में कवि के मन में अतीत प्रेम की स्मृति जागृत हो जाती है। इस वेदना को कवि ने लाक्षणिक शब्दावली और छायावादी शैली में व्यक्त किया है।

आँसू की भावभूमि को समझने के लिए छायावाद की रचनाधर्मिता एवम काव्यगत विशेषताओं की थोडी सी जानकारी अनिवार्य है। आशा है कि आपने हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के अंतर्गत छायावाद का अध्ययन किया होगा। साहित्य के विशेषज्ञों का यह मानना है कि छायावाद का जन्म द्विवेदीयुगीन प्रवृत्ति की प्रतिक्रिया का फलस्वरूप है। द्विवेदी युगीन स्थूलता,

इतिवृत्तात्मकता, अतिशय नैतिकता के विपरीत छायावाद की रचनाएँ अंतर्जगत की ओर उन्मुख होकर सूक्ष्म, वक्र, सांकेतिक पदावली से संपृक्त दिखाई देती हैं। प्रणयानुभूति की अभिव्यक्ति के साथ-साथ राष्ट्रीय भावना का स्वर इस युग की रचनाओं में मुखरित हुआ है। प्रेम का संयोग एवं वियोग पक्ष, प्रकृति, सौंदर्य, रहस्यवादी प्रवृत्ति, स्वानुभूति की प्रधानता, जीवन दर्शन, दार्शनिकता, मनोवैज्ञानिक तत्व आदि सभी तत्व छायावादीयुगीन रचनाओं में चार चाँद लगाते हैं।

इस दृष्टि से यदि देखा जाए तो प्रस्तुत रचना आँसू प्रेम के विरहानुभूति को दर्शानेवाली एक श्रेष्ठ गीतमाला है जिसमें प्रसाद की व्यक्तिगत जीवनानुभूति झलकती दिखाई देती है। जब आप इस कविता के भावार्थ को पढेंगे तो इसमें निहित विरह वेदना की गहराई को समझ पाएँगे।

10.2 उद्देश्य

जयशंकर प्रसाद की कविता 'आँसू' पर आधारित इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- अध्येय कविता 'आँसू' की व्याख्या कर सकेंगे।
- अध्येय कविता के काव्य सौंदर्य से परिचित हो सकेंगे।
- 'आँसू' काव्य में निहित विरहानुभूति के स्वरूप से अवगत हो सकेंगे।
- 'आँसू' काव्य में निहित लोक कल्याण की भावना को समझ सकेंगे।
- 'आँसू' काव्य के कला पक्ष की विशेषताओं को जाना सकेंगे।

10.3 मूल पाठ : आँसू : जयशंकर प्रसाद

10.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

उपरोक्त कविता आँसू जयशंकर प्रसाद की मुक्तक शैली में रचित विरह काव्य है। इसका रचनाकाल लगभग 1923-24 ई. की है तथा प्रकाशन 1925 ई. में साहित्य-सदन, चिरगाँव, झांसी से हुआ था। इसके प्रथम संस्करण में केवल 252 पंक्तियाँ थीं, किंतु जब इसका द्वितीय संशोधित संस्करण श्रावणी पूर्णिमा सन 1933 में भारती भंडार, प्रयाग से प्रकाशित हुआ, जिसमें पूर्व रचित छंदों के क्रम कुछ बदल दिया गया और कवि ने कुछ अन्य छंद रचकर इसमें जोड़ दिए, इससे आँसू में कुल 680 पंक्तियाँ हो गईं थीं। आजकल यही संस्करण प्रचलित है। इस कविता का मूल भाव करुणा और प्रेम है। करुणा और प्रेम दो ऐसे भाव हैं जिनसे मानवता पनपती है। सहृदयता का प्रतीक है करुणा और प्रेम। कवि यह अच्छे से जानते हैं कि इस पूरे संसार को करुणा और प्रेम की आवश्यकता है, जिससे मानव संवेदनशील होता है और प्रत्येक जीव से प्रेम भाव रख सकता है। अत: प्रत्येक जीव से संवेदनशील भावना की प्रतीति प्रस्तुत कविता का मूल उत्स है। यही भाव मानव को मानव बनाए रखता है। आँसू कामायनी की पूर्व पीठिका है। आँसू में करुणा का संचार है तो कामायनी में मानवता के विकास की कहानी। आँसू

के इन छंदों में प्रसाद की व्यक्तिगत जीवनानुभूति का प्रकाशन हुआ है।

क) आँसू की कथावस्तु

इसमें क्रमबद्ध भाव-कथा की योजना है, जिसमें कवि ने यह अंकित किया है कि एक विरही ने किसी अनिद्य सुंदरी से प्रेम किया था। वह प्रेम व्यापार कुछ दिनों तक बडी तीव्रता एवं मादकता के साथ चलता रहा, कुछ काल बाद प्रेम-व्यापार समाप्त हो गया। परंतु उसकी मादक स्मृति एक दिन सहसा जाग्रत हो गई जिससे प्रेमी का हृदय वेदना में तडप उठा और उसे ऐसा आभास हुआ कि उसकी प्रेमिका शशि-मुख पर घूँघट डाले, आँचल में दीप छिपाए गोधूली में उससे मिलने आती हुई जान पडी, परंतु वह बेहोश पडा था, जब होश आया और वह उससे मिलना चाहा तो वह अंतर्धान हो गई थी। उसे अनुभव होने लगा कि यह चराचर जगत वेदना एवं व्यथा से पीडित है। अत: उसके हृदय में इस दुखी वसुधा के प्रति सहानुभूति जाग्रत हुई और वह मंगल कामना करने लगा कि संपूर्ण जगती को विरहानल, संताप, पीड़ा, वेदना एवं व्यथा से जलानेवाली ज्वाला को शांत करने के लिए उसकी आँखों से आसुओं की मंगलमयी वर्षा होती रहे, जिससे यह दुखी एवं सूखी वसुधा फ़िर से हरी-भरी हो जाए। इस प्रकार आँसू काव्य में एक मार्मिक भाव-कथा की योजना की गई है जो व्यष्टि से समष्टि की ओर प्रसारित होती है।

ख) आँसू की विरहानुभूति

आँसू कविता में वियोग की अनुभूति है। अतीत की कोई सुखद अनुभूति कवि के मन में खिन्नता पैदा करती है। कवि अपनी प्रेम वेदना से पृथ्वी को प्रकाशित करना चाहता है। कवि के हृदय की जटिलताओं का प्रतीक है आँसू। परंतु मानव के जीवन में इन जटिलताओं के बीच भी आनंद की अनुभूति होती है। मनुष्य में आनंद की यह अनुभूति वर्तमान को कुछ मीठी स्मृति की बात कहती है। कवि में सृजन की पीड़ा है। जीवन की कोई घनीभूत पीड़ा फ़ंतासी बनकर कवि के मस्तिष्क में छायी रहती है। वही फ़ंतासी सृजन में नई अनुभूति के रूप में प्रस्तावित होती है। कवि हृदय में जो दर्द और पीड़ा है, यही पीड़ा उसके काव्य में दृष्टिगोचर होती है। कवि में वेदना की आकुलता और तड़प है। यह आकुलता किसी गहन अंधकार के क्षण में भावहीन दशा में कवि हृदय में उपजती है। कवि अपने जीवन में घोर निराशा के क्षणों में भी आशा को नहीं खोता है। इस संघर्ष के बल पर ही सभ्यता को अपनी रचना का सुंदर उपहार प्रस्तुत करता है। वह जीवन के अनुभवों को भूलने नहीं पाता। वह अपने अनुभवों की आत्मालोचन करता है और काव्यानुभूति का निर्माण करता है।

आँसू में प्रेम की स्मृति इतनी सत्यता के साथ अभिव्यक्त हुई है कि हमारा कवि के साथ अविलंब साधारणीकरण हो जाता है। आँसू कवि के जीवन की वास्तविक प्रयोगशाला का आविष्कार है। प्रेमभावना की चरम परिणति है। विप्रलंभ शृंगार के अंतर्गत प्रसाद के युवा-जीवन की वे मादक एवं मोहक स्मृतियाँ संकलित हैं, जो घनीभूत पीड़ा से ओतप्रोत होकर आँसू बनकर बरस पड़ी है।

इस प्रकार आँसू काव्य मानव-विरह की एक ऐसी रचना है, जिसमें कवि अपने वैभवशाली अतीत की स्मृति से व्यथित एवं बेचैन होकर, रो-रो कर तथा सिसकियाँ भर-भरकर अपनी करुणा कथा कहता है।

छात्रो! ऊपर यह बताया जा चुका है कि इस काव्य में कुल 680 पंक्तियाँ हैं, किंतु यहाँ पर आपके अध्ययन के लिए चयनित 40 पंक्तियों अर्थात केवल 10 छंदों को दिया गया है।

बोध प्रश्न

- आँसू किस प्रकार का काव्य है?
- आँसू किस शैली में रचित काव्य है?
- आँसू का द्वितीय संस्करण कब प्रकाशित हुआ और उसमें कितनी पंक्तियों को जोडा गया?
- आचार्य रामचंद शुक्ल आँसू को किस कोटि में रखकर देखते हैं?

10.3.2 अध्येय कविता : आँसू

जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छाई
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आई ।1।
मेरे क्रंदन में बजती
क्या वीणा, जो सुनते हो
धागों से इन आँसू के
निज करुणापट बुनते हो ।2।
रो-रोकर सिसक-सिसककर
कहता मैं करुण कहानी
तुम सुमन नोचते सुनते
करते जानी अनजानी ।3।
मैं बलखाता जाता था
मोहित बेसुध बलिहारी
अंतर के तार खिंचे थे
तीखी थी तान हमारी ।4।
झंझा झकोर गर्जन था
बिजली सी थी नीरद-माला,
पाकर इस शून्य हृदय को
सबने आ डेरा डाला ।5।
घिर जातीं प्रलय घटाएँ
कुटिया पर आकर मेरी
तम चूर्ण बरस जाता था
छा जाती अधिक अँधेरी ।6।

बिजली-माला पहने फ़िर
मुसकाता था आँगन में
हाँ, कौन बरसा जाता था
रस बूँद हमारे मन में ।7।
तुम सत्य रहे चिर सुंदर !
मेरे इस मिथ्या जग के
थे केवल जीवन संगी
कल्याण कलित इस मग के ।8।
कितनी निर्जन रजनी में
तारों के दीप जलाये
स्वर्गांगा की धारा में
उज्ज्वल उपहार चढ़ाये ।9।
गौरव था, नीचे आए
प्रियतम मिलने को मेरे
मैं इठला उठा अकिंचन
देखो ज्यों स्वप्न सवेरे ।10।

निर्देश : 1. इन कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

10.3.3 विस्तृत व्याख्या

जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति-सी छाई
दुर्दिन में आँसू बनकर
वह आज बरसने आई ।1।

शब्दार्थ : घनीभूत = घना, ठोस। मस्तक = माथा। स्मृति = याद। दुर्दिन = कठिन समय।

संदर्भ : प्रस्तुत छंद को जयशंकर प्रसाद की रचना आँसू प्रबंध काव्य से लिया गया है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रख्यात कवि हैं। उनकी पहली विशिष्ट रचना है आँसू जो विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट काव्य है। इसमें कवि की जो व्यक्तिगत पीड़ा चित्रित हुई है वह मानवीय पीड़ा का प्रतीक है।

प्रसंग : कवि पहले से ही बहुत दुखी है, क्योंकि संयोग में जो प्रियतम का साथ मिला था वह अब किसी कारणवश उनसे दूर हो चुका है और प्रियतम याद बार-बार उन्हें सता रही है।

व्याख्या : आँसू का मुख्य भाव विरह शृंगार है। आँसू का आधार असीम व्यक्ति है, जिसके मिलन सुख की स्मृति ने कवि के हृदय में वेदना लोक की सृष्टि की है। कवि के हृदय में जो वेदना थी वह

अत्यधिक घना था जिसे भुलाने का प्रयत्न करने पर भी बार-बार कवि के हृदय में स्मृति के रूप में वह छा जाती है और वेदना और गहरी हो जाती है। यही वेदना अब आँसू बनकर बहने लगती है, जो किसी बरसात से कम नहीं है। अर्थात कवि की आँखों से अश्रु की धार बह रही है, आँसू का इस तरह बहना कवि के लिए दुर्दिन के समान है।

विशेषता : आँसू = वेदना, दुख, संघर्ष का प्रतीक। घनीभूत पीड़ा = वेदना का प्रतीक, उपमा अलंकार। स्मृति-सी = उपमा अलंकार। वह = दुख के लिए प्रयुक्त सर्वनाम, ध्वन्यात्मक एवं लाक्षणिक प्रयोग है।

बोध प्रश्न

- आँसू किसका प्रतीक है?

मेरे क्रंदन में बजती
क्या वीणा, जो सुनते हो
धागों से इन आँसू के
निज करुणापट बुनते हो ।2।

शब्दार्थ : क्रंदन = रोना। करुणापट = करुणा रूपी वस्त्र।

संदर्भ : प्रस्तुत छंद को जयशंकर प्रसाद की रचना आँसू से लिया गया है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रख्यात कवि हैं। उनकी पहली विशिष्ट रचना है आँसू जो विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट काव्य है। कवि के व्यक्तिगत पीड़ा को यह काव्य दर्शाता है। लौकिक विरह को दर्शानेवाली यह श्रेष्ठ रचना है।

प्रसंग : विरह की असीम वेदना जो कवि के मन में पहले से ही धधक रही थी, आज स्मृति के रूप में बार-बार छा गई है और कवि को व्याकुल कर रही है।

व्याख्या : कवि के हृदय में जो वेदना और विरह की पीड़ा जल रही है वह कवि की निजी वेदना है। व्यक्तिगत पीड़ा है। यह वेदना शोक-संतप्त हृदय में बजनेवाली किसी वीणा के झंकार से कम नहीं है। जिस प्रकार दुख के दौरान बजनेवाली वीणा का स्वर दुख को दुगुना कर देता है, ठीक उसी प्रकार कवि का यह व्यक्तिगत दुख उन्हें चीर रहा है। जो भी करुणा से युक्त इस झंकार को सुनते हैं, उनके मन में करुणा भाव अवश्य उत्पन्न हो जाता है।

विशेषता : मेरे क्रंदन- कवि की व्यक्तिगत पीड़ा का प्रतीक, बजती क्या वीणा- अस्पष्ट भाव (अर्थात दुख में कवि को समझ नहीं पा रहे हैं कि उनके ऊपर क्या बीत रही है), धागों से- क्षीण स्वर।

बोध प्रश्न

- इन पक्तियों के माध्यम से कवि क्या समझना चाह रहे हैं?

रो-रोकर सिसक-सिसककर
कहता मैं करुण कहानी
तुम सुमन नोचते सुनते
करते जानी अनजानी ।3।

शब्दार्थ : सुमन = फूल। जानी अजानी = जानबूझकर।

संदर्भ : प्रस्तुत छंद को जयशंकर प्रसाद की रचना आँसू से लिया गया है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रख्यात कवि हैं। उनकी पहली विशिष्ट रचना है आँसू जो विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट काव्य है। इसमें कवि की जो व्यक्तिगत पीड़ा चित्रित हुई है वह मानवीय पीड़ा का प्रतीक है। लौकिक विरह को दर्शानेवाली यह श्रेष्ठ रचना है।

प्रसंग : कवि के हृदय का दुख अब आँसू का रूप धारण कर बहने लगी है। दुख की गहराई में वीणा का स्वर बजने लगी है। कवि की यह वेदना इतनी गहरी है कि मन में करुणा का संचार करती है।

व्याख्या : विरही प्रेमी रो-रोकर अपनी करुण कहानी सुना रहा है। किंतु कवि को ऐसा लगता है कि सामनेवाले पर उसका कोई भी असर नहीं हो रहा है। विरही प्रेमी के प्रति उसके मन में किसी भी प्रकार की सहानुभूति नहीं है। इसलिए कवि को लगता है कि जिस प्रकार सुमन को नोचा जाता है उसी प्रकार कवि के प्रेम पीड़ा को भी कोई महत्व नहीं दिया जा रहा है। ऐसा नहीं है कि कवि का दुख प्रियतमा से छिपा हुआ है, किंतु सब कुछ जानते हुए भी वह अनजान बनी हुई है। यह उचित नहीं है।

विशेषता : विरही प्रेमी की व्यथा, उपेक्षा की भावना इंगित है। रो-रोकर सिसक-सिसककर- वीप्सा अलंकार, पुनरुक्ति, सुमन- श्लेष अलंकार, फ़ूल का प्रतीक, अच्छे मन का पर्याय, शब्द रूपी फ़ूल, करुणा- विरोधाभास।

बोध प्रश्न

- इस छंद में प्रयुक्त अलंकारों के नाम बताइए।
- इन पंक्तियों का भाव अपने शब्दों में समझाइए।

मैं बलखाता जाता था
मोहित बेसुध बलिहारी
अंतर के तार खिंचे थे
तीखी थी तान हमारी ।4।

शब्दार्थ : बलखाता = लचकाना। मोहित = मुग्ध। बेसुध = बेहोश। अंतर = हृदय।

संदर्भ : प्रस्तुत छंद को जयशंकर प्रसाद की रचना आँसू से लिया गया है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रख्यात कवि हैं। उनकी पहली विशिष्ट रचना है आँसू जो विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट काव्य है। कवि के व्यक्तिगत पीड़ा को यह काव्य दर्शाता है। लौकिक विरह को दर्शानेवाली यह श्रेष्ठ रचना है।

प्रसंग : प्रेमी अपनी वेदना की पीड़ा को रो-रोकर सुनाता है लेकिन प्रेमिका पर उसका कोई भी असर होते न पाकर वह अपने ही धुन में खोने लगता है।

व्याख्या : विरही प्रेमी कहता है कि मैं मिलन के सुख पर बलखाता था। उसी की याद में मैं मोहित था। मेरा प्रेमी हृदय प्रेम में बेसुध और बलिहारी था। लेकिन मेरा अंतर्मन बेचैन था, इसलिए अंतर्मन के तार खींचे हुए थे और तान में तीखापन दिखाई दे रहा था। इसका तात्पर्य यह है कि व्यक्ति जब शोक में होता है तो वह पुरानी बातों को याद कर अपने मन को शांत रखने

का प्रयास करता है, लेकिन दुख में मन की हलचल कम नहीं होती है। इसलिए मेरी वीणा के स्वरों में तीखापम था।

विशेषता : बलखाना- प्रिय के संसर्ग में बिताये पल की याद में खोना, बलिहारी- वियोगजन्य स्थिति पर मोहित, मेरे हृदय के तार खींचे थे- मन अशांत होना, हलचल होना। मोहित- मुग्ध, तार खिंचे थे- हलचल की अवस्था, तीखी थी तान- अनुप्रास अलंकार, अंतर का तार- रूपकातिशयोक्ति अलंकार।

बोध प्रश्न

- इन पंक्तियों के भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

झंझा झकोर गर्जन था
बिजली सी थी नीरद-माला,
पाकर इस शून्य हृदय को
सबने आ डेरा डाला ।5।

शब्दार्थ : झंझा = हवा। नीरद = बादल।

संदर्भ : प्रस्तुत छंद को जयशंकर प्रसाद की रचना आँसू से लिया गया है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रख्यात कवि हैं। उनकी पहली विशिष्ट रचना है आँसू जो विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट काव्य है। कवि की व्यक्तिगत पीड़ा को यह काव्य दर्शाता है। लौकिक विरह को दर्शानेवाली यह श्रेष्ठ रचना है।

प्रसंग : विरही प्रेमी संयोग सुख को याद करते हुए प्रसन्न रहना चाहता है, लेकिन उसका मन बेचैन है और इस बेचैनी से उसका दुख निरंतर बढ़ता जाता है। अपनी स्थिति का बखान करते हुए कवि मन की व्यथा को सुनाता है।

व्याख्या : कवि ने वियोग की गहराई को दर्शाने के लिए झंझा झकोर, गर्जन, बिजली सी, नीरद माला, शून्य हृदय आदि का प्रयोग करते हुए यह प्रतिपादित किया है कि विरही प्रेमी का हृदय प्रिय के वियोग में इस कदर खाली हो गया है कि उसमें अब अवांछित तत्व धावा बोल गए हैं। इसलिए कवि कहते हैं कि इस वियोग के कारण मेरे हृदय रूपी आकाश में वेदना की कसक उत्पन्न हो गई है, निराशा के बादल छा गए हैं, यादों की बिजलियाँ कौंध रही हैं, मेरा हृदय शून्य हो गया, अर्थात हृदय आकाश के समान शून्य भी हो गया और प्रेमी के बिना मन खाली भी हो गया है।

विशेषता : झंझा झकोर - हवा के झोंके, विक्षोभ का प्रतीक, रूपकातिशयोक्ति अलंकार, नीरद माला- बादलों का समूह, लक्ष्यार्थ प्रयोग, हृदय में घने अंधकार का प्रतीक, रूपकातिशयोक्ति अलंकार। शून्य- श्लेष अलंकार (आकाश, खाली), गर्जन-वेदना की तडप का प्रतीक और बिजली- दुख की टीस के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं। उपरोक्त पंक्तियों में कवि ने ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया है। दार्शनिकता के साथ-साथ गीतात्मकता है। डेरा डाला- मुहावरा है।

बोध प्रश्न

- नीरद-माला से क्या अभिप्राय है?

घिर जातीं प्रलय घटाएँ

कुटिया पर आकर मेरी
तम चूर्ण बरस जाता था
छा जाती अधिक अँधेरी ।6।

शब्दार्थ : कुटिया = घर।

संदर्भ : प्रस्तुत छंद को जयशंकर प्रसाद की रचना आँसू से लिया गया है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रख्यात कवि हैं। उनकी पहली विशिष्ट रचना है आँसू जो विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट काव्य है। कवि की व्यक्तिगत पीड़ा को यह काव्य दर्शाता है। लौकिक विरह को दर्शानेवाली यह श्रेष्ठ रचना है।

प्रसंग : विरही प्रेमी की वेदना की छटपटाहट गहराता जाता है। उसके मन आँगन में आँसू के बादल मंडराने लगते हैं। कवि को ऐसा लगता है कि प्रलय होने वाला है। वेदना के चरमोत्कर्ष दिखाकर कवि ने मानवीय प्रेम की व्याख्या करते हुए विश्वमंगल की भावना को अभिव्यक्त किया है।

व्याख्या : प्रेमिका के विरह में प्रिय को लगता है कि उसके हृदय रूपी आकाश में बादल गरज रहे हैं और उसकी इस छोटी सी कुटिया पर अब प्रलय के बादल मंडरा रहे हैं। इस प्रलय के कारण जो पहले से अंधेरा था, वह और भी अधिक घना हो गया था। प्रलय आने पर विनाश निश्चित है। अत: प्रेमी का मन प्रलय के इस अंधेरे से आहत हो उठा है।

विशेषता : कुटिया - कवि के शांत और पवित्र का प्रतीक, प्रलय- विरह की तीव्रत का प्रतीक।

बोध प्रश्न

- प्रलय घटाएँ किसके प्रतीक हैं?
- कवि का क्या आशय है?

बिजली-माला पहने फ़िर
मुसकाता था आँगन में
हाँ, कौन बरसा जाता था
रस बूँद हमारे मन में ।7।

शब्दार्थ : मुस्काता = मुसकुराता।

संदर्भ : प्रस्तुत छंद को जयशंकर प्रसाद की रचना आँसू से लिया गया है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रख्यात कवि हैं। उनकी पहली विशिष्ट रचना है आँसू जो विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट काव्य है। कवि की व्यक्तिगत पीड़ा को यह काव्य दर्शाता है। लौकिक विरह को दर्शानेवाली यह श्रेष्ठ रचना है।

प्रसंग : वेदना की अनुभूति कवि प्रेमी के मन में प्रबल होने पर भी कवि आशावादी है। मानवीय प्रेम का प्रतिपादन करते हुए मानव समुदाय को संवेदनशील बनाने में कवि तत्पर है। इसलिए निराशा के बीच कवि आशा के स्वर को मुखरित करते दिखाई देते हैं।

व्याख्या : कवि हृदय में स्मृति के रूप में प्रियतम की छवि बसी हुई है और वह यादों की शृंखला बनकर कवि को तड़पा रही है। किंतु इस वेदना में घिरकर भी कवि के अंतर्मन से एक आशावादी

स्वर उमड़ पड़ती है। प्रियतम की बिजली सी अंग कांति के मुस्कराकर आनंद वर्षा करने का निरूपण किया है, यहाँ व्यंग्यार्थ यह है कि जिस समय प्रेमी प्रियतम की याद में हताश और निराश होकर बेचैन एवं व्यग्र होता है, उस समय उसका प्रिय स्मृति के रूप में आकर अपने रूप-सौंदर्य की छटा से प्रेमी के मन को आनंद विभोर कर देता है।

विशेषता : बिजली-माला: समासोक्ति, वेदना का प्रतीक, बिजली-माला पहने: मानवीकरण अलंकार, कौन- प्रश्नार्थक, अस्पष्ट और अनिश्चयवाचक।

बोध प्रश्न

- इन पंक्तियों की विशेषता को अपने शब्दों में निरूपित कीजिए।

तुम सत्य रहे चिर सुंदर !
मेरे इस मिथ्या जग के
थे केवल जीवन संगी
कल्याण कलित इस मग के ।8।

शब्दार्थ : चिर = नित्य।

संदर्भ : प्रस्तुत छंद को जयशंकर प्रसाद की रचना आँसू से लिया गया है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रख्यात कवि हैं। उनकी पहली विशिष्ट रचना है आँसू जो विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट काव्य है। कवि की व्यक्तिगत पीड़ा को यह काव्य दर्शाता है। लौकिक विरह को दर्शानेवाली यह श्रेष्ठ रचना है।

प्रसंग : सुख और दुख इस जीवन में दिन और रात के समान हैं। संयोग है तो वियोग भी अवश्य ही होगा, इस बात को कवि स्वीकृत करते हैं। इसीलिए असीम दुख से ग्रसित होने पर भी उनके मन से प्रेम की भावना और प्रेम के प्रति श्रद्धा भाव कम नहीं होती है। प्रेम मानव समुदाय का चिर सत्य है।

व्याख्या : कवि कहता है कि यह संसार मिथ्या है और इस मिथ्या जगत में तुम्हारा चिर सौंदर्य ही एक मात्र सत्य है। हे प्रिय तुम मेरे जीवन मार्ग की एक मात्र संगिनी रही हो जिससे मेरे जीवन का मार्ग कल्याणकारी रहा है। तुम ने ही मेरे जग को कल्याण से परिपूरित किया है।

विशेषता : तत्सम शब्दों का प्रयोग, ध्वन्यात्मक एवं प्रतीकात्मकता की व्यंजना हुई है।

बोध प्रश्न

- इस संसार को कवि ने किस तरह चित्रित किया?

कितनी निर्जन रजनी में
तारों के दीप जलाये
स्वर्गांगा की धारा में
उज्ज्वल उपहार चढाये ।9।

शब्दार्थ : रजनी = रात।

संदर्भ : प्रस्तुत छंद को जयशंकर प्रसाद की रचना आँसू से लिया गया है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रख्यात कवि हैं। उनकी पहली विशिष्ट रचना है आँसू जो विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट

काव्य है। कवि की व्यक्तिगत पीड़ा को यह काव्य दर्शाता है। लौकिक विरह को दर्शानेवाली यह श्रेष्ठ रचना है।

प्रसंग : अपनी प्रियतम को कवि चिर सुंदर कहते हुए उसकी यादों का दीपक जलाता है। स्वप्न में प्रियतम का आने से प्रेमी का हृदय प्रफुल्लित हो उठा है।

व्याख्या : जब प्रेमी अपनी प्रियतम की प्रतीक्षा कर रहा है, तब उस प्रियतम के आगमन से प्रेमी के हृदय में जो उल्लास हुआ है, उसका कवि ने इस छंद में चित्रण किया है। कवि कहते हैं कि कितनी ही निर्जन रातों में मैंने तारों के दीपक जलाए, अर्थात तुम्हारे आगमन की कामना करते हुए मैंने न जाने कितनी ही रातें तारों के दीप जलाकर व्यतीत किए हैं और कितने ही आकाश गंगा के मैंने उपहार चढ़ाए हैं। तात्पर्य यह कि कवि ने प्रियतम के आगमन की कामना में रातों की नींद गंवाई हैं।

विशेषता : कितनी निर्जन- अकेलेपन का प्रतीक, तारों के दीप जलाना- तारे गिनकर रात बिताना (रात की नींद गंवाना)

बोध प्रश्न

- 'तारों के दीप जलाना' का क्या आशय है?

गौरव था, नीचे आए
प्रियतम मिलने को मेरे
मैं इठला उठा अकिंचन
देखो ज्यों स्वप्न सवेरे ।10।

शब्दार्थ : अकिंचन = दरिद्र

संदर्भ : प्रस्तुत छंद को जयशंकर प्रसाद की रचना आँसू से लिया गया है। जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रख्यात कवि हैं। उनकी पहली विशिष्ट रचना है आँसू जो विप्रलंभ शृंगार का उत्कृष्ट काव्य है। कवि की व्यक्तिगत पीड़ा को यह काव्य दर्शाता है। लौकिक विरह को दर्शानेवाली यह श्रेष्ठ रचना है।

प्रसंग : रातों की नींद गंवाकर जब प्रेमी अपनी प्रियतम का राह ताकता है तब स्वप्न के रूप में प्रियतम का आना प्रेमी हृदय के लिए गौरव की बात है।

व्याख्या : मुझे वास्तव में इस चीज से गौरव की प्रतीत हुई कि मुझसे मिलने के लिए मुझ जैसे अकिंचन से मिलने के लिए नीचे उतरकर आए हैं, यह मेरे लिए सुबह के स्वप्न के समान था जो मेरे प्रियतम मेरे लिए आए हो इससे मुझे गौरव की अनुभूति हो रही है। इस स्वप्न से ही कवि इठला जाते हैं कि प्रियतम स्वप्ना में ही मिलने के लिए आ जाते हैं।

विशेषता : इठला उठा- पुलकित होना, कोई भी व्यक्ति जब प्रेम के मार्ग पर चलता है, तब अपनी प्रियतम के सामने अपने आप को अकिंचन ही मानता है। अकिंचन-अपने आप को तुच्छ मानना।

बोध प्रश्न

- 'सुबह का स्वप्न' से क्या आशय है?

10.3.4 काव्यगत विशेषताएँ

आँसू प्रसाद की सर्वाधिक लोकप्रिय रचना है। इसकी ध्वन्यात्मकता, संगीतात्मकता एवं गीति तत्व ने न जाने कितने ही काव्य-प्रेमियों को आकर्षित किया है। इसके अतिरिक्त यह मानवीय करुणा, व्यथा एवं वेदना का काव्य है। यह एक ऐसी प्रबंधात्मक रचना है जिसमें से केवल कुछ छंदों का अध्ययन आप अपने पाठ्यक्रम के अंतर्गत करेंगे। किंतु काव्यगत विशेषताओं के बारे में जानने के लिए हमें पूरी काव्य के भाव को समझना होगा। अत: यहाँ आपके अध्ययन की सुविधा के लिए सामान्य रूप से इस कृति की विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है। काव्यसौंदर्य को उसके भावपक्ष एवं कलापक्ष के अध्ययन से ही समझा जा सकता है। अत: यहाँ पर संक्षिप्त में इस कविता के भावपक्ष और कलापक्ष पर प्रकाश डाला गया है।

इस काव्य रचना में कवि ने संयोग-सुख की मादक स्मृतियों का वर्णन किया है, फ़िर अपने प्रियतम के रूप-सौंदर्य की मनोरम झाँकियाँ अंकित की हैं, तदुपरांत व्यथा एवं वेदना का मर्मस्पर्शी निरूपण किया है। इसके साथ ही इस काव्य में 'चिरदग्धदु:खी वसुधा' के प्रति अत्यंत भावपूर्ण सहानुभूति व्यक्त की है। इस दृष्टि से देखा जाय तो इस मादक विरह के काव्य का जो भावपक्ष है उसके चार भाग गोचर होते हैं, (हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, पृ.सं 158), तो चलिए, आँसू के भावपक्ष का आस्वाद लेते हैं। यथा-

1. अतीत के संयोग सुखों की मादक स्मृति से उत्पन्न प्रेमी की मनोदशा का चित्रण : इस काव्य में प्रेमी की हृदयद्रावक मनोदशा का मार्मिक चित्र अंकित किये गये हैं जो अतीत के संयोग सुखों की मार्मिक स्मृति से उत्पन्न हुई हैं। यही कारण है कि प्रेमी के करुणा-कलित हृदय में विकल रागिनी बज रही है और हाहाकार स्वरों में असीम वेदना गरज रही है। शीतल ज्वाला जलकर ईंधन का काम करते हैं और साँस चल चलकर हवा का काम कर रही हैं। इससे कवि के हृदय में वेदना घनीभूत होती जाती है। वह अपनी प्रियतमा के रूप सौंदर्य को याद करने लगता है। अतीत में जिसके प्रेम और लालित्य से मन बहल जाता था, अब वही स्मृति पीड़ा बनकर उसके हृदय को हिला देती है। वह रो-रोकर, सिसक-सिसककर अपनी करुण गाथा सुनाता है। उसके मन में बसे करुण भाव एवं संवेदनशील भावुकता से दुख आँसू बनकर बहने लगती है। संयोग सुख की याद जैसे-जैसे गहरी होती जाती है, वैसे वैसे दुख की परिधि भी घनीभूत होती जाती है। इस अज्ञात प्रियतम की स्मृति उसके 'सुमन' को नोचने लगती है। इतना ही नहीं, स्मृति के उदय होते ही उसके शून्य हृदय में झंझाझकोरें लेने लगती हैं। बिजली चमकने लगती है और नीरदमाला आकर घेरा डालती है। उसकी जीवन रूपी कुटिया पर प्रलय की घटायें घिर जाती हैं, सघन अंधकार छा जाता है। इस दशा में प्रेमी को ऐसा आभास होने लगता है कि उसकी प्रियतमा अब उसके आँखों के सामने उपस्थित है। स्मृति-जन्य विरह दशा की यही मानसिक स्थिति होती है, जिसमें अतीत के सुखों की मादक एवं रंगीन कल्पनाएँ प्रेमी हृदय को बेचैन कर झकझोर डालती हैं। आँसू के प्रथम भाग में इसी का वर्णन है।

2. प्रियतम के अलौकिक रूप-सौंदर्य का निरूपण : आँसू के द्वितीय भाग में प्रियतम की अनुपम एवं अद्वितीय रूप-छटा का वर्णन किया गया है, जिसकी मादक स्मृति ने प्रेमी को विचलित कर

दिया है। प्रलय की घटायें उसके जीवन रूपी कुटिया पर आक्रमण करने लगते हैं और घना अंधकार घिरा हुआ है। इसी घटाटोप अंधकार में स्मृति के पथ से आया हुआ उसका जीवन-संगी बिजली माला पहनकर मुस्कुराता-सा आँगन में दिखाई देने लगता है, जो प्रेमी के मन में रस की बूँदें बरसाने लगता है। प्रेमी उसके सत्य एवं चिर सुंदर स्वरूप को देखकर आनंद विभोर हो उठता है क्योंकि प्रियतम का दर्शन करने के लिए प्रेमी ने न जाने कितनी निर्जन रातों में तारों के दीपक जलाए हैं और आकाश-गंगा की धारा में न जाने कितने उज्ज्वल उपहार चढाये हैं। उसके प्रियतम का रूप-सौंदर्य अद्‌भुत एवं अलौकिक है, क्योंकि प्रथम साक्षात्कार के समय ही प्रेमी को अपनी प्रियतमा मधु राका (पूर्णिमा का चंद्र) प्रतीत हो रही थी। आज वही प्रियतमा पतझड में सूखी हुई जीवन फुलवाडी पर कुसुम बिछाता हुआ आया है। उसके शशि-मुख पर घूँघट है, अंचल में दीपक छिपाए हुए हैं, उसकी काली-काली पुतलियाँ घन में सुंदर बिजली सी धमक रही हैं। उसकी कमनीयता, मोतियों से मंडित माँग, सुसज्जित केशराशि, मानो लगता है कि चंद्रमा को काली जंजीरों से बाँध रखा हो और काले-काले फणियों का मुख हीरों से भरा हुआ हो। उसके कोमल कपोलों में मधुर मुस्कुराहट के कारण गड्ढे बन जाते हैं। उसके लाला होंठ, चमकते दाँत, मोहित नासिका, कामदेव के समान उसकी भुजाएँ आदि का मार्मिक वर्णन कवि ने इस कविता में किया है।

3. प्रेम-वेदना की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति : आसूँ के तीसरे भाग में प्रेमी की उस मार्मिक विरहानुभूति अथवा प्रेम-वेदना की अभिव्यक्ति हुई है, जो उस प्रियतम की अलौकिक छटा के सहसा लुप्त हो जाने पर प्रेमी के हृदय में जाग्रत होती है, क्योंकि जब तक प्रेमी प्रियतम के अलौकिक रूप-सौंदर्य की मोहमयी छटा में उलझा रहता था, तब तक तो उसे सर्वत्र आनंद उल्लास की वर्षा होती हुई जान पडती थी। चारों ओर शांति बिंहसंतीं थीं। यहाँ तक कि प्रकृति भी उसे सुरम्य लगने लगती थी। परंतु अब प्रियतम के के कहीं ओझल हो जाने से वे मधुमय संयोग के दिन न जाने कहाँ तिरोहित हो गये । उसके जीवन-सिंधु की लहरें प्यासी हैं, और उसके मानस का सब रस पीकर उसकी जीवन-प्याली को लुढका दिया गया है। उसके जीवन की बगिया उजड चुकी है, कलियाँ बिखर गई हैं, चारों ओर रूखा पराग उड रहा है। संयोग का वह क्षण अब कल्पना लगने लगती है। उसके जीवन में आज मुरली नीरव है, सारे कलरव चुप हैं, कमल के भौरें बंद हैं, मलयानिल भी मधु सौरभ से व्याकुल होकर विरह-तरंगिनी के किनारे विश्वास छोडता जान पडता है। सर्वत्र केवल निराशा और शून्य है। आज प्रेमी आँसुओं की धारा बहाकर उसके मन की नौका को सूखे सिकता-सागर में रस्सी के बिना खींच रहा है । वह आहें भरता हुआ कराह रहा है और उसे आशा है कि उसकी शिथिल आह से खिंचकर उसका प्रियतम अवश्य आयेगा और वह भी रो-रोकर विरही प्रेमी के प्रेम को अपनायेगा।

4. व्यथित विश्व के प्रति हार्दिक सहानुभूति का वर्णन : आँसू के चतुर्थ भाग में वेदना से व्यथित एवं पीडित चिर दग्ध दुखी वसुधा के प्रति हार्दिक सहानुभूति व्यक्त की गई है। प्रेमी जानता है कि आज प्रियतम के वियोग में वह अकेला ही संतृप्त एवं दुखी नहीं है, अपितु पूरा ब्रह्मांड पीडित एवं व्यथित है। जगत के सभी प्राणी व्यथित एवं व्याकुल हैं और इस जीवन में कहीं भी शांति

एवं विश्राम नहीं है, यह वसुधा तो चिर दुख से दग्ध है और यहाँ के नभ के आँगन में दुख की नीलिमा शयन कर रही है, इसीलिए कवि इस चिर-दग्ध दुखी वसुधा के प्रति सहानुभूति व्यक्त करता हुआ जगती के समस्त सजग व्यथाओं को चुनने की इच्छा प्रकट करता है। वह कहता है कि तेरा प्रकाश पाकर ही वेदना से व्यथित संसार चेतन होता है। अत: इस निर्मम जगती को अपना मंगलमय उजाला प्रदान करो। तुमसे मेरा विनम्र निवेदन है कि तुम सबका निचोड़ लेकर दुख से सूखे जीवन में हरियाली लाने के लिए वह प्रात:कालीन ओस की बूँदें जैसे आँसू लेकर विश्व सदन में बरसाती रहो। कवि की विश्व के प्रति यही सहानुभूति है जो चिरदग्धदुखी वसुधा को देख आँसू के रूप में अभिव्यक्त हुई है।

इस प्रकार 'आँसू' काव्य में मानवीय विरह-वेदना का मनोवैज्ञानिक निरूपण हुआ है। यह एक ऐसा विरह काव्य जिसमें करुणा, व्यथा,वेदना, एवं दुख का सजीव चित्रण हुआ है। लौकिक प्रेम को जीवन, मृत्यु, और अमरता का मुख्य आधार बताकर चिरदग्धदुखी वसुधा को आनंदमयी नवचेतन प्रदान करने वाला सिद्ध किया है । संयोग सुख की मादक स्मृति से उत्पन्न अंत:करण की तडप एवं छटपटाहट की मनोरंजक झांकियाँ अंकित की हैं। प्रेम-वेदना को व्यष्टि कल्याण करने वाली सिद्ध करते हुए समष्टि कल्याण के लिए भी परमावश्यक घोषित किया है। इस प्रकार आँसू काव्य में एक निश्चित कथा का विस्तार सुनियोजित रूप में हुआ है, जिससे इसमें प्रबंधात्मकता, धारवाहिकता दृष्टिगोचर होती है जो मानवीय विरह का सर्वोत्कृष्ट प्रबंधकाव्य है।

बोध प्रश्न

- आँसू में प्रियतम का वर्णन किन शब्दों में किया गया है?
- प्रेमी के करुणा कलित हृदय में कैसी रागिनी बज रही है?
- आँसू के कथावस्तु का अध्ययन हम कितने भागों में कर सकते हैं?
- आँसू के भावपक्ष का अध्ययन करते हुए आपने क्या महसूस किया है? अपने शब्दों में उत्तर दीजिए ।

10.3.5 समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तुत काव्य में कवि ने मानवीय विरह प्रेम को मनोवैज्ञानिक ढंग से योजनाबद्ध निरूपण करते हुए करुणा, व्यथा, वेदना एवं पीड़ा के सजीव चित्र अंकित किए हैं तथा रूप-सौंदर्य एवं प्रकृति सौंदर्य की अप्रतिम झाँकी उपस्थित है। आँसू का मुख्य भाव विरह शृंगार है। आँसू का आधार असीम व्यक्ति है, जिसके मिलन सुख की स्मृति ने कवि के हृदय में वेदना लोक की सृष्टि की है। कवि के हृदय में जो वेदना थी वह अत्यधिक घना था जिसे भुलाने का प्रयत्न करने पर भी बार-बार कवि के हृदय में स्मृति के रूप में वह छा जाती है और वेदना और गहरी हो जाती है। यही वेदना अब आँसू बनकर बहने लगती है, जो किसी बरसात से कम नहीं है। अर्थात कवि की आँखों से अश्रु की धार बह रही है, आँसू का इस तरह बहना कवि के लिए दुर्दिन के समान है।

इस काव्य रचना में सौंदर्य की अद्भुत छटा विद्यमान है। प्रियतम के रूप-सौंदर्य का मार्मिक एवं चित्ताकर्षक चित्र उपस्थित है। उस अनुपम सुंदरी के मुख की झाँकी अंकित करते हुए कवि ने लिखा है कि चंद्रमा को न जाने किसने काली जंजीरों से बाँध रखा है और मणि वाले सर्प

का मुख न जाने क्यों हीरों से भरा हुआ है। उसकी काली-काली आँखों में जीवन के मद की लालिमा ऐसी छलक रही है, जैसे मानो नीलम की प्याली में लाल मदिरा भरी हो। काजल से भरी उसकी आँखें ऐसी लग रही हैं, मानो अतृप्ति के सागर में नीलम की नाव तैर रही है। उसके कपोलों की सीधी सादी स्मित रेखा और भौहों की कुटिलता दर्शनीय है। उसके रक्तिम होठों में दाँत ऐसे चमकते हैं जैसे विद्रुम सीपी के सम्पुट में मोती के दाने रखे हुए हों और नासिका तोते के समान हैं। उसकी हँसी विकसित कमलों का भी उपहास करने वाली हैं। उसके दोनों कान पुरइन के किसलय तुल्य हैं, जिन पर जल-बिंदु के समान किसी के भी दुख की बातें कभी नहीं ठहरतीं। उसकी अलबेली एवं लचीली भुजाएँ या तो कामदेव के धनुष की दुहरी शिथिल डोरियाँ हैं या छवि-सरोवर की दो नवीन लहरें हैं। उसकी शरीर की शोभा इतनी आलोक-मधुर है, मानो बिजली चंद्रिका-पर्व में स्नान करके आई हो। इस प्रकार कवि ने आँसू में प्रियतम के रूप-सौंदर्य की अद्‌भुत झाँकी प्रस्तुत की है।

10.4 पाठ सार

आँसू एक ऐसा गीतिकाव्य है, जिसमें व्यक्तिगत अनुभूति, आत्मा की संकल्पना एवं दार्शनिक चिंतन आदि का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। अतीत-प्रेम की स्मृतियों की पीड़ा द्रविभूत होकर कवि के आँसुओं के रूप में बह निकली है। आँसू कविता की मूल प्रेरणा कोई निजी आंतरिक व्यथा है। निजी व्यथा और आत्मानुभूति की प्रधानता के कारण भाषा की भंगिमा बदल गई है। भाषा लाक्षणिक, प्रतीकात्मक, ध्वन्यात्मक और चित्रात्मक हैं । मानवीय भावों की व्यंजना हुई है।

10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. प्रसाद की मान्यता है कि आँसू हमारे भावों की उपज है। मनुष्य का हृदय भाव के बिना अधूरा है। भाव हमारे दर्द को जगाते हैं।
2. वेदना में भी एक प्रकार का आनंद होता है। सूने हृदय में गहन अंधकार के क्षणों में भी करुणा के भाव मौजूद रहते हैं। यही भाव मानव को निराशा से जूझने की शक्ति प्रदान करते हैं।
3. जीवन की जटिल समस्याओं के बीच उदात्त और कोमल भाव खो गए हैं। यह कवि की चिंता का विषय है।
4. 'आँसू' में व्यष्टि पीड़ा का प्रसार समष्टि पीड़ा तक हुआ है। प्रकृति के विषाद का चित्रण लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत है।

10.6 शब्द संपदा

1. अंतर्धान = अपने में ही लीन रहना, खुद में खोये रहना
2. इतिवृत्तात्मकता = वस्तु वर्णन या आख्यान की प्रधानता

3. चिरदग्धदुखी वसुधा = धरती की वेदना

4. फंतासी = कोरी कल्पना, कपोल कल्पना, दिवास्वप्न

5. मनोदशा = मन की दशा, मन की स्थिति

6. वसुधा = पृथ्वी, धरती, धरा

7. विक्षोभ = उद्विग्नता, मन का आवेग

8. विरहानल = विरह की ज्वाला, विरह की पीड़ा का प्रतीक

9. स्वानुभूति = स्व अनुभूति

10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

10.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1 'आँसू' का प्रथम प्रकाशन वर्ष कब माना जाता है ?

(अ) 1923 (आ) 1924 **(इ) 1925**

2. जयशंकर प्रसाद किस युग के कवि थे ?

(अ) द्विवेदी युग **(आ) छायावादी युग** (इ) दोनों

3. 'आँसू' की रचना हुई है-

(अ) संयोग शृंगार **(आ) विप्रलंभ शृंगार** (इ) दोनों

4. 'आँसू' में कितनी पंक्तियाँ हैं ?

(अ) 680 (आ) 681 (इ) 682

5. जयशंकर प्रसाद का समय कब माना जाता है ?

(अ) 1890-1938 (आ) 1891-1937 **(इ) 1890-1937**

6. 'आँसू' का प्रथम संस्करण में कितनी पंक्तियाँ थी?

(अ) **252** (आ) 281 (इ) 382

7. 'आँसू' काव्य की विशेषता क्या है?

(अ) प्रियतम के अलौकिक रूप-सौंदर्य का निरूपण

(आ) प्रेम-वेदना की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति

(इ) दोनों भी

8. आँसू कविता में कौनसा भाव हैं ?

(अ) करुणा और प्रेम (आ) वीर और प्रेम (इ) वीर और करुणा

9. “रो-रोकर सिसक-सिसककर, कहता मैं करुण कहानी, तुम सुमन नोचते सुनते, करते जानी अनजानी” यह पंक्ति किस काव्य धारा से ली गई है ?

(अ) कामायनी (आ) लहर **(इ) आँसू**

10. नीरद माला का अर्थ क्या है ?

(अ) बादलों का समूह **(आ) वेदना का प्रतीक** (इ) घनीभूत पीड़ा

खंड (ब)

10.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. आँसू काव्य से आपने क्या समझा, अपने शब्दों में लिखिए।
2. पठित पाठ के आधार पर आँसू का सारांश लिखिए।
3. कितनी निर्जन रजनी में.....उपहार चढ़ाये पंक्ति का संदर्भ सहित व्याख्या लिखिए।
4. प्रियतम के अलौकिक सौंदर्य का निरूपण आँसू में किस प्रकार किया है?
5. आँसू में प्रयुक्त प्रतीकों पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

10.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. आँसू किस प्रकार की रचना है? अपने शब्दों में लिखिए।
2. आँसू छायावाद युगीन विशिष्ट रचना है, पाठ के आधार पर चर्चा कीजिए।
3. आँसू की विरहानुभूति पर प्रकाश डालिए।
4. आँसू कविता की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

10.8 पठनीय पुस्तकें

1. आँसू काव्य की समीक्षा : कृष्णदेव अग्रवाल
2. प्रसाद - आँसू तथा अन्य कृतियाँ : विनयमोहन शर्मा
3. प्रसाद की काव्य-प्रतिभा : दुर्गाशंकर मिश्र
4. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
5. छायावाद : नामवर सिंह

इकाई 11 : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 मूल पाठ : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

11.3.1 जीवन परिचय

11.3.2 रचना यात्रा

11.3.3 रचनाओं का परिचय

11.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

11.4 पाठ सार

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

11.6 शब्द संपदा

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

11.8 पठनीय पुस्तकें

11.1 प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी साहित्य में 1915 के आस-पास एक नए मोड़ का आरंभ हो गया था। यह पुरानी काव्य पद्धति को छोड़कर एक नई पद्धति के निर्माण का सूचक था। "स्थूल और सरल पदावली की भी प्रतिक्रिया हुई और कविता अंतर्जगत की ओर उन्मुख होकर सूक्ष्म, वक्र तथा सांकेतिक पदावली में अवतरित होने लगी।" (सं. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 517)। इसे छायावाद कहा गया। इस काव्य पद्धति में यथार्थ के चित्रण का प्रबल आग्रह दिखाई देता है। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा को छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों के रूप में जाना जाता है। आधुनिक हिंदी कविता के विकास में इस युग का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। छायावाद ने हिंदी कविता को अंतर्वस्तु और शिल्प के स्तर पर उत्कर्ष प्रदान किया। छायावादी कवियों में निराला का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। छात्रो! इस इकाई के अंतर्गत आप सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करेंगे।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत आप सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप -

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की वैयक्तिक, पारिवारिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि को समझ

सकेंगे।

- निराला के कृतित्व की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- निराला के युगीन परिवेश को समझ कर उनकी रचनाओं की प्रासंगिकता से अवगत हो सकेंगे।
- निराला की रचना प्रक्रिया और उनके काव्य की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य में निराला के स्थान और उनके महत्व को समझ सकेंगे।

11.3 मूल पाठ : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

छायावाद युग दो विश्वयुद्धों के बीच का काल है। 1917 में हुई रूसी क्रांति ने संसार पर गहरा असर डाला। भारत के परिप्रेक्ष्य में यह गांधी युग था। महात्मा गांधी ने स्वाधीनता संघर्ष को जन आंदोलन बनाया। गुलामी से मुक्ति की आकांक्षा व्यापक हुई। कीट्स, बायरन, शेली, वड्र्सवर्थ और कॉलरिज आदि रोमांटिक कवियों के लेखन ने भी भारतीय साहित्यकारों को प्रभावित और प्रेरित किया। निराला भी इन सबसे प्रेरित थे। निराला के काव्य में आप छायावादी कोमलता के साथ-साथ कठोरता को भी देख सकते हैं। आइए, उनके जीवन और रचना यात्रा से संबंधित पहलुओं पर दृष्टि केंद्रित करेंगे।

11.3.1 जीवन परिचय

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म 21 फरवरी, 1896 को बंगाल की रियासत महिषादल में हुआ और मृत्यु 1961 में हुई। बसंत पंचमी के दिन उनका जन्मदिन मनाने की परंपरा 1930 में प्रारंभ हुई। उनका जन्म रविवार को होने के कारण उनके पिता पं. रामसहाय त्रिपाठी ने उनका नामकरण सुर्जकुमार रखा था। रामसहाय बैसवाड़ा क्षेत्र के गढ़कोला ग्राम के निवासी थे।

तीन वर्ष की अवस्था में ही सुर्जकुमार को माँ का अभाव सहना पड़ा। 1919 में देश में अकाल पड़ा। उसमें उनके अनेक स्वजन - पिता, पत्नी, चाचा सभी उन्हें छोड़कर चले गए लेकिन वे इसे भी बर्दाश्त कर गए। बचपन से उनके व्यक्तित्व में मस्ती और अक्खड़ता जैसे गुण विद्यमान थे। "प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बालक पिता से पाए हुए उद्धत स्वभाव के कारण अपने जीवन के सभी काम निर्भीक भाव से करता रहा।" (रामविलास शर्मा, निराला, पृ. 2)।

निराला के व्यक्तित्व निर्माण में परिवेश का महत्वपूर्ण स्थान है। 1943 में डॉ. रामविलास शर्मा के एक प्रश्न पर उन्होनें कहा कि "बैसवाड़े का वातावरण मुझे बहुत पसंद है, कविता के लिए कलकत्ते का।" निराला के स्वभाव के संबंध में महादेवी वर्मा का कहना है कि "निराला किसी से भयभीत नहीं, अतः किसी के प्रति क्रूर होना उनके लिए संभव नहीं। उनके तीखे व्यंग्य की विद्युत-रेखा के पीछे सद्भाव के जल से भरा बादल रहा है।" (पथ के साथी, पृ. 57)।

निराला की कद-काठी के संबंध में विश्वंभर मानव कहते हैं कि "निराला जी स्वस्थ और सुंदर व्यक्ति थे। उनके ललाट, नेत्र, नासिका, अधर, केश, स्कन्ध, वक्ष, भुजाओं, जंघाओं और हाथ की उंगलियों की प्रशंसा में लेखकों ने श्रेष्ठतम विशेषणों का प्रयोग किया है। किसी ने पठान

और किसी ने ग्रीक-देवता कहा है। देखने में वे प्रागैतिहासिक काल के आर्य जैसे लगते थे। 5 फुट 11 इंच लंबे आदमी ने जब महिलाओं जैसे लंबे केश रख लिए तो दृष्टि विवश होकर उस पर पड़ने लगी। उन दिनों किसी ने निराला को 'मिस फैशन' कहा, किसी ने 'मेम'।" (काव्य का देवता : निराला, पृ. 17)

निराला जी मिलनसार व्यक्ति थे। वे बड़े-छोटे का ख्याल बहुत कम करते थे। इस संबंध में रामविलस शर्मा का यह कथन उल्लेखनीय है - "निराला जी के लिए यह जरूरी नहीं है कि मिलने-बोलने के लिए बड़े साहित्यकार ही हों। स्कूल, कालेज जाने वाले लड़कों से भी वह बड़े स्नेह से मिलते हैं। वास्तव में वह बड़े-छोटे का ख्याल बहुत कम करते हैं। गाँव के किसानों और चमारों से वह बड़े अपनपौ से मिलते हैं।" (निराला, पृ. 25)। वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि निराला निर्भीक और उद्दंड थे। वे बनावटी शिष्टाचार को तोड़ते हुए निर्द्वंद्व भाव से बात करते थे।

1920 में सुर्जकुमार का कवि जीवन प्रारंभ हुआ तब उन्होंने अपना नाम सूर्यकांत त्रिपाठी रख लिया। उनकी पहली नियुक्ति महिषादल राज्य में ही हुई। 1922 से 1923 के दौरान उन्होंने कोलकाता से प्रकाशित 'समन्वय' का संपादन किया, 1923 के अगस्त से 'मतवाला' के संपादक मंडल में कार्य किया। इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक माला कार्यालय में उनकी नियुक्ति हुई जहाँ वे संस्था की मासिक पत्रिका 'सुधा' से 1935 के मध्य तक संबद्ध रहे। 1942 से मृत्यु पर्यंत इलाहाबाद में रह कर स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किया। 'निराला' उपनाम उन्हें 'मतवाला' के अनुप्रास में ही मिला। इस संबंध में स्वयं निराला का कथन देखें - "मेरा उपनाम 'निराला' 'मतवाला' के ही अनुप्रास पर आया था।" (अनामिका, प्राक्कथन)

बोध प्रश्न

- निराला का स्वभाव कैसा था?
- निराला के व्यक्तित्व निर्माण के घटकों के बारे में बताइए।
- 'निराला' उपनाम कैसे आया?

11.3.2 रचना यात्रा

1920 से निराला की साहित्यिक यात्रा शुरू हुई थी। उनकी पहली कविता 'जन्मभूमि' प्रभा नामक मासिक पत्र में जून 1920 में प्रकाशित हुई थी। पहला कविता संग्रह 'अनामिका' 1923 में प्रकाशित हुआ था। उनका पहला निबंध 'बंग भाषा का उच्चारण' अक्टूबर 1920 में मासिक पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित हुआ। उन्होंने कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किंतु उनकी ख्याति विशेष रूप से कविता के कारण ही है। जुही की कली (1916), अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), द्वितीय अनामिका (1938) [अनामिका के दूसरे भाग में सरोज समृति और राम की शक्ति पूजा जैसे प्रसिद्ध कविताओं का संकलन है], तुलसीदास (1938), कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नए पत्ते, अर्चना, आराधना, गीत कुंज, सांध्य काकली, अपरा आदि उनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं। अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा आदि उपन्यास हैं। लिली, चतुरी चमार, सुकुल की बीवी, सखी, देवी आदि

कहानी संग्रह हैं तो रवींद्र कविता कानन, प्रबंध पद्म, प्रबंध प्रतिमा, चाबुक, चयन आदि निबंध संग्रह हैं। महाभारत पुराण कथा है तो आनंद मठ, विष वृक्ष, कृष्णकांत का वसीयतनामा, कपालकुंडला, दुर्गेश नंदिनी, राज सिंह, राजरानी, देवी चौधरानी, युगलांगुल्य, चंद्रशेखर, रजनी, श्री रामकृष्ण वचनामृत आदि बांग्ला से हिंदी में अनूदित रचनाएँ हैं।

निराला के संपूर्ण जीवन को दूधनाथ सिंह ने 'आत्महंता आस्था' की संज्ञा दी है। उनका मानना है कि यदि निराला को समझना हो तो उनकी रचनाओं को समझना आवश्यक है। रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक 'निराला की साहित्य साधना' की भूमिका में यह स्पष्ट किया है कि निराला की रचना यात्रा का स्रोत उनका भावबोध है। और यह भावबोध उनकी विचारधारा से संबद्ध है किंतु उसका प्रतिबिंब नहीं। रामविलास शर्मा इस बात की पुष्टि करते हैं कि "निराला अपने साहित्य में जिस कवि को प्रतिष्ठित करते हैं, वह समग्र जीवन को व्यापक दृष्टि से देखता, एक ही पक्ष लेकर नहीं चलता" (पृ. 170)। रामविलास शर्मा के अनुसार निराला सौंदर्य और उल्लास के कवि के साथ-साथ दुख और मृत्यु के कवि भी हैं। 'जन्मभूमि' निराला की पहली कविता है तथा 'पत्रोत्कंठित जीवन का विष बुझा हुआ है' उनकी अंतिम कविता है।

निराला की कविताओं को पढ़ने से ऐसा लगता है कि वे कविता के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन पर ज्यादा निर्भरत करते थे। इसलिए व्यक्तिगत जीवन उनकी कविता का स्रोत बनकर प्रवाहित होता है। आगे उनकी कुछ प्रमुख रचनाओं पर दृष्टि केंद्रित करेंगे।

बोध प्रश्न

- दूधनाथ सिंह ने निराला के जीवन के संबंध में क्या कहा?
- निराला की कविता का स्रोत क्या है?

11.3.3 रचनाओं का परिचय

निराला के व्यक्तित्व से परिचित होने के बाद अब आप उनकी प्रमुख रचनाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।

प्रथम अनामिका (1923) : यह उनकी रचनाओं का पहला संग्रह है। इसके प्रकाशन के संबंध में निराला का वक्तव द्रष्टव्य है - "आदरणीय मित्र स्वर्गीय श्री बाबू महादेवप्रसाद जी सेठ ने प्रकाशित की थी। वे मेरी रचनाओं के पहले प्रशंसक हैं। (अनामिका, प्राक्कथन। इस संग्रह में कुल नौ कविताएँ संग्रहीत थीं - अध्यात्म फल, माया, जलद, अधिवास, तुम और मैं, जुही की कली, पंचवटी प्रसंग, सच्चा प्यार और लज्जित।

परिमल (1929-30) : इसमें निराला की प्राथमिक अधिकांश चुनी हुई कविताएँ हैं। तीन खंडों में विभाजित यह संग्रह निराला की नई भावभूमि का प्रतिनिधित्व करता है। इन कविताओं में ओज गुण दिखाई देता है। उदाहरण के लिए -

भीतर नग्न रूप था घोर दमन का,

बाहर अचल धैर्य था उनके उस दुखमय जीवन का;

भीतर ज्वाला धधक रही थी सिन्धु अनल की,

बाहर थीं दो बूँदें- पर थीं शांत भाव में निश्चल-
विकल जलधि के जर्जर मर्मस्थल की। (स्वप्न स्मृति)

'परिमल' की भूमिका में निराला ने लिखा है कि "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्य की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है। जिस तरह मुक्त मनुष्य कभी किसी तरह दूसरों के प्रतिकूल आचरण नहीं करता, उसके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं, फिर भी स्वतंत्र। इसी तरह कविता का भी हाल है।"

'परिमल' के प्रथम खंड में सममात्रिक तुकांत कविताएँ हैं। द्वितीय खंड की रचनाएँ स्वच्छंद छंद में रची गई हैं। इन्हें निराला मुक्त गीत कहते हैं। इन गीतों में तुक का आग्रह है पर मात्राओं का नहीं। शेफालिका, जागो फिर एक बार, महाराज जयसिंह को शिवाजी का पत्र, पंचवटी प्रसंग आदि रचनाएँ कवित्त छंद में लिखी गई हैं। ये रचनाएँ 'परिमल' के तृतीय खंड में सम्मिलित हैं। इस संग्रह की कविताओं में सड़ीगली मान्यताओं के प्रति विद्रोह तथा निम्नवर्ग के प्रति सहानुभूति दखाई देती हैं।

बोध प्रश्न

- कविता के संबंध में निराला का क्या विचार है?
- 'परिमल' में संग्रहीत कविताओं की विशेषताओं के बारे में बताइए।
- कविता की मुक्ति से निराला का क्या आशय है?

गीतिका (1936) : यह कृति मनोहरा देवी को समर्पित है। इसकी भूमिका में जयशंकर प्रसाद लिखते हैं कि "उनमें केवल पिक की पंचम पुकार ही नहीं; कनेरी की-सी एक ही मीठी तान नहीं; अपितु उनकी गीतिका में सब स्वरों का समारोह है।" (गीतिका)। इस संग्रह की मूल भावना शृंगारिकता है फिर भी बहुत से गीतों में कवि का आत्मनिवेदन देखा जा सकता है। प्रकृति वर्णन के साथ-साथ देश प्रेम का चित्रण भी है। उदाहरण के लिए-

वर दे, वीणावादिनि वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे! (वीणावादिनी वर दे)
सखि वसन्त आया।
भरा हर्ष वन के मन,
नवोत्कर्ष छाया।
किसलय-वसना नव-वय-लतिका
मिली मधुर प्रिय-उर तरु-पतिका,
मधुप-वृन्द बन्दी-
पिक-स्वर नभ सरसाया। (वसंत आया)

बोध प्रश्न

- 'गीतिका' का मूल स्वर क्या है?

अणिमा : इस संग्रह के गीतों में विषाद को रेखांकित किया जा सकता है। कवि के निराश मन को चारों ओर अंधकार दिखाई देता है। इसलिए तो वे कहते हैं -

गगन है यह अन्ध कारा;
स्वार्थ के अवगुंठन से
हुआ है लुंठन हमारा
खड़ी है दीवार जड़ की घेरकर
बोलते हैं लोग ज्यों मुँह फेरकर
इस गगन में नहीं दिनकर
नहीं शशधर, नहीं तारा

कवि की वैयक्तिक निराशा वातावरण में भी दिखाई दे रहा है। इसीलिए वे कहते हैं -

स्नेह-निर्झर बह गया है।
रेत ज्यों तन रह गया है।
आम की यह डाल जो सूखी दिखी
कह रही है - अब यहाँ पिक या शिखी
नहीं आते - पंक्ति मैं वह हूँ लिखी
नहीं जिसका अर्थ-
जीवन दह गया है।

कवि याचना करते हुए दिखाई देते हैं -

दलित जन पर करो करुणा
दीनता पर उतर आए
प्रभु, तुम्हारी शक्ति अरुणा।

बोध प्रश्न

- 'अणिमा' में ज्यादातर किस प्रकार के गीत अंकित हैं?

नए पत्ते : इस संग्रह की कविताओं में जीवन को यथार्थ का आकलन नए प्रतीकों और प्रतिमानों के माध्यम से हुआ है। इन कविताओं में जनवादी परिवेश को देखा जा सकता है। "नए पत्ते में निराला की चेतना सामाजिक है, बाह्योन्मुखी है और समाजशास्त्रीय है। जो कला (wit) पर आधारित होकर व्यंग्य-सृष्टि करती है वही नए पत्ते की है।" (धनंजय वर्मा, निराला काव्य और व्यक्तित्व, पृ. 181)। निम्नवर्ग के प्रति निराला की सहानुभूति को इन कविताओं में देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- 'नए पत्ते' की कविताओं का मूल स्वर क्या है?

कुकुरमुत्ता (1942) : यह वस्तुतः एक लंबी प्रगतिवादी कविता है। इस कविता में गुलाब पूँजीवाद का प्रतीक है तो कुकुरमुत्ता सर्वहारा का। कुकुरमुत्ता गुलाब को संबोधित करते हुए कहता है -

पहाड़ी से उठे-सर ऐंठकर बोला कुकुरमुत्ता-

अब, सुन बे, गुलाब,

भूल मत जो पायी खुशबु, रंग-ओ-आब,

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,

डाल पर इतरा रहा है केपीटलिस्ट!

नंददुलारे वाजपेयी के शब्दों में "प्रगतिशील आदर्श इसमें यह है कि सामंतवादी प्रतीक गुलाब के उपहास के साथ कुकुरमुत्ता की प्रशंसा की गई है, इस आधार पर कुछ समीक्षक इसे प्रगतिवादी कविता मानते हैं। किंतु यह भी देखना चाहिए कि इसमें गुलाब का ही परिहास नहीं, स्वयं कुकुरमुता का भी परिहास है। वह अपने मुँह से अपनी जिन विशेषताओं का उल्लेख करता है और जिस पद्धति से स्वयं को संसार की श्रेष्ठतम वस्तुओं का जनक कहता है, वे व्यंजना के द्वारा उसे उपहास के केंद्र में उपस्थित कर देती हैं।" (कवि निराला)

बोध प्रश्न

- गुलाब और कुकुरमुत्ता किसके प्रतीक हैं?

राम की शक्ति पूजा : यह 312 पंक्तियों की लंबी कविता है। कहा जाता है कि इलाहाबाद से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र 'भारत' में पहली बार 26 अक्टूबर, 1936 को उसका प्रकाशन हुआ था। "इस कविता की सामग्री निराला ने वस्तुतः बंगला के ही एक मध्ययुगीन कवि कृतिवास की रामायण से ली है, जो कि तुलसीदास से सौ वर्ष पहल हुए थे।" (धनंजय वर्मा, निराला काव्य और व्यक्तित्व, पृ. 198)। अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' में रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं कि "मौलिकता कथानक में नहीं है, उस कथानक से सिरजा क्या गया है, उसमें है। इस दृष्टि से 'शक्ति-पूजा' में शक्ति-संधान की रचनात्मक व्याख्या है और इसका मूल सूत्र उस परामर्श में है, जो जाम्बवान पराजय की मनःस्थिति में डूबे राम को देते हैं" (पृ. 123) -

शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।

छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

इससे स्पष्ट है कि शक्ति की आराधना मौलिक रूप से ही संभव है, अनुकरण से नहीं। राम शक्ति पूजा हेतु नीलकमल लाने के लिए हनुमान को भेजते हैं। पूजा करते समय उन कमलों में से एक कमल को स्वयं शक्ति गायब कर देती हैं। आराधना करते समय शक्ति के चरणों में अंतिम कमल चढ़ाने उद्यत राम को जब कमल नहीं मिलता तो असफलता उनके सामने आती है और वे सोचते हैं -

धिक् जीवन जो पाता ही आया है विरोध

धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध!

हताश स्थिति में राम को यह याद आता है कि -

'यह है उपाय कह उठे राम ज्यों मंद्रित घन

कहती थीं माता मुझे सदा राजीवनयन।'

जब राम अपनी आँख निकालकर शक्ति को अर्पित करने के लिए तैयार हो जाते हैं तो शक्ति राम का हाथ पकड़ लेती हैं और कहती हैं -

साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम

कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।

'होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन' - कहकर महाशक्ति राम के वदन में लीन हो जाती हैं।

इस कविता में राम का अंकन पूरी तरह से मानवीय धरातल पर हुआ है। इस कविता में तत्सम शब्दावली का प्रयोग है।

बोध प्रश्न

- महाशक्ति राम से क्या कहती हैं?
- इस कविता में राम का अंकन किस तरह हुआ है?

सरोज स्मृति : यह आत्मकथात्मक काव्य है। उनकी पुत्री सरोज के बचपन, विवाह और मृत्यु की घटनाएँ इस कविता में अंकित है। यह शोक गीत है। संपूर्ण कविता स्मृति आधारित है। इस कविता की केंद्रीय पंक्तियाँ हैं -

दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ, आज जो नहीं कही

इन पंक्तियों में कवि का जीवन संघर्ष व्यंजित है। निराला की आर्थिक परिस्थिति निराशाजनक थी। इसलिए वे कहते हैं -

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित में न कर सका।
जाना तो अर्थागमोपाय
पर रहा सदा सकुचित काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पाठ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर

बोध प्रश्न

- 'सरोज स्मृति' कैसे रचना है?
- इस कविता की केंद्रीय पंक्तियाँ क्या हैं?

तोड़ती पत्थर : इस कविता में कवि ने मजदूर स्त्री का चित्रण किया है जो गर्मी की भारी दोपहरी में सड़क के किनारे बैठकर पत्थर तोड़ रही है। इस कविता के माध्यम से उन्होंने शोषित वर्ग की विषमताओं का चित्रण किया है। इस कविता मैं कवि ने 'मैं' और 'वह' का प्रयोग किया है। कवि ने अपने लिए 'मैं' आर मजदूर स्त्री के लिए 'वह' का प्रयोग किया है। इस कविता की आरंभिक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

वह तोड़ती पत्थर
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर

वह तोड़ती पत्थर।

इस कविता का रचनाकल 1937 है। उस समय देश गुलाम था और इलाहाबाद राजनैतिक चिंतन का केंद्र बना हुआ था। कवि लिखते हैं कि उसने इलाहाबाद के पथ पर एक मजदूरिन को देखा जो सड़क पर पत्थर तोड़ रही थी। वहाँ कोई छायादार पेड़ भी नहीं थी। वह तपती दोपहरी में सड़क पर पत्थर तोड़ रही थी। यहाँ 'वह तोड़ती पत्थर' की आवृत्ति दो बार हुई है और तीसरी बार कुछ परिवर्तन के साथ 'मैं तोड़ती पत्थर' का प्रयोग अंत में हुआ है। किंतु संदर्भ अलग है -

गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार -
सामने तरु मालिका अट्टालिका, प्राकार

××××

एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर
लीं होते कर्म में फिर ज्यों कहा -
मैं तोड़ती पत्थर

"संदर्भ के अनुसार तीनों जगह पत्थर का अर्थ क्रमशः बदलता गया है। पहले सड़क का पत्थर, फिर अट्टालिका का पत्थर और अंत में अपने हृदय का पत्थर।' (कविता के ने प्रतिमान, नामवर सिंह, पृ. 134)। हथौड़ा एक ही है। पहले वह सड़क पर पड़ता है, फिर अट्टालिका पर और अंत में हृदय पर। इस कविता में महनेतकश के जीवन संघर्ष को कवि ने चित्रित किया है। इस कविता के माध्यम से समाज-आर्थिक परिस्थिति को भी समझा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- 'तोड़ती पत्थर' कविता में किस वर्ग का चित्रण है?
- इस कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

11.3.4 हिंदी साहित्य में स्थान एवं महत्व

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हिंदी साहित्य के छायावाद के प्रमुख चार स्तंभों में से एक हैं। वे हिंदी साहित्य जगत में मुक्त छंद के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं। (जुही की काली)। निराला का काव्य वस्तु और शिल्प दोनों दृष्टियों से अनुपम है। रामस्वरूप चतुर्वेदी कहते हैं कि "निराला का संपूर्ण काव्य-व्यक्तित्व 'विरुद्धों का सामंजस्य' की उस अवधारणा में से जैसे विकसित हुआ है, जिसे कवि के समकालीन और प्रसिद्ध समीक्षक रामचन्द्र शुक्ल ने आनंद की साधनावस्था की उच्चतम रचना-भूमि का कारक तत्व स्वीकार किया है।" (हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ. 124)।

निराला अपने ओज गुण के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके काव्य का सहज स्वर उदात्त है। अपने लकड़पन में निराला ने बंगभंग आंदोलन, स्वदेशी आंदोलन, किसान आंदोलन आदि देखा और अनेक संघर्षों का नेतृत्व भी किया। अतः इनका प्रभाव उनके व्यक्तित्व और साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक है। भारतीय और विश्व राजनीति से वे भलीभाँति परिचित थे। अतः उनकी रचनाओं

में युगीन परिस्थितियों को देखा जा सकता है।

निराला ने अपने काव्य और कथा साहित्य में क्रांतिकारियों का चित्रण किया है। उनके क्रांतिकारियों का कार्यक्षेत्र हमेशा ही गाँव रहा क्योंकि वे यह मानते थे कि क्रांति की सार्थकता किसानों की मुक्ति में है। उन्होंने अपनी कविता 'बादल राग' में किसान और विप्लवी वीर के संबंध पर इस तरह लिखा है -

जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!

निराला यह मानते हैं कि गाँवों की उन्नति में देश की उन्नति निहित है। इसीलिए वे कहते हैं कि "गाँवों में अभी तक कोई स्वराज्य का नाम भी नहीं जानता, इसका हमें व्यक्तिगत अनुभव है। ग्राम-प्रचार और ग्राम-संगठन की इसीलिए सख्त जरूरत है।" (सुधा, संपादकीय, अक्टूबर 1929)। किसानों को जागरूक करना निराला का उद्देश्य था। 'नए पत्ते' की कविताओं में गाँव का संघर्ष तेज हो जाता है -

मन्नी कुम्हार, कुल्ली तेली, भकुआ चमार,
लुच्छू नाई, बली कहार, कुल टूट पड़े,
कुछ नहीं हुआ, कुछ नहीं हुआ, होने लगा। (डिप्टी साहब आए)

निराला यह कहने में नहीं हिचकते कि -

आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला,
धोबी, पासी, चमार, तेली,
खोलेंगे अँधेरे का ताला (बेला)

समाज में जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेदभाव सामंती व्यवस्था की देन है। निराला इस जाति-प्रथा के विनाश को अपना राजनैतिक कर्तव्य समझते थे क्योंकि वे यह मानते थे कि इस कर्तव्य को पूरा किए बिना राष्ट्रीयता का विकास असंभव था। 'महाराज जयसिंह को शिवाजी का पत्र' शीर्षक कविता में कवि कहते हैं कि-

फैले संवेदना
एक ओर हिन्दू एक ओर मुसलमान हों
व्यक्ति का खिंचाव यदि जातिगत हो जाय
देखो परिणाम फिर
स्थिर न रहेंगे पैर यौवनों के
पस्त होगा हौसला
ध्वस्त होगा साम्राज्य

सामाजिक रूढ़ियों के कारण जिस तरह शूद्र दास बने उसी तरह स्त्री पराधीनता के कारण दासी बनी। स्त्रियों के संबंध में निराला लिखते हैं कि "प्राचीन शीर्णता ने नवीन भारत की शक्ति को मृत्यु की ही तरह घेर रखा है। घर की छोटी-सी सीमा में बंधी हुई स्त्रियाँ आज अपने

अधिकार, अपना गौरव, देश तथा समाज के प्रति अपना कर्तव्य सब कुछ भूली हुई हैं।" (प्रबंध प्रतिमा, पृ. 77)। प्राचीन शीर्णता अर्थात प्राचीन सामाजिक व्यवस्था की रूढ़ियाँ। ये रूढ़ियाँ स्त्री की पराधीनता का कारण हैं। निराला जिस तरह समाज से ऊँच-नीच और जाति-प्रथा को मिटाना अपना राजनैतिक कर्तव्य समझते थे उसी प्रकार स्त्री के समान अधिकारों का संघर्ष स्वाधीनता आंदोलन का अभिन्न अंग मानते थे। 'विधवा', 'दीन', 'भिक्षुक' और 'तोड़ती पत्थर' शीर्षक कवितों में स्त्री का चित्रण देखें -

वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा-सी
वह दीपशिखा-सी शांत भाव में लीन
वह क्रूर काल-तांडव की स्मृति-रेखा-सी (विधवा)

श्याम तन, भर बंधा यौवन
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन (तोड़ती पत्थर)
सह जाते हो
उत्पीड़न की क्रीड़ा सदा निरंकुश नग्न,
हृदय तुम्हारा दुबला होता नग्न,
अन्तिम आशा के कानों में
स्पन्दित हम - सबके प्राणों में
अपने उर की तप्त व्यथाएँ,
क्षीण कण्ठ की करुण कथाएँ
कह जाते हो
और जगत की ओर ताककर
दुःख हृदय का क्षोभ त्यागकर,
सह जाते हो। (दीन)

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि निराला का दृष्टिकोण अलग है। परमानंद श्रीवास्तव का मानना है कि "निराला ने कविता के यथार्थ को यथातथ्यता की सीमा से बाहर व्यापक जीवनसमृद्धि के रूप में उपलब्ध किया।" (शब्द और मनुष्य, पृ. 12)। निराला की काव्य संवेदना के बारे में उनकी मान्यता है कि वह अधिक विषम, तीखी और उद्वेगकारी है। "निराला पहले महत्वपूर्ण आधुनिक कवि हैं, जिन्होंने कविता की मुक्ति को मनुष्य की मुक्ति का पर्याय माना।" (शब्द और मनुष्य, पृ. 12)। उन्होंने कविता के लिए 'मैं' शैली अपनाई -

मैंने 'मैं'- शैली अपनाई
देखा दुखी एक निज भाई
दुःख की छाया पड़ी हृदय में मेरे
झट उमड़ वेदना आई।

भारतीय जनता का दुख-दर्द और सामंती पूँजीवादी उत्पीड़न से वे इस कदर प्रचलित थे कि

समाजवादी व्यवस्था को कायम करने का सपना देखा। इसीलिए वे मनुष्य मात्र के बंधुत्व की घोषणा करते हैं -

मानव मानव से नहीं भिन्न
निश्चय, हो श्वेत, कृष्ण अथवा
वह नहीं क्लिन्न
भेद कर पंक
निकलता कमल जो मानव का
वह निष्कलंक
हो कोई सर (सम्राट अष्टम एड्वर्ड के प्रति)

निराला भारत के स्वाधीनता संग्राम से बंधे हुए थे। अतः वे सरस्वती से प्रार्थना करते हैं -

वर दे, वीणावादिनी वरदे
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे
वीणावादिनी वर दे

निराला की काव्य के संबंध में रामविलास शर्मा का कथन है कि "निराला के काव्य की विशेषता है, विरोधी तत्वों का संतुलन, उदात्त एवं अनुदात्त का समन्वय।" (निराला, पृ. 131)। उनकी काव्यभाषा में तत्समनिष्ठ शब्दों से लेकर बोलचाल के शब्द, अंग्रेजी और अरबी-फारसी के शब्दों को देखा जा सकता है। उनकी कविताओं में संगीतात्मकता को भी देखा जा सकता है। निराला को रामविलास शर्मा संघर्षों का कवि, क्रांतिकारी और युग-प्रवर्तक मानते हैं। 'सामाजिक यथार्थ और कविता का आत्मसंघर्ष' (पूर्वाग्रह 63-64) शीर्षक लेख में कुँवर नारायण लिखते हैं कि "निराला का निजी संसार उनकी कविता का उतना ही आवश्यक हिस्सा है जितना वह समाज जिसमें वे जी रहे हैं। खास बात है कि निराला की समझ और संवेदना का विस्तार उनकी कविताओं की रीढ़ है।" (शब्द और मनुष्य, पृ. 14 से उद्धृत)

बोध प्रश्न

- निराला के काव्य का सहज स्वर क्या है?
- निराला किसानों को क्यों जागृत करना चाहते थे?
- स्त्रियों के प्रति निराला की क्या दृष्टि थी?
- जाति-प्रथा के बारे में निराला का क्या मत था?

11.4 पाठ सार

हिंदी साहित्य में निराला का महत्वपूर्ण स्थान है। वे छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के निर्माण में वस्तुतः तत्कालीन परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका है। निराला भारतीय एवं विश्व राजनीति से भलीभाँति परिचित थे। उन्हें यह पता था कि जातिगत भेदभाव को समाज से दूर किए बिना राष्ट्रीयता का विकास नहीं किया जा सकता। वे मनुष्यता के पक्षधर थे। इसीलिए वे कविता की मुक्ति और मनुष्य की मुक्ति को पर्याय मानते

थे। उनकी रचना प्रक्रिया का स्रोत उनकी भावबोध है जो उनकी विचारधारा से संबद्ध है। निराला की रचनाओं का फलक विस्तृत है। उन्हें किसी कटघरे में बाँधना कठिन है।

11.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. निराला छायावाद के एक प्रमुख स्तंभ हैं।
2. निराला ने छायावाद का अतिक्रमण करके युग के अनुरूप प्रगतिवाद के आंदोलन को पुष्ट किया।
3. निराला उल्लास और सौंदर्य के कवि के साथ-साथ दुख और मृत्यु के कवि हैं।
4. निराला की कविता का स्रोत उनका व्यक्तिगत जीवन है।
5. निराला की रचना प्रक्रिया का स्रोत उनका भावबोध है। यह भावबोध उनकी वैचारिकता से संबद्ध है।
6. निराला का स्वाधीनता प्रेम उनके साहित्य में नए-नए रूपों में व्यक्त होता है।
7. निराला अपने ओज गुण के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके काव्य का सहज स्वर उदात्त है।
8. निराला ने कविता की मुक्ति को मनुष्य की मुक्ति का पर्याय माना।

11.6 शब्द संपदा

1. अंतर्वस्तु	=	मूल विषय
2. उत्कर्ष	=	उन्नति, विकास
3. उद्धत	=	प्रचंड
4. परिवेश	=	वातावरण
5. पूँजीवाद	=	ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमें निजी उद्योगों को बढ़ावा दिया जाता है
6. प्रतिकूल	=	विपरीत
7. प्रतिमान	=	आदर्श
8. प्रतीक	=	चिह्न
9. प्रागैतिहासिक	=	इतिहास में वर्णित और निश्चित काल से पहले का
10. यथार्थ	=	उचित, जैसा होना चाहिए ठीक वैसा
11. विचारधारा	=	सिद्धांत, मत
12. शिल्प	=	किसी कथाकार द्वारा अपनी रचनाओं में प्रयुक्त किया जाने वाला भाव्यभिव्यक्ति का विशिष्ट ढंग
13. सर्वहारा	=	समाज का वह वर्ग जो मजदूरी करके जीवन निर्वाह करता है

11.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

11.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1. वसंत पंचमी के दिन निराला का जन्मदिन मनाने की परंपरा कब से प्रारंभ हुई?

(अ) 1896 (आ) 1919 (इ) 1930 (ई) 1943

2. निराला की साहित्यिक यात्रा कब से शुरू हुई?

(अ) 1919 **(आ) 1920** (इ) 1923 (ई) 1936

3. निराला की पहली कविता का नाम क्या है?

(अ) अनामिका **(आ) जन्मभूमि** (इ) बेला (ई) तोड़ती पत्थर

4. इनमें से एक निराला की रचना नहीं है।

(अ) बादल राग (आ) कुकुरमुत्ता **(इ) कामायनी** (ई) तुलसीदास

5. निराला के निम्नलिखित रचनाओं का आरोह क्रम बताइए .

(अ) जुही की कली, अनामिका, परिमल, गीतिका

(आ) अनामिका, जुही की कली, परिमल, गीतिका

(इ) परिमल, जुही की कली, अनामिका, गीतिका

(ई) अनामिका, परिमल, गीतिका, जुही की कली

6. निराला के संपूर्ण जीवन को किसने 'आत्महंता आस्था' की संज्ञा दी है?

(अ) रामविलास शर्मा **(आ) दूधनाथ सिंह** (इ) नामवर सिंह (ई) आ. शुक्ल

7. 'निराला की साहित्य साधना' ग्रंथ के रचनाकार कौन हैं ?

(अ) रामविलास शर्मा (आ) दूधनाथ सिंह (इ) नामवर सिंह (ई) आ. शुक्ल

8. "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है" यह कथन किस है ?

(अ) रामविलास शर्मा (आ) दूधनाथ सिंह **(इ) निराला** (ई) आ. शुक्ल

9. वर दे, वीणावादिनि वर दे! यह पंक्तियाँ किस रचना से ली गई है ?

(अ) अनामिका (आ) परिमल **(इ) गीतिका** (ई) जुही की कली

10. गुलाब किस का प्रतीक है?

(अ) सर्वहारा **(आ) पूँजीवाद** (ई) दोनों का भी (ई) कोई नहीं

खंड (ब)

11.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. सामाजिक रूढ़ियों के संबंध में निराला के विचार स्पष्ट कीजिए।

2. हिंदी साहित्य में निराला का क्या स्थान है?
3. 'तोडती पत्थर' कविता का आशय समझाइए।
4. 'राम की शक्ति पूजा' कविता के माध्यम से कवि क्या समझाने का प्रयास किया है।

खंड (स)

11.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. निराला के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
2. निराला की रचना यात्रा को स्पष्ट कीजिए।
3. निराला के काव्यागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. अध्ययन के आधार पर निराला के प्रमुख रचनाओं की विशेषताओं के बारे में बताइए।
5. निराला की युगीन परिवेश पर प्रकाश डालते हुए उनकी रचनाओं की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।

11.8 पठनीय पुस्तकें

1. क्रांतिकारी कवि निराला : बच्चन सिंह
2. निराला : रामविलास शर्मा
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
4. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र
5. निराला - आत्महंता आस्था : दूधनाथ सिंह
6. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा
7. काव्य का देवता - निराला : विश्वंभर मानव
8. कवि निराला : नंददुलारे वाजपेयी

इकाई 12 : सरोज स्मृति : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

इकाई की रूपरेखा

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 मूल पाठ : सरोज स्मृति : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

12.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

12.3.2 अध्येय कविता

12.3.3 विस्तृत व्याख्या

12.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

12.4 पाठ सार

12.5 पाठ की उपलब्धियाँ

12.6 शब्द संपदा

12.7 परीक्षार्थ प्रश्न

12.8 पठनीय पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

छायावादी कवियों में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अनेक गद्य और पद्य रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। उनकी रचनाओं में उनके जीवन संघर्ष को भलीभाँति देखा जा सकता है। छायावादी कविता की विशेषता है वैयक्तिकता। यह वैयक्तिकता जयशंकर प्रसाद के यहाँ 'जो घनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति-सी छाई, दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आई' के रूप में अभिव्यक्त हुआ तो पंत के यहाँ 'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान, निकलकर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान' के रूप में और महादेवी वर्मा के यहाँ 'मैं नीर-भरी दुख की बदली, स्पंदन में चिर निस्पंद बसा' के रूप में अभिव्यक्ति पाई। निराला के यहाँ यही वैयक्तिकता 'दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही' के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। छात्रो! अब तक आप निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित हो ही चुके हैं। अब आप इस इकाई में निराला द्वारा रचित लंबी कविता 'सरोज स्मृति' का अध्ययन करेंगे।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत आप सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'सरोज स्मृति' के अंश का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप -

- 'सरोज स्मृति' की सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।
- 'सरोज स्मृति' की विशेषताओं को समझ सकेंगे।
- पठित कविता के आधार पर निराला के जीवन संघर्ष को समझ सकेंगे।
- 'सरोज स्मृति' में वर्णित निराला के आत्मसंघर्ष को निरूपित कर सकेंगे।

12.3 मूल पाठ : सरोज स्मृति : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

12.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

निराला की आत्मकथात्मक कविता है 'सरोज स्मृति'। यह कविता निराला की दिवंगत पुत्री सरोज की स्मृति पर केंद्रित है। यह बेटी के दिवंगत होने पर एक पिता का विलाप है। इस कविता में एक भाग्यविहीन पिता का संघर्ष, समाज से उनके संबंध, पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अकर्मण्यता बोध भी प्रकट हुआ है। इस कविता के माध्यम से कवि का जीवन संघर्ष भी प्रकट हुआ है।

निराला का जीवन आर्थिक विषमताओं के कारण अभावपूर्ण रहा। निराला की पत्नी का स्वर्गवास होने के बाद नन्ही सरोज अपने ननिहाल चली जाती है। आर्थिक अभावों के कारण निराला अपनी बेटी से मिलने के लिए भी नहीं जा पाते। वे अपनी असमर्थता को न केवल कोसते हैं बल्कि अपने आज तक के कर्ममय जीवन को भी अभिशाप देते हैं।

कवि निराला आजीवन साहित्य साधना में लगे रहे। लेकिन प्रकाशक और संपादक उनकी रचनाओं को किसी न किसी बहाने लौटा देते थे। हिंदी क्षेत्र के इस व्यवहार से कवि के स्वाभिमान को आहत पहुँचता है। इसके बावजूद वे किसी के सामने झुकते नहीं। धन कमाने की राह वे भी जानते थे लेकिन उस राह पर अत्याचार और भ्रष्टाचार को देखकर विचलित हो जाते थे। अतः वे कहते हैं कि अपने स्वार्थ पूर्ति के संघर्ष में वे हमेशा हारते ही रहे। वे सृजन कार्य को पेट पालने का साधन नहीं बनाना चाहते। यह उनकी विवशता है। अभावों की जिंदगी जीने के बावजूद कवि ने कभी भी किसी गरीब की रोटी नहीं छीनी। वे किसी के आँखों में आँसू नहीं दे सकते थे।

12.3.2 अध्येय कविता : सरोज स्मृति

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका!
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित-काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर।
शुचिते, पहनाकर चीनांशुक
रख सका न तुझे अत: दधिमुख।
क्षीण का न छीना कभी अन्न,

मैं लख न सका वे दृग विपन्न;
अपने आँसुओं अत: बिम्बित
देखे हैं अपने ही मुख-चित। (1)
सोचा है नत हो बार बार --
"यह हिंदी का स्नेहोपहार,
यह नहीं हार मेरी, भास्वर
यह रत्नहार-लोकोत्तर वर!" --
अन्यथा, जहाँ है भाव शुद्ध
साहित्य-कला-कौशल प्रबुद्ध,
हैं दिये हुए मेरे प्रमाण
कुछ वहाँ, प्राप्ति को समाधान (2)

निर्देश : 1. इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

12.3.3 विस्तृत व्याख्या

[1]

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका!
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित-काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर।
शुचिते, पहनाकर चीनांशुक
रख सका न तुझे अत: दधिमुख।
क्षीण का न छीना कभी अन्न,
मैं लख न सका वे दृग विपन्न;
अपने आँसुओं अत: बिम्बित
देखे हैं अपने ही मुख-चित।

शब्दार्थ : निरर्थक = व्यर्थ, धनहीन। अर्थागमोपाय = घन कमाने का ढंग। संकुचित काय = दुर्बल शरीर, संकोची स्वभाव, असमर्थ। लखकर = देखकर। स्वार्थ-समर = अपने लाभ का युद्ध। शुचिते= पावित्रे। चीनांशुक = चीन के रेशमी कपड़े। दधिमुख = प्रसन्न मुख। क्षीण = कमजोर। विपन्न = दुखी। बिम्बित = जिस पर बिंब पड़ा हो।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कृत 'सरोज स्मृति' से उद्धृत है।

प्रसंग : इस कविता में कवि बड़े ही करुण स्वर में अपनी बेटी सरोज की मृत्यु पर आँसू बहाते हैं

और जीवन तथा समाज के कठोर परिस्थितियों पर तीखा प्रहार करते हैं। बेटी सरोज की 19 वर्ष की आयु में मृत्यु की चर्चा करते हुए कहते हैं -

व्याख्या : ओ धन्य भागिनी पुत्री! मैं, तुम्हारा पिता धनहीन होने के कारण असमर्थ और व्यर्थ ही था। आह! तुम्हारे लिए जीवन में कुछ भी नहीं कर सका। मैं पूरी तरह से असमर्थ था। धन कमाने के अनेक उपाय जानते हुए भी मैं उस रास्ते पर चल ही नहीं पाया। उस राह पर चलने के लिए मेरा संकोची स्वभाव हमेशा ही बाधक बना रहा।

धन कमाने की राह पर अनेक प्रकार के अनर्थ अर्थात अन्याय, अत्याचार और भ्रष्टाचार देखकर मैं उस राह पर चल ही नहीं पाया और सदा अपने स्वार्थ पूर्ति के संघर्ष में हारता ही रहा। इसीलिए मैं तुझे न तो रेशमी कपड़े ही पहना सका और न ही तुझे प्रसन्न ही रख सका।

अपने जीवन में मैंने कभी भी किसी गरीब के हाथों से अन्न छीनने की कोशिश नहीं की। किसी भी दुखी व्यक्ति की आँखों में विपन्नता या दुख का भाव देखकर मैं सहन भी नहीं कर सका। स्वयं के आँसुओं से छाया हुआ इस जीवन-दर्पण में मैं अपने ही मुख और हृदय को बिंबित होता हुआ देख रहा था।

विशेष :

1. स्वयं कवि अभावों की जिंदगी जी रहे थे लेकिन कभी भी किसी दूसरे का हक नहीं छीना। और तो और वह दूसरों के दुखों को सहन नहीं कर सकते थे। यह इन पंक्तियों से द्रष्टव्य है - क्षीण का न छीना कभी अन्न/ मैं लख न सका वे दृग विपन्न
2. कवि के व्यक्तित्व, स्वभाव और दुर्बलताओं का स्पष्ट चित्र।
3. धन्ये, शुचिते जैसे संबोधन शब्दावली का प्रयोग।
4. तत्समनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग - अर्थागमोपाय, चीनांशुक, दधिमुख, क्षीण, दृग आदि।
5. स्वार्थ-समर - नूतन शब्द प्रयोग
6. चीनांशुक - चीन से आया हुआ रेशमी कपड़ा जो विशेष अवसरों पर संपन्न लोग पहनते हैं।
7. इस अंश में पितृ धर्म का निर्वाह न करने की व्यथा अंकित है।

बोध प्रश्न

- पठित अंश के आधार पर निराला के स्वभाव पर प्रकाश डालिए।
- इन पंक्तियों में निराला का जीवन संघर्ष कैसे मुखरित हुआ है? स्पष्ट कीजिए।
- 'जाना तो अर्थागमोपाय, / पर रहा सदा संकुचित-काय' - इन पंक्तियों का अर्थ समझाइए।

[2]

सोचा है नत हो बार बार --
"यह हिंदी का स्नेहोपहार,
यह नहीं हार मेरी, भास्वर
यह रत्नहार-लोकोत्तर वर!" --
अन्यथा, जहाँ है भाव शुद्ध
साहित्य-कला-कौशल प्रबुद्ध,

हैं दिये हुए मेरे प्रमाण
कुछ वहाँ, प्राप्ति को समाधान

शब्दार्थ : नत हो = झुककर, नम्रतापूर्वक। स्नेहोपहार = प्रेम भरी भेंट। भास्वर = उज्जवल। लोकोत्तर वर = अलौकिक वरदान।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कृत 'सरोज स्मृति' से उद्धृत है।

प्रसंग : कवि हिंदी प्रेमी हैं। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में मिलने वाले अनादर का वर्णन करते हुए कवि कह रहे हैं कि -

व्याख्या : मैंने अनेक बार झुककर अर्थात नम्रतापूर्वक सोचने का प्रयत्न किया है कि हिंदी में साहित्य सर्जक बनकर जो उपेक्षा, अपमान, आदि भेंट के रूप में जो गए हैं, वे सब मेरे हार के परिचायक नहीं हैं, बल्कि एक उज्ज्वल अलौकिक रत्न-हार के समान हैं। इन्हें पाकर मैं इस विषमता में भी प्रसन्ना का अनुभव कर रहा हूँ।

जहाँ साहित्य और कला के शुद्ध भाव विद्यमान है, वहाँ मेरा भी कुछ देन है - योगदान है। गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में अभ्यस्त कवि की लेखनी की कुशल कला जीवन में धन प्राप्ति का मध्यम बन सकती है। ऐसा करके कवि अपनी दीनता का समाधान भी कर सकता है, पर उन्होंने सृजन कार्य को पेट पालने का साधन नहीं बनाना चाहा। इसे कवि अपनी विवशता मानते हैं, कुछ और नहीं।

विशेष :

1. इन पंक्तियों में आत्मविश्लेषण का भाव झलकता है। निराला आजीवन साहित्य की सेवा में लीन रहे। लेकिन कुछ तथाकथित प्रकाशक और संपादक उनकी रचनाओं को जटिल, क्लिष्ट, निरर्थक आदि कहकर अस्वीकार कर देते थे। हिंदी क्षेत्र का यह व्यवहार कवि के स्वाभिमान को आहत करने वाला था। इसके बावजूद कवि का स्वाभिमानी व्यक्तित्व किसी के समक्ष नहीं झुका। उसने इसे व्यवहार को भी सकारात्मक रूप से अपनाया और एक उज्ज्वल अलौकिक रत्न-हार के समान स्वीकार किया।
2. अपनी असमर्थता की अभिव्यक्ति।
3. तत्समनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग।

बोध प्रश्न

- अपने शब्दों में कवि की असमर्थता का चित्रण कीजिए।
- 'साहित्य-कला-कौशल प्रबुद्ध/ हैं दिये हुए मेरे प्रमाण' इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।
- साहित्य के क्षेत्र में जो उपेक्षा और अपमान कवि को सहना पड़ा उसे कवि ने किस रूप में स्वीकार किया?

12.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

'सरोज स्मृति' को हिंदी में 'एलेजी' कहा जाता है। एलेजी वस्तुतः एक यूरोपीय काव्य-विधा है। यूनानी भाषा में आरंभिक काल में एलेजी का विषय मृत्यु नहीं बल्कि युद्ध और प्रेम होता था। सोलहवीं शताब्दी में अंग्रेजी में आकार 'एलेजी' शोक गीत बन गई। अर्थात उसका

विषय हुआ किसी व्यक्ति विशेष की मृत्यु पर किया जानेवाला आलाप। कहा जाता है कि 16 वीं सदी से शोक गीत के लिए 'एलेजी' का प्रयोग रूढ़ हो गया। ग्रे की प्रसिद्ध कविता 'रिटन इन ए कंट्री चर्चयार्ड' को कुछ विद्वानों ने एलेजी माना पर यह कविता किसी व्यक्ति की मृत्यु पर केंद्रित नहीं है बल्कि यह संपूर्ण जीवन पद्धति पर लिखा गया एक शोक गीत है। एलेजी में कथातत्व के साथ-साथ स्मृतियाँ और संस्मरण भी होते हैं।

'सरोज स्मृति' को हिंदी में शोक गीता की संज्ञा से अभिहित किया गया है क्योंकि कवि ने यह कविता अपनी पुत्री सरोज की मृत्यु पर लिखी थी। इस कविता का आधार स्मृति है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि विलियम वड्र्सवर्थ की कविता 'सर्पराइसड़ बाइ जाय' का याद आना स्वाभाविक है क्योंकि यह कविता उन्होंने अपनी पुत्री कैतरीन की मृत्यु पर लिखी थी। उनकी पुत्री का निधन 1812 में तीन वर्ष की आयु में हुआ था।

'सरोज स्मृति' आत्मकथात्मक कविता है। भले ही अंतर्वस्तु के धरातल पर इसे एलेजी/ शोक गीत कहा जा सकता है लेकिन संपूर्ण कविता मूलतः स्मृति है। कविता बार-बार कवि की आर्थिक विपन्नता से उत्पन्न विवशता की ओर संकेत करती है। 'स्मृति' इस कविता की रचना का केंद्रबिंदु है। यह स्मृति कवि के अतीत से वर्तमान की ओर यात्रा करती है। इस कविता में निराला का जीवन संघर्ष अलग रूप में अभिव्यक्त हुआ है। निराला ने कविता के लिए अपनी निजी काव्यात्मक शैली प्रस्तुत की है। इस कविता का एक सामाजिक पक्ष भी है जो वर्ण व्यवस्था और दहेज से जुड़ा हुआ है।

बोध प्रश्न

- 'सरोज स्मृति' किस प्रकार की रचना है?
- 'एलेजी' किसे कहते हैं?
- 'सरोज स्मृति' में निहित सामाजिक पक्ष क्या है?
- इस कविता का केंद्रबिंदु क्या है?

'सरोज' स्मृति' शीर्षक कविता की कलात्मक सौंदर्य को समझने के लिए कविता की संरचना पर दृष्टि केंद्रित करना आवश्यक है। शीर्षक में जो 'स्मृति' शब्द है यह केवल एक काव्य विधा की सूचक नहीं है बल्कि उसमें कविता की संरचना से संबंधित तथ्य निहित है। संपूर्ण कविता एक स्मृति है। इसमें क्रमबद्ध रूप से मृत व्यक्ति सरोज की कथा कही गई है। रामविलास शर्मा 'निराला की साहित्य साधना' में कहते हैं कि 'सरोज स्मृति' में सपनों का बिखराव अपेक्षाकृत ज्यादा है। एक सपना साहित्य संग्राम का है, दूसरा सपना सरोज के शैशवकाल का, तीसरा सपना वापस आई रचनाओं को लेकर घास नोचने का, चौथा सपना सरोज द्वारा कुंडली को फाड़ देने का, पाँचवा सपना कान्यकुब्ज कुलाँगों का, छठा सपना सरोज के विवाह का, सातवाँ सपना पुत्री के तर्पण का। (कविता : पहचान का संकट, नंदकिशोर नवल पृ. 132-133)।

बोध प्रश्न

- 'सरोज स्मृति' शीर्षक में प्रयुक्त 'स्मृति' शब्द किसका सूचक है?
- 'सरोज स्मृति' में किन सपनों का बिखराव है?

निराला के जीवन की सबसे त्रासद घटना अर्थात बेटी की मृत्यु इस कविता का मुख्य

आधार है। रामविलास शर्मा ने लिखा है कि उस समय निराला लखनऊ में थे और विकट आर्थिक संघर्ष में पड़े थे। 'निराला की साहित्यिक साधना' के तृतीय भाग में रामविलास शर्मा ने निराला के पत्र संकलित किए हैं। उन्हीं के आधार पर निराला की पुत्री सरोज की बीमारी और मृत्यु संबंधी तथ्य उपलब्ध होते हैं।

'सरोज स्मृति' के प्रतिपाद्य को समझने के लिए निराला की मनःस्थिति और तत्कालीन परिस्थितियों को जानना आवश्यक है। इस कविता का आरंभ सरोज की मृत्यु पर कवि की स्मृति से होता है। कहा जा सकता है कि इन पंक्तियों में कवि ने सार रूप में सारा दुखद प्रसंग प्रस्तुत कर दिया है -

ऊनविंश पर जो प्रथम चरण
तेरा वह जीवन-सिन्धु-तरण;
तनये, ली कर दृक्पात तरुण
जनक से जन्म की विदा अरुण!
गीते मेरी, तज रूप-नाम
वर लिया अमर शाश्वत विराम

सरोज की मृत्यु की घटना को निराला अलौकिक रूप प्रदान करते हैं। कहते हैं कि सरोज मरी नहीं है, उसने तो पूर्ण आलोक का वर्ण किया है। वे आगे कहते हैं कि अट्ठारह अध्यायों वाली जीवन-गीत पूरा होने क बाद सरोज ने नाम रूप को त्याग कर अमर शाश्वत विराम प्राप्त किया है। अतः इसे मरण नहीं कहा जाता। कवि कहते हैं कि ज्योति से खिलनेवाले सरोज ज्योति में ही लीन हो गई। वे यह भी कहते हैं कि वृद्धावस्था में जब कवि अशक्त हो जाएँगे तब सरोज उन्हें सहारा प्रदान करके अँधेरे से भरा हुआ इस भवसागर को पार करा सकेगी -

पूरे कर शुचितर सपर्याय
जीवन के अष्टादशाध्याय,
चढ़ मृत्यु-तरणि पर तूर्ण-चरण
कह - "पितः, पूर्ण आलोक-वरण
करती हूँ मैं, यह नहीं मरण,
'सरोज' का ज्योतिः शरण - तरण!"

सरोज की मृत्यु के समय कवि की आर्थिक परिस्थिति निराशाजनक थी। अतः सरोज की देख-रेख न कर पाने की वेदना कवि को कचोटती रही -

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका!
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित-काय

लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर।

सरोज जब सवा साल की थी तब उनकी माँ की मृत्यु हुई और नन्ही सरोज नानी की गोद में पलने लगी -

तू सवा साल की जब कोमल
पहचान रही ज्ञान में चपल
माँ का मुख, हो चुम्बित क्षण-क्षण
भरती जीवन में नव जीवन,
वह चरित पूर्ण कर गई चली
तू नानी की गोद जा पली।

कवि का जीवन आर्थिक विषमताओं के कारण अभावपूर्ण रहा। इसी करण वह अपनी पुत्री का भार भी वहन नहीं कर सका। कवि पर दूसरा विवाह कर लेने का दबाव था लेकिन किसी भी रूप में वह तैयार नहीं था -

इससे पहिले आत्मीय स्वजन
सस्नेह कह चुके थे जीवन
सुखमय होगा, विवाह कर लो

सरोज बड़ी होती गई -

धीरे-धीरे फिर बढ़ा चरण,
बाल्य की केलियों का प्रांगण
कर पार, कुंज-तारुण्य सुघर
आईं, लावण्य-भार थर-थर

तो सरोज की नानी उसके किशोरवय को भाँपकर कवि को सलाह देती हैं कि सुयोग्य वर ढूँढ़कर उसका कन्यादान करें। विवाह की स्वाभाविक चिंता और आर्थिक विपन्नता ने कवि के माथे की लकीरों को और भी गहरी कर दीं। कवि को परंपरागत रूढ़ियों के प्रति कोई आस्था न थी। लेकिन कवि का यह सपना अवश्य था कि अपनी पुत्री के लिए सुयोग्य वर ढूँढ़ सके। वे दहेज के विरोधी थे। इतना ही नहीं उन्होंने सभी प्रकार की परंपराओं को तोड़कर सरोज का विवाह कर दिया -

तुम करो ब्याह, तोड़ता नियम
मैं सामाजिक योग के प्रथम,
लग्न के; पढ़ूंगा स्वयं मंत्र
यदि पंडितजी होंगे स्वतन्त्र।
जो कुछ मेरे, वह कन्या का,

निश्चय समझो, कुल धन्या का

अपने ससुराल में कुछ दिन रहकर सरोज नानी के घर वापस आ जाती है। वहीं बीमार पड़ती है और अस्वस्थता के कारण उसका निधन हो जाता है। आर्थिक अभाव के कारण पुत्री का ठीक इलाज न करा सकने की असमर्थता ने कवि को तोड़कर रखा दिया था। यह दुख कवि के अंतःकरण को सालता रहा।

सरोज का विवाह बारह-तेरह वर्ष की आयु में 1929 की जुलाई में हुआ। शिवपूजन सहाय को अप्रैल 1932 में लिखे गए निराला के दो पत्रों से यह पता चलता है कि सरोज विवाह के दो वर्ष बाद बीमार पड़ी। ये दोनों पत्र निराला ने अपने गाँव गढ़कोला से लिखा था। पहले पत्र में उन्होंने लिखा था - "मेरी लड़की सख्त बीमार है। 4 महीने से रायबरेली अस्पताल में पड़ी है। बड़ी संकटमय अवस्था है।" (निराला और मुक्तिबोध : चार लंबी कविताएँ, पृ.10 से उद्धृत)। दूसरे पत्र में उन्होंने इस तरह लिखा है - "मैं इस समय विषादग्रस्त रहता हूँ। मेरी लड़की तीन महीने से रायबरेली-अस्पताल-दाखिल है। बहुत बड़ा operation हुआ था। जीने की आशा नहीं थी, हुई, अब फिर जा रही है। बाएँ स्तन की बगल से अस्त्रक्रिया हुई है। घाव अच्छा नहीं हो रहा है। दो रोज हुए खून परीक्षा के लिए लखनऊ भेजा गया।" (वही)। बचपन से नानी की गोद में पली सरोज उन्हीं की गोद में अपनी अंतिम साँस ली -

वह लता वहीं की, जहाँ कली
तू खिली, स्नेह से हिली, पली,
अंत भी उसी गोद में शरण
ली, मूंदे दृग वर महामरण!

बेटी की आवश्यक सेवा-सुश्रुषा न कर पाने की एक पिता कि चिंता 'सरोज स्मृति' में ढली। इस कविता की केंद्रीय पंक्तियाँ हैं -

दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ, आज जो नहीं कही

ये पंक्तियाँ कवि की पीड़ा और जीवन संघर्ष को व्यंजित करती हैं।

बोध प्रश्न

- निराला के जीवन की सबसे त्रासद घटना क्या है?
- "पित:, पूर्ण आलोक-वरण/ करती हूँ मैं, यह नहीं मरण,/ 'सरोज' का ज्योति: शरण - तरण!" इन पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
- 'सरोज स्मृति' की केंद्रीय पंक्तियाँ क्या हैं?
- अपने शब्दों में कवि के जीवन संघर्ष को व्यक्त कीजिए।

'सरोज स्मृति' में सरोज के बाल्यकाल, विवाह और मृत्यु का चित्रण तो है ही साथ ही निराला का जीवन संघर्ष भी अंकित है। अपनी असमर्थता को कवि कोसते हैं -

हो इसी कर्म पर वज्रपात

यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट शीत के-से शतदल!
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण

'सरोज स्मृति' में अंधकार है, युद्ध है। और कवि का यह युद्ध संपादकों, आलोचकों, प्रकाशकों और कान्यकुब्ज कुलकुलंगारों से है। तथाकथित संपादक और प्रकाशक उनकी रचनाओं को वापस लौटा देते थे। इससे वे अत्यंत विचलित हो जाते हैं। 12.8.37 को आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखे हुए पत्र में सूचित किया है कि "मैं जो कुछ लिखता हूँ साहित्य समझ कर। नहीं बन पड़ता, मेरे कमजोरी है। लोग क्या चाहते हैं लोग जाने। में क्या देता हूँ मैं समझता हूँ।" (जानकीवल्लभ शास्त्री, निराला के पत्र, पृ.120)।

'सरोज स्मृति' में कवि पूर्वदीप्ति शैली को अपनाया है। एक स्मरण चित्र के भीतर अनेक स्मरण चित्रों को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत किया गया है। डॉ बच्चन सिंह का कथन है कि "सरोज एवं शकुंतला की विदाई की तुलना करके कवि ने सामाजिक अव्यवस्था का चित्रण किया है। शकुंतला की विदाई के समय कण्व ऋषि भी अकेले थे और सरोज की विदाई के समय निराला भी। कवि दहेज जैसी सामाजिक विभीषिका का विरोध करते हैं -

जो कुछ है मेरा अपना धन
पूर्वज से मिला, करूँ अर्पण
यदि महाजनों को तो विवाह
कर सकता हूँ, पर नहीं चाह
मेरी ऐसी, दहेज देकर
मैं मूर्ख बनूं यह नहीं सुघर,
बारात बुला कर मिथ्या व्यय
मैं करूँ नहीं ऐसा सुसमय।

निराला ने धर्म की पाखंडी प्रवृत्तियों का भी खुलकर विरोध किया है -

ये कान्यकुब्ज-कुल कुलांगार,
खाकर पत्तल में करें छेद,
इनके कर कन्या, अर्थ खेद,
इस विषय-बेलि में विष ही फल,
यह दग्ध मरुस्थल - नहीं सुजल।

सूर्यप्रसाद दीक्षित लिखते हैं कि 'सरोज स्मृति' इस बात का भी प्रमाण है कि व्यक्ति की

पीड़ा सामाजिकता का स्पर्श करते हुए युग की पीड़ा बन जाती है। "सरोज स्मृति केवल आत्मकथा नहीं है, लेकिन अपनी कहानी के माध्यम से एक-एक कर सामाजिक रूढ़ियों के पोषकों और अर्थ पिशाचों पर किए गए प्रहार का घोषणा पत्र है।' (निराला समग्र, पृ. 54)

बोध प्रश्न

- 'सरोज स्मृति' में कवि ने किन रूढ़ियों पर प्रहार किया?

12.4 पाठ सार

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आपको यह स्पष्ट हो ही चुका है कि 'सरोज स्मृति' निराला ने अपनी दिवंगत पुत्री सरोज की स्मृति में लिखी थी। यह आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया शोक गीत है। इस कविता के आरंभ में ही कवि ने सार रूप में सारा दुखद प्रस्तुत कर दिया है। 19 वें वर्ष में प्रवेश करते ही अस्वस्थता के कारण सरोज का निधन हो गया। कवि इसे मृत्यु नहीं मानते बल्कि वे कहते हैं कि बुढ़ापे में अशक्त पिता को इस भवसागर से पार कराने के लिए उनकी बेटी आलोक को वरण किया है। उनकी आर्थिक परिस्थिति निराशाजनक थी। अतः अपनी बेटी की देख-रेख न कर पाने की वेदना उन्हें जीवन भर कचोटती रही।

निराला अपनी आर्थिक विषमता को कोसते रहे। वे धन कमाने के उपाय जानते थे लेकिन उनका स्वाभिमानी मन उस राह पर चलने के लिए तैयार नहीं था। क्योंकि उस राह पर भ्रष्टाचार और अन्याय का साम्राज्य था। वे विषम परिस्थितियों में भी घुटने नहीं ठेके।

निराला आजीवन साहित्य सृजन में ही लीन रहे। लेकिन साहित्य सृजन को उन्होंने कभी भी पेट पालने का साधन नहीं बनाया। हिंदी साहित्यिक क्षेत्र के संपादक और प्रकाशक उनकी रचनाओं को लौटा देते हैं। उन्हें अपमान और तिरस्कार झेलना पड़ा था। लेकिन निराला इसे अपने योगदान के लिए उपहार माना था। इससे उनकी सकारात्मक दृष्टि का परिचय मिलता है। इस कविता में एक ओर कवि की बेटी की स्मृतियाँ अंकित है तो दूसरी ओर कवि की विवशता।

12.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. 'सरोज स्मृति' आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई एक लंबी कविता है जो मूलतः एक 'शोक गीत' है।
2. 'शोक गीत' या 'एलेजी' एक यूरोपीय काव्य विधा है। इसमें किसी व्यक्ति विशेष की मृत्यु पर किया जाने वाला विलाप शामिल होता है।
3. 'सरोज स्मृति' का आधार कवि की दिवंगत पुत्री की 'स्मृति' है। यह स्मृति कवि के अतीत से लेकर वर्तमान की ओर यात्रा करती है।
4. निराला का जीवन संघर्ष भी इस कविता में व्यक्त हुआ है।
5. इस कविता से यह भी पता चलता है कि आर्थिक परिस्थिति निराशाजनक होने पर भी निराला ने कभी हार नहीं मानी।
6. आर्थिक अभावों के बावजूद निराला का स्वाभिमानी मन कभी भी भ्रष्ट पथ पर जाने के लिए

तैयार नहीं हुआ।

7. निराला जड़ रूढ़ियों के घोर विरोधी थे।

12.6 शब्द संपदा

1. अंतर्वस्तु	=	अंतः सार, किसी कृति का कथ्य या विषय वस्तु
2. अकर्मण्यता	=	आलस, निरुत्साह, निक्म्मापन
3. अभिशाप	=	शाप, दोषारोपण
4. अलौकिक	=	जो इस लोक का न हो, दिव्य
5. अव्यवस्था	=	व्यवस्था का अभाव, अनुशासनहीनता
6. अशक्त	=	कमजोर, शक्तिविहीन
7. आहत	=	चोट खाया हुआ, घायल
8. कान्यकुब्ज	=	कान्यकुब्ज क्षेत्र का निवासी, उक्त क्षेत्र में रहने वाले ब्राह्मणों का एक वर्ग
9. कुंडली	=	जन्मपत्री
10. तर्पण	=	तृप्त करने की क्रिया, देवताओं और पितरों को तिल या चावल मिला हुआ जल देने की क्रिया
11. दिवंगत	=	मृत, स्वर्गवासी
12. विभीषिका	=	त्रास, भय, डर दिखाना
13. विलाप	=	रोना
14. विषमता	=	कठिनाई
15. वृद्धावस्था	=	बुढ़ापा
16. संघर्ष	=	प्रतियोगिता, स्पर्धा
17. स्मृति	=	अतीत की घटनाओं को याद करना
18. स्वाभिमान	=	आत्मगौरव, आत्मसम्मान

12.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

12.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1. हिंदी साहित्य में 'सरोज स्मृति' को किस काव्य-विधा के अंतर्गत रखा जाता है?

A) खंड काव्य B) प्रबंध काव्य C)वीरगाथा **D) शोक गीत (एलेजी)**

2. कविता में निराला ने स्वयं को 'निरर्थक' पिता क्यों कहा है?

A) क्योंकि वे अपनी पुत्री से प्रेम नहीं करते थे।

B) क्योंकि वे अपनी पुत्री के लिए कुछ भी आर्थिक सहायता या सुख-सुविधा नहीं जुटा सके।

C) क्योंकि उन्होंने अपनी पुत्री की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया।

D) क्योंकि वे अपनी पुत्री के विवाह के विरोधी थे।

3. निराला के अनुसार, उन्होंने धन कमाने के मार्ग (अर्थागमोपाय) पर चलना क्यों स्वीकार नहीं किया?

A. क्योंकि उन्हें धन कमाने की विधियों का ज्ञान नहीं था।

B.क्योकि उनके परिवार ने उन्हें धन कमाने से रोका था।

C.क्योंकि उस मार्ग पर उन्हें भ्रष्टाचार, अन्याय और अनर्थ दिखाई दिया।

D.क्योकि वे बहुत आलसी स्वभाव के थे।

4. सरोज का पालन-पोषण मुख्य रूप से कहाँ हुआ था?

A) उसके ननिहाल में B) उसके ससुराल में

C) एक बोर्डिंग स्कूल में D) उसके पिता के घर पर

5. 'चीनांशुक' शब्द का कविता में क्या अर्थ है?

A) चीन से लाया गया रेशमी कपड़ा B) एक प्रकार की चीनी मिठाई

C) पुत्री को दिया गया एक संबोधन D) चीन की कोई युद्ध कला

6. निराला ने संपादकों द्वारा अपनी रचनाओं के लौटाए जाने को किस रूप में स्वीकार किया?

A) हिंदी के स्नेहोपहार और रत्नहार के रूप में B) साहित्यिक समाज के प्रति घृणा के रूप में

C) अपनी हार के रूप में D) अपनी अयोग्यता के प्रमाण के रूप में

7. सरोज के विवाह के संदर्भ में निराला ने किन सामाजिक परंपराओं को चुनौती दी?

A) उन्होंने दहेज का विरोध किया और पंडितों के बिना स्वयं मंत्र पढ़ने की बात कही।

B) उन्होंने बाल विवाह का समर्थन किया।

C) उन्होंने अंतरजातीय विवाह का समर्थन किया।

D) उन्होंने विवाह समारोह में मांस के प्रयोग का विरोध किया।

8. रामविलास शर्मा के अनुसार, 'सरोज स्मृति' में कितने सपनों का बिखराव है?

A) तीन **B) सात** C) दस D) पाँच

9. कविता की केंद्रीय पंक्ति 'दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही' क्या अभिव्यक्त करती है?

A) कवि का आत्म-संघर्ष और आजीवन झेली गई पीड़ा B) सामाजिक उत्सवों का वर्णन

C) कवि का सुखद पारिवारिक जीवन D) भविष्य के प्रति उनकी आशावादिता

10. निराला ने अपनी पुत्री की मृत्यु को 'मरण' न मानकर क्या माना है?

A) पुनर्जन्म की तैयारी B) एक लंबी निद्रा

C) पूर्ण आलोक-वरण और ज्योति-शरण D) एक सामाजिक अभिशाप

खंड (ब)

12.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. कवि निराला के जीवन संघर्ष पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
   कुछ भी तेरे हित न कर सका!
   जाना तो अर्थागमोपाय,
   पर रहा सदा संकुचित-काय
   इस अंश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
3. सोचा है नत हो बार बार --
   "यह हिंदी का स्नेहोपहार,
   यह नहीं हार मेरी, भास्वर
   यह रत्नहार-लोकोत्तर वर!" - इस अंश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

12.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'सरोज समृति' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. पठित अंशों के आधार पर 'सरोज स्मृति' में वर्णित निराला के आत्मसंघर्ष को निरूपित कीजिए।
3. 'सरोज समृति' निराला के जीवन की त्रासदी की कथा कहती है। इस उक्ति को पठित कविता के आधार पर समझाइए।

12.8 पठनीय पुस्तकें

1. निराला की साहित्य साधना : रामविलास शर्मा
2. निराला और मुक्तिबोध - चार लंबी कविताएँ : नंदकिशोर नवल
3. निराला : रामविलास शर्मा
4. राग-विराग : निराला
5. निराला - कृति से साक्षातकार : नंदकिशोर नवल
6. कविता - पहचान का संकट : नंदकिशोर नवल
7. जानकीवल्लभ शास्त्री : निराला के पत्र
8. निराला समग्र : सूर्यप्रसाद दीक्षित

इकाई 13 : नागार्जुन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इकाई की रूपरेखा

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 मूल पाठ : नागार्जुन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

13.3.1 जन्म एवं शिक्षा

13.3.2 साहित्य यात्रा तथा गृहस्थ से बौद्ध धर्मानुयायी बनने की यात्रा

13.3.3 नागार्जुन का व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन

13.3.4 नागार्जुन का समकालीन परिवेश और उसका नागार्जुन पर प्रभाव

13.3.5 नागार्जुन का कृतित्व

13.3.6 नागार्जुन के काव्य में संवेदना रूप

13.4 पाठ सार

13.5 पाठ की उपलब्धियाँ

13.6 शब्द संपदा

13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

13.8 पठनीय पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना

प्रेमचंदोत्तर साहित्यकारों में नागार्जुन एक ऐसे विलक्षण उपन्यासकार हैं, जिन्होंने पूरी ईमानदारी और निर्भीकता के साथ अपने समय की विभिन्न समस्याओं की सार्थक अभिव्यक्ति की है। नागार्जुन का नाम विशेष रूप से एक व्यंग्यकारी साहित्यकार के रूप में लिया जाता है। उन्होंने प्रायः सभी सामयिक विसंगतियों और विडम्बनाओं को आधार बनाकर सामाजिक क्रांति की इच्छा रखते हुए अपनी रचनाओं के द्वारा तीव्र व्यंग्य किया है। नागार्जुन समाज तथा देश के प्रति जागरूक एवं समर्पित कवि रहे हैं। उनकी कविता में सर्वहारा वर्ग के संघर्ष का स्वर अधिक तीव्र है। देश की वर्ग भेद नीति तथा नेताओं की स्वार्थपरकता से उनका हृदय आहत हुआ। प्रगतिशील कवि होने के नाते उन्होंने क्रांति का रास्ता अपनाया और जनभाषा को अपना शस्त्र बनाया।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- कवि नागार्जुन के संपूर्ण जीवन को जान सकेंगे।
- नागार्जुन के व्यक्तित्व को समझ सकेंगे।
- नागार्जुन की रचनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- नागार्जुन की रचनाओं की विशेषताओं को समझ सकेंगे।

13.3 मूल पाठ : नागार्जुन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

13.3.1 जन्म एवं शिक्षा

नागार्जुन के पूर्वज बिहार के दरभंगा जिले में स्थित तर्रानी के वत्स गोत्र के ब्राह्मण थे। पिता श्री गोकुल मिश्र तथा उससे पूर्व की तीन-चार पीढ़ियों के पूर्वज कम पढ़े-लिखे थे। वे गाँव में खेती-बाड़ी करते थे तथा अंग्रेजों के परिवार की देखभाल करते थे। नागार्जुन के पिता लापरवाह, मस्तमौला, घुमक्कड़ और दायित्व-भार से पलायन करनेवाले थे। नागार्जुन की माँ उमा देवी सीधी-सादी ग्रामीण महिला थीं। नागार्जुन का जन्म उनके ननिहाल में हुआ था। चार वर्ष की अवस्था में ही उनके सिर से माँ का साया उठ गया था इसलिए बचपन में कुछ साल उन्हें ननिहाल में ही रहना पड़ा। उन दिनों उच्च तथा निम्न वर्गों में शिक्षा के प्रति विशेष रूचि नहीं थी तथापि ब्राह्म वर्ग अपने बच्चों को हर स्थिति में पढ़वाने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। नागार्जुन के पिता उन्हें अंग्रेजी स्कूल में पढ़ाने में सक्षम नहीं थे। अतः उनका दाखिला संस्कृत पाठशाला में करवाया गया। उन्होंने संस्कृत में आचार्य (साहित्य शास्त्र) की परीक्षा सम्मानपूर्ण श्रेणी में उत्तीण की। इसके बाद 13 साल की आयु में वे घर छोड़कर अध्ययन के लिए निकल पड़े। ये जो यात्रा उन्होंने 13 साल की आयु में शुरू की थी जीवनपर्यंत अब उनके 'यात्री' बनने की आधारशिला ही थी।

बोध प्रश्न

- नागार्जुन के पिता का नाम क्या था?
- नागार्जुन के माता का नाम क्या था?
- नागार्जुन ने कौन-सी परीक्षा पास की थी?
- किस आयु में नागार्जुन घर छोड़कर निकले थे?

13.3.2 साहित्य यात्रा तथा गृहस्थ से बौद्ध धर्मानुयायी बनने की यात्रा

वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' का असली नाम है। वैद्यनाथ ने सन् 1930 ई. के आसपास सर्वप्रथम मैथिली में कविताएँ लिखना प्रारंभ किया। मैथिली की प्रथम रचना 'लहरिया सराय' से प्रकाशित 'मासिक पत्रिका मिथिला' में प्रकाशित हुई थी। काशी पहुँचने से पहले ही संस्कृत

भाषा में अनुष्टुप, बसंततिलका, शिखरिणी आदि छंदों की रचना प्रारंभ कर दी थी। काशी में कविरत्न सीमाराम झा से परिचित होने पर भाषा, छंद आदि का अभ्यास उनके लिए सहज हो गया था। हिंदी में सर्वप्रथम सन् 1935 ई. उनकी कविता 'राम के प्रति' लाहौर से प्रकाशित विश्व-बंधुत्व में छपी थी। वैद्य ने मैथिली में 'यात्री', हिंदी में 'नागार्जुन' नाम से साहित्य सृजन किया है।

नागार्जुन का विवाह अपराजिता देवी के साथ हुआ था। उस समय वे कलकत्ता में अध्ययन कर रहे थे। सन् 1934 में वे घर छोड़कर बाहर चले गये। लगभग ढाई वर्ष तक राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, गुजरात आदि प्रदेशों में घुमक्कड़ के रूप में रहे। भारत में भ्रमण करते समय उनका परिचय जैन-मुनियों से भी हुआ। उन्होंने प्राकृत भाषा को सीखने का प्रयास किया साथ ही बौद्ध ग्रंथों के अवलोकन और अध्ययन से नागार्जुन की जिज्ञासा बढ़ उठी वे बौद्ध धर्म को समझने के लिए व्याकुल हो उठे। सन् 1936 में वे सिंहलद्वीप जा पहुँचे। कोलंबो के निकट कोलंबिया के विद्यालंकार परिवेश में आचार्य वैद्यनाथ ने बौद्धधर्म की दीक्षा ग्रहण की। राहुल सांस्कृत्यायन, भदंत कौशल्यायन्, आचार्य जगदीश कश्यप आदि भारतीय विद्वान नागार्जुन के गुरूभाई थे। वे स्वयं भी पालि के माध्यम से बौद्धदर्शन का अध्ययन करने लगे। सन् 1938 में बिहार सरकार ने राहुल सांस्कृत्यायन की प्रेरणा से तिब्बत में अनुसंधान कार्यों के लिए नागार्जुन को ल्हासा भेजने के लिए बुलाया। नागार्जुन 'विद्यालंकार परिवेश' में आचार्यों के रोकने पर भी भारत लौट आये। इस प्रकार वे वैद्यनाथ मिश्र से भिक्षु नागार्जुन बनकर लौटे।

बोध प्रश्न

- नागार्जुन का असली नाम क्या है?
- वैद्यनाथ मिश्र किस नाम से मैथिली में लिखा करते थे?
- नागार्जुन का विवाह किनके साथ हुआ था?नागार्जुन सिंहलद्वीप कब पहुँचे?

13.3.3 नागार्जुन का व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के पर्सनलिटी शब्द का पर्यायवाची माना गया है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन के पर्सीना शब्द से मानी गयी है। पर्सीना शब्द का प्रयोग मूलतः नाटक के पात्रों द्वारा प्रयुक्त मुखौटे (नकली चेहरे) से होता है। अब व्यक्तित्व से तात्पर्य व्यक्ति के ब बाह्य आभास एवं अंतर्मन से लिया जाने लगा है।

पोर्ट के शब्दों में, "व्यक्ति का विशेष गुण ही उसका व्यक्तित्व है। इस विशेष गुण से उसके सोचने, विचारने, लिखने तथा जीवनयापन का रंग-ढंग आता है। शरीर की बनावट, जीवन मूल्य, मनोवृत्तियाँ, आदतें आदि भी इसी में सम्मिलित होते हैं।"

मन के शब्दों में, "व्यक्तित्व एक व्यक्ति के गठन, व्यवहार के तरीकों, रूचियाँ, दृष्टिकोण, योग्यताओं और तरीकों का सबसे विशिष्ट संगठन है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि 'व्यक्तित्व' एक ऐसा ढाँचा है जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से पृथक करता हैं अतः 'व्यक्तित्व' शारीरिक एवं मानसिक प्रवृत्तियों का पुंज है। जनसाधारण में व्यक्ति के व्यक्तित्व का अर्थ बाह्य गुणों से लगाया जाता है। दर्शन में व्यक्तित्व का अर्थ किसी स्थिर अवस्था से न होकर गतिशील क्रियाकलापों से लिया जाता है। किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व को समझने के लिए उसके आंतरिक, बाह्यिक और दार्शनिक विचारधाराओं को समझना आवश्यक हो जाता है। इस दृष्टि से नागार्जुन के व्यक्तित्व को समझने के लिए उसे तीन भागों में बाँटा जा सकता है -

नागार्जुन का आंतरिक व्यक्तित्व

दरभंगा-मधुबनी, उत्तरी बिहार का राजनैतिक और सांस्कृतिक केंद्र है। दीवालों पर अल्पना रचने से लेकर महीने खादी तक की छपाई 'मधुबनी शैली' के नाम से प्रसिद्ध है। नागार्जुन इसी धरती के लहलहाते बाबा बटेसरनाथ थे, जो अपने लेखन से मिथिलांचल ही नहीं, संपूर्ण भारत की नई पीढ़ी को संघर्ष की प्रेरणा देते रहे। वे अपने प्रति उदासीन रहकर लोक-कल्याण, साहित्य-सेवा में तल्लीन रहे हैं। अपनी जन्मतिथि के विषय में वे स्वयं भी भली प्रकार से नहीं जानते थे, क्योंकि उन्होंने अपनी आत्मकथा को लिपिबद्ध करने का कोई प्रयास नहीं किया। नागार्जुन उन साहित्यकारों में से नहीं है जिनके साहित्य और वास्तविक जीवन में तालमेल दिखाई नहीं देता है। नागार्जुन का विद्रोही, आस्थावादी, दृढ़ विश्वास से पूर्ण आंतरिक व्यक्तित्व उनके साहित्य में भी दिखाई पड़ता है।

डॉ. शिवकुमार मिश्र के शब्दों में, "नागार्जुन स्वभाव से ही विद्रोही थे। उनकी लेखनी आडम्बरों, रूढ़ियों और विषमताओं के विरूद्ध जमकर चली है। विद्रोह उनके स्वभाव में मूर्तिमान है। यह विद्रोह उस परिवेश की देन है, जिसके बीच उन्होंने जीवन जिया है। अपने इस अंतर की विद्रोह-वृत्ति को उन्होंने सदैव रचनात्मक क्रियाओं की ओर सक्रिय किया है। हँसमुख इतने हैं कि उनके जीवन-संघर्षों से अपरिचित व्यक्ति शायद ही जान पाए कि जीवन का इतना विष पीने और पचाने के बाद उन्हें यह हँसी सौगात के रूप में मिली है।"

नागार्जुन का बाह्य व्यक्तित्व

नागार्जुन का बाह्य व्यक्तित्व सरल एवं साधारण है। वे मझोले कद, श्यामवर्ण के हैं। फक्कड़ लेखकों की भाँति उन्हें अपने स्वास्थ्य को लेकर बहुत सोचने की आदत नहीं थी। वे खद्दर का कुर्ता और पजामा पहनते थे। दिखावे में विश्वास न रखनेवाले नागार्जुन का रहन-सहन सामान्य था।

डॉ. प्रकाश चंद्र भट्ट के शब्दों में, "दुबला पतला शरीर, मोटी खद्दर का कुर्ता-पजामा, मझौला कद, आँखों पर ऐनक, पैरो में चप्पलें, चेहरे पर उत्साह तथा पीड़ित वर्ग के प्रति व्यथा की मिली जुली प्रतिक्रिया के भाव, यही नागार्जुन हैं।"

रहन-सहन और वेशभूषा के संबंध में नागार्जुन ने स्वयं लिखा है, "आदमी हो तो आदमी की तरह रहो, यह क्या दशा बना रखी है तुमने अपनी, छोटे-छोटे बाल उगाए हो चंचल माथे पर, कपड़े का यह हाल है कि भद्देपन और कंजूसी का सनातन इश्तिहार बने घूमते हो, चर्च गेट हो या चैरंगी, कनाट प्लेस हो या हजरतगंज, सर्वत्र यही भूमिका रहती है, आधुनिकता और मॉडर्निटी दिखाने को। खाँस दिखाने में तुम्हारे को जाने कौन-कौन सी परिवृत्ति मिलती है। आंचलिक कलाकार तुम्हारी आँखें सचमुच फूटी हुई है क्या? अपने अन्य आंचलिक अनुजों से तुम्हें इतना तो सीखना ही चाहिए था कि रहन-सहन का अल्ट्रामार्डन तरीका क्या होता है?"

नागार्जुन का जीवन दर्शन

नागार्जुन की धर्म के प्रति अटूट निष्ठा रही। वे ईश्वर में विश्वास रखते थे लेकिन ढोंग, पाखंड, रूढ़िवादी, अंधविश्वास के घोर विरोधी थे। वे सभी धर्मों के अनुयायी, आस्थावादी, स्वभाव से विद्रोही, दृढ़ विश्वासी और आशावादी साहित्यकार रहें। नागार्जुन की बौद्ध धर्म में विशेष निष्ठा रही। नागार्जुन समाजवाद के प्रबल समर्थक साहित्यकार रहें। नागार्जुन मानते थे कि युवा वर्गा की शक्ति का यथोचित उपयोग होना चाहिए। रचनाकार नागार्जुन भारतीय संस्कृति के पोषक थे। प्रारंभ में नागार्जुन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य भी थे। किंतु इस पार्टी से उनका संबंध सांस्कृतिक रूप से रहा है, चीनी आक्रमण के बाद वे इस पार्टी से विमुख हुए और मूल रूप से मजदूर, किसानों जैसे पतित, दलित वर्ग के साहित्यकार बनकर उभरे।

बोध प्रश्न

- व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति पर प्रकाश डालिए।
- 'मधुबनी शैली' क्या है?
- नागार्जुन के बाह्य व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
- नागार्जुन किस विचारधारा के समर्थक रहें?

नागार्जुन का समकालीन परिवेश और उसका नागार्जुन पर प्रभाव

नागार्जुन ने जिन दिनों लिखना प्रारंभ किया था, उन्हीं दिनों (1930-1935) मार्क्सवाद, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित कर रहा था, सन् 1935 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई। जिसका प्रथम अधिवेशन भारत में मुंशी प्रेमचंद के सभापतित्व में 1936 में लखनऊ में हुआ था। कोई भी साहित्यकार अपने चारों ओर के अच्छे-बुरे प्रभावों से न चाहते हुए

भी अछूता नहीं रह सकता। वह जिस वातावरण में रहता है उसी की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि परिस्थितियाँ, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में उसके चिंतक को प्रभावित करती है। "साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल की परिस्थितियों से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है और उस तीव्र लहर में वह रो उठता है, लेकिन उसके रूदन में भी व्यापकता होती है। वह स्वदेश का होकर सार्वभौमिक रहता है।"

नागार्जुन जैसा साहित्यकार फिर कैसे अपने समय की परिस्थितियों से अनुछुए रह जाते? ऐतिहासिक दृष्टि से नागार्जुन का साहित्य-सृजनात्मक काल, भारत की स्वाधीनता के लिए किए जा रहे विभिन्न प्रयासों और गाँधी जी के नेतृत्व में हो रहे अहिंसक आंदोलनों का काल रहा। अंग्रेजों ने किसानों को बेदखल करके जमीदारों को जमीन का स्थायी भू-स्वामी बना दिया।

किसी भी देशकाल की परिस्थितियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। राजनीतिक उथल-पुथल के उस युग में समाज में स्त्रियों की दशा सोचनीय थी। कम उम्र की कुमारी-कन्याओं को किसी भी विधुर अथवा पहले से दो-चार पत्नियोंवाले व्यक्ति के साथ वैवाहिक रूप में बाँध दिया जाता था। परिणामस्वरूप युवतियाँ विवाह के कुछ वर्ष बाद ही विधवा होकर या फिर पारिवारिक, शारीरिक यंत्रणाओं से तंग आकर अनैतिक यौन संबंधों के जाल में फँसकर नरक से भी बदतर जीवन जीने को मजबूर होती थी। मिथिला सौराठ के मेले में धार्मिकता के नाम पर इसी नरक का निर्माण होता था। जिसमें लड़कियों की 'बिकौआ प्रथा' प्रचलित थी। ऐसी स्थिति में नागार्जुन जैसे दलितों और पतितों का हिमायती कलाकार कैसे शांत रह सकता था। यशपाल, रांगेय राघव, भैरव प्रसाद गुप्त आदि फ्रायड से प्रभावित होने के कारण नारी विषयक स्वस्थ दृष्टिकोण नहीं अपना सके। नागार्जुन के उपन्यासों में उच्छृंखल काम भावना और नारी स्वच्छंदता का समर्थन नहीं है। नागार्जुन की रचनाओं की नारी, पुरुष की प्रेरणादायी शक्ति है।

बोध प्रश्न

- नागार्जुन ने कब लिखना शुरू किया?
- 'बिकौआ प्रथा' कहाँ प्रचलित थी?
- फ्रायड की विचारधारा से कौन से लेखक प्रभावित थे?
- नागार्जुन ने अपनी रचनाओं में स्त्री को कैसे प्रस्तुत किया?

13.3.5 नागार्जुन का कृतित्व

स्वतंत्रता पूर्व जिन आदर्शों एवं जीवन मूल्यों के स्वप्न संजोए थे वे स्वतंत्र्योत्तर काल में भंग हो गए। देश को सांप्रदायिकता, पाशविक क्रूरता और जाति वर्ण-वर्ग पर आधारित असमानता एवं विद्वेष ताण्डव का उपहार प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी देश की इस

दुर्व्यवस्था को देखकर नागार्जुन और उनके जैसे दूसरे और भी साहित्यकार सजग हो उठे। नागार्जुन ने अपनी व्यंग्यात्मक शैली के द्वारा कुप्रथाओं, दुर्व्यवस्थाओं आदि पर कठोर प्रहार किया।

युगधारा, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, पत्रहीन नग्न गाछ, इमरतिया, वरुण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ आदि जाने कितनी ही रचनाएँ हैं जिनके द्वारा नागार्जुन ने सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक कुप्रथाओं, दुर्व्यवस्थाओं पर न केवल प्रहार किया बल्कि उनको रोकने का भी प्रयास किया।

प्रस्तुत इकाई में नागार्जुन के उपन्यासों, कविताओं और कहानियों में चेतनात्मक स्तर का गहन अध्ययन हम करेंगे।

नागार्जुन के उपन्यास : चेतनात्मक संदर्भ

आधुनिक उपन्यास लेखकों में नागार्जुन का विशिष्ट स्थान है। नागार्जुन जी का मिथिला के ग्रामीण जीवन से निकटवत परिचय है। मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग जिन समस्याओं को झेलता है उन समस्याओं को उन्होंने जीवनभर झेला। इसी कारण से उन समस्याओं का सजीव चित्र वे अपने उपन्यासों के माध्यम में प्रस्तुत कर सके। इस इकाई में नागार्जुन द्वारा लिखित निम्न उपन्यासों को देखना तर्क संगत होगा-

रतिनाथ की चाची : यह नागार्जुन की प्रथम कृति है। रतिनाथ का चरित्र लेखक के व्यक्तिगत चरित्र से काफी मिलता-जुलता है। प्रस्तुत उपन्यास में तरकुलवा नामक स्थान में प्रचलित बिकौआ प्रथा, धार्मिक अंधविश्वास, जातिगत जटिलता आदि का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र है - गौरी, असमय वैधव्य से ग्रसित गौरी किस प्रकार से अपनी ही इच्छा से नारी सुलभ कोमलता के वश में आकर विधुर देवर जयनाथ के साथ अवैध संबंध में फँस जाती हे। जयनाथ तो पुरुष होने के कारण बेदाग बच जाता है लेकिन गौरी तो अपमान और तिरस्कार सहने को बाध्य होती है। भला हो रतिनाथ का, जो चाची के जीवन के कष्ट को समझ पाता है। वही गौरी के जीवन की आशा ज्योति है जो उसे देवत्व की श्रेणी में बिठाता है। चाची की मृत्यु के बाद उसकी अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करके लौटते समय उसके शील-शालीनता के बारे में सोचता है।

"अस्थियाँ गंगा में प्रवाहित करके लौटते समय रतिनाथ के हृदय में बार-बार यही बात उठ रही थी कि अमावस की उस रात को वह कौन था चाची? एक घनी अंधेरी छाया तुम्हारे बिस्तर की तरफ बढ़ आयी, वह क्या थी चाची? सदा के लिए तुम्हारे सिर पर कलंक का टीका लगा गया, वह कौन था चाची? शील और शालीनता के प्रतिमें! तुमने क्यों उस धूर्त का नाम नहीं बतला दिया।"

यह इस उपन्यास का 'क्लाइमेक्स' है। यही ट्रेजडी है, जिसमें गौरी का संघर्ष निहित है,

जो हार नहीं मानती, परिस्थितियों और दायित्वों से पलायन नहीं करती। नागार्जुन के सभी पात्र की यही तो विशेषता है।

बलचनमा : यह नागार्जुन का द्वितीय सामाजिक उपन्यास है। उपन्यासकार ने इसमें दरभंगा के समीपवर्ती के अंचल की कथा को आधार बनाकर सामंती जमींदारी प्रथा में घिसते हुए ग्रामीण ईमानदार श्रमिक किसानों के प्रतिनिधि पात्र बलचनमा के संपूर्ण चरित्र को प्रस्तुत किया है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है।

डॉ. बेचन शर्मा 'उग्र' ने प्रस्तुत उपन्यास की श्रेष्ठता को निम्नवत् व्यक्त किया है -"यदि नागार्जुन ने 'बलचनमा' को लिखकर कुछ और न लिखा होता तो भी विश्व के कथाकारों की पंक्ति में आ जाते?"

नागार्जुन ने बलचनमा को विभिन्न परिस्थितियों में रखकर जमींदारों, राजनीतिक मध्यमवर्गीय युवकों के स्वभाव, राजनीतिक मध्यमवर्गीय युवकों के स्वभाव, संस्कार, स्वार्थ, संघर्ष और त्याग के विभिन्न चित्र प्रस्तुत किए हैं। तथाकथित स्वराजी नेताओं के खानपान, रहन-सहन, व्यवहार-बर्ताव का वर्णन 'बलचनमा' में व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर रेखांकित किया गया है।

बाबा बटेसरनाथ : यह नागार्जुन का चतुर्थ उपन्यास है, इसमें मिथिला के रूपहली गाँव को आधार बनाकर गाँव के उत्थान-पतन की कहानी और विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन एक पुराने वटवृक्ष के माध्यम से किया गया है। यह प्रवृत्ति नए शिल्प को जन्म देती है। बाबा बटेसरनाथ उपन्यास में वीरभद्र शिक्षित युवक पात्र है, जो ग्राम की नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है। वह राजनैतिक आंदोलन में भाग लेकर कई बार जेल भी गया। लेकिन इसके बावजूद इसका कथानायक कोई मानव शरीरधारी नहीं, बल्कि एक बूढ़ा बरगद है जिसके प्रति गाँव के लोगों की भावना वैसी ही है जैसी अपने किसी बड़े-बूढे के प्रति होती है और इसीलिए वे लोग उस पेड़ को साधारण 'बरबद' नाम से नहीं बल्कि आदरसूचक 'बाबा बटेसरनाथ' कहकर पुकारते हैं। यही बाबा बटेसरनाथ अपनी कहानी सुनाते-सुनाते पुरे गाँव की कहानी सुना जाते हैं, जिसकी कई पीढ़ियों के इतिहास के वे साक्षी रहे हैं। इस उपन्यास में उपन्यासकार का मूल लक्ष्य समाज को स्वाधीन, शांतिप्रिय और प्रगतिशील बनाना है।

नई पौध : यह उपन्यास व्यंग्यात्मक शैली में लिखा गया सामाजिक उपन्यास है। 'नई पौध' उपन्यास मिथिला अंचल की बस्ती के नए-पुराने संघर्षों को आचंलिक वातावरण में प्रस्तुत करता है। उपन्यास में अनमेल विवाह की समस्याओं, परंपरागत रूढ़ियाँ प्रगतीशील विचारों से टकराकर टूट जाती है और प्रगतिशील विचारों को सफलता प्रदान करने में 'नई पौध' विजयी होता है। प्रस्तुत उपन्यासों में दिगम्बर तथा वाचस्पति मध्य वर्ग के शिक्षित युवक है। सामाजिक

और राजनैतिक चेतना फैलाने का श्रेय इन्हीं दो पात्रों को जाता है। नवयुवकों को नवीन चेतना का वाहक बनकर अन्याय, जर्जन रूढ़ियों तथा पुरानी सामाजिक, धार्मिक मान्यताओं का विरोध करना चाहिए। यही संदेश देना 'नई पौध' उपन्यास का उद्देश्य रहा।

वरुण के बेटे : इस उपन्यास में मिथिला की मल्लाही गौडियारी बस्ती के मछुओं के जीवन संघर्ष की कहानी तथा उनकी सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का स्वाभाविकता एवं सहजता से चित्रण किया गया है। इस कृति में किसी प्रवाहयुक्त कथा का निर्माण नहीं होता है। यहाँ कथानक में बिखराव दिखाई पड़ता है। 'वरुण के बेटे' में खुरखुर मोल, मोहन मांझी, मधुरी आदि सभी पात्रों ने अपनी क्रिया व्यवहारों के द्वारा मछुआ जीवन के विभिन्न रूपों को पाठकों तक पहुँचाया है। 'वरुण के बेटे' उपन्यासों में लेखक ने अनेक पात्रों को चुना तो ताकि मछुआरा जीवन हम तक पहुँच सके लेकिन फिर भी यथार्थ का चित्रण पूर्ण रूप से नहीं हो सका।

कुंभीपाक : इस उपन्यास में मिथिला अंचल में रहनेवाली उन विवश महिलाओं के जीवन को दिखाया गया है जिन्हें जबरन अपराध की दुनिया में ढकेल दिया गया। प्रस्तुत उपन्यास की पंक्ति-पंक्ति में सामाजिक अत्याचार, शोषण तथा 'बिकौआ प्रथा' का चित्रण किया गया है। इंदिरा, भुवनेश्वरी और चंपा जैसी बालिकाओं का जीवन आदर्शहीन अधेड़ पुरुष वर्ग किस प्रकार से नरक जैसा बना देते हैं। इसका सजीव चित्र प्रस्तुत उपन्यास में दर्शाया गया है। 'कुंभीपाक' उपन्यास के प्रथम संस्करण में ही परिचय में यह लिखा गया है- ".....नरक हैं इक्कीस.....उन्हीं में से एक का नाम 'कुंभीपाक' है। नीचे आँच, जलभर आँच सब और एक मुख, बंद हड्डियाँ..... अंदर चुस्त रहेंगे प्राण।"

इमरतिया : प्रस्तुत उपन्यास में इमरतिया नामक युवा अवधूतिन के माध्यम से उपन्यासकार ने भारतीय समाज में फैली धार्मिक जड़वाद और पाखंडवाद को गहराई से उघाड़ा है। प्रस्तुत उपन्यास का केंद्र है गाँव का एक मठ। उस मठ के द्वारा ही अनपढ़, धर्मभीरू ग्रामीण जनता का शोषण लगातार होता है। वह मठ धनपतियों, स्मगलरों, प्रशासकों, राजनेताओं, औरतों के शौकिनों के लिए स्वर्ग समाज है लेकिन जब इस मठ का असली रूप सामने आता है तब असल में भारतीय समाज में धर्म की आड़ में किस प्रकार से अधार्मिक कामकाज होते हैं उसी का रूप नग्न हो जाता हैं इमरतिया, इसी नरक की देवी है जो दानवों के बीच रहने के बाद भी अपनी तमाम मानवीय संवेदनाओं को बचाए रखने में सफल हुई है। प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य दुराचारी साधुओं के जाल में फँसी जनता को जागरूक करना है।

पारो : 'पारो' नागार्जुन के मैथिली उपन्यास का हिंदी रूपांतर है। यह हिंदी अनुवाद कुलानंद मिश्र द्वारा किया गया है। इसमें मैथिली समाज की रूढ़िवादी व्यवस्था से पीड़ित पारों के जीवन की कारूणिक कहानी को हम देख सकते हैं। पारो नारी जीवन के उत्पीड़न का मुख्य प्रतीक है। उसकी वेदना फुफेरे भाई बिरजू के माध्यम से व्यक्त हुई है। पारो में पात्रों की संख्या नियमित

तथा सीमित है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि नागार्जुन के उपन्यास साहित्य में उनकी विचारधारा के विभिन्न रूपों को देखा जा सकता है। वे किसानों, मजदूरों और निम्नवर्ग के अन्य लोगों का समर्थन करते नज़र आते हैं। उसके साथ ही इन वर्गों को अन्याय के प्रतिकार के लिए उकसाते भी रहे हैं।

बोध प्रश्न

- नागार्जुन का पहला उपन्यास कौन सा है?
- बलचनामा उपन्यास में किस प्रांत का उल्लेख है?
- बरगद का वृक्ष नागार्जुन के किस उपन्यास का प्रमुख पात्र है?
- वरुण के बेटे उपन्यास में किनके जीवन को दर्शाया गया है?
- कुलानंद मिश्र ने नागार्जुन के किस उपन्यास का हिंदी अनुवाद किया?

नागार्जुन की कहानियाँ : जनवादी संदर्भ

जिस समय नागार्जुन ने अपनी पहली कहानी 'असमर्थदाता' लिखी। उसी समय प्रेमचंद हिंदी कहानी साहित्य को नई दिशा दे रहे थे। ऐसे समय में नागार्जुन अपनी हिंदी कहानी लेखन यात्रा को बहुत आगे तक नहीं बढ़ा सके। फिर भी उन्होंने पूरी तरह से कहानी लिखने को नहीं छोड़ा। 'नागार्जुन : चुनी हुई रचनाएँ खंड-3' में केवल 6 कहानियाँ मिलती हैं, जो इस प्रकार से है- असमर्थदाता, ताप-हारिणी, विशाखा मृगारमाता, ममता, आसमान में चंदा तेरे, भूख मर गई थी आदि। इसके अलावा उनकी कुछ कहानियों की कथावस्तु को डॉ. तेज सिंह द्वारा लिखित पुस्तक 'नागार्जुन का कथा साहित्य' में देख सकते हैं। ये कहानियाँ हैं- विषमज्वर, जेठा, मनोरंजन टैक्स, कायापलट आदि। नागार्जुन की कहानियों के संबंध में डॉ. तेज सिंह का कहना है कि, 'जनवादी चेतना' संपन्न कथाकार होने के बावजूद वे उपन्यासों की भाँति अपनी कहानियों में सामाजिक विषमताओं और विसंगतियों को अभिव्यक्त देने में पूरी तरफ असफल रहे हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से सभी कहानियाँ कमजोर और साधारण स्तर की है। कुछ कहानियाँ सामाजिक समस्याओं का स्पर्श मात्र करके रह जाती है, तो कुछ कोरी भावुकता और आदर्शवादिता से ग्रस्त है। उनमें उन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाकर आदर्शवादी दृष्टिकोण अपनाया है। परंतु उनकी भाषा और शैली सरल और बोधगम्य है। व्यंग्य की धार पैनी है। यही उनकी सबसे बड़ी मारक शक्ति है।"

नागार्जुन की कहानियों को पढ़ने के बाद कहा जा सकता है कि अपने जीवन के अनुभवों में से कुछ घटनाएँ और स्थितियाँ चुनकर ही उन्हें कहानी का रूप दे दिया। नागार्जुन की कहानियों में वर्णित जनवादी चेतना का विश्लेषण आप विद्यार्थियों के लिए मैं नीचे प्रस्तुत कर रही हूँ।

सामाजिक विसंगतियों का चित्रण

कोई भी समाज तब तक स्वच्छ और सुगठित नहीं बन सकता जब तक कि उसमें मानवीय मूल्यों को नहीं अपनाया जाता है। नागार्जुन ने अपनी कहानियों के द्वारा बार-बार इस सत्य को स्थापित किया है। उनके द्वारा लिखित 'तापहारिणी' ऐसी ही कहानी है। जब इस कहानी की नायिका अपराजिता अपने पति के साथ मर्दाना घाट पर नहाने जाती है तब वहाँ मौजूद दूसरे पुरुष बस उसके शरीर को ही देखते रहते हैं। इसका वर्णन करते हुए कथाकार लिखते हैं, "लेकिन उस दिन जब तक अपरा ने घाट नहीं छोड़ा, तब तक वहाँ से कोई विदा नहीं हुआ। मुझे उस समय मैक्सिम गोर्की का वह उपाख्यान याद आया जिसमें सत्ताईस पात्र थे छब्बीस मर्द और एक औरत।"

मानवीय मूल्यों की स्थापना तभी हो सकती है जब मनुष्य, मनुष्य के बीच में मानवता का संबंध होती है। परंतु प्रायः देखा यही जाता है कि एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति का शोषण करने के लिए हमेशा तैयार रहता है और सामने अगर स्त्री मिल जाए तो सामाजिक विसंगतियाँ अपनी सारी हदें तोड़ देती है। नागार्जुन ने 'भूख मर गई थी' इस कहानी में बूढ़े ससुर ने किस प्रकार से परिवार के भोजन की व्यवस्था के बदले अपनी बहू का अनैतिक मार्ग पर चलना स्वीकार कर लिया। इसका चित्रण इन शब्दों में किया है। स्वयं बूढ़ा उसके बारे में कहता है, "पड़ोसी युवक जमशेदपुर से पंद्रह दिनों की छुट्टी में गाँव आया था। ओवर्सियर है, बीस-पच्चीस हजार तो पीट ही चुका है। हमारी पुत्रवधू और उसमें भाभी-देवर का रिश्ता तो था ही। मगर इस मँहगाई और अकाल ने रिश्ते में गाढ़ा रंग घोल दिया। मैं गूँगा और अपंग बनकर जमाने का करिश्मा देखता रहा और वह बेचारी अपनी इज्जत का सौदा करती रही, चार-चार मुँहों के हवन-कुंड में जैसे-तैसे अनाज की समिधा डालती रही।"

तो इस प्रकार से स्पष्ट हो ही गया कि बिना मानवता के न तो समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना हो सकती है और न समाज स्वच्छ हो सकता है।

आम आदमी का चित्रण

नागार्जुन की कहानियों में वर्णित आम आदमी वह है, जो हर प्रकार के शोषण, दमन और अत्याचार का शिकार है, जो हर प्रकार से उपेक्षित और तिरस्कृत है। इसकी जिंदगी अभावों का पर्याय बन चुकी है। आम आदमी के रूप में वर्णित 'विषमज्वर' कहानी का पात्र दीनानाथ ऐसा ही व्यक्ति है।

वह किसी भी प्रकार का व्यसन नहीं करता, चाय भी नहीं पीता, बीड़ी नहीं फूँकता। दफ्तर पैदल ही जाता है और उसके दोस्त भी नहीं है। वह पूँजीपतियों के शोषण के जाल में फँसा ऐसा आदमी है जो तीन दिन तक एक-एक घंटा रोज ज्यादा काम करने के बावजूद भी 9 रुपए से अधिक कमा नहीं पाता था।

'आसमान में चंदा तेरे' कहानी का नायक पद्मानंद भी ऐसा ही जीवन जी रहा है। उसे भी कथाकार ने आम आदमी के रूप में वर्णित किया है। वह पढ़ाई के दौरान कवि लीलाधर के संपर्क में आकर कविताएँ लिखने ही नहीं लगा था बल्कि कवि सम्मेलनों में कविता पढ़कर आर्थिक लाभ भी प्राप्त कर चुका था। बी.ए. में जब वह फेल हुआ उसी समय उसका विवाह भी हुआ। लीलाधर उसकी कविताओं का संकलन निकलवाने का प्रयास कर ही रहे थे। कविता संकलन पर कुल खर्च ढाई सौ रुपए होना था। पत्नी के कुछ गहने गिरवी रखकर और नकद रुपए आदि कुल मिलाकर 145 रुपए एकत्रित हुए तो पद्मानंद सौ रुपए प्रेसवाले को देकर 300 प्रतियाँ ले आया था। उसने बहुत सारी प्रतियाँ दोस्तों, आलोचकों को भेज दी। पर उन्होंने इसके बदले उसे पैसा नहीं दिया। फलस्वरूप, प्रेसवालों ने उसकी किताबों को रद्दी में बेच दिया। पद्मानंद अब ऐसी समस्या में फँस जाता है कि जहाँ न तो वह पत्नी के गहनों को वापस ला पाता है और नही अपने सपनों को पूरा कर पाता है। इसी का वर्णन करते हुए कथाकार कहते हैं, "पद्मानंद की नींद उड़ गई। चिंता प्रेसवालों की उतनी नहीं थी, जितनी कांता के गहनों की अब क्या हो?"

पद्मानंद को लगता है कि जैसे वह आदमी नहीं है, कूड़ा करकट का चलता-फिरता ढेर है।

संघर्षमूलक क्रांतिप्रवण चेतना

जनवादी रचनाकार यह बखूबी जानता है कि आज तक किसी को अपना अधिकार न तो हाथ पसारने पर मिला है और न मिलेगा। वह यह भी जानता है कि अधिकार पाने के लिए उसे छीनना पड़ता है। विशाखा मृगारमाता कहानी की नायिका अपने अधिकार की रक्षा के लिए ही ससुर से कहती है, "तात, इतने भर से तो मैं निकलती नहीं। पनघट से पकड़कर लाई गई लौंडी होती, तो डर भी जाती। जीते माता-पिता की कन्याएँ इतनी आसानी से नहीं निकला करती। इसके लिए तुम्हें हमारे मायके के उन पंचों को बुलाना पड़ेगा। वे अगर मुझे अपराधी करार दे तो मैं चली जाऊँगी।"

हमने पहले ही इस बात को पढ़ा है कि नागार्जुन कहानी लेखन के क्षेत्र में बहुत अलग कुछ नहीं कर सके थे लेकिन जितना उन्होंने किया वह काबिलेतारीफ है।

बोध प्रश्न

- 'नागार्जुन : चुनी हुई रचनाएँ खंड 3' इस पुस्तक में कितनी कहानियाँ मिलती है?
- 'अपराजिता' नागार्जुन द्वारा लिखित किस कहानी की नायिका है?
- 'विषमज्वर' कहानी का प्रमुख पात्र कौन है?
- नागार्जुन द्वारा लिखित विशाखा मृगारमाता में कौन-सी चेतना है?

नागार्जुन के काव्य में संवेदना रूप

नागार्जुन का काव्य संसार विविधता से पूर्ण होने के साथ ही साथ विशाल भी है। इसमें प्रकृति, मनुष्य, पशु, राजनैतिक-सामाजिक जीवन, जीवन के मधुर एवं कोमल पक्ष व्यंग्य की

तीखी धार, दैनंदिन जीवन की गतिविधियाँ सब शामिल है। आगे आप विद्यार्थियों के लिए मैं इसका विश्लेषणात्मक रूप प्रस्तुत कर रही हूँ-

प्रकृति संसार

कहा जाता है कि कोई भी व्यक्ति एक बच्चे के रूप में सबसे पहला चित्र प्रकृति का ही बनाता है। दूसरों का तो पता नहीं पर नागार्जुन के संबंध में तो यह बात बिल्कुल ठीक बैठती है। इस संदर्भ में, नागार्जुन की पहली कविता संग्रह 'युगधारा' में संकलित 'रजनीगंधा' की पंक्तियों को देखना उचित होगा-

"तुम खिलो रात की रानी
हो म्लान भले यह जीवन और जवानी
तुम खिलो रात की रानी
प्रहरी- परिवेष्टित इस बंदीशाला में
मैं सड़ूँ सही, पर ताजी रहे कहानी
तुम खिलो रात की रानी"

इन पंक्तियों में केवल रात की रानी का वर्णन करना एकमात्र लक्ष्य नहीं रहा। इसके विपरीत इसमें कवि ने बंदीशाला में बंदी उन व्यक्तियों की भावनाओं को अभिव्यक्त किया है जो अच्छे दिनों की आशा को रात रानी की खुशबू के सहारे ही जीवित रखते हैं।

प्रकृति, मनुष्य और पशु का आपस में बहुत गहरा संबध है। अक्सर प्रकृति वर्णन के अंतर्गत पेड़, पौधों, पहाड़ समुद्र आदि का वर्णन तो मिलता है लेकिन पशु सौंदर्य का वर्णन बहुत कम देखने को मिलता है। परंतु नागार्जुन की कविता में जानवर भी संवेदना जगाते है और नागार्जुन ने बहुत मार्मिकता से पशु जीवन को अपनी कविताओं में अंकित किया है। 'अकाल और उसके बाद', 'नेवला' ये कविताएँ तो है ही लेकिन 'पैने दाँतों वाली' कविता को मैं प्रमुख रूप से आप विद्यार्थियों के सामने रखना चाहूँगी।

'धूप में पसरकर लेटी है
मोटी-तगड़ी, अधेड़, मादा सुअर.....
जमना-किनारे
मखमली दूबों पर
पूस की गुनगुनी धूप में
पसरकर लेटी है
यह भी तो मादरे हिंद की बेटी है'

नागार्जुन ने प्रकृति के निम्न से निम्नतर श्रेणी को भी कविता के साथ जोड़ा है। मादा सुअर को 'मादरे हिंद की बेटी' कहकर उन्होंने देश, पशु और प्रकृति को एक साथ जोड़कर यही

समझाना चाहा है कि किसी भी देश में पशु संपदा को भी संरक्षण पाने का पूरा अधिकार है।

व्यंग्य की धार

नागार्जुन के साथ एक विशेष बात यह है कि वह व्यंग्य के भी बेजोड़ कवि है। संभवतः कबीर के बाद व्यंग्य का इतना बड़ा कवि कोई दूसरा नहीं हुआ है। नागार्जुन जनता के कवि हैं। जनता के प्रति उनकी संवेदना का स्वर सदा मुखरित हुआ है। वे केवल जनता के बीच नहीं गए बल्कि उन्होंने जनता के कष्ट को अपना ही कष्ट समझकर सन् 1974 में 'अन्न पच्चीसी के दोहे' नामक कविता में लिखा-

'कबिरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ
बंदा क्या घबराएगा, जनता देगी साथ
छीन सके तो छीन ले, लूट सके तो लूट
मिल सकती कैसे भला, अन्न चोर को छूट'

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जनता को रामराज्य का सपना दिखाया गया था। आजादी तो मिल गई परंतु रामराज्य का सपना, सपना ही रह गया। नागार्जुन ने नेहरू पर जिस चुटीले अंदाज में कविता लिखी वैसा चुटीला व्यंग्य बहुत कम दिखाई पड़ता है। ब्रिटेन की महारानी के भारत आगमन को नागार्जुन ने देश का अपमान समझा और लिखा-

"आओ रानी हम ढोएँगे पालकी
यही हुई है राय जवाहरलाल की
रफू करेंगे फटे-पुराने जाल की
यही हुई है राय जवाहरलाल की"

सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक विषमताओं पर प्रहार

पश्चिम बंगाल की राजनीति में 70 के दशक में हो रही सरकारी तांडव लीला का वर्णन करते हुए सन् 1966 में 'शासन की बंदूक' कविता को लिखा। तत्कालीन राजनीति का मुखौटा उघाड़ते हुए कवि ने लिखा-

'सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा चूक
जहाँ-तहाँ दगने लगी, शासन की बंदूक
जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक।'

राष्ट्रीय इमरजेंसी के दौर में इंदिरा गांधी ने आपातकाल की घोषणा की तब नागार्जुन इसका घोर विरोध करते हुए लिखा-

'इंदु जी, इंदु जी

क्या हुआ आपको?
बेटे को तार दिया
बोर दिय बाप को।'
और फिर व्यंग्य की धार चलाते हुए कहा-
'देवी, अब तो कटें बंधन पाप के
लाइए, मैं चरण चूमूँ आपके।'

प्रगतिशील कवि नागार्जुन ने धार्मिक पाखंड, पुरानी मान्यताओं, दकियानूसी विचारों पर 'प्यासी पथराई आँखें' काव्य संकलन की कविता 'काली माई' की इन पंक्तियों के द्वारा प्रहार किया है-

'कितना खून पिया है, जाती नहीं खुमारी
सुर्ख और लंबी है मइया जीभ तुम्हारी।'

सन् 1975 में रचित कविता 'थकित-चकित-भ्रमित भग्न मन' कविता में बाबा नागार्जुन ने सदियों से चली आ रही मठाधीशों की जड़ता का मज़ाक उड़ाते हुए कहा है-

'धर्म भीरु पारंपरिक जन-समुदायों की
बूँद-बूँद संचित श्रद्धा के सौ-सौ भाँड़
जमा है, जमा होते रहेंगे
मठों के अंदर.....
तो क्या मुझे भी बुढ़ापे में पुष्टई के लिए
वापस नहीं जाना है किसी मठ के अंदर।'

नागार्जुन आर्थिक समानता पर आधारित समाज को देखना चाहते थे लेकिन उन्होंने भ्रष्टाचार में डूबे नेताओं को जनता के सपनों को जब कुचलते देखा तब उन्होंने यही लिखा-

'नया तरीका अपनाया है राधे ने इस साल
बैलों वाले पोस्टर साटे, चमक उठी दीवाल
नीचे से ऊपर तक समझ गया सब हाल
सरकारी गल्ला चुपके से भेज रहा नेपाल
अंदर टँगे पड़े गांधी तिलक- जवाहरलाल'

स्पष्ट है कि नागार्जुन की कविताओं में संघर्ष और विद्रोह है। परंतु जनता की विजय भावना के प्रति कवि की दृढ़ आस्था भी है। जनशक्ति के प्रति उनका अगाध विश्वास है। स्वयं कवि नागार्जुन ने सन् 1965 में अपनी कवि कर्तव्य के बारे में लिखा है-

'जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊँ

जनकवि हूँ, मैं साफ कहूँगा, क्यो हकलाऊँ'

बोध प्रश्न

- 'रजनीगंधा' किस कविता संग्रह में संकलित है?
- 'मादरे हिंद की बेटी' कवि ने किसे कहा है?
- सन् 1966 में कवि नागार्जुन ने किस कविता को लिखा?
- काली माई कविता किस कविता संकलन में संकलित है?

13.4 पाठ सार

नागार्जुन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन से स्पष्ट है की नागार्जुन जनवादी साहित्यकार रहे और उनका स्वयं का जीवन भी बहुत साधारण रहा। उन्होंने लोक कल्याण एवं साहित्य सेवा में अपने जीवन को समर्पित किया। मझोले कद के श्यामवर्ण, फक्कड़ प्रवृत्ति के इस साहित्यकार ने वेशभूषा, जीवनशैली, खानपान से अधिक महत्व देश, देशवासी और ज्ञान को दिया। वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य भी रहे, लेकिन उनका यह संबंध कभी अंधभक्ति नहीं बन सका। चीनी आक्रमण के बाद उन्होंने इस पार्टी के साथ संबंध नहीं रखा और मूल रूप में मजदूर, किसान, पतित, दलित वर्ग के साहित्यकार बनकर उभरे। उन्होंने अपने उपन्यासों के द्वारा बिकौआ प्रथा, धार्मिक अंधविश्वास, राजनैतिक भ्रष्टाचार आदि पर कठोर व्यंग्य किया है। अपनी कहानियों के द्वारा भी उन्होंने आम आदमी का चित्रण, सामाजिक विसंगतियों का चित्रण, संघर्षमूलक क्रांतिप्रवण चेतना का चित्रण किया।

नागार्जुन का काव्य संसार विविधता से पूर्ण होने के साथ ही साथ विशाल भी है। नागार्जुन की कविताओं में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक असमानता के विरोध में व्यंग्य तो दिखाई देता ही है, लेकिन इसके साथ ही साथ नागार्जुन ने अपनी कविताओं के माध्यम से जिस प्रकार से प्रकृति और पशु के सौंदर्य को चित्रित किया है। वह नागार्जुन की अपनी अलग विशेषता है। अकाल और उसके बाद, नेवला, रजनीगंधा ऐसी ही कविताएँ हैं। इन सब में उत्कृष्ट कविता है 'पैने दाँतोंवाली' जिसमें एक मादा सुअर के सौंदर्य को चित्रित किया गया है। कवि ने उसे 'मादरे हिंद की बेटी' कहकर बुलाया है। ऐसा करके उन्होंने एक देश में मनुष्यों के साथ-साथ प्रकृति और पशुओं को भी सुरक्षा मिलनी चाहिए, इसे सुनिश्चित करने का ही प्रयास किया है।

13.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. नागार्जुन का जीवन एक साधारण व्यक्ति की असाधारण उपलब्धियों की कहानी है।
2. नागार्जुन के व्यक्तित्व के निर्माण में घुमक्कड़ी और फक्कड़पन की बड़ी भूमिका रही।

3. नागार्जुन ने गद्य और पद्य के विविध विधाओं में आम जन-जीवन के संघर्ष को व्यक्त किया है।
4. नागार्जुन ने अपने समस्त साहित्य में जन संघर्ष को मुखर अभिव्यक्ति प्रदान की है।

13.6 शब्द संपदा

1. अंधभक्ति = बिना सोचे-समझे किसी का अनुकरण करना
2. अन्योन्याश्रित = एक दूसरे पर निर्भर
3. अभिन्न = हमेशा साथ रहनेवाला
4. अभिव्यक्ति = अपनी बात को व्यक्त करना
5. अवलोकन = देखना
6. जनशक्ति = जनता की शक्ति
7. जीवनपर्यंत = संपूर्ण जीवन
8. दकियानूसी विचार = पुराने विचार
9. प्रेमचंदोत्तर = प्रेमचंद के बाद
10. बिकौआ प्रथा = मिथिला की प्रथा जिसमें विवाह के नाम पर स्त्रियों को बेचा और खरीदा जाता था।
11. भ्रष्टाचार = बेईमानी
12. मादा = स्त्री
13. लिपिबद्ध = लिखना
14. संकलित = चुनकर या छाँटकर इकट्ठा किया हुआ
15. सर्वहारा = निर्धन
16. सामयिक विसंगतियों = समय की बुराइयों

13.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

13.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1. व्यक्तित्व (Personality) शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के किस शब्द से हुई है?

A. पर्सोना (Persona)B. परपज (Purpose) C.पर्सनल (Personal) D. पर्सन (Person)

2. नागार्जुन ने मैथिली भाषा में साहित्य लेखन हेतु किस उपनाम का प्रयोग किया था?

A. जनकवि B. भिक्षु C. वैद्यनाथ **D. यात्री**

3. नागार्जुन ने किस वर्ष सिंहलद्वीप (श्रीलंका) जाकर बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की थी?

A. 1930 B. 1934 C.1938 **D.1936**

4. नागार्जुन का कौन सा उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है जो जमींदारी प्रथा का विरोध करता है?

A. रतिनाथ की चाची B. वरुण के बेटे **C. बलचनमा** D. नई पौध

5. 'बाबा बटेसरनाथ' उपन्यास की सबसे विशिष्ट शिल्पगत विशेषता क्या है?

A. यह पूर्णतः संस्कृत भाषा में लिखा गया है

B. यह केवल पत्रों के माध्यम से लिखा गया है

C. इसमें कोई भी पात्र जीवित मनुष्य नहीं है

D. एक पुराना वटवृक्ष कथा का मुख्य साक्षी और वाचक है

6. नागार्जुन ने अपनी किस कविता में एक मादा सुअर को 'मादरे हिंद की बेटी' कहकर संबोधित किया है?

A. पैने दाँतों वाली B. शासन की बंदूक C. अकाल और उसके बाद D. रजनीगंधा

7. नागार्जुन की कहानी 'भूख मर गई थी' में किस त्रासदी का चित्रण किया गया है?

A. शहरी जीवन की भागदौड़ B. छात्र जीवन का संघर्ष

C. बच्चों में कुपोषण की समस्या **D. अकाल के दौरान मानवीय मूल्यों और नैतिकता का पतन**

8. नागार्जुन ने किस घटना के बाद भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से अपनी दूरी बना ली थी?

A. बौद्ध धर्म ग्रहण करने के कारण B. आपातकाल (इमरजेंसी) की घोषणा के बाद

C. भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के समय **D. चीनी आक्रमण के बाद**

9. नागार्जुन के उपन्यास 'वरुण के बेटे' में किस अंचल के जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है?

A. वाराणसी के संस्कृत विद्वान B. हिमाचल के जनजातीय क्षेत्र

C. कोलकाता के औद्योगिक श्रमिक **D. मिथिला की मल्लाही बस्ती (मछुआरा समाज)**

10. नागार्जुन की व्यंग्य कविता 'आओ रानी हम ढोएँगे पालकी' किस ऐतिहासिक संदर्भ में लिखी गई थी?

A. गाँधी जी के अहिंसा आंदोलन के समर्थन में B. इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री बनने पर

C. ब्रिटेन की महारानी के भारत आगमन पर D. झांसी की रानी के सम्मान में

खंड (ब)

13.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. रतिनाथ की चाची उपन्यास की जानकारी संक्षेप में दीजिए।
2. नागार्जुन के बाह्य व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
3. नागार्जुन के आंतरिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
4. नागार्जुन के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

13.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. नागार्जुन के जन्म, शिक्षा, साहित्य यात्रा तथा गृहस्थ यात्रा पर प्रकाश डालिए।
2. नागार्जुन पर उनके समकालीन परिवेश का क्या प्रभाव पड़ा। समझाइए।
3. नागार्जुन के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय दीजिए।
4. नागार्जुन की कहानियों का संक्षेप में परिचय दीजिए।

13.8 पठनीय पुस्तकें

1. नागार्जुन के उपन्यासों में व्यंग्य सृष्टि : सुभाष शर्मा
2. आधुनिक हिंदी कविता - युगीन संदर्भ : अरुण होता
3. हिंदी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल
4. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र

इकाई 14 : 'गुलाबी चूड़ियाँ' और 'शासन की बंदूक' : नागार्जुन

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 मूल पाठ : 'गुलाबी चूड़ियाँ' और 'शासन की बंदूक' : नागार्जुन

14.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

14.3.2 अध्येय कविता

14.3.3 कविता की विस्तृत व्याख्या

14.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

14.4 पाठ सार

14.5 पाठ की उपलब्धियाँ

14.6 शब्द संपदा

14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

14.9 पठनीय पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

साहित्यकार सदैव समाज से जुड़कर साहित्य का सृजन करता है। कविवर नागार्जुन जन चेतना के कवि हैं। प्रगतिशील चिंतन के कवि और कथाकार बाबा नागार्जुन के साहित्य में उनके यथार्थवादी चिंतन को देखा जा सकता है। आवश्यकता के अनुसार उनकी कविताओं में कई बार व्यंग्य का कटु रूप दिखाई पड़ता है। बड़ी ही सरल और सहज भाषा में कवि अपनी बात कह देते हैं। 'गुलाबी चूड़ियाँ' कविता में नागार्जुन ने संवेदनशील भाषा का प्रयोग करते हुए एक पिता और पुत्री के बीच स्नेहिल संबंधों का चित्रण किया है। ड्राइवर मेहनत और लगन से कार्य करते हुए अपनी जीविका चलाता है। वह अपने परिवार से दूर है। उसकी एक सात साल की पुत्री है जिसकी चूड़ियाँ उसने बस में आगे की ओर लटका रखी हैं। एक पिता की संवेदना इस कविता में स्पष्ट दिखाई देती है। इसी प्रकार दूसरी कविता 'शासन की बंदूक' एक ऐसी कविता है जिसमें राजनैतिक व्यंग्य दिखाई देता है। जब शासन तंत्र से जनता दुखी होती है तब कई बार वह अपनी आवाज बुलंद करती है किंतु शासन व्यवस्था को साधारण जनता की भावनाओं तथा उनके दर्द से कोई मतलब नहीं होता। मानव मन का मनोविश्लेषण इन कविताओं का प्राण है।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- नागार्जुन की कविता 'गुलाबी चूड़ियाँ' की व्याख्या कर सकेंगे।
- नागार्जुन की कविता 'शासन की बंदूक' की व्याख्या कर सकेंगे।
- नागार्जुन के काव्य की अंतर्वस्तु से परिचित हो सकेंगे।
- नागार्जुन के भाषिक सौंदर्य को समझ सकेंगे।
- नागार्जुन की कविताओं में निहित जनवादी एवं प्रगतिशील तत्वों को जान और समझ सकेंगे।

14.3 मूल पाठ : 'गुलाबी चूड़ियाँ' और 'शासन की बंदूक' : नागार्जुन

14.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

जनकवि बाबा नागार्जुन की कविताओं की विशेषता यह है कि उनकी कविताएँ स्थान विशेष की ना होकर पूरे हिंदी प्रांत और देश की कविताएँ हैं। मूलतः मैथिली भाषी कवि बाबा नागार्जुन को कविताओं पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल चुका है। उनके द्वारा लिखी गई अतिसंवेदनशील कविता 'गुलाबी चूड़ियाँ' एक ऐसे पिता की कविता है जो अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए प्राइवेट बस चलाता है और अपने परिवार से दूर रहता है। वह अपनी सात वर्ष की बेटी को कभी भूलता नहीं और बेटी ने भी अपने पिता को अपनी चार गुलाबी चूड़ियाँ स्मृति के फलस्वरुप दे दी हैं जिन्हें वह बस में टांगे रहता है। दूसरी कविता 'शासन की बंदूक' में शासन की दुरव्यवस्थाओं का चित्रण किया गया है। शासन व्यवस्था को जनता की भावनाओं से कभी कोई मतलब नहीं रहता। वह संवेदनहीन होती जाती है और अपनी मनमानी करने में हिटलर को भी पीछे छोड़ देती है। धीरे-धीरे ऐसी स्थिति आती है कि जनता गूंगी और बहरी होती जाती है और शासन की बंदूक मानो धन्य हो जाती है। समय बदलने के साथ-साथ सत्य और अहिंसा जो गांधीजी के एकादश व्रतों में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे, अब धीरे-धीरे समय के साथ इनकी परिभाषा बदल रही है। अब लोगों को मुंह खोलने की इजाजत नहीं है किंतु सत्य कहने वाले अपनी बात निडर होकर कह देते हैं तथा शासन की बंदूक उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाती क्योंकि चारों ओर जो दुरव्यवस्था फैली होती है तथा डर का माहौल बन गया होता है उसे निडरतापूर्वक कह देना बड़ी बात होती है। शासन कितना भी अराजक हो जाए किंतु जनता का कभी कोई कुछ नहीं बिगाड़ पाता यही लोकतंत्र की सच्चाई है। 'शासन की बंदूक' कविता ऐसी ही राजनैतिक सच्चाई को पाठकों के समक्ष लाती है और विषम परिस्थितियों से उनका बोध कराती है।

14.3.2 अध्येय कविता : 'गुलाबी चूड़ियाँ' और 'शासन की बँदूक'

गुलाबी चूड़ियाँ

प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ,
सात साल की बच्ची का पिता तो है!
सामने गियर से उपर
हुक से लटका रक्खी हैं
काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी
बस की रफ़्तार के मुताबिक
हिलती रहती हैं...
झुककर मैंने पूछ लिया
खा गया मानो झटका
अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा
आहिस्ते से बोला: हाँ सा'ब
लाख कहता हूँ नहीं मानती मुनिया
टाँगे हुए है कई दिनों से
अपनी अमानत
यहाँ अब्बा की नज़रों के सामने
मैं भी सोचता हूँ
क्या बिगाड़ती हैं चूड़ियाँ
किस ज़ुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से?
और ड्राइवर ने एक नज़र मुझे देखा
और मैंने एक नज़र उसे देखा
छलक रहा था दूधिया वात्सल्य बड़ी-बड़ी आँखों में
तरलता हावी थी सीधे-साधे प्रश्न पर
और अब वे निगाहें फिर से हो गईं सड़क की ओर
और मैंने झुककर कहा -
हाँ भाई, मैं भी पिता हूँ
वो तो बस यूँ ही पूछ लिया आपसे
वरना किसे नहीं भाँएगी?
नन्हीं कलाइयों की गुलाबी चूड़ियाँ!

शासन की बँदूक

खड़ी हो गई चाँपकर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक

उस हिटलरी गुमान पर सभी रहें है थूक
जिसमें कानी हो गई शासन की बंदूक
बढ़ी बधिरता दस गुनी, बने विनोबा मूक
धन्य-धन्य वह, धन्य वह, शासन की बंदूक
सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा चूक
जहाँ-तहाँ दगने लगी शासन की बंदूक
जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक

निर्देश : 1. इन कविताओं का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इन कविताओं का मौन वाचन कीजिए।

14.3.3 कविता की विस्तृत व्याख्या

गुलाबी चूड़ियाँ

प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ,
सात साल की बच्ची का पिता तो है!
सामने गियर से उपर
हुक से लटका रक्खी हैं
काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी
बस की रफ़्तार के मुताबिक
हिलती रहती हैं...
झुककर मैंने पूछ लिया
खा गया मानो झटका
अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा
आहिस्ते से बोला: हाँ सा'ब
लाख कहता हूँ नहीं मानती मुनिया
टाँगे हुए है कई दिनों से
अपनी अमानत
यहाँ अब्बा की नज़रों के सामने
मैं भी सोचता हूँ
क्या बिगाड़ती हैं चूड़ियाँ
किस ज़ुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से?
और ड्राइवर ने एक नज़र मुझे देखा
और मैंने एक नज़र उसे देखा
छलक रहा था दूधिया वात्सल्य बड़ी-बड़ी आँखों में

तरलता हावी थी सीधे-साधे प्रश्न पर
और अब वे निगाहें फिर से हो गईं सड़क की ओर
और मैंने झुककर कहा -
हाँ भाई, मैं भी पिता हूँ
वो तो बस यूँ ही पूछ लिया आपसे
वरना किसे नहीं भाँएगी?
नन्हीं कलाइयों की गुलाबी चूड़ियाँ!

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिशील कवि एवं कथाकार बाबा नागार्जुन द्वारा रचित कविता 'गुलाबी चूड़ियाँ' से उद्धृत हैं। यह कविता सन 1961 में लिखी गई। बाबा अपनी कविताओं में यथार्थ का चित्रण खुले रूप में करते हैं और हमेशा साधारण मनुष्य की बात करते हैं। बड़ी ही सरल और सहज भाषा में बाबा अपनी बात अपनी बात कह देते हैं।

प्रसंग : वास्तव में यह कविता दो चरित्रों के बीच भावनात्मक संवाद के रूप में हमारे सामने आती है। इस कविता में कवि ने बच्ची के प्रति स्नेह के माध्यम से एक साधारण मनुष्य के जीवन में स्नेह के महत्व को दर्शाया है। बस में लटकी हुई गुलाबी चूड़ियाँ उस बस के ड्राइवर का अपनी बच्ची के प्रति स्नेह और प्रेम की सूचक हैं।

व्याख्या : कविता का आरंभ सात साल की बालिका के पिता से होता है जो एक बस के ड्राइवर हैं। कवि कहते हैं कि वह यदि प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो इसमें क्या खेद की बात है? वह अपनी लगन, मेहनत और ईमानदारी से अपनी जीविका चला रहा है। ड्राइवर होने के साथ-साथ वह एक 7 साल की बच्ची का पिता भी है। कवि यहाँ पर यह कहना चाहते हैं कि बस ड्राइवर भी आखिर इंसान ही होते हैं। कवि आम जन की मानवीय संवेदना को अपनी इस कविता में स्थान देते हैं। ड्राइवर ने बस में आगे शीशे के पास गियर के ठीक ऊपर कांच की चार गुलाबी चूड़ियाँ लगा रखी हैं और जब बस चलती है तो उसकी गति से वह चूड़ियाँ हिलती रहती है और ड्राइवर को अपनी बच्ची की याद दिलाती रहती हैं। कवि कहते हैं कि जब उन्होंने थोड़ा झुक कर उससे उन चूड़ियों के बारे में पूछा तो वह ड्राइवर जो शायद किसी की याद में खोया हुआ था अचानक ही चौक जाता है। उसके चेहरे पर एक तेज झलक रहा था। वह बड़े ही धीमे स्वरों में कहता है कि हाँ साहब यह नन्ही कलाइयों की चूड़ियाँ मेरी बेटी की हैं। मैं बार-बार अपनी बेटी से इन्हें उतारने को कहता हूँ किंतु बेटी इन चूड़ियों को अपनी अमानत कहते हुए यहीं लटकाए हुए है।

कवि बड़ी ही संवेदनशील भाषा में यह व्यक्त करते हैं कि संतान का स्नेह व्यक्ति के कठोर मन पर भी विजय पा लेता है। कवि नन्ही बच्ची की जिद के आगे पिता की बेबसी को भी दर्शाते हैं हालाँकि यह बेबसी सकारात्मक है क्योंकि वह ड्राइवर उन चूड़ियों को नहीं हटाना चाहता। वह अपनी बच्ची के मन को किसी प्रकार की ठेस नहीं पहुंचाना चाहता। वह व्यक्ति आगे कहता है

कि मैं भी सोचता हूँ कि बच्ची की जिद है तो चूड़ियों को टंगा रहने दो क्योंकि वह चूड़ियाँ कुछ बिगाड़ती तो है नहीं और न ही उनसे किसी प्रकार की परेशानी होती है, तब उन चूड़ियों का क्या गुनाह है कि उन्हें वहाँ से उन्हें वहाँ से हटा दिया जाए। वह कवि को देखता है और कवि भी ड्राइवर को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि यह संवाद विशेष बन जाता है। ड्राइवर की आँखों में उसकी सात साल की बच्ची की यादें हैं और उसके प्रति स्नेह भाव है जो कवि को स्पष्ट दिखाई दे जाता है। ड्राइवर सीधे ढंग से कवि के प्रश्नों का उत्तर देता है और उसके पश्चात उसकी आंखें दोबारा सड़क की ओर जाती हैं। कवि का हृदय भी पिघल जाता है और वह कहते हैं कि हाँ भाई मैं भी एक पिता हूं। मैंने तो बस ऐसे ही चूड़ियों के बारे में तुमसे पूछ लिया था, वरना नन्ही कलाइयों की छोटी-छोटी चूड़ियों को कौन पसंद नहीं करता? यह सबके मन को भाती हैं।

विशेष

- सहज खड़ी बोली एवं प्रवाह युक्त भाषा का प्रयोग।
- वात्सल्य प्रेम की रसधार का स्पष्ट चित्रण।
- सामान्य और साधारण मनुष्य के जीवन में प्रेम और स्नेह के महत्व को कवि ने दर्शाया है।
- अनुप्रास अलंकार।
- अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग।

बोध प्रश्न

- सात साल की बच्ची का पिता कौन है?
- हुक से क्या लटका हुआ है?
- छोटी मुनिया कौन है?
- छोटी मुनिया की अमानत क्या है?
- ड्राइवर की आंखों से क्या छलक रहा था?
- नागार्जुन कैसे कवि हैं?
- नागार्जुन मैथिली में किस नाम से लिखते थे?

शासन की बँदूक

खड़ी हो गई चाँपकर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट-सी शासन की बंदूक
उस हिटलरी गुमान पर सभी रहें है थूक
जिसमें कानी हो गई शासन की बंदूक
बढ़ी बधिरता दस गुनी, बने विनोबा मूक
धन्य-धन्य वह, धन्य वह, शासन की बंदूक
सत्य स्वयं घायल हुआ, गई अहिंसा चूक

जहाँ-तहाँ दगने लगी शासन की बंदूक
जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ कविवर नागार्जुन की प्रसिद्ध कविता 'शासन की बंदूक' से ली गई है। नागार्जुन मूलतः मैथिली भाषी कवि रहे हैं और बाद में उन्होंने हिंदी में गद्य और पद्य साहित्य का सृजन किया। उनकी अनेक रचनाएँ हैं जिनमें मूलतः प्रगतिशील विचारों को देखा जा सकता है।

प्रसंग : नागार्जुन ने इस कविता में सामान्य जनता के दुख-दर्द और तकलीफों को प्रतीकात्मक एवं लाक्षणिक भाषा के सहारे व्यक्त करने का प्रयास किया है। जब शासन अंधा हो जाता है तो उसे जनता के दुख-दर्द समझ नहीं आते हैं। हर तरफ अत्याचार और राजनैतिक पार्टियों की मनमानी होती रहती है। जनता उसे पसंद नहीं करती, उसकी भर्त्सना भी करती है किंतु उस व्यवस्था को बदल नहीं पाती। कई बार ऐसा होता है कि जिस राजनीति में सत्य और अहिंसा को विशेष स्थान मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाता और शासन का अत्याचार बढ़ता जाता है; पर कभी न कभी ऐसा अवश्य होता है कि सच कहने वाले अपनी बात कह देते हैं और शासन की बंदूक ऐसे लोगों का कुछ भी नहीं बिगाड़ पाती।

व्याख्या : कवि कहते हैं कि नभ में बहुत ही अधिक मात्रा में विराट रूप में शासन की बंदूक ऐसी जनता की हूक को दबाकर खड़ी हो गई है जो कंकाल की तरह दिखाई देती है। जब शासन तंत्र हिटलरी हो जाता है तब उसकी बंदूक कानी हो जाती है अर्थात वह अच्छाई और बुराई में अंतर नहीं कर पाती और ऐसी स्थिति में आमजन ऐसे शासन को हिकारत भरी दृष्टि से देखते हैं और ऐसे शासन से घृणा करते हैं।

वास्तव में कवि ने इंदिरा गांधी की शासन व्यवस्था पर कटाक्ष किया है और इस शासन व्यवस्था को संवेदनहीन बताते हुए उन्हें हिटलर की उपमा दी है। शासन तंत्र के कुचक्र के कारण आम जनता मानो अंधी और बहरी हो गई है। कवि उपमा देते हैं कि यह जनता इतनी त्रस्त है कि विनोबा भावे भी मूक हो गए हैं। सत्य घायल हो गया है और अहिंसा चूक गई है, यही कारण है कि शासन की बंदूक हर जगह दगने लगी है। अब तो शासन व्यवस्था बहरे और अंधे की तरह कार्य कर रही है। उसे गरीब जनता की आवाज तथा पीड़ा नहीं दिखाई और सुनाई देती। अच्छे और बड़े लोग गूँगे हो गए हैं। कवि ऐसी शासन व्यवस्था पर तंज कसते हैं और कहते हैं ऐसी शासन व्यवस्था धन्य है जहाँ सच बोलने वालों को मारा जाता है, उनकी आवाज को जबरदस्ती दबा दिया जाता है। हर तरफ दुर व्यवस्था फैली हुई है, डर का माहौल बना हुआ है, गोलियाँ चल रही है। कवि कविता की अंतिम पंक्तियों में सकारात्मक पहलू जोड़ देते हैं और कहते हैं कि भले ही पूरे देश में अराजकता है और त्रासदी फैली हुई है फिर भी देश की स्वतंत्रता और जनता का कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता, भले ही शासन की बंदूक जितना भी प्रयत्न करे, वह यहाँ

के लोगों का बाल भी बाँका नहीं कर सकती। ऐसी परिस्थितियों को व्यक्त करने के लिए कवि ने जले हुए ठूँठ और उस पर बैठकर कूकने वाली कोकिला अर्थात कोयल का उद्धरण लिया है।

विशेष

- मुहावरों का प्रयोग।
- मानव मन का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण।
- व्यंग्यात्मक एवं लाक्षणिक भाषा का प्रयोग।
- उपमा अलंकार।
- प्रतीक शब्दों का प्रयोग।

बोध प्रश्न

- शासन की बंदूक कैसी है?
- कोकिला कहाँ बैठ कर कूकती है?
- घायल कौन हुआ?
- मूक कौन हो गया?
- धन्य कौन है?

14.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

जब अनुभव को कविता के रूप में लिखा जाता है तब ऐसी कविताएँ जीवन से जुड़कर एक अलग सौंदर्य की दृष्टि करती हैं। बाबा नागार्जुन ऐसे ही रचनाकार हैं। कवि बचपन में अपने विद्यालय में ट्रक ड्राइवर के बारे में सुना करते थे और बड़े होकर जब उन्होंने लेखन का कार्य शुरू किया तब उन्होंने अपनी पुरानी बातों को याद किया और उन्हीं यादों में लौटते हुए उन्होंने ट्रक ड्राइवर की संवेदना को 'गुलाबी चूड़ियाँ' कविता में व्यक्त किया। यह ट्रक ड्राइवर अपने परिवार से दूर कहीं प्राइवेट ट्रक चलाता है और अपने ट्रक में अपनी बेटी की गुलाबी चूड़ियाँ टांगे रहता है जो हरदम उसे यह अहसास कराती हैं कि उसका परिवार उसके साथ है। डॉ.त्रिवेणी झा ने अपनी पुस्तक 'नागार्जुन के काव्य में जीवन मूल्य' में इस कविता की चर्चा करते हुए लिखा है कि -

> "विषय सामग्री को कविता के हित के लिए उपयोग करना और कविता को जीना- किस प्रकार दो अलग-अलग बातें हैं, इसका पता 'गुलाबी चूड़ियाँ' नामक कविता से भी लगता है। नागार्जुन किस प्रकार अपने पारिवारिक संबंधों के सौंदर्य संसार को विराटतर करते जाते हैं, इसे समझने को यह कविता माध्यम हो सकती है।" (पृ. 134)

इसी प्रकार 'शासन की बंदूक' कविता में राजनैतिक यथार्थ को शब्द मिले हैं। कटु से कटु बात को सरल शब्दों में कह देना कवि की विशेषता रही है। बाबा नागार्जुन ने इस कविता में

इंदिरा गांधी जैसी नेता की खबर लेते हुए आम जनजीवन के दुख और दर्द को व्यक्त किया है। कवि समकालीन सत्ता को लताड़ लगाते हैं और आवश्यकता पड़ने पर जनता के साथ खड़े होकर सत्ता से सवाल भी पूछते हैं।

14.4 पाठ सार

एक पिता जो परदेश में रहता है और प्राइवेट ट्रक का ड्राइवर है। उस पर भी कविता लिखी जा सकती है, इसका उत्कृष्ट उदाहरण 'गुलाबी चूड़ियाँ' कविता है, जिसमें कवि नागार्जुन ने पिता के वात्सल्य का आँखों देखा चित्रण किया है। घर से दूर सड़कों पर महीनों-महीनों ट्रक चलाने वाले पिता के हृदय से अपनी बेटी के प्रति स्नेह खत्म नहीं होता, उसने अपनी बेटी की गुलाबी चूड़ियाँ ट्रक ने सामने टाँग रखी हैं जो उसे उसको गुड़िया जैसी बेटी की याद दिलाती हैं और वह उन्हीं में खो जाता है। वास्तव में नागार्जुन को पढ़ना एक जननायक से भेंट करने जैसा होता है। वह अपने व्यक्तित्व के अनुरूप अपनी रचनाओं में भी दिखाई देते हैं। कवि की यह कविता जहाँ एक ओर पाठकों को अखिल भारतीय परंपराओं से जोड़ती है, वहीं दूसरी ओर राजनीति की सैर भी कराती है।

'शासन की बंदूक' शीर्षक कविता में आम जनता के जीवन का वास्तविक संघर्ष इस कविता में दिखाई देता है। अपने समय में सक्रिय अनेक शक्तियों को पहचान कर व्यवस्था और तंत्र के बजाय जन-मन के पक्ष में खुलकर खड़े होने का साहस उनको एक कुशल राजनैतिक कवि बनाता है। नागार्जुन की कई कविताएँ कालजयीं कविताएँ हैं, जिनमें से एक 'शासन की बंदूक' कविता है। जनकवि होना इतना आसान नहीं होता किंतु अपनी अनेकानेक विशेषताओं के कारण वह जनकवि ही माने जाते हैं क्योंकि जनता के प्रति जवाबदेही इसकी मूल कसौटी है जिसे नागार्जुन जीवन भर निभाते हैं। वह साफ ढंग से सच बात कहते हैं। उनके सोचने समझने और बोलने में कोई दुविधा नहीं दिखाई देती। वह सदैव एक खतरनाक सच दो टूक शब्दों में कह देते हैं। वह सदैव सच बात कहते हैं और जुझारूपन उनके व्यक्तित्व की विशेषता बनकर उभरती है। लाक्षणिक और व्यंग्य भाषा के सहारे समसामयिक राजनीति पर कवि अपनी बात कहते हैं।

14.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. बाबा नागार्जुन आधुनिक भाव बोध के प्रमुख कवि हैं।
2. 'गुलाबी चूड़ियाँ' में कवि के हृदय की संवेदना और भावुकता को व्यक्त किया गया है।
3. 'शासन की बंदूक' नागार्जुन की प्रखर राजनीतिक चेतना का प्रतीक है।
4. नागार्जुन के काव्य में वस्तु और शिल्प का नवीन प्रयोग दिखाई देता है।

14.6 शब्द संपदा

1. अधेड़ = आधी उम्र का
2. अब्बा = पिता
3. अमानत = धरोहर
4. अहिंसा = जो हिंसा ना करें
5. आहिस्ते से = धीरे से
6. कानी = जिसे एक आँख से दिखाई न दे
7. कूक = कूकना
8. गुमान = घमंड
9. चांपकर = दबा कर
10. जुर्म = अपराध
11. झटका खाना = हिल जाना
12. ठूँठ = वृक्ष का सूखा हिस्सा
13. ड्राइवर = चालक
14. दगने लगना = छूटना
15. दूधिया वात्सल्य = स्नेहिल प्रेम
16. प्राइवेट = व्यक्तिगत
13. बधिरता = बहरापन
18. मूक = जो बोल ना सके/ गूँगा
19. बाल न बाँका = कुछ भी नुकसान न पहुँचा पाना
20. भाएँगी = अच्छी लगेंगी
21. मुछड़ = मूछ वाला
22. मुताबिक = अनुसार
23. रफ्तार = गति
24. रोबीला = प्रभावशाली
25. लाख बार = कई बार
26. स्वयं = अपने आप

27. हावी होना = प्रभाव जमाना

28. हिटलरी = हिटलर की तरह

29. हुक = काँटा

30. हूक = गहरी साँस

14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

14.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1. 'युगधारा' रचना है

A. महादेवी **B. नागार्जुन** C. अज्ञेय D. कोई नहीं

2. नागार्जुन का वास्तविक नाम है

A. अज्ञेय B. जयशंकर प्रसाद **C. वैद्यनाथ मिश्र** D. कोई नहीं

3. नागार्जुन की कविता 'गुलाबी चूड़ियाँ' में बस ड्राइवर का अपनी सात साल की बेटी के प्रति स्नेह किस भौतिक वस्तु के माध्यम से व्यक्त हुआ है?

A. बस के शीशे पर लगी बेटी की तस्वीर

B. बस की सीट पर रखा बेटी का खिलौना

C. ड्राइवर के हाथ में बँधा गुलाबी धागा

D. गियर के ऊपर हुक से लटकी चार गुलाबी चूड़ियाँ

4. 'शासन की बंदूक' कविता में 'कानी' शब्द का प्रयोग शासन की किस स्थिति को दर्शाने के लिए किया गया है?

A. बंदूक की पुरानी बनावट

B. ऐसी व्यवस्था जो केवल सत्य को देखती है

C. विवेकहीन शासन जो उचित और अनुचित में भेद नहीं कर पाता

D. सैनिकों की शारीरिक अक्षमता

5. 'गुलाबी चूड़ियाँ' कविता में जब कवि ड्राइवर से चूड़ियों के बारे में पूछता है, तो ड्राइवर की प्रतिक्रिया क्या होती है?

A. वह अपनी आँखों में वात्सल्य लिए धीमे स्वर में उत्तर देता है

B. वह चूड़ियों को तुरंत वहाँ से हटा देता है

C. वह क्रोधित होकर कवि को बस से उतरने को कहता है

D. वह अनसुना कर देता है और बस की गति बढ़ा देता है

6. नागार्जुन ने 'शासन की बंदूक' में 'विनोबा मूक' वाक्यांश का प्रयोग किस संदर्भ में किया है?

A. शासन द्वारा विनोबा जी को बोलने से रोकने पर

B. जनता द्वारा अहिंसा का मार्ग त्याग देने पर

C. प्रशासनिक दमन के समय प्रतिष्ठित लोगों की चुप्पी और तटस्थता पर

D. विनोबा भावे द्वारा मौन व्रत धारण करने पर

7. 'शासन की बंदूक' कविता के अंत में 'जली ठूँठ पर बैठकर गई कोकिला कूक' पंक्ति का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

A. शासन की जीत का उत्सव

B. जंगल में लगी आग का वर्णन

C. कोयल का मर जाना

D. घोर अराजकता और दमन के बीच भी सत्य और स्वतंत्रता की आवाज़ का जीवित रहना

8. नागार्जुन की काव्य शैली के संदर्भ में कौन सा कथन पाठ के आधार पर सही है?

A. उनकी कविता में यथार्थवादी चित्रण और व्यंग्य का पुट मिलता है

B. उनकी रचनाएँ केवल काल्पनिक विषयों पर आधारित होती हैं

C. वे केवल कठिन संस्कृत शब्दों का प्रयोग करते हैं

D. वे केवल राज दरबारों की प्रशंसा में कविता लिखते हैं

9. कविता 'गुलाबी चूड़ियाँ' में ड्राइवर अपनी बेटी की चूड़ियों को किस शब्द से संबोधित करता है?

A. अमानत B. गहना C. उपहार D.बोझ

10. नागार्जुन ने 'शासन की बंदूक' कविता में शासन की तुलना किस तानाशाह से की है?

A. नेपोलियन B. मुसोलिनी C. ज़ार **D. हिटलर**

खंड (ब)

14.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. नागार्जुन की कविता में कौन सा भावबोध है?
2. 'शासन की बंदूक' कविता का प्रमुख उपजीव्य क्या है?
3. जनचेतना के प्रति नागार्जुन का दृष्टिकोण दें।
4. नागार्जुन के काव्य संग्रहों के नाम लिखिए।
5. कवि के व्यक्तित्व का रूपायन कीजिए।

खंड (स)

14.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. नागार्जुन के काव्य साहित्य का परिचय दीजिए।
2. जनवादी कवि के रूप में नागार्जुन की क्या विशेषताएँ हैं?
3. 'गुलाबी चूड़ियाँ' कविता का भाव सौंदर्य निरूपित कीजिए।
4. नागार्जुन की काव्य भाषा का परिचय दें।
5. शासन की बंदूक' कविता में अभिव्यक्त व्यंग्य की चर्चा कीजिए।

14.8 पठनीय पुस्तकें

1. नागार्जुन: अनभिजात का क्लासिक : विजय बहादुर सिंह
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र
3. हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास : सं. मोहन अवस्थी
4. नागार्जुन की काव्य यात्रा : रतन कुमार पांडेय

इकाई 15 : कालिदास : नागार्जुन

इकाई की रूपरेखा

15.1 प्रस्तावना

15.2 उद्देश्य

15.3 मूल पाठ : कालिदास : नागार्जुन

15.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

15.3.2 अध्येय कविता

15.3.3 विस्तृत व्याख्या

15.4 पाठ सार

15.5 पाठ की उपलब्धियाँ

15.6 शब्द संपदा

15.7 परीक्षार्थ प्रश्न

15.8 पठनीय पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप जान चुके हैं कि हिंदी साहित्य में 'छायावाद' मूलतः व्यक्तिवादी कविता का युग है। इसमें प्रकृति प्रेम को महत्व दिया गया तथा कवि 'स्वान्तःसुखाय' अर्थात स्वयं की खुशी के लिए काव्य रचने लगे किंतु प्रगतिवादी काव्य धारा का मुख्य उदेश्य 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' रहा है। प्रगतिवाद छायावादोत्तर युग के नई काव्यधारा के रूप में उदय हुआ । प्रगति का अर्थ है आगे बढ़ना अर्थात उन्नति करना। यहाँ व्यक्ति की भावनाओं की अपेक्षा सामाजिक भावना पर बल दिया गया।

प्रगतिवादी कविता का केंद्र शोषित वर्ग रहा और शोषक वर्ग के प्रति विद्रोह। इसके साथ राष्ट्रप्रेम, प्रकृति के प्रति लगाव, रूढ़ियों का खंडन तथा मानवतावाद पर बल दिया गया। इसके प्रमुख कवियों में केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, शिवपूजन सहाय तथा नागार्जुन का नाम आता है। वैद्यनाथ मिश्र ही हिंदी साहित्य जगत में नागार्जुन के नाम से विख्यात हुए। इनकी कविताओं में गरीबी, भुखमरी, बीमारी, अकाल, बाढ़ जैसे सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया गया है। नागार्जुन की रचनाओं और वास्तविक जीवन में गहरा सामंजस्य है तथा पौराणिक आख्यानों का संदर्भ भी मिलता है। बाबा की कविताओं में प्रगतिवादी चेतना का सहज सौंदर्य प्रतिफलित होता है।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत आप नागार्जुन द्वारा रचित प्रसिद्ध कविता 'कालिदास' के बारे में अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप -

- नागार्जुन की कविता 'कालिदास' की व्याख्या कर सकेंगे।
- इस कविता में निहित पौराणिक संदर्भों को जान सकेंगे।
- इस कविता के काव्यगत सौंदर्य को समझ सकेंगे।
- नागार्जुन की प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
- प्रकृति चित्रण के बारे में जान सकेंगे।

15.3 मूल पाठ : कालिदास : नागार्जुन

15.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

'कालिदास सच सच बतलाना' नागर्जुन की बहुचर्चित एवं भावनाप्रधान कविता है जो उनके काव्य संग्रह 'सतरंगें पखों' वाली में संकलित है। इस कविता में नागार्जुन ने संस्कृत के महाकवि द्वारा रचित महाकाव्यों के रघुवंशम्, कुमारसंभव तथा मेघदूतम् से अज-इंदुमती, रति का विलाप तथा यक्ष की विरह वेदना के चित्रण से इतने व्यथित हुए कि स्वयं कवि कालिदास से ही पूछ बैठे कि कालिदास सच-सच बतलाना कि "यह तुम्हारी पीड़ा ही है न?" क्योंकि पर पीड़ा की अनुभूति से ही ऐसी करुण कथा लिखी जा सकती है। सुमित्रानंदन पंत ने सही ही कहा है - "वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान, उमड़कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।" यह कविता शिल्प की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है।

16.3.2 अध्येय कविता : कालिदास

कालिदास सच-सच बतलाना!
इंदुमती के मृत्युशोक से
अज रोया या तुम रोये थे?
कालिदास सच-सच बतलाना!
शिवजी की तीसरी आँख से
निकली हुई महाज्वाला में
घृत- मिश्रित सूखी समिधा-सम
कामदेव जब भस्म हो गया
रति का क्रंदन सुन आँसू से
तुमने ही तो दृग धोए थे
कालिदास! सच-सच बतलाना
रति रोयी थी या तुम रोये थे?
वर्षा ऋतु की स्निग्ध भूमिका
प्रथम दिवस आषाढ़ मास का

देख गगन में श्याम घन-घटा
विधुर यक्ष का जब मन उचटा था
खड़े-खड़े तब हाथ जोड़कर
चित्रकूट के सुभग शिखर पर
उस बेचारे ने भेजा था
जिनके ही द्वारा संदेशा
उन पुष्करावर्त मेघों का
साथी बनकर उड़ने वाले
कालिदास! सच-सच बतलाना
पर पीड़ा से पूर-पूर हो
थक-थककर औ' चूर चूर हो
अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
प्रियवर! तुम कब सोये थे ?
रोया यक्ष या तुम रोये थे !
कालिदास सच-सच बतलाना !!

निर्देश : 1. इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

16.3.3 विस्तृत व्याख्या

रघुवंश का प्रसंग

1

कालिदास सच-सच बतलाना
इंदुमती के मृत्युशोक से
अज रोया या तुम रोये थे?
कालिदास सच-सच बतलाना!

शब्दार्थ : शोक = दुःख। इंदुमती = पूर्णिमा अज की पत्नी। अज = अजन्मा, ईश्वर एवं राजा दशरथ के पिता।

संदर्भ : यह काव्यांश बाबा नागार्जुन की कविता 'कालिदास सच-सच बतलाना' से ली गई हैं।

प्रसंग : इस काव्यांश में कवि ने अज और इंदुमती के प्रेम और विरह का वर्णन किया है।

व्याख्या : कालिदास कविता का प्रथम अनुच्छेद 'रघुवंश' महाकाव्य के प्रसंग पर आधारित है। इस महाकाव्य में कालिदास ने महाराज अज की पत्नी के निधन पर अज द्वारा किए गए विलाप को मार्मिक अभिव्यक्ति दी है। नागार्जुन महाकवि कालिदास से पूछते हैं कि रघुकुल के महाराज अज का अपनी पत्नी की मृत्यु पर जिस तरह से विलाप का चित्रण आपने किया है, वास्तव में वह अज का शोक था या फिर तुम्हारा? ऐसा लगता है कि उसका दुख तुमने अपने भीतर धारण कर लिया था। तुम्हारा यह विरह वर्णन देखकर तो यही महसूस होता है कि यह महाराज अज के

आँसू न होकर उसकी पीड़ा को आत्मसात कर उसकी जगह तुमने ही आँसू बहाए हों।

काव्यगत विशेषताएँ

1. भाषा सरल मधुर एवं प्रवाहमान है।
2. पौराणिक आख्यानों का संदर्भ है।
3. नागार्जुन पर पीड़ा को अपनी पीड़ा मानने वाले कवि हैं।

बोध-प्रश्न

- कालिदास के किस महाकाव्य में अज और इंदुमती का प्रसंग आता है?
- अज के दुःख का कारण लिखिए।
- नागार्जुन ने कालिदास से क्या पूछा?

कुमारसंभव का प्रसंग

2

शिवजी की तीसरी आँख से
निकली हुई महाज्वाला में
घृत- मिश्रित सूखी समिधा-सम
कामदेव जब भस्म हो गया
रति का क्रंदन सुन आँसू से
तुमने ही तो दृग धोए थे
कालिदास! सच-सच बतलाना
रति रोयी थी या तुम रोये थे?

शब्दार्थ : धृत = घी। समिधा = हवन की लकड़ी। क्रन्दन = विलाप करना। दृग = आँख। रति = कामदेव की पत्नी, प्रीति। ज्वाला = आग की लापत, दुःख के कारण होने वाली पीड़ा। भस्म = राख।

संदर्भ : यह काव्यांश बाबा नागार्जुन की कविता 'कालिदास सच-सच बतलाना' से ली गई हैं।

प्रसंग : इस काव्यांश में कवि ने कामदेव की मृत्यु पर उसकी पत्नी रति विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया है।

व्याख्या: 'कालिदास सच-सच बतलाना' कविता का दूसरा अनुच्छेद कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य 'कुमारसंभव' से लिया गया है। इसमें उस घटना का वर्णन आता है जब तारकासुर के कष्टों से पीड़ित देवताओं को यह पता चलता है कि भगवान शंकर का पुत्र ही देव सेनापति के रूप में असुरों का विनाश कर सकता है अत: सभी शिव के पास पहुँचते हैं किंतु भगवान शिव समाधि में लीन थे। अत: देवता कामदेव को अग्रणी कर ले जाते हैं। कामदेव अपने मित्र वसंत की सहायता से शिव के पास पहुँचता है। वहाँ उसने अपने धनुष पर मोहनास्त्र चढ़ाया और शिव की समाधी भंग करने में सफल हुआ किंतु शिव के क्रोध से नहीं बच पाता है। शिव के तृतीय नेत्र की ज्वाला से प्रेम का देवता कामदेव भस्म हो जाता है। अपने पति की मृत्यु से रति विलाप करने लगती है। कालिदास ने रति की विरह वेदना का मार्मिक चित्रण किया है। नागार्जुन के

अनुसार जो पर पीड़ा की अनुभूति कर सके वही कवि हो सकता है। इससे प्रभावित होकर ही बाबा नागार्जुन ने कालिदास से पूछा कि 'कालिदास सच-सच बतलाना' कि यह रति का क्रंदन था या फिर तुम्हारी पीड़ा?

काव्यगत विशेषताएँ

1. नागार्जुन ने रति की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है।
2. पौराणिक संदर्भ शिव समाधि भंग फलस्वरूप कामदेव दहन का वर्णन हुआ है।
3. तत्सम शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

बोध प्रश्न

- कुमारसंभव में किस असुर के वध का वर्णन आता है?
- शिव की समाधी किसने भंग की और क्यों?
- रति कौन थी, उसके विलाप का क्या कारण था?

मेघदूत का प्रसंग

वर्षा ऋतु की स्निग्ध भूमिका
प्रथम दिवस आषाढ़ मास का
देख गगन में श्याम घन-घटा
विधुर यक्ष का जब मन उचटा था
खड़े-खड़े तब हाथ जोड़कर
चित्रकूट के सुभग शिखर पर
उस बेचारे ने भेजा था
जिनके ही द्वारा संदेशा
उन पुष्करावर्त मेघों का
साथी बनकर उड़ने वाले
कालिदास ! सच-सच बतलाना
पर पीड़ा से पूर-पूर हो
थक-थककर औ' चूर चूर हो
अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
प्रियवर! तुम कब सोये थे ?
रोया यक्ष या तुम रोये थे !
कालिदास सच-सच बतलाना !!

शब्दार्थ : घन = बादल। शिखर = पर्वत। पुष्करावर्त = जलाशय। अमल-धवल = स्वच्छ, उज्जवल। गिरि = पर्वत।

संदर्भ : यह काव्यांश बाबा नागार्जुन की कविता 'कालिदास सच-सच बतलाना' से ली गई हैं।

प्रसंग : इस काव्यांश में कवि ने यक्ष की मानसिक वेदना का चित्रण किया है।

व्याख्या : 'कालिदास सच-सच बतलाना' का तीसरा अनुच्छेद 'मेघदूत' महाकाव्य के प्रसंग पर आधारित है। यह महाकवि कालिदास द्वारा रचित है। इसमें यक्ष की विरह वेदना का वर्णन है। इस परिच्छेद में यह कथा है कि एक यक्ष अपनी प्रियतमा से बहुत प्रेम करता है। वह उसके प्रेम में इतना डूब जाता है कि अपने स्वामी धन के देवता कुबेर की सेवा में गलती कर बैठता है।

इससे कुबेर क्रोधित होकर उसे अलकापुरी से निष्काषित कर देते हैं। अभिशप्त यक्ष को एक वर्ष तक पृथ्वी पर रहना पड़ता है। यक्ष पृथ्वी पर एकांत वास करने को विवश होता है। वर्षा ऋतु प्रारंभ होते ही आकाश में काली घटाओं को घुमड़ते हुए देख कर यक्ष का मन विरह से व्याकुल हो उठता है। वह अपनी पत्नी की जीवन रक्षा के लिए संदेश भेजने का निर्णय करता है किंतु प्रियतमा के पास सन्देश ले जाने वाला भी कोई नहीं होता अत: वह उमड़ते बादलों को ही अपना दूत बनाकर प्रियतमा तक अपना संदेश पहुँचाता है। इसी से प्रभावित होकर नागार्जुन कालिदास से पूछते हैं कि क्या जल से भरे दूत मेघों के साथ उड़ने वाले तुम ही थे? सच-सच बतलाना। इस प्रकार नागार्जुन पर-पीड़ा को अपनी पीड़ा मानने वाले महाकवि की संवेदनशीलता से बहुत प्रभावित हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

1. वर्षा ऋतु के आरंभ होते ही प्रकृति आंदोलित होने लगती है।
2. विरह वेदना तीव्र हो जाती है।
3. भाषा सरल, सहज एवं प्रवाहमान है।
4. तत्सम और सामान्य शब्दों का एक साथ प्रयोग कवि के शिल्प सौंदर्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।

बोध-प्रश्न

- मेघदूत किसकी रचना है?
- यक्ष को किसने शाप दिया और क्यों?
- यक्ष किसके द्वारा संदेश भेजना चाहता है?

विवेचनात्मक टिप्पणी

प्रिय छात्रो! अब तक के अध्ययन से आप जान ही चुके हैं कि नागार्जुन जनकवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। नागार्जुन की कविता में उस समय की युगीन चेतना को देखा जा सकता है। वे स्वयं इस बात को स्पष्ट करते हैं कि -

> "संघर्षशील जनता का विपन्न बहुलांश ही शक्ति प्रदान करता है। कोटि-कोटि भारतीयों के वे निरीह, पिछड़े हुए, अकिंचन दुर्बल समुदाय जो चाहने पर भी अपना मतपत्र नहीं डाल पाए, मेरे चेतना उनकी विशेषताओं से ऊर्जा हासिल करेगी।" (नागार्जुन और उनका रचना संसार, पृ. 16)

नागार्जुन आम जनता के पक्षधर हैं। व उन्हें प्रणाम करते हैं जो जीवन में असफलता का शिकार हुए, संघर्षों से जुझते हुए दुखों को झेल रहे हैं। इसीलिए वे कहते हैं -

जो नहीं हो सके पूर्ण काम
मैं उनको करता हूँ प्रणाम।

नागार्जुन की जड़ें ज़मीन से जुड़ी हुई हैं। उनके संबंध में विजय बहादुर सिंह का यह कथन उल्लेखनीय है -

> "उनकी (नागार्जुन की) चिंताएँ भारत की लोक-बिरादरी की स्वाभाविक और गहरी चिंताएँ हैं। .... उनकी कल्पनाओं का चेहरा ज़मीनी है और भाषा का संगीत बहुरंगी और बहुआयामी। संवेदना तो ऐसी व्यापक और करुण, यत्र-तत्र क्षोभकारी और आक्रामक कि कविता ज़िंदगी की भाषा बन गई है।" (नागार्जुन का रचना संसार, पृ.8)

प्रिय छात्रो! ध्यान देने की बात है कि नागार्जुन आलीशान बंगले में बैठकर पीड़ितों की कविता नहीं लिखते। वे उस आदमी के पास पहुँच जाते हैं, उसके साथ रहकर उसके सुख-दुख बाँटकर उसे नजदीक समझने की कोशिश करते हैं। उसके बाद कविता के रूप में अपनी निजी अनुभूति को अभिव्यक्त करते हैं। इस संबंध में विजय बहादुर सिंह को बाबा नागार्जुन द्वारा लिखे गए पत्र का अंश देखें -

> "कब कभी मैं ग्रामांचालों के किनारे-किनारे बसी हुई दलित बस्तियों के अंदर अथवा महानगरों के पिछवाड़े गंधे नालों के इर्द-गिर्द बसी हुई झुग्गियों की दुनिया में जाता हूँ तो सुविधा प्राप्त वर्गों द्वारा परिचालित राजनीति के प्रति मेरा रोम-रोम नफरत से सुलग उठता है।" (नागार्जुन का रचना संसार, पृ. 16)

इसका यह अर्थ भी नहीं कि नागार्जुन संपन्न वर्ग से हमेशा नफरत ही करते थे। पर इतना जरूर है कि पीड़ित, वंचित और शोषित वर्ग की पीड़ा उनसे देखी नहीं जाती। वे यह भी कहते हैं कि "सनातन काल से सुविधा प्राप्त एवं उच्च वर्गों के भी सहृदय और ईमानदार व्यक्तियों ने जन साधारण के दुख-सुख को निश्छल तौर पर अपनी प्रतिभा का आलंबन बनाया है। वाल्मीकि, कालिदास, तुलसीदास, रवींद्र, प्रेमचंद उन्हीं में से रहे हैं।" (नागार्जुन का रचना संसार, पृ. 16)

नागार्जुन आशावादी थे। वे कभी भी ढिंढोरा नहीं पीटते। वे उन तमाम समयस्याओं को सामने लाते हैं जिनसे ग्रामीण समाज ही नहीं बल्कि मध्य और निम्न वर्ग भी त्रस्त है। नागार्जुन उस समाज के प्रतिनिधि कवि के रूप में हमारे समक्ष आते हैं जिसके पास न कोई सपना है, न कोई अपना। उन्हें भावी-भारत में अंधकार नहीं दीखता। शायद इसीलिए वे कह गए -

> "मैं स्पष्ट देख रहा हूँ, आगामी पच्चीस वर्षों के अंदर बहुत से चमत्कार अपने देश में होने वाले हैं .... हमारी जनता से ही एक-एक चमत्कारों की जननी होगी।" (नागार्जुन का रचना संसार, पृ. 17)

नागार्जुन की कविता किसी एक काल या एक प्रांत तक सीमित नहीं है। उसका फलक विस्तृत है। वह आज भी उतना प्रासंगिक है। वे सचेत रूप से भी और अचेत रूप से भी जनता के साथ ही जुड़े रहे। रामविलास शर्मा कहते हैं कि "नागार्जुन जितने क्रांतिकारी सचेत रूप से हैं, उतने ही अचेत रूप से भी हैं।" (नई कविता और अस्तित्ववाद, पृ. 141)। उनकी कथनी और करनी में कहीं भी किसी भी तरह का अंतर दिखाई नहीं देता। यदि यह कहें कि उन्होंने किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान को आत्मसात जिसके कारण वे दीन दलितों के बाबा नागार्जुन बने तो गलत नहीं होगा।

नागार्जुन की कविता में एक ओर सामाजिक, राजनैतिक विसंगतियों पर प्रहार देखा जा सकता है तो दूसरी ओर पीड़ित और शोषितों के प्रति प्रतिबद्धता। वे अपनी प्रतिबद्धता को इस प्रकार व्यक्त करते हैं -

प्रतिबद्ध हूँ, जी हाँ प्रतिबद्ध हूँ
बहुजन समाज की अनुपल प्रगति के निमित्त
****
आबद्ध हूँ, जी हाँ आबद्ध हूँ -
स्वजन-परिजन के प्यार की डोर में
प्रियजन के पलकों की कोर में

नागार्जुन की कविताओं में रिक्शे वाले के खुरदरे पैर हैं। एक अनोखी बेचैनी है। हरिजनों को आग में झोंक देने का विराट दुष्कांड है। लोकतंत्र का खोटा सिक्का है। शासन का बंदूक है। अग्निबीज है। स्वाधीन भारतीय प्राइमरी स्कूल के भुखमरे स्वाभिमानी सुशिक्षक का प्रेत है। थकित-चकित-भ्रमित-भग्न मन है। आकाल और उसके बाद का चित्रण है। घर घर को आलोकित करने का मशाल है। कटहल के छिलके जैसी जीभ है। पैने दांतों वाली मादा सूअर है, बादल है। विभिन्न प्राकृतिक छटाएँ हैं। गुलाबी चूड़ियाँ हैं। दंतुरित मुस्कान है। सिदूर तिलकित भाल है। दूधिया निगाहें हैं। हरिचंदन सा पंक है। कहने का आशय है कि जिस वस्तु पर औरों की दृष्टि नहीं जाती उसे नागार्जुन की कविता में देखा जा सकता है। वह वस्तु उनके कवित्व की रचना-भूमि बन जाती है। इस संबंध नामवर सिंह का यह कथन उल्लेखनीय है-

> "उनकी कविता का संसार वस्तुतः वह लोक सामान्य जीवन ही है, जिसे अति सामान्य समझकर अन्य कवि आँख मूँद लेते हैं। यदि आज की कविता में 'दंतुरित मुस्कान', 'सिंदूर तिलकित भाल' और एक बस के ड्राइवर के सामने उसकी बच्ची द्वारा टाँगी गई 'गुलाबी चूड़ियाँ' देखनी हो तो नागार्जुन की कविता की दुनिया में ही जाना होगा।" (नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएँ, पृ. 7)

नागार्जुन की कविताएँ जनवादी कविताएँ हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। नागार्जुन कभी भी झूठ का सहारा नहीं लिया। सच कहने के लिए डरते भी नहीं थे और पीछे भी नहीं हटते। इसीलिए वे कह गए -

जी हाँ सत्य को लकवा मार गया है,
इसे इमर्जेंसी का शॉक लगा है
लगता है, कि अब वह किसी का न रहा
जी हाँ, सत्य सब पड़ा रहेगा
लोथ की तरह, स्पंदन शून्य मांसल देह की तरह।

'कालिदास' सत्य संबंधी व्यंजना प्रधान उनकी एक और कविता है। इसमें कविता में कविता कालिदास से सच बोलने का आग्रह करते हैं।

कालिदास सच-सच बतलाना!
इंदुमती के मृत्युशोक से

अज रोया या तुम रोये थे?

इन पंक्तियों में कवि यह कहते हुए नजर आ रहे हैं कि इंदुमति की मृत्यु पर अज नहीं रोया बल्कि कालिदास स्वयं रोया है। 'सच सच बतलाना' में यह ध्वनित होता है कि तुम सच को स्वीकार क्यों नहीं करते?

कहना न होगा कि नागार्जुन कालिदास से अत्यंत प्रभावित थे। इस संदर्भ में उनका यह कथन द्रष्टव्य है -

> "हिंदी में तो किसीने अधिक प्रभावित नहीं किया। संस्कृत में कालिदास की सूझ (मेघदूत) लाजवाब है। भारतीयता के प्रतीक के रूप में यदि एक ही व्यक्ति का नाम लेने को कहा जाए तो मैं कालिदास का ही नाम लूँगा। कालिदास में प्राकृति की गहराई और व्यापकता अनूठी है। शैली और प्रयोग दोनों ही दृष्टि से कालिदास बेजोड़ है।" (मेरे साक्षात्कार, पृ. 47)

नागार्जुन अपनी बात को कहने के लिए प्रतीक और बिंबों का प्रयोग करते हैं। सृजनात्मक क्षमता और कल्पनाशीलता के आधार पर प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग किया जाता है। प्रतीक और बिंब तो वस्तुतः कवि के अनुभव संसार के ही उपज होते हैं। शोषक और तानाशाह व्यक्तियों पर कुठाराघात करते समय नागार्जुन मिथकों का भी प्रयोग करते हैं -

> "मैं शोषक और तानाशाह व्यक्तियों के खिलाफ जनमत तैयार करना अपना दायित्व मानता हूँ, इसलिए जो प्रतीक अधिक मुखरित होते हैं - दृगया, काली, त्रिमूर्ति जैसे प्रतीक हैं। इन्हें अधिक उभारता हूँ ताकि जगह-जगह वह माहौल बने। कविता मिथक से चेतना और प्राण ही नहीं, रूप और वस्तु भी ग्रहण करती है।" (मेरे साक्षात्कार, पृ. 43)

किसी भी रचना के विचारों का होना महत्वपूर्ण है। मानवीय संवेदना का सहज रूप जब रचना में आता है तो वह रचना स्वतः ही श्रेष्ठ बन जाते है। और नागार्जुन इसी बात पर विश्वास करते थे कि "दमन के खिलाफ भूख और बेकारी का बिगुल ही महा जनक्रांति का रूप लेगा।" (मेरे साक्षात्कार, पृ. 47)।

बोध प्रश्न

- नागार्जुन की कविताओं की रचना-भूमि क्या है?
- नागार्जुन किस बात पर विश्वास करते थे?
- शोषक और तानाशाह व्यक्तियों के खिलाफ जनमत तैयार करने के संबंध में नागार्जुन का क्या मत है?

15.4 पाठ-सार

बाबा नागार्जुन प्रगतिवादी कवियों में प्रमुख कवि हैं। इनकी कविताओं में पूरी भारतीय काव्य परंपरा को जीवंत रूप में देखा जा सकता है। नागार्जुन जनता के कवि रहे हैं अत: उनके काव्य में अपने परिवेश की समस्याओं, चिंताओं एवं संघर्ष को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है साथ ही इनकी रचनाओं में लोक संस्कृति के महत्व को भी बल मिला है। नागार्जुन ने 'कालिदास सच-

सच बतलाना' शीर्षक कविता मे कविता की रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है। नागार्जुन का मानना है कि जब भी कोई कवि कविता सृजन करता है तो उसके पात्र रचनाकार को गहराई से प्रभावित करते हैं। आम आदमी की पीड़ा को समझने वाला सहृदय होने के कारण कवि पात्रों की पीड़ा के माध्यम से अपनी पीड़ा को अभिव्यक्त करता है। नागार्जुन ने 'कालिदास' द्वारा रचित महाकाव्यों की पीड़ा को अपने हृदय में अनुभव किया है। यह बाबा नागार्जुन के सूक्ष्म चिंतन का परिणाम है।

'रघुवंश' जिसमें अज और इंदुमती की कथा है। 'कुमारसंभव' में कामदेव तथा रति विलाप का प्रसंग आता है तो मेघदूत में यक्ष और उसके विरह का वर्णन है। नागार्जुन की इस छोटी सी कविता का शिल्प विधान बहुत बढ़िया बन पड़ा है। भाषा सरल और प्रवाह युक्त है। सच सच बतलाना, थककर चूर चूर होना जैसे सामान्य शब्दों का प्रयोग हुआ है वहीं अमल-धवलगिरि, घृत मिश्रित्त, मृत्युशोक, क्रंदन महाज्वाला आदि शब्दों के प्रयोग से वे स्वयं को कालिदास से जोड़ लेते हैं। प्रगतिशील चेतना के वाहक कवि के द्वारा भाषा शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है।

15.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. नागार्जुन की रचनाओं और वास्तविक जीवन में गहरा सामंजस्य है।
2. 'कालिदास' कविता छोटी होते हुए भी शिल्प की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसकी भाषा सरल, प्रवाह युक्त एवं मधुर है।
3. नागार्जुन ने भारतीय संस्कृति एवं लोक जीवन को बहुत महत्व दिया है।
4. नागार्जुन का मानना है कि कवि की सार्थकता तब है जब उसके पात्रों की पीड़ा और सुख-दुःख को पाठक आत्मसात कर सके।

15.6 शब्द संपदा

1. अभिशप्त = शाप से ग्रस्त
2. आत्मसात = अपने में समाहित करना
3. चिन्तन = मन में किया जाने वाला विवेचन
4. चेतना = समझ
5. निष्काषित = बहिष्कृत
6. प्रत्यक्ष = जो आँखों के सामने हो
7. यक्ष = कुबेर के सेवक
8. सम्वेदनशील = भावुक, सहृदय

9. सामंजस्य = मेल

10. सूक्ष्म = बहुत छोटा

15.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

15.7 सही विकल्प चुनिए -

1. प्रगतिवादी काव्यधारा और छायावाद के बीच मुख्य अंतर क्या है?

A. छायावाद ने रूढ़ियों का खंडन किया, जबकि प्रगतिवाद ने उनका समर्थन किया।

B. छायावाद सामाजिक चेतना पर आधारित है, जबकि प्रगतिवाद व्यक्तिगत भावनाओं पर।

C. प्रगतिवाद में केवल प्रकृति प्रेम को महत्व दिया गया है।

D. छायावाद 'स्वान्तःसुखाय' काव्य है, जबकि प्रगतिवाद का लक्ष्य 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' है।

2. नागार्जुन की कविता 'कालिदास' उनके किस काव्य संग्रह में संकलित है?

A. प्यासी पथराई आँखें **B. सतरंगें पंखों वाली**

C. पुरानी जूतियों का कोरस D. युगधारा

3. नागार्जुन कालिदास से बार-बार 'सच-सच बतलाना' क्यों कह रहे हैं?

A. वे कालिदास की ऐतिहासिकता पर संदेह कर रहे हैं।

B. वे कालिदास को मिथ्या कथाएँ गढ़ने के लिए दोषी ठहरा रहे हैं।

C. वे महाकाव्यों के ऐतिहासिक तथ्यों की पुष्टि करना चाहते हैं।

D. वे जानना चाहते हैं कि पात्रों का विलाप वास्तव में कालिदास की अपनी पीड़ा थी या नहीं।

4. महाराज और इंदुमती का प्रसंग कालिदास के किस महाकाव्य पर आधारित है?

A. अभिज्ञान शाकुंतलम **B. रघुवंश** C. मेघदूत D. कुमारसंभव

5. कामदेव के भस्म होने पर उनकी पत्नी रति के विलाप का वर्णन किस ग्रंथ के संदर्भ में किया गया है?

A. रघुवंश B. ऋतुसंहार **C. कुमारसंभव** D. मेघदूत

6. मेघदूत के प्रसंग में, यक्ष को अलकापुरी से किसने और क्यों निष्कासित किया था?

A. भगवान शिव ने, समाधि भंग करने के प्रयास के कारण।

B. इंद्र ने, अपनी सत्ता के अहंकार में।

C. कुबेर ने, सेवा में त्रुटि करने के कारण।

D. एक ऋषि ने, उनके तपोवन में व्यवधान डालने के कारण।

7. नामवर सिंह के अनुसार नागार्जुन की कविता की विशिष्टता क्या है?

A. उनकी कविता पूरी तरह से काल्पनिक और रूमानी है।

B. वे केवल संस्कृत के कठिन शब्दों का प्रयोग करते हैं।

C. वे लोक सामान्य जीवन के उन दृश्यों को चुनते हैं जिन्हें अन्य कवि अनदेखा कर देते हैं।

D. वे केवल उच्च वर्ग के वैभव का वर्णन करते हैं।

8. नागार्जुन ने 'सत्य' के बारे में क्या टिप्पणी की है?

A. सत्य को लकवा मार गया है और उसे इमरजेंसी का शौक लगा है।

B. सत्य केवल ग्रंथों में सुरक्षित है।

C. सत्य हमेशा विजयी होता है।

D. सत्य कभी भी स्पंदन शून्य नहीं हो सकता।

9. नागार्जुन की कविताओं में प्रयुक्त 'अमल-धवल गिरि' और 'पुष्करावर्त मेघ' जैसे शब्द क्या दर्शाते हैं?

A. कवि की केवल ग्रामीण शब्दावली पर पकड़।

B. कवि का कालिदास की संस्कृत परंपरा और प्रकृति चित्रण से गहरा जुड़ाव।

C. शब्दावली की कमी के कारण कठिन शब्दों का प्रयोग।

D. आधुनिक राजनीति के प्रति उनका विद्रोह।

10. नागार्जुन अपने आप को किस प्रकार का कवि मानते हैं?

A. वे एक ऐसे कवि हैं जो केवल महलों में रहकर रचना करते हैं।

B. वे एक ऐसे कवि हैं जिन्हें सामाजिक सरोकारों से कोई लेना-देना नहीं है।

C. वे केवल पौराणिक आख्यानों को दोहराने वाले कवि हैं।

D. वे एक प्रतिबद्ध 'जनकवि' हैं जो बहुजन समाज की प्रगति के लिए आबद्ध हैं।

खंड (ब)

15.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उतर 200 शब्दों में दीजिए।

1. प्रगतिवादी काव्यधारा का मुख्य उद्देश्य क्या था?
2. 'कालिदास' कविता की विशेषता लिखिए।
3. यक्ष को किसने शाप दिया तथा क्यों?
4. नागार्जुन की काव्यगत विशेषता लिखिए।
5. कालिदास सच-सच बतलाना
   इंदुमती के मृत्युशोक से
   अज रोया या तुम रोये थे?
   - इन काव्य पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
6. अमल-धवल गिरि के शिखरों पर
   प्रियवर! तुम कब सोये थे ?
   रोया यक्ष या तुम रोये थे !
   कालिदास सच-सच बतलाना !!
   - इन पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

15.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'नागार्जुन जनकवि हैं।' इस कथन के आलोक में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. 'कालिदास' कविता में किन पौराणिक आख्यानों का उल्लेख किया गया है? उदाहरण सहित लिखिए।
3. नागार्जुन के अनुसार कवि पात्रों की पीड़ा के माध्यम से अपनी ही पीड़ा को अभिव्यक्त करता है। कैसे? स्पष्ट कीजिए।
4. 'कालिदास' कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

15.8 पठनीय पुस्तकें

1. नागार्जुन : सतरंगे पंखों वाली
2. नागार्जुन रचनावली (भाग 1 और 2) : सं. शोभाकांत
3. नागार्जुन और प्रगतिशील साहित्य : सं. सोनटक्के, भारती गोरे
4. नागार्जुन का रचना संसार : विजय बहदुर सिंह
5. मेरे साक्षात्कार : नागार्जुन

इकाई 16 : 'मेघ बजे' और 'खुरदरे पैर' : नागार्जुन

इकाई की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 मूल पाठ : 'मेघ बजे' और 'खुरदरे पैर' : नागार्जुन

16.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

16.3.2 अध्येय कविता

16.3.3 विस्तृत व्याख्या

16.4 पाठ सार

16.5 पाठ की उपलब्धियाँ

16.6 शब्द संपदा

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

16.8 पठनीय पुस्तकें

16.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप जान चुके हैं कि हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद छायावादोत्तर युग के नई काव्यधारा के रूप में उदय हुआ। प्रगतिवाद असामाजिक तत्वों के विरुद्ध क्रांति की गूँज बनकर आया है। यहाँ व्यक्ति की भावनाओं की अपेक्षा सामाजिक भावना पर बल दिया गया। प्रगतिवादी कविता का केंद्र शोषित वर्ग रहा और शोषक वर्ग के प्रति विद्रोह। इसके साथ ही आम जनता का हितैषी बन कर आया। राष्ट्रप्रेम, प्रकृति के प्रति लगाव, रूढ़ियों का खंडन तथा मानवतावाद पर बल दिया गया।

इसके प्रमुख कवि हैं केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, शिवपूजन सहाय तथा नागार्जुन। वैद्यनाथ मिश्र ही हिंदी साहित्य जगत में नागार्जुन के नाम से विख्यात हुए। इनकी कविताओं में गरीबी, भुखमरी, बीमारी, अकाल, बाढ़ जैसे सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया गया है। नागार्जुन की रचनाओं और वास्तविक जीवन में गहरा सामंजस्य है तथा पौराणिक आख्यानों का संदर्भ भी मिलता है। बाबा की कविताओं में प्रगतिवादी चेतना का सहज सौंदर्य प्रतिफलित होता है।

16.2 उद्देश्य

इस इकाई के अंतर्गत आप कवि नागार्जुन द्वारा रचित प्रसिद्ध कविताओं 'मेघ बजे' और 'खुरदरे पैर' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप -

- नागार्जुन की प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
- किसान और मेघ के संबंध को स्पष्ट कर सकेंगे।
- समाज में किसानों और मजदूरों की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- दोनों कविताओं के काव्यगत सौंदर्य को समझ सकेंगे।
- इन कविताओं की व्याख्या कर सकेंगे।

16.3 मूल पाठ : 'मेघ बजे' और 'खुरदरे पैर' : नागार्जुन

15.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

'मेघ बजे' नागर्जुन की बहुचर्चित कविता है जो उनके काव्य संग्रह 'सतरंगें पखों वाली' में संकलित है। छायावाद के बाद साहित्यांदोलन प्रगतिवाद रहा है। प्रगतिवाद का मूल आधार सामाजिक यथार्थवाद है। नागार्जुन की कविता में अमीर-गरीब, मालिक-मजदूर, जमींदार-कृषक तथा उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग की बीच द्वंद्व दिखाई देता है। इनका जीवन दर्शन बहुत व्यापक है जिसमें वसुधैव कुटुम्बकम की भावना सर्वोपरि है। नागार्जुन का संपूर्ण कृतित्व प्रगतिशील चेतना का वाहक है।

इस कविता में कवि ने बादलों की उमड़ने-घुमड़ने की और उसकी ध्वनि का मार्मिक चित्रण किया है। इसमें किसान की धरती के प्रति आदर दिखाई देती है। वर्षाऋतु के आने से पूरा वातावरण आनंदित हो जाता है, क्योंकि जल और हल किसान के हमजोली हैं ।

16.3.2 अध्येय कविता : 'मेघ बजे' और 'खुरदरे पैर'

मेघ बजे

धिन-धिन-धा धमक-धमक
मेघ बजे
दामिनि यह गयी दमक
मेघ बजे
दादुर का कण्ठ खुला
मेघ बजे
धरती का हृदय धुला
मेघ बजे
पंक बना हरिचंदन
मेघ बजे
हल्का है अभिनन्दन

मेघ बजे
धिन-धिन-धा...
खुरदरे पैर
खुब गए
दूधिया निगाहों में
फटी बिवाइयोंवाले खुरदरे पैर
धँस गए
कुसुम-कोमल मन में
गुट्ठल घट्ठोंवाले कुलिश-कठोर पैर
दे रहे थे गति
रबड़-विहीन ठूँठ पैडलों को
चला रहे थे
एक नहीं, दो नहीं, तीन-तीन चक्र
कर रहे थे मात त्रिविक्रम वामन के पुराने पैरों को
नाप रहे थे धरती का अनहद फासला
घण्टों के हिसाब से ढोये जा रहे थे !
देर तक टकराए
उस दिन इन आँखों से वे पैर
भूल नहीं पाऊँगा फटी बिवाइयाँ
खुब गईं दूधिया निगाहों में
धँस गईं कुसुम-कोमल मन में

निर्देश : 1. इन कविताओं का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इन कविताओं का मौन वाचन कीजिए।

16.3.3 विस्तृत व्याख्या

1

धिन-धिन-धा धमक-धमक
मेघ बजे
दामिनि यह गयी दमक
मेघ बजे
दादुर का कण्ठ खुला
मेघ बजे
धरती का हृदय धुला
मेघ बजे
पंक बना हरिचंदन

मेघ बजे
हल्का है अभिनन्दन
मेघ बजे
धिन-धिन-धा...

शब्दार्थ : धमक = भारी वस्तु के चलने से आस-पास होने वाली कंपन। मेघ = बादल। दामिनी = बिजली। दादुर= मेंढक। कंठ =गला। दमक = चमक। पंक = कीचड़। अभिनंदन =सम्मान। कंठ = गला।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश नागार्जुन की कविता 'मेघ बजे' से उद्धृत है ।

प्रसंग : बाबा नागार्जुन जनता के कवि रहे हैं। उनकी कविताओं में सामान्य वर्ग मुखरित होता है। इस काव्यांश में कृषक और वर्षा दोनों का गहरा रिश्ता होता है, बताया गया है। वर्षा की संभावना होने पर प्रकृति के हर्ष का ठिकाना नहीं रहता। कवि कहते हैं -

व्याख्या : 'मेघ बजे' कविता में बाबा नागार्जुन ने वर्षा के आगमन का संकेत किया है। इस कविता में कवि ने बादलों के घिर आने तथा वर्षाकाल का मनोहारी चित्रण किया है। नागार्जुन किसानों और मजदूरों का स्वर थे। वे किसानी-खेती के बहुत निकट थे।

कृषक जीवन और उसकी समस्याओं में बाबा नागार्जुन की गहरी रुचि थी। जेठ की भीषण गर्मी व लू के कारण बेहाल प्राणियों की आँखें आसमान की ओर मेह की टोह में रहती है। जब वे देखते हैं कि जल का अथाह भण्डार लिए बादल घुमड़-घुमड़कर घिरने लगे हैं, तो बादलों की गड़गड़ाहट से पृथ्वी का प्रत्येक जीव-जन्तु और वनस्पति सब रोमांचित हो जाते हैं। ऐसा लगता है मानो बादलों के झरोखों में से रह-रहकर बिजली चमक रही है। काले-काले मेघों को उमड़-घुमड़ कर घिरते देख बहुत खुश हैं। वर्षा के आगमन की प्रतीक्षा में तालाबों में मेंढक टर्र-टर्र करने लगे हैं।

बरसात होने से गर्मी से व्याकुल और गदली धरती का हृदय धुल कर स्वच्छ हो गया है। धरा वर्षा जल पाकर संतुष्ट और साफ हो गई है तथा वर्षा के कारण धरती पर पानी भर गया है, माटी अर्थात कीचड़ भी 'हरिचंदन' के समान हो गया है जिससे किसानों ने श्रद्धा और सम्मान से अपने हल के स्वागत में तिलक लगाया है। अर्थात खेती के लिए तैयार हो गए हैं।

बादलों की गर्जना धिन-धिन-धा की विशेष संगीत-ध्वनि उत्पन्न कर रही है। बादलों के यूँ गरजने-बरसने से प्रकृति और भी अधिक मनोहारी हो गई है। नागार्जुन की रचनाएँ मानवीय जीवन तथा प्रकृति संबंधी विषयों का सूक्ष्मांकन करती है। अत: नागार्जुन के बारे में नामवर सिंह ने कहा है कि "जो वस्तु औरों की संवेदना को अछूती छोड़ जाती है, वही नागार्जुन के कवित्व की रचना-भूमि है।"

काव्यगत विशेषताएँ

1. वर्षा ऋतु का सुंदर और मोहक वर्णन है।
2. किसानों के प्रति प्रेम्मौर आत्मीयता की भावना की अभिव्यक्ति हुई है।
3. मेघों की धमक और दामिनी की चमक के बिंब से वर्षा का वातावरण साकार हो उठा है।
4. तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है।

5. धिन धिन पुनरुक्त शब्दों का प्रयोग हुआ है।

बोध-प्रश्न

- 'मेघ बजे' कविता किसके बारे में है?
- मेघ बजने से कवि का क्या संकेत है?
- पंक को हरिचंदन क्यों कहा गया है?
- वर्षा के आवागमन धरती पर क्या-क्या परिवर्तन होने लगते हैं?

2

खुब गए
दूधिया निगाहों में
फटी बिवाइयोंवाले खुरदरे पैधँस गए
कुसुम-कोमल मन में
गुट्ठल घट्ठोंवाले कुलिश-कठोर पैर
दे रहे थे गति
रबड़-विहीन ठूँठ पैडलों को
चला रहे थे
एक नहीं, दो नहीं, तीन-तीन चक्र
कर रहे थे मात त्रिविक्रम वामन के पुराने पैरों को
नाप रहे थे धरती का अनहद फासला
घण्टों के हिसाब से ढोये जा रहे थे !
देर तक टकराए
उस दिन इन आँखों से वे पैर
भूल नहीं पाऊँगा फटी बिवाइयाँ
खुब गईं दूधिया निगाहों में
धँस गईं कुसुम-कोमल मन में

शब्दार्थ : दूधिया=दूध मिला हुआ/दूध जैसा। कुसुम=पुष्प। कुलिश=वज्र। गुठ्ठल=गुठलीवाला। ठूँठ= वृक्ष का बचा हुआ धड़। चक्र=पहिया। त्रिविक्रम= वामन अवतार /विष्णु। कोमल= मुलायम/ नाज़ुक। बिवाइयाँ = एड़ी में दराएं पड़ने से घाव बन जाता है। निगाह=दृष्टि।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश नागार्जुन की कविता 'खुरदरे पैर' से उद्धृत है।

प्रसंग : नागार्जुन सामाजिक संवेदना के कवि हैं। गरीब और दुखियों के दुःख से पीड़ित कवि ने इस कविता में एक रिक्शाचालक कि विवशता और उसकी पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। मजदूर की बिवाइयों और खुरदरे पैरों का वर्णन किया है।

व्याख्या : प्रस्तुत कवितांश बाबा नागार्जुन की कविता 'खुरदरे पैर' से ली गई है। नागार्जुन का दृष्टिकोण समाज के वंचित वर्ग तथा गहन सामजिक चेतना और शोषित-उत्पीड़ित जनता के प्रति गहरी सहानुभूति लिए हुए था। यही कारण ही नागार्जुन का झुकाव मार्क्सवादी चिंतन की

ओर गया। नागार्जुन ने अपनी प्रगतिशील लेखनी से समाज़ की विषमताओं पर कुठाराघात किया है।

नागार्जुन की कविताओं में सामाजिक संघर्ष मुखरित हुआ है। यह कविता एक रिक्शे वाले की है जो अपनी रोजी रोटी के लिए चला जा रहा है। इस कविता में कवि ने रिक्शा चालक के पैरों की बिवाइयों का वर्णन किया है जो निरंतर परिश्रम करके जीवन यापन करने के लिए बोझा उठा रहा है। उसकी फटी बिवाइयों से कवि का हृदय बहुत ही प्रभावित हुआ है।

नागार्जुन श्रमिक की कठोर जीवन शैली से ही द्रवित हो जाते हैं। फटी बिवाइयों वाले 'खुरदरे पैर' में कवि के संवेदनशील मन के बारे में पता चलता है। बाबा की नजर मर्मस्पर्शी दृश्यों में भी सौंदर्य ढूँढ़ लेती है। यहाँ रिक्शे के तीन पहिए से धरती के फासले नापते उसके 'पैर' वामन के मिथक के रूप में है।

इस कविता में एक ही बिंब से व्यंग्य की पराकाष्ठा देखी जा सकती है। कवि कहता है कि मैं वे पैर कभी भूल नहीं पाऊँगा। अर्थात नागार्जुन पर पीड़ा को अपनी पीड़ा मानने वाले हैं कवि को समाज के निम्न वर्ग से भी अत्यंत लगाव था। यह वह यथार्थ है जिससे आम आदमी रोज जूझता है। बाबा नागार्जुन शोषित, गरीब एवं पीड़ितों की वाणी थे।

काव्यगत विशेषताएँ

1. आम आदमी के कष्टों का मार्मिक चित्रण हुआ है।
2. वामन अवतार का विशेष संदर्भ लिया गया है।
3. तत्सम शब्दावली, विशेषण तथा सामासिक शब्दावली का अच्छा प्रयोग हुआ है।

बोध-प्रश्न

- 'खुरदरे पैर' कविता किसके बारे में है?
- 'खुरदरे पैर' कविता में किस वर्ग की पीड़ा को दर्शाया गया है?
- इस कविता में किस यथार्थ को रेखांकित किया गया है?

विवेचनात्मक टिप्पणी

प्रिय छात्रो! नागार्जुन बीसवीं शताब्दी के प्रगतिवादी हिंदी कवियों में अत्यंत विलक्षण कवि हैं। वे प्रगतिवादी युग से लेकर जनवादी युग तक निरंतर सक्रिय और रचनाशील रहें। उन्हें लोक जीवन के साथ सीधे और गहरे जुड़ाव के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है। संस्कृत और प्राकृत भाषा और साहित्य का उनका अध्ययन बहुत गहन था। साथ ही निरंतर अनेक स्थानों पर घूमते रहकर उन्होंने जनता के सुख-दुख को भी बहुत नजदीक से देखा और समझा था। वे राजनीतिक आंदोलन में भी सक्रिय रहे थे।

इन सब अनुभवों से उनकी सामाजिक चेतना के साथ-साथ सौंदर्य चेतना भी अत्यंत प्रखर हो उठी थी। इसीलिए उनके काव्य में जहाँ एक ओर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विषयों पर बेलाग और अक्कड़ अभिव्यक्तियाँ प्राप्त होती हैं, वहीं दूसरी ओर जीवन के सुंदर और मधुर पक्ष को भी उन्होंने प्रकृति, लोक एवं संस्कृति पर केंद्रित कविताओं में मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। इसी कारण वे भारतीय जनमानस के सबसे निकट विद्यमान कवियों में गिने जाते

हैं।

नागार्जुन का रचना काल काफी फैला हुआ है। उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में राष्ट्रगान, प्रभाती और उद्बोधन के गीत उसी प्रकार लिखे जैसे निराला और प्रसाद आदि ने लिखे थे। भारत के आजाद होने पर भी उनके भीतर की यह संघर्ष चेतना लगातार प्रखर रही। उन्होंने स्वतंत्र भारत के विविध आंदोलनों के लिए भी गीतों और कविताओं की रचना की। आजादी से पहले की उनकी रचनाओं में देशभक्ति और निष्ठा दिखाई देती है। लेकिन आजादी के बाद की उनकी रचनाओं में क्रमशः व्यंग्य का स्वर प्रखर होता गया। व्यंग्य प्रधान काव्य के बीच जब पाठक उनकी प्रकृति, सौंदर्य, रिश्ते-नाते और लोक जीवन पर केंद्रित कविताओं को पढ़ते हैं तो तपते रेगिस्तान में ठंडी बारिश की फुहार का सा आनंद महसूस होता है।

'मेघ बजे' और 'खुरदरे पैर' नागार्जुन की इन्हीं लोकधर्मी कविताओं का प्रतिनिधित्व करने वाली रचनाएँ हैं। अनेक स्थलों पर नागार्जुन अपने पाठक को निराला की याद दिलाते हैं। इस विषय में डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी का यह कथन द्रष्टव्य है कि -

> "आंदोलनमूलक कविताओं के अतिरिक्त सामन्य जन जीवन को अंकित करने वाली कुछ कोमल और कुछ तीखी रचनाएँ भी नागार्जुन ने लिखी हैं जो एक प्रकार से आधुनिक हिंदी कविता में प्रगतिवाद का रेखांकन माना जा सकता है।"
> (हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, पृ. 190)

लोक के साथ-सीधे जुड़ाव और अक्कड़पन के साथ-साथ प्रेम और करुणा से भरे हुए साहित्य की रचना करने वाले नागार्जुन सही अर्थ में आधुनिक काल के कबीर कहे जा सकते हैं। हिमांशु जोशी ने हैदराबाद में 8-9 जुलाई, 1509 को आयोजित 'बाबा नागार्जुन' पर केंद्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी में विषय प्रवर्तन करते हुए ज़ोर देकर यह कहा था कि आज के भारत को नागार्जुन की जरूरत है, कबीर की जरूरत है। वे एक ऐसे कवि थे जिनकी चिंता का एक मात्र विषय 'मनुष्य' था। इसीलिए उन्हें किसी 'वाद' में नहीं बाँधा जा सकता। हिमांशु जोशी के शब्दों में -

> "कबीर के वंश के आखिरी व्यक्ति थे नागार्जुन। नागार्जुन कोई बहुत बड़ी हस्ती नहीं थे अपने में। ऐसा गरीब आदमी आपने देखा नहीं होगा। नागार्जुन के पिता ने जो मिट्टी का घर अपने बेटे को उत्तराधिकार में दिया था वही मिट्टी का आघार मरते समय नागार्जुन अपने पुत्रों को दे गए।... नागार्जुन जीवन भर लिखते रहे। जीवन भर भटकते रहे। ऐसा साहित्यकार हिंदी ही नहीं, भारतीय भाषाओं में दूसरा नहीं होगा। उनके लिए मनुष्य मनुष्य रह गया था। जीतने भी वाद के बंधन थे नागार्जुन एक-एक करके उन्हें फेंकते चले गए। तो जो उन्हें युग सत्य मिला, चीर सत्य मिला वह मनुष्य का था। नागार्जुन का दर्शन मनुष्य का ही दर्शन है।"
> (संस्मारिका : बाबा नागार्जुन, पृ. 9-10)

कहना न होगा कि अभी आपने नागार्जुन की जिन रचनाओं का अध्ययन किया है वे किसी भी वाद के खाँचे में नहीं समा सकतीं, बल्कि मनुष्य और उसकी अनुभूतियों को मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए उनके इसी जीवन दर्शन को प्रकट करती हैं। नागार्जुन को कबीर और निराला की पंक्ति का कवि घोषित करते हुए डॉ. शंभुनाथ ने भी लिखा है कि -

> "निराला के बाद नागार्जुन से बड़ा आधुनिक कवि कौन हैं? नागार्जुन का आधुनिकता बोध विद्यापति की लोकभूमि के संस्कारों की पृष्ठभूमि में एक बृहत्तर राष्ट्रीय ढाँचा वाला आधुनिकता बोध है। वह जड़ों वाला आधुनिकता बोध है, जड़हीन आधुनिकता बोध नहीं, उन्होंने मैथिली और संस्कृत में भी लिखा। मैथिली और हिंदी के बीच तो वे एक सेतु बना गए हैं, ऐसे सेतुओं को हमेशा मजबूत बनाना चाहिए। दरअसल वैद्यनाथ मिश्र, यात्री, नागार्जुन और बाबा - ये सभी मिलकर ही एक पूर्ण व्यक्तित्व बनते हैं। इनको परस्पर अलगाया नहीं जा सकता। नागार्जुन अपनी लघु काय में भी एक विराट व्यक्तित्व थे, विविधता से भरे पूरे। मिथिला उनकी भावभूमि, कलकत्ता विचारभूमि और पूरा देश सौंदर्य-भूमि है। उन्होंने साहित्य के जरिए लगातार यह कहना चाहा कि अस्मिता और अखंडता में वस्तुतः कोई अंतर्विरोध नहीं है।" (वही, पृ. 43)

इसी प्रकार बाबा नागार्जुन की सौंदर्य चेतना पर टिप्पणी करते हुए डॉ. विजय बहादुर सिंह ने बड़े मार्के की बात कही है। यथा-

> "नागार्जुन जिद की हद तक जाकर कह उठते हैं - जब तक मेरे पड़ोस की बच्ची खिलखिला रही है, बादल उमड़-घुमड़ रहे हैं, कोकिल कूक रही है और ठूँठ पैडलों पर पसीना गारने और फटी बिवाइयों वाला वामनावतार रिक्शे वाला जिंदा है, कविता और संवेदना की मृत्यु नहीं हो सकती। वे कालबोध के मामले में साहित्य की उस सनातन धारा के साथ हैं जो काल की विभिन्न गतियों और मुद्राओं के परिवर्तमान रूपों और रंगों को स्वीकार करती हुई यह भी मानती है कि पृथ्वी की दोनों गतियाँ सत्य हैं। काल का वह चेहरा भी सच है जो विष्णु के चक्र की तरह निरंतर घूम रहा है। और वह भी सच है जो दिन भर की कठिन धूप और गहरी छाँव से गुजरता हुआ कुछ ऐसे भी अनुभवों से होकर गुजरता है जिन्हें अंगीकार किए बगैर काल भी अप्रासंगिक हो उठेगा।" (वही, पृ.18)

अंततः यह दोहराना आवश्यक है कि नागार्जुन बहुआयामी और विशाल रचना संसार के रचनाकार हैं। डॉ. नामवर सिंह ने तो यहाँ तक कहा है कि तुलसीदास के बाद नागार्जुन ही हिंदी के ऐसे अकेले कवि हैं जिन्हें विद्वानों से लेकर किसान-मजदूरों तक एक जैसी लोकप्रियता प्राप्त है। इसी प्रकार केदारनाथ सिंह लिखते हैं -

"नागार्जुन जितना देखते हैं, सुनते हैं, सूँघते हैं या महसूस करते हैं, उसे पूरा का पूरा और कई बार उसके संपूर्ण अनगढ़पन के साथ कविता में कहने की अद्‌भुत कला उनके पास है। उनके लिए कविता से बाहर कुछ भी नहीं है, न इतिहास का सत्य और न भूगोल का ऊबड़-खाबड़पन। (मेरे समय के शब्द, पृ.59)

बोध प्रश्न

- नागार्जुन के आजादी के पहले की कविताओं में क्या दिखी देती है?

16.4 पाठ सार

'मेघ बजे' तथा 'खुरदरे पैर' कविताओं में कवि नागार्जुन ने किसान तथा मजदूर वर्ग की पीड़ा तथा विवशता को दर्शाया है। किसान वर्षा पर निर्भर रहता है अत: भीषण गर्मी के बाद जब बादल बरसात का संदेशा लाते हैं तो किसानों का जीवन सार्थक हो जाता है। नागार्जुन किसानों और मजदूरों का स्वर थे। वे किसानी-खेती के बहुत निकट थे। कृषक जीवन और उसकी समस्याओं में बाबा नागार्जुन की गहरी रुचि थी। जेठ की भीषण गर्मी व लू के कारण बेहाल प्राणियों की आँखें आसमान की ओर मेह की टोह में रहती है। जब वे देखते हैं कि जल का अथाह भण्डार लिए बादल घुमड़-घुमड़कर घिरने लगे हैं, तो बादलों की गड़गड़ाहट से पृथ्वी का प्रत्येक जीव-जंतु और वनस्पति सब रोमांचित हो जाते हैं। ऐसा लगता है मानो बादलों के झरोखों में से रह-रहकर बिजली चमक रही है। वह माटी से बहुत लगाव रखता है। यही कारण है कि कीचड़ भी उसे हरिचंदन सा लगता है। यह किसान का अपनी धरती के प्रति आदर भाव है।

'खुरदरे पैर' कविता में एक गरीब की पीड़ा से कवि का मन व्यथित हो जाता है। वह रिक्शाचालक की पीड़ा की अनुभूति करता है। खुदरे गाँठ पड़े पैरों पर कवि की संवेदनशील दृष्टि जाती है। उसे वामन के तीन पैर का स्मरण हो आता है। नागार्जुन श्रमिक की कठोर जीवन शैली से ही द्रवित हो जाते हैं। उनकी कविताओं में शोषित समाज की पीड़ा मुखरित हुई है। पुराणों से संदर्भ लेकर पात्रों को मजबूती प्रदान करते है। बाबा नागार्जुन प्रगतिवादी कवियों में प्रमुख कवि हैं। नागार्जुन की कविताओं में सामाजिक संघर्ष मुखरित हुआ है।

16.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

5. नागार्जुन बहुआयामी और विशाल रचना संसार के रचनाकार हैं।
6. तुलसीदास के बाद नागार्जुन ही हिंदी के ऐसे अकेले कवि हैं जिन्हें विद्वानों से लेकर किसान-मजदूरों तक एक जैसी लोकप्रियता प्राप्त है।
7. नागार्जुन की रचनाओं में आम जनता के संघर्षमय जीवन का मर्मस्पर्शी अंकन है।
8. 'मेघ बजे' और 'खुरदरे पैर' नागार्जुन की लोकधर्मी कविताओं का प्रतिनिधित्व करने वाली रचनाएँ हैं।

16.6 शब्द संपदा

1. आगमन = पहुँचना /आना
2. उत्पीड़ित = सताया हुआ
3. कुठाराघात = घातक चोट
4. दृष्टिकोण = नज़रिया
5. पराकाष्ठा = चरम सीमा
6. मनोहारी = सुंदर
7. मर्म स्पर्शी = हृदय को छूने वाला
8. यथार्थ = वास्तविक
9. व्याकुल = बेचैन
10. हर्ष = प्रसन्नता /ख़ुशी

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

16.7.1 सही विकल्प चुनिए -

1. हिंदी साहित्य में बाबा नागार्जुन का वास्तविक नाम क्या था?

A. **वैद्यनाथ मिश्र** B. केदारनाथ अग्रवाल C. त्रिलोचन शास्त्री D. शिवपूजन सहाय

2. नागार्जुन की कविता 'मेघ बजे' उनके किस काव्य संग्रह में संकलित है?

A. प्यास पथराई आँखें B. युगधारा C. खिचड़ी विप्लव देखा हमने D. **सतरंगें पखों वाली**

3. प्रगतिवादी काव्यधारा का मुख्य केंद्र क्या रहा है?

A. ईश्वर की भक्ति और आध्यात्मिकता B. राजसी वैभव का गुणगान

C. शोषित वर्ग और सामाजिक यथार्थ D. व्यक्तिगत भावनाओं का चित्रण

4. कविता 'मेघ बजे' में 'पंक' (कीचड़) को 'हरिचंदन' के समान क्यों माना गया है?

A. क्योंकि वह चंदन की तरह खुशबू देता है

B. क्योंकि वह औषधीय गुणों से भरपूर होता है

C. क्योंकि किसान उसे श्रद्धा से अपने हल पर लगाते हैं

D. क्योंकि उसका रंग चंदन जैसा पीला होता है

5. डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, तुलसीदास के बाद कौन सा कवि विद्वानों और किसानों दोनों में समान रूप से लोकप्रिय है?

A. सुमित्रानंदन पंत
B. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
C. रामधारी सिंह 'दिनकर'
D. नागार्जुन

6. 'खुरदरे पैर' कविता में रिक्शाचालक के पैरों की तुलना किस पौराणिक पात्र से की गई है?

A. हनुमान B. अर्जुन C. बलि राजा **D. त्रिविक्रम वामन**

7. कविता के संदर्भ में 'बिवाइयाँ' शब्द का क्या अर्थ है?

A. पैरों में पहनने वाला एक आभूषण
B. एड़ी में फटने से होने वाले घाव
C. एक प्रकार की जड़ी-बूटी
D. मिट्टी खोदने का एक औज़ार

8. नागार्जुन को आधुनिक काल का 'कबीर' क्यों कहा जाता है?

A. क्योंकि उन्होंने कबीर की जीवनी लिखी थी
B. लोक जीवन से सीधे जुड़ाव और अक्खड़पन के कारण
C. क्योंकि उन्होंने केवल दोहे लिखे हैं
D. क्योंकि वे कबीर की तरह जुलाहे का काम करते थे

9. 'खुरदरे पैर' कविता में 'रबड़-विहीन ठूँठ पैडल' क्या संकेत देते हैं?

A. रिक्शाचालक की गरीबी और रिक्शे की जीर्ण अवस्था
B. पैडलों का पेड़ की लकड़ी से बना होना
C. रिक्शा का बहुत आधुनिक होना
D. चालक की पैडल चलाने की विशेष तकनीक

10. 'मेघ बजे' कविता में वर्षा के आगमन पर कौन अपना कंठ खोलता है?

A. दादुर (मेंढक) B. किसान C. मोर D. कोयल

खंड (ब)

16.7.2 लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

6. प्रगतिवादी काव्यधारा का मुख्य उद्देश्य क्या था?

7. 'मेघ बजे' कविता की विशेषता लिखिए।

8. 'खुरदरे पैर' कविता में किस कटु सत्य को उजागर किया गया है? चर्चा कीजिए।

9. नागार्जुन की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

10. नागर्जुन भारतीय जनमानस के सबसे निकट विद्यमान कवियों में क्यों गिने जाते हैं?

11. "खुब गए
दूधिया निगाहों में
फटी बिवाइयोंवाले खुरदरे पैर"
- इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

12. मेघ बजे
धरती का हृदय धुला
मेघ बजे
पंक बना हरिचंदन"
– इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

16.7.3 दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

5. नागार्जुन ने 'मेघ बजे' कविता में किस ऋतु का वर्णन किया है तथा उससे कौन-कौन प्रभावित होते हैं? स्पष्ट कीजिए।
6. कवि को क्यों लगता है कि वह रिक्शा चालक के पैरों को वह कभी नहीं भूल पाएगा? पठित कविता के आधार पर सार लिखिए।
7. नागार्जुन को आधुनिक काल के कबीर कहना कहाँ तक तर्कसंगत है?

16.8 पठनीय पुस्तकें

1. नागार्जुन : सतरंगे पंखों वाली
2. नागार्जुन रचनावली (भाग 1 और 2) : सं. शोभाकांत
3. नागार्जुन और प्रगतिशील साहित्य : सं. सोनटक्के, भारती गोरे
4. नागार्जुन का रचना संसार : विजय बहदुर सिंह

परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना

MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY

PROGRAMME: B.A (HINDI)

III – SEMESTER EXAMINATION

TITLE & PAPER CODE : आधुनिक हिंदी कविता

MODERN HINDI POETRY - BNHN301DCT

TIME:3HOURS TOTAL MARKS: 70

यह प्रश्न पत्र तीन भागों में विभाजित हैं- भाग -1, भाग -2 और भाग - 3 प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

भाग – 1

1. निम्न लिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए। 10X1=10

i. भारतेंदु का जन्म स्थान कौनसा है ? ( )

(A) काशी (B) जबलपुर (C) पटना (D) जयपुर

ii. निम्नलिखित में से हरिऔंध की रचना नहीं है ? ( )

(A) ठेठ हिंदी का ठाट (B) प्रियप्रवास (C) चोखे चौपदे (D) सरोज स्मृति

iii. 'कामायनी' रचना के रचनाकार कौन है? ( )

(A) जयशंकर प्रसाद (B) रामधारी सिंह

(C) मैथिलीशरण गुप्त (D) जगदीशचंद्र माथुर

iv.निराला की पहली कविता का नाम क्या है ? ( )

(A) अनामिका (B) जन्मभूमि (C) बेला (D) तोड़ती पत्थर

v. प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि है। ( )

(A) अज्ञेय (B) जयशंकर प्रसाद (C) सुमित्रानंदन पन्त (D) महादेवी

vi. 'विरह वेदना' कविता के रचनाकार कौन है? ( )

(A) नागार्जुन (B) अज्ञेय (C) निराला (D) भारतेंदु हरिशचंद्र

vii. 'सरोज स्मृति' निराला की किस विधा में लिखी गयी रचना है? ( )

(A) उपन्यास (B) कहानी (C) कविता (D) निबंध

viii. नागार्जुन का वास्तविक नाम क्या है? ( )

(A) वैद्यनाथ मिश्र (B) नागनाथ मिश्र (C) गणेश मिश्र (D) कोई नहीं

ix. 'बोलने दो चीड़ को' कविता के रचनाकार कौन है? ( )

(A) शमशेर बहुदुर सिंह (B) नरेश मेहता (C) नागार्जुन (D) सुमित्रानंदन पंत

भाग – 2

निम्न लिखित आठ प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दो सौ शब्दों में देना अनिवार्य है । 5X6 =30

1. 'सरोज समृति' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
2. नागार्जुन के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिए।
3. संस्कृत और हिंदी भाषा में क्या अंतर है?
4. दिवस का अवसान समीप था/ गगन था कुछ लोहित हो चला/ तरु-शिखा पर थी अब राजती/ कमलिनी-कुलवल्लभ की प्रभा। इस छंद की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
5. 'भारत-भारती' के मूल चेतना पर प्रकाश डालिए।
6. गुप्तजी की राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए ।
7. 'आँसू एक विरह काव्य है।' इस उक्ति को स्पष्ट करें।
8. 'शेखर : एक जीवनी' के बारे में संक्षेप में बताइए।

भाग- 3

निम्न लिखित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पाँच सौ शब्दों में देना अनिवार्य है । 3X10=30

9. कृष्ण भक्त परंपरा में भारतेंदु के योगदान का विवेचन कीजिए।
10. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के जीवन पर प्रकाश डालिए।
11. मैथिलीशरण गुप्त की रचना यात्रा का वर्णन कीजिए।
12. हिंदी साहित्य में निराला का क्या स्थान है?
13. अज्ञेय के व्यक्तित्व एवं जीवन दर्शन पर प्रकाश डालिए।